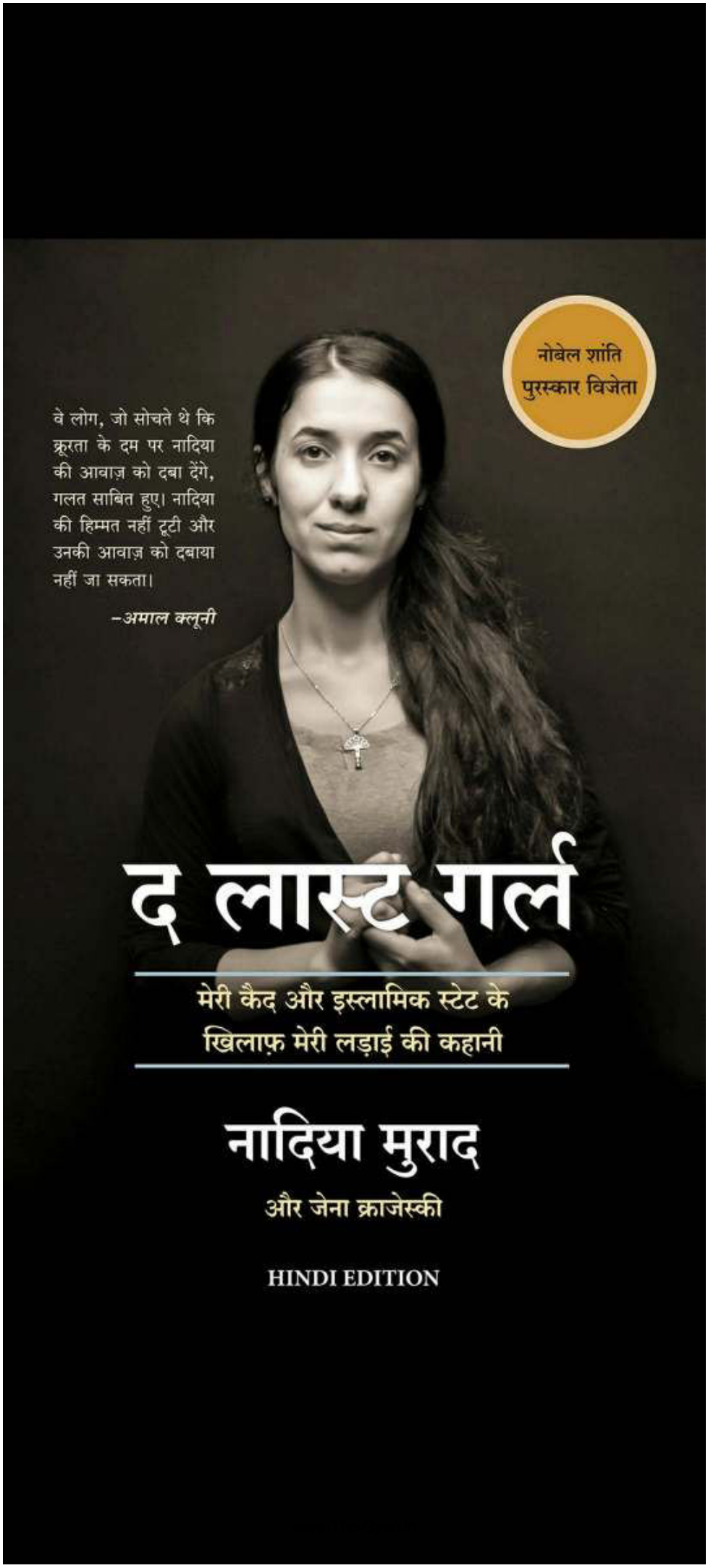
नोबेल शांति
पुरस्कार विजेता
वे लोग, जो सोचते थे कि क्रूरता के दम पर नादिया की आवाज़ को दबा देंगे, गलत साबित हुए। नादिया की हिम्मत नहीं टूटी और उनकी आवाज़ को दबाया नहीं जा सकता।
–अमाल क्लूनी
द लास्ट गर्ल
मेरी कैद और इस्लामिक स्टेट के खिलाफ़ मेरी लड़ाई की कहानी
नादिया मुराद
और जेना क्राजेस्की
HINDI EDITION

नादिया मुराद मानवाधिकार कार्यकर्ता हैं। उन्हें वक्लेव हैवेल मानवाधिकार पुरस्कार और सखारोव पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। वह संयुक्त राष्ट्र के डिग्निटी ऑफ़ सरवाइवर्स ऑफ़ ह्यूमन ट्रैफ़िकिंग की पहली गुडविल एंबेसेडर भी हैं। वह यज़ीदियों की एक संस्था यज़दा के साथ मिलकर इस्लामिक स्टेट को नरसंहार और मानवता के विरुद्ध अपराधों के कई मामलों में अंतरराष्ट्रीय न्यायालय में सज़ा दिलावाने पर काम कर रही हैं। वह *नादियाज़ इनिशिएटिव* नाम का एक कार्यक्रम भी चलाती हैं, जो नरसंहार और ग़ुलामी से पीड़ित रह चुके लोगों के कल्याण और उनके समुदाय को पुनर्स्थापित करने की दिशा में काम करता है।

जेना क्राजेस्की, न्यू यॉर्क की एक पत्रकार हैं। तुर्की, मिस्र, इराक और सीरिया में उनके द्वारा किया काम *न्यू यॉर्कर, स्लेट, द नेशन, वर्जीनिया क्वाटर्ली रिव्यू* और अन्य जगहों पर छपा है और ऑनलाइन भी प्रकाशित हुआ है। जेना, 2016 में मिशिगन यूनिवर्सिटी की नाइट-वॉलेस फ़ेलो भी रह चुकी हैं।

nadiamurad.org

'यह पुस्तक यज़ीदियों द्वारा सहन किए गए अत्याचार की सशक्त अभिव्यक्ति और उनके समुदाय की आध्यात्मिक संस्कृति की झलक प्रदान करती है... यह एक साहसी महिला द्वारा लिखी एक महत्त्वपूर्ण पुस्तक है। यह दर्दनाक और अकथनीय कष्ट के प्रति मानवता के जज़्बे का ताज़ातरीन दस्तावेज है।'

–ईअन बिरेल, द टाइम्स

'एक साहसिक किताब... जो लोग तथाकथित इस्लामिक स्टेट के बारे में जानना चाहते हैं, उन्हें यह पुस्तक पढ़नी चाहिए।'

–द इकॉनोमिस्ट

'यह दर्दनाक संस्मरण बड़ी दृढ़ता से नादिया के अनुभवों को बयान करता है और अपराध में उन गवाहों की सहभागिता पर सवाल उठाता है, जिन्होंने दूसरों की तकलीफ़ को सहमति प्रदान की।'

–न्यू यॉर्कर

'नादिया मुराद ने दुनिया के सबसे जटिल और अमानवीय संघर्ष को मानवीय चेहरा प्रदान किया है।'

–संडे बिज़नेस पोस्ट

www.The-Gyan.in

द लास्ट गर्ल

मेरी कैद और इस्लामिक स्टेट के खिलाफ़ मेरी लड़ाई की कहानी

नादिया मुराद

और जेना क्राजेस्की

मंजुल पब्लिशिंग हाउस

यह किताव प्रत्येक यज़ीदी
के लिए लिखी गई है

अनुक्रम

भूमिका

खण्ड-I

1

2

3

4

5

6

7

8

9

10

खण्ड-II

1

2

3

4

5

6

7

8

9

10
11
12

खण्ड-III
1
2
3
4
5
6
7
8
9
10
11

उपसंहार

अनुवादक के बारे में

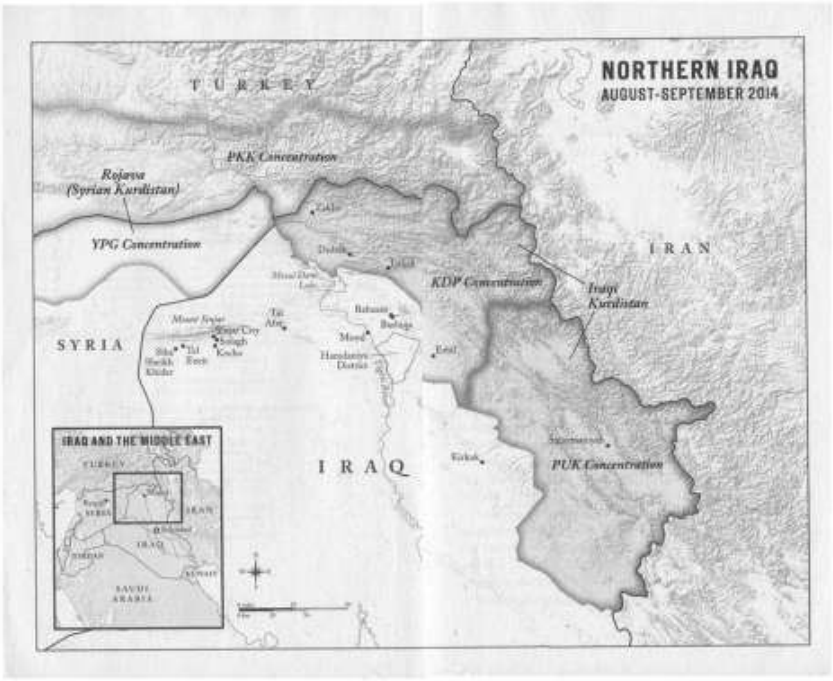
NORTHERN IRAQ
AUGUST-SEPTEMBER 2014
TURKEY
PKK Concentration
Rojava
(Syrian Kurdistan)
YPG Concentration
IRAN
KDP Concentration
Iraqi
Kurdistan
SYRIA
IRAQ
PUK Concentration
IRAQ AND THE MIDDLE EAST

भूमिका

नादिया मुराद केवल मेरी मुवक्किल ही नहीं, मेरी दोस्त भी हैं। हम लंदन में पहली बार मिले तो उन्होंने मुझसे पूछा कि क्या मैं उनकी वकील बन सकती हूँ। उन्होंने कहा कि वह मुझे आवश्यक धन-राशि नहीं दे सकेंगी और यह भी बताया कि उनका मामला लंबा चलेगा और शायद वह हार भी जाएँ। फिर उन्होंने कहा कि अंतिम निर्णय लेने से पहले मुझे एक बार उनकी कहानी सुननी चाहिए।

2014 में आईएसआईएस ने इराक में स्थित नादिया के गाँव पर हमला किया, जिसके बाद इक्कीस वर्षीय छात्रा नादिया का जीवन पूरी तरह बिखर गया। नादिया ने अपनी आँखों के सामने अपनी माँ और अपने भाइयों को मरते देखा। उन्हें आईएसआईएस के एक से दूसरे आतंकी को दिया जाता रहा। उन्हें प्रार्थना करने और हर बार बलात्कार से पहले सजने-सँवरने को विवश किया जाता था। एक रात पुरुषों के समूह ने नादिया के साथ इतना दुर्व्यवहार किया कि वह बेहोश हो गईं। नादिया ने मुझे जलती सिगरेट और मार-पीट से शरीर पर लगे घाव के निशान भी दिखाए। उन्होंने बताया कि इस कठिन संघर्ष के दौरान आईएसआईएस के आतंकी उन्हें *"नीच नास्तिक"* कहकर बुलाते थे। वे यज़ीदी स्त्रियों को हासिल करने और दुनिया से उनके धर्म को मिटा देने की बातें भी करते थे।

नादिया उन हज़ारों यज़ीदियों में से एक थीं, जिन्हें आईएसआईएस वाले बाज़ार और फ़ेसबुक पर बेचते थे। कई बार तो उन्हें केवल बीस डॉलर में बेच दिया जाता था। नादिया की माँ, उन अस्सी औरतों में से एक थीं, जिन्हें मारकर अनजान जगह पर दफ़ना दिया गया और नादिया के छह भाई उन सैकड़ों पुरुषों में शामिल थे, जिनकी एक ही दिन में हत्या कर दी गई।

दरअसल, नादिया मुझे जो बता रही थीं, उसे नरसंहार कहते हैं। नरसंहार अचानक नहीं होता। इसकी योजना बनाई जाती है। इस संहार से पहले आईएसआईएस के "शोध एवं फ़तवा विभाग" ने यज़ीदियों के विषय में जानकारी हासिल की और निष्कर्ष निकाला कि कुर्द भाषा बोलने वाले इन नास्तिक लोगों का अपना कोई धार्मिक ग्रंथ नहीं था; इसलिए इन्हें ग़ुलाम बनाना "शरीयत क़ानून का मज़बूत और सिद्ध पहलू" है। यही कारण है कि आईएसआईएस की विकृत विचारधारा के अनुसार यज़ीदी समुदाय बाक़ी के ईसाइयों, शिया और अन्य लोगों से अलग हैं तथा उनके साथ बलात्कार करना ग़लत नहीं था। बल्कि यज़ीदियों को ख़त्म करने का यही सबसे अच्छा तरीक़ा था।

इसके बाद बुराई का पूरा तंत्र स्थापित हो गया। यहाँ तक कि आईएसआईएस ने अधिक जानकारी के लिए *"कैदियों व ग़ुलामों की व्यापार-संबंधी प्रश्नोत्तरी"* शीर्षक से पर्चे जारी करवा दिए। "प्रश्न: क्या कच्ची उम्र की लड़की के साथ संभोग किया जा सकता है? उत्तर: कच्ची उम्र की ग़ुलाम लड़की यदि स्वस्थ है, तो संभोग किया जा सकता है। प्रश्न: क्या महिला क़ैदी को बेचने की अनुमति है? उत्तर: महिला क़ैदियों को ख़रीदने, बेचने या भेंट करने की अनुमति है, क्योंकि वे केवल संपत्ति होती हैं।"

नादिया ने लंदन में जब मुझे अपनी कहानी सुनाई, तब तक आईएसआईएस द्वारा यज़ीदियों के संहार को शुरू हुए दो वर्ष ही बीते थे। आईएसआईएस ने हज़ारों औरतों और बच्चों को क़ैदी बना रखा था, लेकिन इन अपराधों के लिए दुनिया के किसी न्यायालय में आईएसआईएस के एक भी सदस्य के ख़िलाफ़ कार्रवाई नहीं हुई

थी। सबूतों को ग़ायब या नष्ट कर दिया जाता था। न्याय की कोई संभावना दिखाई नहीं पड़ रही थी।

फिर मैंने यह मामला अपने हाथ में ले लिया। नादिया और मैंने मिलकर न्याय के लिए एक साल तक अभियान चलाया। हमने कई बार इराकी सरकार, सयुंक्त राष्ट्र के प्रतिनिधियों, संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के सदस्यों और आईएसआईएस द्वारा प्रताड़ित लोगों से मुलाक़ात की। मैंने रिपोर्टें बनाईं, मसौदे एवं क़ानूनी विश्लेषण उपलब्ध करवाए और अपने भाषणों में संयुक्त राष्ट्र से कार्रवाई करने का आग्रह भी किया। हमारे अधिकतर संभाषियों ने बताया कि यह असंभव है: सुरक्षा परिषद ने वर्षों से अंतरराष्ट्रीय न्याय पर कोई कार्रवाई नहीं की थी।

हालाँकि मैं जब यह भूमिका लिख रही हूँ, उसी समय संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद ने एक ऐतिहासिक प्रस्ताव पारित किया है, जिसमें छानबीन के लिए एक दल बनाया गया है, जो इराक में आईएसआईएस के अपराधों के सबूत एकत्रित करेगा। यह नादिया समेत आईएसआईएस द्वारा प्रताड़ित लोगों की बड़ी जीत है, क्योंकि इसका अर्थ है कि सारे सबूत सँभालकर रखे जाएँगे और उनके आधार पर आईएसआईएस के सदस्यों पर मुकदमा चलेगा। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में जब यह प्रस्ताव एकमत से स्वीकार किया गया तो मैं नादिया के साथ परिषद में ही बैठी थी। हमने पंद्रह हाथ उठते देखे तो मैं और नादिया एक-दूसरे को देखकर मुस्करा दिए।

मानवाधिकार वकील होने के नाते मुझे कई बार ऐसे लोगों की आवाज़ बनना पड़ता है, जिन्हें चुप कराने की कोशिश की जाती है। इनमें जेल में क़ैद पत्रकार या अदालत में लड़ रहे युद्ध-अपराधों के पीड़ित लोग होते हैं। इसमें कोई संदेह नहीं है कि आईएसआईएस ने नादिया का अपहरण करके उन्हें क़ैद किया, उनके साथ बलात्कार किया, उन्हें तरह-तरह की यातनाएँ दीं और एक ही दिन में उनके परिवार के सात सदस्यों की हत्या कर दी।

परंतु नादिया चुप नहीं बैठीं। नादिया ने ख़ुद को मिले हर नाम को गलत सिद्ध किया; अनाथ, बलात्कार-पीड़िता, क़ैदी या

शरणार्थी। इसके बजाय नादिया ने अपने लिए नए नाम अर्जित किए - उत्तरजीवी। यज़ीदी नेता। महिला समर्थक। नोबेल शांति पुरस्कार प्रत्याशी। संयुक्त राष्ट्र सद्भावना राजदूत और अब लेखिका।

समय बीतने के साथ मैंने उनके बारे में जाना है कि नादिया ने केवल अपने मामले में ही आवाज़ नहीं उठाई, बल्कि वह नरसंहार के प्रत्येक पीड़ित यज़ीदी, हर प्रताड़ित महिला और हर वंचित शरणार्थी की आवाज़ बनकर उभरी हैं।

वे लोग, जो सोचते थे कि क्रूरता के दम पर नादिया की आवाज़ को दबा देंगे, ग़लत साबित हुए। नादिया मुराद की हिम्मत नहीं टूटी और उनकी आवाज़ को दबाया नहीं जा सकता। सच कहूँ तो इस पुस्तक के माध्यम से नादिया की आवाज़ पहले से अधिक मुखर हो गई है।

–अमाल क्लूनी

बैरिस्टर

सितंबर, 2017

www.The-Gyan.in

खण्ड-I

1

साल 2014 में गर्मियों के प्रारंभ में, मैं हाईस्कूल के आख़िरी साल की तैयारी में जुटी थी। उसी समय उत्तरी इराक के एक छोटे-से यज़ीदी गाँव कोचो के बाहरी मैदानों से अचानक दो किसान लापता हो गए। मेरा जन्म वहीं हुआ था और तब तक मुझे लगता था कि मेरा शेष जीवन भी वहीं बीत जाएगा। कुछ क्षण पहले दोनों किसान छाया में बैठे सुस्ता रहे थे और अगले पल, उन्हें पास के एक गाँव के छोटे-से कमरे में क़ैद कर लिया गया था, जहाँ अधिकतर सुन्नी अरब रहते थे। अपहरणकर्ता, किसानों के साथ एक मुर्ग़ी और कुछ चूज़े भी ले गए थे। यह देखकर हमें अचरज हुआ। "वे ज़रूर भूखे होंगे," हमने अनुमान लगाया। परंतु हमारी उलझन दूर नहीं हुई।

मुझे जहाँ तक याद है, कोचो शुरू से यज़ीदियों का गाँव रहा है, जिसे यायावर किसानों और चरवाहों ने बसाया था। वे अचानक यहाँ आकर रहने लगे और उन्होंने अपनी पत्नियों को रेगिस्तान की गर्मी से बचाने के लिए घर बनाने का फ़ैसला किया। इस बीच वे भेड़ों को घास खिलाने ले जाते थे। उन्होंने खेती के लिए अच्छी ज़मीन चुनी, परंतु उस जगह बहुत-से ख़तरे थे। वह गाँव, इराक के सिंजर इलाक़े के दक्षिणी छोर पर स्थित था, जहाँ देश के अधिकांश यज़ीदी रहते थे। वह स्थान गैर-यज़ीदी इराक के बहुत क़रीब था। 1950 के दशक में जब यज़ीदी परिवार वहाँ आए, तो कोचो में सुन्नी अरब किसान रहते थे, जो मोसुल के ज़मींदारों के लिए काम करते थे। परंतु यज़ीदी परिवारों ने एक वकील की मदद से थोड़ी ज़मीन ख़रीदी। वह वकील, जो ख़ुद मुसलमान था, आज भी नायक समझा जाता है। मेरे पैदा होने

तक कोचो में लगभग दो सौ परिवार बस चुके थे। वे सब यज़ीदी थे और एक बड़े परिवार की तरह मिलकर रहते थे।

हमें जिस ज़मीन ने पहचान दिलाई उसी के कारण हम संकट में पड़ सकते थे। हम यज़ीदियों को धार्मिक आस्था के कारण शताब्दियों से प्रताड़ित किया जाता रहा है। सिंजर के पास स्थित कोचो ने हमें कई पीढ़ियों तक आश्रय दिया है। अधिकांश यज़ीदी, लंबे समय तक इराक के सुन्नी अरब और सुन्नी कुर्दवासियों के बीच खींच-तान का विषय बने रहे। हमें यज़ीदी विरासत से वंचित रखकर कुर्द अथवा अरब पहचान अपनाने को कहा जाता था। साल 2013 में कोचो और सिंजर के बीच सड़क बनकर तैयार हुई थी। उससे पहले हमें गाड़ी में सिंजर शहर से पहाड़ तक धूल-भरी सड़कों को पार करने में लगभग एक घंटा लगता था। मेरा बचपन धार्मिक स्थलों की अपेक्षा सीरिया और अजनबियों के क़रीब अधिक बीता।

पहाड़ की दिशा में गाड़ी चलाने में बहुत आनंद आता था। सिंजर में मिठाई के साथ लैंब सैंडविच भी मिलते थे, जो हमें कोचो में उपलब्ध नहीं थे। मेरे पिता बीच में गाड़ी रोककर हमें अपनी इच्छा से कुछ भी ख़रीदने देते थे। ट्रक चलता तो धूल के बादल उठते थे, परंतु मुझे खुली हवा में चलना पसंद था। मैं गाँव से बाहर निकल जाने तक ट्रक में रखे बिस्तर पर लेटी रहती थी। मेरे बाल हवा में उड़ते और मुझे सड़क किनारे चरते पशुओं को देखना अच्छा लगता था। मेरे पिता और बड़े भाई इलियाज़ कहते थे कि मैंने सावधानी नहीं रखी, तो मैं ट्रक से नीचे गिर जाऊँगी।

लैंब सैंडविच के स्वाद और पहाड़ों से दूर, विपरीत दिशा में बाक़ी इराक स्थित था। शांतिकाल के दौरान यज़ीदी व्यापारी को कोचो से नज़दीकी सुन्नी गाँव पहुँचने में गाड़ी से केवल पंद्रह मिनट लगते थे और वह आसानी से अनाज या दूध बेचकर लौट सकता था। उन गाँवों में हमारे कई दोस्त थे और कुछ लड़कियाँ थीं, जिनसे विवाह के मौक़े पर मुलाक़ात होती थी। कुछ टीचर भी थे, जो कोचो के स्कूल में सोकर समय काटते थे। कुछ अन्य पुरुष थे, जो ख़तना संस्कार के दौरान लड़कों को पकड़ने के लिए हमें बुलाते थे। इस तरह उनके

साथ पहचान हो जाती थी, जिसे गॉड पैरंट की तरह किरीव नाम दिया जाता है। हम लोग बीमार पड़ते तो मुसलमान डॉक्टर, इलाज के लिए सिंजर शहर आते थे और मुसलमान व्यापारी भी शहर में कपड़े और मिठाइयाँ बेचते थे, क्योंकि वे चीज़ें कोचो की गिनी-चुनी दुकानों पर नहीं मिल पाती थीं। वहाँ केवल ज़रूरत का सामान मिलता था। मेरे भाई, गैर-यज़ीदी गाँव में कुछ काम करके पैसे कमाने चले जाते थे। इसके अलावा हमारे संबंधों पर शताब्दियों के अविश्वास का बोझ था। कई विवाह के मौक़े पर आए मुसलमान मेहमान, हमारा भोजन करने से मना कर देते, तो हमें बुरा लगता था। परंतु हमारे बीच सच्ची दोस्ती क़ायम थी और यह संबंध पीढ़ियों से चले आ रहे थे। इन्होंने ऑटोमन का नियंत्रण, अंग्रेज़ों का शासन-काल, सद्दाम हुसैन और अमेरिकी उद्योग का दौर भी देखा था। सुन्नी गाँवों के साथ नज़दीकी संबंध होने के कारण कोचो में हमारी पहचान थी।

इराक में जब भी लड़ाई होती, तो गैर-यज़ीदी गाँव भी हम पर हावी हो जाते थे। वे पुराने पूर्वाग्रह के कारण अपने यज़ीदी पड़ोसी से घृणा करते थे। घृणा के साथ हिंसा भी आती है। साल 2003 के बाद इराक पर ज़बरदस्ती अमेरिकी युद्ध थोपा गया था। उस बात को दस वर्ष बीत गए। स्थानीय स्तर पर होने वाली छोटी-मोटी लड़ाइयाँ, बड़े स्तर के आतंकवाद में बदल गईं और हमारे घरों की बीच दूरियाँ भी बढ़ने लगीं। पड़ोसी गाँव, आतंकियों को शरण देने लगे। वह ईसाइयों और गैर-सुन्नी मुसलमानों का विरोध करते थे। वे यज़ीदियों को नास्तिक समझते थे, यानी उनका मानना था कि हमारा ईश्वर में विश्वास नहीं था; इसलिए हमें जान से मार देना ठीक था। 2007 में कुछ आतंकी ईंधन से भरा टैंकर और तीन गाड़ियाँ लाए और उन्हें शहर के बीच खड़ा कर दिया। यह जगह कोचो से दस मील उत्तर-पश्चिम में थी। फिर उन्होंने सब गाड़ियों को उड़ा दिया, जिसमें सैकड़ों निर्दोष लोग मारे गए; जो यह सोचकर दौड़े थे कि उन गाड़ियों में बाज़ार में बेचने के लिए सामान आया था।

यज़ीदी धर्म, एक प्राचीन मत पर आधारित है। कुछ पवित्र लोगों ने इसका मौखिक प्रचार किया। हालाँकि उसमें अरस्तु-वाद से लेकर इस्लाम और जूडाइज़्म तक मध्य-पूर्व के बहुत-से धर्मों के भी कुछ

तत्व शामिल हैं। हमारी कहानियों को दूसरों को समझाना धार्मिक लोगों के लिए भी कठिन कार्य सिद्ध हुआ। मेरे विचार से यह धर्म, प्राचीन वृक्ष के समान है, जिसमें हज़ारों घेरे हैं और हर घेरा, यज़ीदियों के लंबे इतिहास की कहानी सुनाता है। यह दुख की बात है कि इनमें से अधिकांश कहानियाँ दुखांत हैं।

विश्व में लगभग दस लाख यज़ीदी रह गए हैं। मुझे पता है कि मेरे जन्म से पहले भी यह धर्म हमें परिभाषित और समुदाय की तरह जोड़ता आया है। इसी कारण हमें प्रताड़ित किया जाता रहा। ऑटोमन से लेकर सद्दाम के बाथिस्टों जैसे बड़े समुदायों ने हम पर हमले किए और हमें उनके प्रति वफ़ादार होने के लिए मजबूर किया। उन्होंने हमारे धर्म का अपमान किया और कहा कि हम शैतान की पूजा करते हैं, हम गंदे लोग हैं। हमसे अपना धर्म छोड़ने को भी कहा गया। हमें मिटा देने के अनेक प्रयास हुए। फिर भी यज़ीदी इन हमलों को कई पीढ़ियों से सहन करते रहे और जीवित रहे। हमें मारने, हमारा धर्म-परिवर्तन करने और हमें निष्कासित करने की भी कोशिशें की गईं। साल 2014 से पहले बाहरी ताक़तों ने हमें तेईस बार नष्ट करने का प्रयास किया। हम अपने ख़िलाफ़ हुए हमले को फ़रमान कहते हैं। यह ऑटोमन का शब्द है। बाद में हमने *नरसंहार* शब्द सीख लिया।

इस बीच उन दो अपहृत किसानों के लिए फिरौती की माँग हुई तो पूरा गाँव घबरा गया। अपहरणकर्ताओं ने किसानों की पत्नियों को फ़ोन करके चालीस हज़ार डॉलर की माँग रखी और कहा कि अगर धन नहीं दे सकते तो बच्चों सहित धर्म-परिवर्तन करके इस्लाम को अपनाएँ। उन्होंने कहा कि हमने ऐसा नहीं किया तो दोनों किसानों को मार दिया जाएगा। उनकी पत्नियाँ, गाँव के मुखिया अहमद जासो (मुख़्तार) के सामने रोते हुए पछाड़ मारकर गिर पड़ीं। हम जानते थे कि दोनों किसान, धर्म परिवर्तन करने के बजाय मर जाना पसंद करेंगे। फिर एक दिन अचानक रात को दोनों किसान क़ैदख़ाने की टूटी खिड़की से निकल भागे और जौ के खेतों को पार करते हुए, घुटनों तक धूल से सनकर भय से काँपते हुए घर आ गए। बाद में इस तरह के अपरहण और भी होते रहे।

इस घटना के तुरंत बाद दिशान नाम के एक व्यक्ति का अपहरण हो गया। उसे हमारे ताहा परिवार ने नौकरी दी थी। वह सिंजर पहाड़ के नज़दीकी मैदान में भेड़ों की रखवाली करता था। मेरी माँ और भाइयों को भेड़ें ख़रीदने और उनका प्रजनन करवाने में कई वर्ष लगे थे। उनके लिए हर भेड़, विजय का प्रतीक थी। हमें अपने पशुधन पर गर्व था। हम उन्हें आँगन में बाँधकर रखते थे। साल में एक बार भेड़ों का ऊन काता जाता था। इसे उत्सव की तरह मनाया जाता था। मुझे उसे देखना बहुत पसंद था। भेड़ों के शरीर से नर्म ऊन बादलों की तरह नीचे गिरता तो उसकी महक, पूरे घर में फैल जाती थी। मेरी माँ ऊन से मोटे गद्दे बनाती थी, जिन पर सोना मुझे बहुत पसंद था। भेड़ के एक बच्चे से मुझे इतना लगाव हो गया था कि जब उसका ऊन कातने का समय आया तो मुझसे देखा नहीं गया और मैं घर से बाहर निकल गई। दिशान के अपरहण के समय हमारे पास सौ से ज़्यादा भेड़ें थीं, जो हमारे लिए थोड़ी क़िस्मत की बात थी।

उन दो किसानों और मुर्गियों की बात सुनकर मेरा भाई सईद, परिवार का पिकअप ट्रक लेकर तुरंत सिंजर पर्वत की ओर चला गया। वह घर से बीस मिनट की दूरी पर था। वहाँ सड़क बन चुकी थी। वह भेड़ों को देखने गया था। "वे हमारी भेड़ें भी ले गए होंगे," हमने दुखी स्वर में कहा। "वही तो हमारी पूँजी हैं। वे ही हमारा सबकुछ हैं!"

बाद में सईद ने माँ को फ़ोन किया। वह थोड़ा हैरान था। उसने बताया कि वे लोग केवल दो भेड़ें ले गए थे; एक बूढ़ा नर और एक जवान मादा। शेष भेड़ आराम से हरी घास चर रही थीं। फिर मेरा भाई उन्हें लेकर घर लौट आया। हमने राहत की साँस ली। परंतु मेरा सबसे बड़ा भाई इलियाज़ चिंतित था। "मुझे यह बात समझ में नहीं आई," उसने कहा। "वे गाँव के लोग अमीर तो नहीं हैं। फिर उन्होंने बाक़ी भेड़ें क्यों छोड़ दीं?" उसका मानना था कि इसका अवश्य कोई अर्थ होगा।

दिशान का अपहरण हुआ तो कोचो में अफरा-तफरी मच गई। गाँव वाले अपने घरों के आगे जमा हो गए। पुरुषों ने गाँव की दीवारों से थोड़ा आगे एक चेकपोस्ट बनाई और बारी-बारी से पहरा देने लगे।

वे उसी जगह से कोचो से गुज़रने वाली अपरिचित गाड़ियों पर नज़र रखते थे। मेरा एक भाई हेज़्नी, सिंजर शहर में पुलिस की नौकरी करता था। वह घर लौटा तो गाँव के पुरुषों के साथ शामिल हो गया। लोग आगे की योजना पर बात करने लगे। दिशान के चाचा, अपहरणकर्ताओं से बदला लेना चाहते थे। उन्होंने कुछ लोगों के साथ मिलकर कोचो से पूर्व दिशा में स्थित एक गाँव पर हमला करने का फ़ैसला किया; जहाँ एक पारंपरिक सुन्नी कबीला रहता था। "हम भी उनके दो भेड़ चराने वाले लड़के उठा लेंगे," उसने ग़ुस्से से कहा। "फिर उन्हें दिशान को लौटाना ही पड़ेगा।"

यह बहुत जोखिम भरी योजना थी। सबने दिशान के चाचा का समर्थन नहीं किया। यहाँ तक कि मेरे भाइयों में भी, जिन्हें पिता से साहस और फूर्ति विरासत में मिली थी, इस बात पर मतभेद था। मेरा भाई सईद, जो मुझसे दो साल बड़ा था, अपनी बहादुरी सिद्ध करने के सपने देखता रहता था। वह बदला लेने के पक्ष में था, परंतु हेज़्नी, जो मुझसे लगभग दस साल बड़ा और सबसे ज़्यादा समझदार था, के अनुसार यह योजना ख़तरनाक थी। इसके बावजूद दिशान के चाचा ने कुछ साथियों के साथ मिलकर दो सुन्नी चरवाहों का अपहरण कर लिया और उन्हें कोचो ले आए। फिर वह उन्हें अपने घर में बंद करके इंतज़ार करने लगे।

गाँव के अधिकांश झगड़े, हमारा मुख़्तार, अहमद जासो सुलझा देता था। वह हेज़्नी के पक्ष में था। "हमारे संबंध अपने सुन्नी पड़ोसियों के साथ पहले ही अच्छे नहीं हैं," उसने कहा। "यदि हमने उनसे लड़ने की कोशिश की तो पता नहीं वह क्या करेंगे।" इसके अलावा जासो ने चेतावनी दी कि कोचो से बाहर की स्थिति, कल्पना से कहीं ज़्यादा जटिल और मुश्किल थी। इस्लामिक स्टेट या आईएसआईएस नाम का एक समूह, जिसका आरंभ इराक में हुआ; कुछ ही वर्षों में सीरिया तक फैल गया। उन्होंने हमारे पास के गाँवों पर क़ब्ज़ा कर लिया था। वे लोग काले कपड़ों में ट्रकों में बैठकर गाँव से गुज़रते तो हम उनकी

संख्या गिन सकते थे। मुख़्तार ने हमें बताया कि वही लोग थे जिन्होंने हमारे चरवाहों का अपहरण किया था। "इससे स्थिति और बिगड़ जाएगी," अहमद जासो ने दिशान के चाचा से कहा। इसके बाद सुन्नी लड़कों को छोड़ दिया गया। हालाँकि दिशान वापस नहीं लौटा।

अहमद जासो बहुत समझदार था और जासो परिवार को सुन्नी अरब कबीलों से वार्ता करने का दशकों का अनुभव था। गाँव के लोग किसी भी समस्या के समाधान और सलाह के लिए जासो के पास जाते थे। कोचो से बाहर, जासो परिवार को कुशल राजदूतों जैसी मान्यता प्राप्त थी। फिर भी कुछ लोगों का मानना था कि जासो की बात मान लेने से आतंकियों को यह संदेश जाएगा कि यज़ीदी अपनी रक्षा करने में अक्षम हैं। हमारे और आईएसआईएस के बीच इराकी कुर्द लड़ाकू थे। हम उन्हें पेशमेरगा कहते हैं। उन्हें दो महीने पहले मोसुल पर हुए क़ब्ज़े के बाद कोचो की रक्षा के लिए भेजा गया था। हम पेशमेरगा को अतिथि की तरह आदर देते थे। वे हमारे स्कूल में सोते और हर सप्ताह एक परिवार, अपनी भेड़ काटकर उन्हें भोजन करवाता था। बेचारे ग़रीब गाँव वालों के लिए यह बड़ा त्याग था। मैं भी उनका बहुत आदर करती थी। मैंने सीरिया और तुर्की की कुर्द महिलाओं के बारे में सुना था, जिनके पास हथियार थे और वे आतंकियों से लड़ती थीं। उनके विषय में सोचकर मेरा मन साहस से भर उठता था।

मेरे भाइयों समेत कई लोगों को लगता था कि हमें अपनी रक्षा स्वयं करनी चाहिए। वह गाँव के बाहर बने चेकपोस्ट की रखवाली करना चाहते थे। अहमद जासो के भाई ने कुर्द अधिकारियों को आश्वस्त करने का प्रयास किया कि पेशमेरगा की तरह यज़ीदियों की भी एक टुकड़ी बनाई जानी चाहिए। परंतु इस बात को नज़र अंदाज़ कर दिया गया। किसी ने यज़ीदियों को प्रशिक्षित करने या उन्हें आतंकियों से लड़ने के लिए प्रेरित नहीं किया। पेशमेरगा हमें यही आश्वासन देते रहे कि उनके रहते हमें चिंता करने की ज़रूरत नहीं है। वे इराकी कुर्दिस्तान की राजधानी की रक्षा के लिए जितना कृतसंकल्पित थे, उतनी ही सुरक्षा अन्य एजेंसियों की भी ज़िम्मेदारी थी। "सिंजर पर क़ब्ज़ा होने से पहले इरबिल पर क़ब्ज़ा होगा,"

पेशमेरगा कहते थे। हमें उन पर विश्वास करने को कहा गया और हमने वही किया।

अधिकांश परिवार घर पर हथियार रखते थे। उनके पास देसी राइफ़लें और बड़े चाकू थे, जो छुट्टी के दिन जानवरों को काटने के काम में आते थे। मेरे भाई और अनेक यज़ीदी पुरुष, 2003 के बाद सीमा पर गश्त लगाते थे या वे पुलिस में भर्ती हो गए थे। हमें विश्वास था कि वे लोग जब तक कोचो की सीमा पर पहरा दे रहे हैं, हमारे लोग उनके परिवारों की रक्षा कर सकेंगे। 2007 के हमलों के बाद भी पेशमेरगा ने नहीं, बल्कि ख़ुद गाँव वालों ने चारों ओर अवरोध तैयार किया। वे दिन और रात गश्त लगाते, चेकपोस्ट पर गाड़ियों को रोकते और अजनबियों पर नज़र रखते थे। जीवन सामान्य होने तक यही सिलसिला चलता रहा।

सब दिशान के अपरहण से घबराए हुए थे। परंतु पेशमेरगाओं ने कोई सहायता नहीं की। उन्हें लगता था कि यह गाँवों के बीच होने वाली छोटी-सी लड़ाई थी। उनका मानना था कि उन्हें कुर्दिस्तान क्षेत्रीय सरकार के प्रेसिडेंट मसूद बरज़ानी ने कोचो की नहीं, बल्कि कुर्दिस्तान की सुरक्षा और इराक के असुरक्षित इलाक़ों की देखभाल के लिए भेजा था। शायद वे भी हमारी तरह डरे हुए थे। उनमें से कुछ सैनिकों की उम्र मेरे सबसे छोटे भाई सईद की उम्र से ज़्यादा नहीं थी। परंतु युद्ध लोगों, विशेषकर पुरुषों को, बदल देता है। कुछ ही समय पहले की बात है जब सईद, मेरे और मेरी भतीजी कैथरीन के साथ घर के आँगन में खेलता था। उसे इतनी समझ नहीं थी कि लड़के गुड़िया से नहीं खेलते। इराक और सीरिया में हुई हिंसा ने सईद को बहुत अधिक प्रभावित किया। एक दिन वह इस्लामिक स्टेट द्वारा लोगों के सिर काटे जाने का वीडियो देख रहा था। वीडियो देखते समय उसके हाथ काँप रहे थे, लेकिन फिर भी उसने फ़ोन नहीं छोड़ा। मैंने भी वह वीडियो देखा। तभी हमारा बड़ा भाई मसूद आ गया। उसे यह देखकर बहुत ग़ुस्सा आया। *"तुम नादिया को यह सब क्यों दिखा रहे हो?"* वह सईद से नाराज़ होकर बोला। सईद डर गया, लेकिन मुझे पता था कि घर के समीप ऐसे हिंसक और डरावने दृश्यों से मुँह मोड़ना मुश्किल था।

मेरे मन में उन दो किसानों के बंदी होने का ख़याल आया, तो दिमाग़ में वही वीडियो घूमने लगा। *यदि पेशमेरगा ने दिशान को वापस लाने में हमारी सहायता नहीं की तो मुझे ही कुछ करना होगा, मैंने सोचा।* मैं अपने परिवार के ग्यारह बच्चों में सबसे छोटी थी और लड़की थी। मुझे ज़्यादा बोलने की आदत थी और मेरी बात सुनी जाती थी। मुझे ग़ुस्सा आता, तो मैं ख़ुद को 'बड़ा' महसूस करने लगती थी।

हमारा घर गाँव के उत्तरी छोर पर स्थित था। उस एक मंज़िला घर में मिट्टी व ईंट से बने कमरे थे जो हार में पिरोए मोतियों की तरह दिखते थे। उनमें दरवाज़ा नहीं था और वह सब एक बड़े-से आँगन में खुलते थे, जहाँ सब्ज़ियों का बगीचा था। उसी में एक तंदूर था। वहीं कुछ भेड़ और मुर्गियाँ भी रहती थीं। मैं घर में अपनी माँ के साथ रहती थी। साथ में आठ भाई, दो बहनें, दो भाभियाँ और उनके बच्चे भी रहते थे। कुछ ही दूर मेरे अन्य भाई, सौतेले भाई, सौतेली बहनें और चाचियाँ, चाचा और उनकी संतानें भी रहती थीं। सर्दियों में बारिश के समय हमारी छत टपकती थी और इराक में गर्मियों का मौसम तो भट्टी जैसा लगता था। हमें छत पर सोना पड़ता था। एक बार हमारे घर की छत का एक हिस्सा गिर गया और फिर जब हमें अधिक जगह की ज़रूरत पड़ी, तो हमने मसूद मैकेनिक की दुकान से धातु की चद्दरों से ढँक दिया। हम नए घर के लिए पैसा बचा रहे थे। हमें आशा थी कि दूसरा घर अधिक स्थाई और पक्का होगा। हम अपने सपने की ओर हर दिन थोड़ा-थोड़ा आगे बढ़ रहे थे।

मैं सामने के दरवाज़े से घर के भीतर घुसी और दौड़कर कमरे में चली गई। मेरे साथ और भी लड़कियाँ रहती थीं। उस कमरे में एक आईना था। मैंने सिर पर हल्के रंग का एक स्कार्फ़ लपेटा। मैं अक्सर उसे पहनती थी ताकि बाल उड़कर आँखों में ना जाएँ। कभी मुझे ख़याल आता था कि लड़ाई पर जाने वाले योद्धा को किस तरह की तैयारी करनी पड़ती होगी। खेत पर कई वर्ष काम करने के कारण मैं बहुत मज़बूत हो चुकी थी। फिर मुझे यह नहीं पता था कि कोचो से कभी अपहरणकर्ता गुज़रे तो मैं क्या करूँगी। मैं उनसे क्या कहूँगी? मैंने शीशे में देखा और चिल्लाने का अभ्यास किया, "आतंकवादी

हमारे लोगों को उठाकर ले गए हैं। आप उन्हें रोक सकते थे। कम से कम हमें इतना तो बता सकते हैं कि उन्हें कहाँ ले जाया गया है।" फिर मैंने आँगन में पड़ी एक छड़ी उठाई और आगे के दरवाज़े की ओर चली गई। वहाँ मेरे भाई, मेरी माँ के साथ बातचीत में व्यस्त थे। उन्हें पता भी नहीं चला कि मैं उनके पास आकर खड़ी हो गई।

कुछ देर के बाद अपहर्ताओं के गाँव से सफ़ेद रंग का एक ट्रक मुख्य सड़क पर आया। उसमें आगे दो और पीछे भी दो लोग बैठे थे। वे शायद सुन्नी जाति के अरब थे, जो दिशान को उठाकर ले गए थे। उनका ट्रक मुख्य सड़क पर चलने लगा, जो हमारे गाँव के बीच से गुज़रती थी। वे बहुत धीरे चल रहे थे मानो उन्हें किसी का डर नहीं था। कोचो के रास्ते सिंजर और मोसुल के शहरों को जोड़ने वाली सड़कों पर से उनका गुज़रने का कोई कारण नहीं था। मैं अपने परिवार को छोड़कर सड़क के बीच में भागी और ट्रक के सामने खड़ी हो गई। "रुक जाओ!" मैंने चिल्लाकर कहा और छड़ी को सिर के ऊपर घुमाया। मैं अपनी उम्र से बड़ा दिखना चाहती थी। "मुझे बताओ दिशान कहाँ है?"

मेरे परिवार के सदस्यों ने मिलकर मुझे रोक लिया। "तुम्हें क्या लगता है कि तुम क्या कर लोगी?" इलियास ने मुझे डाँटते हुए कहा। "उन पर हमला करोगी? उनकी गाड़ी का शीशा तोड़ दोगी?" इलियास और मेरे भाई-बहन खेतों से लौटे ही थे और सब थके हुए थे। उनसे प्याज की दुर्गंध आ रही थी। मेरे द्वारा दिशान का बदला लेने की यह कोशिश उन्हें बचकानी लगी। मेरी माँ भी मुझसे नाराज़ थी। सामान्य परिस्थितियों में वह मेरा ग़ुस्सा सहन कर लेती थी और कभी-कभी उसे आनंद भी आता था। परंतु उन दिनों सब घबराए हुए थे। एक अविवाहित लड़की द्वारा सबका ध्यान आकर्षित करना ख़तरनाक हो सकता था। "यहाँ बैठो!" मेरी माँ ने कड़क स्वर में कहा। "तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए। यह तुम्हारा काम नहीं है। घर के मर्द इस बात का ख़याल रखेंगे।"

ज़िंदगी फिर से सामान्य रफ़्तार पर चल पड़ी। इराकी और ख़ासतौर पर यज़ीदी तथा अन्य अल्पसंख्यक समुदाय, नए ख़तरों के

साथ खुद को जल्दी ढाल लेते हैं। यदि किसी लड़ाई-झगड़े वाले देश में सामान्य ढंग से जीना है तो यह सीखना ही पड़ता है। इसके लिए ज़्यादा कोशिश नहीं करनी पड़ती। हम अब पहले की तरह पढ़ाई ख़त्म करने, खेती छोड़कर कम मेहनत का काम करने और समय पर शादी करने के सपने नहीं देखते थे। ख़ुद को यह समझाना मुश्किल नहीं था कि शुरू में जो सपने देखे थे, उन्हें पूरा नहीं किया जा सकता था। कभी-कभी यह बदलाव इतनी धीमी गति से होते थे कि किसी को पता नहीं चलता था। हमने स्कूल के मुसलमान विद्यार्थियों से बात करना छोड़ दिया और गाँव में किसी अजनबी को देखकर हम घर के भीतर चले जाते थे। टीवी पर ख़बर देखते तो हमें राजनीति की चिंता होने लगती थी। लगता था कि चुप रहना ही ठीक है। हर बार हमले के बाद वे कोचो के बाहर मलबे का ढेर डाल जाते थे। एक दिन हमने पाया कि मलबा चारों तरफ़ फैल चुका था। हमें असुरक्षित लगने लगा। गाँव के पुरुषों ने मिलकर गाँव के चारों ओर एक गड्ढा खोद दिया।

पीढ़ी-दर-पीढ़ी हमने कष्ट सहन करने की आदत डाल ली थी। हमारे लिए यह सामान्य बात हो चुकी थी। मैं सोचती थी कि इसकी क्या ख़ास वजह है कि हमें अपमान को स्वीकार करना पड़ता है, जैसे कि हमारे खाने से इंकार कर दिया जाए। यह संभवतः वैसा जुर्म लगता था, जिस पर किसी ने पहली बार ध्यान दिया हो। इसके अलावा फ़रमान जारी होने का ख़तरा अलग था। यज़ीदियों ने इस अपमान को भी स्वीकार कर लिया था। हालाँकि यह फ़ैसला विकृतिभरा था। इससे हमें दुख होता था।

दिशान अब तक बंदी था। मैं अपने भाइयों के साथ प्याज़ के खेतों में लौट आई थी। वहाँ कुछ नहीं बदला था। हमने महीनों पहले जो सब्ज़िया लगाई थीं, वे तैयार थीं। हम उन्हें नहीं काटते तो उसे कोई नहीं काटता। हम उसे नहीं बेचते तो पैसा नहीं मिलता। इसलिए हम पंक्ति बनाकर घुटनों के बल बैठे और ज़मीन से प्याज निकालने लगे। हमने उन्हें प्लास्टिक के थैलों में इकट्ठा करना शुरू किया। उन्हें बाज़ार में बेचने से पहले कुछ समय पकाने के लिए रखा जाना था। *क्या हम उन्हें इस बार मुसलमानों के गाँव में ले जाएँगे?* हम सोचते

थे। परंतु इसका उत्तर नहीं मिलता था। बीच-बीच में कोई काला दुर्गंध वाला सड़ा प्याज निकल आता और हम नाक बंद कर लेते थे।

हमारे पास सामान्यतः यही एक काम था। हम एक-दूसरे से बातें करते और लाखों बार सुनी कहानियों को फिर दोहराते थे। एक किस्सा याद करके सब हँसने लगे। मैं गाड़ी का पीछा कर रही थी और मेरा स्कार्फ़ आँखों के आगे आ रहा था। हम सबको हँसी आ गई और हम कचरे में गिर पड़े। हम हँसते-खेलते, काम करते और देखते कि कौन सबसे ज़्यादा प्याज उखाड़ता था। सूरज ढलने पर हम घर पर माँ के साथ भोजन की तैयारी करने लगते और फिर छत पर एक-दूसरे के कंधे पर सिर टिकाकर बैठ जाते थे। चाँद को देखते और बातचीत करते-करते सब शांत होकर सो जाते थे।

हम यह जान नहीं पाए कि अपहरणकर्ताओं ने हमारी मुर्गियों, चूजों और दो भेड़ों को क्यों चुराया था। हमें इसका कारण दो सप्ताह के बाद पता लगा, जब आईएसआईएस ने कोचो और लगभग पूरे सिंजर पर क़ब्ज़ा कर लिया। एक आतंकवादी ने कोचो वासियों को गाँव के स्कूल में एकत्रित किया और औरतों को अपरहण के बारे में समझाते हुए कहा, "तुम्हें लगता है हम अचानक आ गए हैं, लेकिन हमने तुम्हें कई संदेश भेजे थे," उसने कहा। उसकी बंदूक हवा में लहरा रही थी। "हमने जब मुर्गियों और चूजों को उठाया तो हम बताना चाहते थे कि हम तुम्हारे गाँव की स्त्रियों और बच्चों को ले जाएँगे। भेड़ को उठाया तो वह तुम्हारे मुखिया को उठाने का संकेत था और फिर हमने उसे मार दिया, जिससे हम बताना चाहते थे कि हम तुम्हारे मुखिया को मारने की योजना बना रहे हैं। जवान भेड़, तुम्हारी लड़कियों की प्रतीक थी।"

2

मेरी माँ मुझसे प्यार तो करती थीं, लेकिन मुझे जन्म नहीं देना चाहती थीं। मुझे अपने गर्भ में धारण करने से कुछ महीने पहले तक माँ ने इधर-उधर से पैसे बचाए। कभी बाज़ार से बचे खुल्ले पैसे तो कभी टमाटर बेचने से जो मिला; उसे बचा लिया। माँ उन पैसों से गर्भ-निरोधक साधन ख़रीदना चाहती थी। परंतु उनमें मेरे पिता से पूछने का साहस नहीं था। यज़ीदी, अपने धर्म से बाहर विवाह नहीं करते और धर्म-परिवर्तन भी वर्जित है। इसलिए अपने समाज को ख़त्म होने से बचाने का सबसे अच्छा तरीक़ा है - बड़ा परिवार। इसके अतिरिक्त ज़्यादा बच्चे होने से खेतों पर मदद मिलती थी। मेरी माँ ने किसी तरह तीन महीने तक गर्भ-निरोधक गोलियाँ ख़रीदीं। फिर पैसे ख़त्म हो गए तो वह गर्भवती हो गईं। मैं अपनी माता-पिता की ग्यारहवीं और अंतिम संतान थी।

मेरी माँ, मेरे पिता की दूसरी पत्नी थी। पहली पत्नी की कम आयु में मृत्यु हो गई थी। उनसे पिताजी को चार बच्चे हुए, जिन्हें बड़ा करने के लिए पिताजी को घर में एक औरत की ज़रूरत थी। मेरी माँ बहुत सुंदर थी। वह कोचो के एक धार्मिक ग़रीब परिवार में पैदा हुई और उनके पिता ने ख़ुशी से उनकी शादी मेरे पिता से कर दी। मेरे पिता के पास थोड़ी ज़मीन और कुछ पशु थे। उनके पास काफ़ी धन-दौलत थी। इससे पहले कि माँ खाना बनाना सीख पाती, अपने बीसवें जन्मदिन पर उनकी शादी हो गई और वह चार बच्चों की सौतेली माँ बन गईं। वह स्वयं भी जल्दी गर्भवती हो गई थीं। वह कभी स्कूल नहीं गई, इसलिए उन्हें लिखना-पढ़ना नहीं आता था।

अधिकांश यज़ीदियों की मातृभाषा कुर्द है। मेरी माँ को अरबी बोली नहीं आती थी। वह विवाह या व्यापार के लिए आने वाले अरबी ग्रामीणों से ज़्यादा बात नहीं कर पाती थीं। यहाँ तक कि उन्हें हमारी धार्मिक कथाएँ भी समझ में नहीं आती थीं। परंतु मेरी माँ ने मेहनत की और एक किसान की पत्नी को जो करना पड़ता है, उन्होंने वह सबकुछ किया। ग्यारह बच्चों को जन्म देना काफ़ी नहीं था। उन्हें हर बार प्रसव-पीड़ा से गुज़रना पड़ता और एक बार तो जुड़वाँ भाई, सउद और मसूद पैदा हुए। उनका जन्म घर पर ही हुआ था। इसके अतिरिक्त मेरी गर्भवती माँ से यह भी अपेक्षा की जाती थी कि वह ईंधन की लकड़ी काटकर लाए, खेत में मदद करे, ट्रैक्टर चलाए और प्रसव होने तक सब काम करती रहे और फिर बच्चे के जन्म के बाद उसे भी साथ लेकर काम पर जाए।

कोचो के आसपास वाले क्षेत्र में लोग, मेरे पिता को परंपरागत धार्मिक यज़ीदी मानते थे। उनके बाल लंबे थे और वह सिर पर सफ़ेद कपड़ा बाँधते थे। कभी-कभी कव्वाल या बाँसुरी व ड्रम बजाते और प्रार्थनाएँ गाते हुए धार्मिक गुरु कोचो आते थे, तो उनका स्वागत करने वालों में मेरे पिता भी शामिल होते थे। वह अतिथि-गृह, जिसे जेवात कहते हैं, के प्रमुख व्यक्ति थे। उसी जगह गाँव के लोग समाज से जुड़ी समस्याएँ लेकर मुख़्तार से बात करते थे।

मेरे पिता को शारीरिक चोट से अधिक अन्याय देखकर कष्ट होता था। उनका गौरव ही उनका बल था। गाँव वालों को मेरे पिता की बहादुरी की कथाएँ सुनाना पसंद था। वह बताते कैसे उन्होंने अहमद जासो को पड़ोसी कबीले से बचाया था। वह कबीला मुख़्तार को मार देना चाहता था। मेरे पिता सुनाते थे एक बार किसी सुन्नी अरब कबीले के मुखिया के कुछ अरबी घोड़े अस्तबल से भाग निकले तो किस तरह मेरे पिता ने कोचो के एक ग़रीब किसान को बचाया था, क्योंकि वह किसान एक घोड़े पर सवारी करता पकड़ा गया था।

मेरे पिता की मृत्यु के बाद उनके मित्र कहते थे, "तुम्हारे पिता हमेशा सही बात का पक्ष लेते थे।" एक बार उन्होंने इराकी सेना से बचकर भाग रहे एक कुर्द विद्रोही को अपने घर में आश्रय दिया था,

जबकि वह व्यक्ति पुलिस को साथ लेकर पिताजी के दरवाज़े तक पहुँच गया था। लेकिन मेरे पिता ने बातचीत से रास्ता निकाला। उन्होंने पुलिस से कहा, "मैंने इसे राजनीतिक कारण से नहीं बचाया। मैंने इंसानियत के नाते सहायता की है।" फिर पुलिस ने उसे छोड़ दिया। वर्षों बाद उनके दोस्त ने याद करते हुए हैरानी से बताया, "वह विद्रोही मसूद बरज़ानी का दोस्त निकला!"

मेरे पिता किसी को परेशान नहीं करते थे, लेकिन ज़रूरत पड़ने पर वह लड़ते भी थे। एक दुर्घटना में उनकी एक आँख चली गई और आँख की खोल में केवल कंचे जैसी सफ़ेद गोली रह गई थी। उन्हें देखकर डर लगता था। मुझे कई बार यह विचार आया कि कोचो में आईएसआईएस द्वारा हमले के समय मेरे पिता जीवित होते तो वह अवश्य आतंकवादियों के ख़िलाफ़ हथियारबंद विद्रोह खड़ा कर देते।

1993 तक, जब मेरा जन्म हुआ; मेरे माता-पिता का संबंध टूटने के कगार पर था। मेरी माँ को बहुत कष्ट होता था। मेरे पिता की पहली पत्नी से जन्मा सबसे बड़ा बेटा, एक वर्ष पहले ईरान-इराक युद्ध में मारा गया। उसके बाद मेरी माँ और पिता के बीच संबंध बिगड़ गए। मेरे पिता, सारा नाम की एक स्त्री को घर ले आए और उससे शादी कर ली। यज़ीदी धर्म में एक से अधिक पत्नियाँ रखने पर पाबंदी नहीं है, लेकिन कोचो में सब लोग ऐसा नहीं करते। हालाँकि मेरे पिता को किसी ने कुछ नहीं कहा। सारा से विवाह करने तक मेरे पिता के पास काफ़ी ज़मीन और भेड़ें थीं। ईरान से हो रहे युद्ध और अन्य प्रतिबंधों के चलते इराक में लोगों का रहना मुश्किल हो रहा था और उन्हीं परिस्थितियों में मेरे पिता को सहायता के लिए बड़े परिवार की ज़रूरत थी। इतना बड़ा परिवार, अकेले मेरी माँ के लिए दे पाना मुश्किल था।

मैं आज भी अपने पिता और सारा के विवाह की निंदा नहीं कर सकती। केवल वही व्यक्ति जिसकी आजीविका साल-भर में ऊगने वाले टमाटरों की संख्या अथवा पशुओं के चारागाह मिलने पर निर्भर करती हो; यह समझा जा सकता है कि उसे एक अन्य पत्नी और अधिक बच्चों की ज़रूरत क्यों थी। इसमें व्यक्तिगत कुछ नहीं था।

हालाँकि बाद में मेरे पिता ने माँ को औपचारिक रूप से छोड़ दिया। उन्होंने सबको घर के पीछे की छोटी-सी इमारत में रहने भेज दिया, जबकि हमारे पास ज़्यादा धन और ज़मीन नहीं थी। उस समय मुझे लगा कि दूसरा विवाह करना व्यवहारिक नहीं था। वह मेरी माँ से अधिक सारा से प्रेम करते थे। मैंने इस बात को भी स्वीकार कर लिया, जैसे मैंने स्वीकार किया था कि एक नई पत्नी को घर लाने से माँ को अवश्य दुख होगा। मेरे पिता के जाने के बाद मेरी माँ, मुझे और मेरी दो बहनों, दीमल और अदकी से कहती, "ईश्वर ने चाहा तो मेरे साथ जो हुआ, वह तुम्हारे साथ नहीं होगा।" मैं अपनी माँ जैसी बनना चाहती थी। मैं केवल इतना चाहती थी कि कोई मुझे उनकी तरह अकेला नहीं छोड़ दे।

मेरे भाई हालाँकि इस बात को जल्दी स्वीकार नहीं कर पाए। एक बार मसूद, मेरे पिता पर चिल्ला पड़ा था, "ईश्वर आपको इसकी सज़ा अवश्य देगा!" परंतु बाद में सबको लगा कि मेरी माँ और सारा के साथ नहीं रहने से हमारा जीवन सरल हो गया था, क्योंकि दोनों स्त्रियाँ, हमेशा मेरे पिता का प्रेम पाने के लिए प्रयास करती रहती थीं। कुछ सालों के बाद हम मिलकर रहना भी सीख गए। कोचो छोटी जगह थी। हमने अपने पिता और सारा को कई बार साथ में देखा था। मैं उनके घर के आगे से गुज़रती थी। उसी घर में मेरा जन्म हुआ था। मेरा स्कूल का वही रास्ता था। वहाँ केवल एक कुत्ता था, जो मुझे जानता था; इसलिए मुझे देखकर भौंकता नहीं था। हम छुट्टियाँ साथ में बिताते थे और मेरे पिता मुझे कभी-कभी सिंजर शहर या पहाड़ों की सैर करवाने ले जाते थे। मेरे पिता को 2003 में दिल का दौरा पड़ा। हमने देखा कि किस तरह वह अचानक बीमार और बूढ़े दिखने लगे थे। उन्हें व्हीलचेयर की ज़रूरत पड़ गई। उनका अधिकांश समय अस्पताल में बीतता था। उनके मरने के कुछ दिन के बाद हमें लगा कि वह शायद दिल का दौरा पड़ने से नहीं, बल्कि अपनी कमज़ोरी पर आई शर्म से मरे थे। मसूद को भी अपने पिता पर ग़ुस्सा करने और चिल्लाने का दुख था। वह मानता था कि उसके पिता इतने मज़बूत थे कि वह कुछ भी सहन कर सकते थे।

मेरी माँ धार्मिक थी और वह प्रतीकों व सपनों में बहुत विश्वास करती थीं। यज़ीदी, वर्तमान का विश्लेषण करने या भविष्य के बारे में जानने के लिए इनका उपयोग करते थे। आकाश में चंद्रमा दिखता तो मेरी माँ घर के आँगन में मोमबत्तियाँ जला देती थीं। वह कहती, "इस समय बच्चे अक्सर बीमार पड़ते या दुर्घटनाग्रस्त हो जाते हैं। मैं प्रार्थना कर रही हूँ, ताकि तुम्हें ऐसा कुछ नहीं हो।"

मैं बीमार होती तो माँ मुझे चिकित्सक के पास ले जातीं। वह मुझे जड़ी-बूटियाँ और चाय देता था। परंतु मुझे उसका स्वाद पसंद नहीं था। गाँव में किसी की मृत्यु हो जाती तो मेरी माँ यज़ीदी संत, जिसे कोचेक कहते हैं, के पास जाकर यह पुष्टि करती थी कि मरने वाले का पुनर्जन्म हो गया है। उत्तरी इराक में एक घाटी है, जहाँ हमारे अधिकांश धार्मिक स्थल स्थित हैं। यज़ीदी तीर्थ-यात्री, अपने साथ वहाँ की मिट्टी कपड़े में बाँधकर उसका त्रिकोण बना लेते हैं और फिर उसे जेब में ताबीज की तरह सँभालकर रखते हैं। मेरी माँ भी हमेशा वह पवित्र मिट्टी साथ रखती थीं। "नादिया, तुम्हारे भाइयों को सुरक्षा की ज़रूरत है," मेरी माँ कहती। "उनका काम बहुत ख़तरनाक है।"

मेरी माँ अत्यंत व्यवहारिक और मेहनती थीं। वह हमारे जीवन को बेहतर बनाने के लिए हर संभव प्रयास करती रहीं। यज़ीदी समाज, इराक के ग़रीब समाजों में से एक है, और मेरा परिवार कोचो के मापदंडों से भी ज़्यादा ग़रीब था। मेरे माता-पिता के अलग हो जाने के बाद हमारी स्थिति और बिगड़ गई। वर्षों तक मेरे भाइयों ने मेहनत की। वे सल्फ़र भरी गीली ज़मीन अपने हाथों से खोदते और उसमें नीचे तक उतर जाते थे। उन्हें हड्डियों का ख़याल रखना पड़ता था। वे मेरी माँ और बहनों के साथ, दूसरे लोगों की ज़मीन पर खेती भी करते थे। उससे होने वाले मुनाफ़े का बहुत छोटा हिस्सा उन्हें मिलता था। मेरे जीवन के आरंभिक दस वर्षों में हमने शायद ही कभी रात के भोजन में मीट खाया होगा। हम अधिकतर उबली सब्ज़ियाँ खाते थे। मेरे भाइयों को नई पतलून ख़रीदने का मौक़ा तब मिलता था, जब पुरानी पतलून में से उनके पैर नज़र आने लगते थे।

साल 2003 के बाद उत्तरी इराक में आर्थिक सुधार हुए। माँ के परिश्रम के चलते हमारी और अन्य यज़ीदियों की परिस्थितियाँ बेहतर होने लगीं। केंद्र और कुर्द की सरकारों द्वारा यज़ीदियों के लिए भर्ती शुरू हुई, तो मेरे भाइयों को सीमा पर पहरा देने का काम मिल गया। उस काम में ख़तरा था। मेरा भाई जालो, ताल अफ़ार एयरपोर्ट की पुलिस सुरक्षा इकाई में तैनात था। उस इकाई के कई लोग पहले ही साल में लड़ाई में मारे गए थे, परंतु उसमें पैसे अच्छे मिलते थे। आख़िरकार, हम पिता की ज़मीन छोड़कर अपने घर में रहने लगे।

लोग मेरी माँ को उनके धार्मिक स्वभाव और ईमानदारी के लिए जानते थे। उन्हें माँ के हँसमुख स्वभाव को देखकर आश्चर्य होता था कि वह किस तरह जीवन की कठिनाइयों को हँसकर टाल देती थीं। उनके अंदर किसी भी बात को मज़ाक़ में उड़ा देने की क्षमता थी। मेरे माता-पिता के अलग होने के कुछ समय बाद एक व्यक्ति कोचो में आया। वह शायद मेरी माँ का ध्यान आकर्षित करना चाहता था। उन्हें जब यह पता लगा कि वह दरवाज़े पर खड़ा है, तो वह हाथ में छड़ी लेकर उस आदमी के पीछे दौड़ीं और उसे लौट जाने को कहा। उन्होंने पहले ही तय कर लिया था कि वह दोबारा शादी नहीं करेंगी। मेरी माँ हँसते हुए घर लौट आईं। "तुम्हें देखना चाहिए था वह बेचारा कितनी बुरी तरह डर गया था!" माँ ने उसकी नक़ल करते हुए कहा। हम भी उनके साथ हँसने लगे। "अगर मुझे शादी करनी भी होगी तो ऐसे आदमी से बिलकुल नहीं करूँगी, जो हाथ में छड़ी लिए किसी बूढ़ी औरत से डर कर भाग जाए!"

माँ हर बात पर मज़ाक़ कर लेती थीं। उन्हें मेरे पिता द्वारा छोड़े जाने पर, बालों और मेकअप पर, यहाँ तक कि अपनी असफलताओं पर भी हँसना आता था। वह मेरे जन्म से पहले से ही वयस्क शिक्षा कार्यक्रम में पढ़ने जाती थी। मैं बड़ी हुई, तो मैंने उन्हें पढ़ाना शुरू कर दिया। उनमें सीखने की बहुत लगन थी। ऐसा शायद इसलिए था कि उनमें अपनी ग़लतियों पर हँसने की योग्यता थी।

मेरी जन्म से पहले गर्भनिरोधक गोलियों वाली बात को वह ऐसे सुनातीं मानो किसी किताब से कहानी पढ़ रही हों। वह मुझे गर्भ में

नहीं लाना चाहती थीं। यह बड़ी मज़ेदार बात है, क्योंकि बाद में मेरे बिना जीवन की कल्पना करना उनके लिए कठिन हो गया था। मेरे पैदा होते ही उन्हें मुझसे प्यार हो गया। मैं प्रतिदिन नाश्ता बनाते समय उनसे बातें करती थी। हम दोनों ख़ूब हँसते थे। वह मेरी बहनों या दूसरे बच्चों को प्यार करती तो मुझे ईर्ष्या होती थी। मैंने कभी घर नहीं छोड़ने की कसम खाई। मेरे जन्म के दिन से ही हम एक बिस्तर पर सोते थे। परंतु कोचो में आईएसआईएस के हमले के बाद सबकुछ बदल गया। उन्होंने एक साथ माता और पिता दोनों की भूमिकाएँ निभाईं। बाद में यह सोचकर कि उन्होंने हमारे लिए कितना कष्ट उठाया होगा, हमें उनसे और प्यार हो गया था।

मुझे अपने घर से बहुत लगाव था। मैंने किसी अन्य जगह रहने की कल्पना नहीं की। बाहरी लोगों की नज़र में कोचो में बहुत ग़रीबी थी। वे सोचते थे कि कोचो के लोग ख़ुश नहीं रह सकते। वह स्थान वीरान और बंजर था और वहाँ ग़रीबी का स्थायी वास था। शायद अमरीकी सैनिकों को भी ऐसा ही लगता था क्योंकि वे गाँव आते तो बच्चे उन्हें घेरकर खड़े हो जाते थे और पेन व टॉफ़ी माँगते थे। मैं भी उन बच्चों में एक थी।

कुर्द के कुछ नेता कभी-कभी कोचो आते थे, हालाँकि यह अधिकतर चुनावों से पहले होता था। कुर्दवासियों की कुर्दिस्तान डेमोक्रेटिक पार्टी (केडीपी) ने 2003 के बाद कोचो में एक कार्यालय स्थापित किया किंतु वह गाँववासियों के लिए क्लब का काम करता था। उस पार्टी के बहुत-से कार्यकर्ताओं को शिकायत थी कि केडीपी के लोग उन पर पार्टी के समर्थन का ज़ोर देते थे और उन्हें यह कहने पर विवश करते थे कि यज़ीदी, कुर्द है और सिंजर, कुर्दिस्तान का हिस्सा है। इराकी नेता हमारी उपेक्षा करते थे और सद्दाम ने हमें यह कहने पर विवश किया कि हम अरबी हैं। उन्होंने सोचा कि हमें अपनी पहचान त्याग देने के लिए धमकी देना संभव था। सद्दाम जानता था कि हमने एक बार ऐसा कह दिया तो हम फिर कभी विद्रोह नहीं कर सकेंगे।

कोचो में रहना विद्रोह करने के समान था। 1970 के दशक के दौरान सद्दाम ने बहुत-से अल्पसंख्यकों को ज़बरदस्ती उनके गाँवों और शहरों से निकालकर छोटे-छोटे घरों में स्थापित करने की कोशिश की जहाँ उन्हें नियंत्रित करना सरल था। इस अभियान को लोग उत्तर का 'अरबीकरण' कहते थे। परंतु कोचो, पहाड़ से इतनी दूर था कि हम लोग बच गए। यज़ीदी परंपराएँ, जो इन समुदायों में पुरानी पड़ चुकी थी, मेरे गाँव में अब तक ज़िंदा थीं। स्त्रियां सफ़ेद पोशाकें और सिर पर स्कार्फ़ पहनती थीं। विवाह के उत्सव पर पुराना यज़ीदी संगीत और नृत्य देखने को मिलता था। हम अपराधों का प्रायश्चित करते थे जबकि अनेक यज़ीदियों ने पुरानी परंपराओं को छोड़ दिया था। वह स्थान सुरक्षित था और लोग मिलकर रहते थे। ज़मीन या विवाह-संबंधी झगड़े होने पर भी कोई बुरा नहीं मानता था और उसका कोई प्रभाव भी देखने को नहीं मिलता था। गाँव वाले एक-दूसरे के घरों में देर रात तक आते-जाते और गलियों में निडर टहलते थे। मैंने लोगों को कहते सुना था कि रात में कोचो, दूर से चमकता है। अदकी ने किसी से यहाँ तक सुना कि कोचो, 'सिंजर का पेरिस' है!

कोचो, बच्चों से भरा गाँव था। वहाँ बहुत कम बूढ़े लोग रह गए थे। इसलिए लोग यही सोचते थे कि दुनिया अभी इतनी आधुनिक और सभ्य नहीं हुई कि किसी बड़े समुदाय को केवल उनके धर्म के आधार पर मारा जा सकता था। हम अतीत में हुए नरसंहार को कहानी की तरह सुनकर बड़े हुए और इसी कारण, हम मिलकर रहते थे। ऐसी ही एक कहानी है जब मेरी माँ की एक सहेली ने तुर्की में हुए दमन से बचकर भागने की अपनी कहानी सुनाई थी। वहाँ अनेक यज़ीदी रहते थे और वह लड़की, अपनी माँ और बहन के साथ रहती थी। वे लोग कई दिनों तक गुफा में फँसे रहे। उनके पास खाने को कुछ नहीं था। उसकी माँ ने चमड़ा उबालकर किसी तरह खुद को ज़िंदा रखा। मैंने यह कहानी कई बार सुनी और हर बार उसे सुनकर मन बेचैन हो जाता था। मैं यही मानती थी कि मैं भूखी मर जाऊँगी किंतु चमड़ा नहीं खाऊँगी। वह सिर्फ़ एक कहानी थी।

यह सच है कि कोचो का जीवन कठिन था। हालाँकि माता-पिता अपने बच्चों से प्यार करते थे, परंतु बच्चे भी उन पर बोझ थे। उन्हें

दिन-रात परिवार के पालन-पोषण के लिए मेहनत करनी पड़ती थी। जड़ी-बूटियों से बीमारी ठीक नहीं होती थी तो डॉक्टर से दवाई लाने सिंजर या मोसुल जाना पड़ता था। हमें कपड़ों की आवश्यकता होती तो माँ हाथ से कपड़े सिलती थीं। बाद में हमारे पास थोड़ा पैसा हो गया तो हम बाज़ार से साल में एक बार कपड़े ख़रीद पाते थे। सद्दाम को सत्ता से हटाने के लिए संयुक्त राष्ट्र ने जब इराक पर प्रतिबंध लगाए तो हम रो पड़े, क्योंकि हमें चीनी नहीं मिलती थी। फिर गाँव में एक प्राथमिक विद्यालय और बाद में एक बड़ा स्कूल बना। परंतु माता-पिता को सोचना पड़ता था कि वे बच्चों को पढ़ाएँ अथवा उनसे घर का काम करवाएँ। हमें बहुत समय तक शिक्षा से वंचित रखा गया। इराकी सरकार और धर्म-गुरु भी यही कोशिश करते थे, क्योंकि उन्हें इस बात की चिंता थी कि शिक्षा से अंतरजातीय विवाह और धर्म-परिवर्तन को बढ़ावा मिलेगा तथा यज़ीदियों की पहचान खत्म होती जाएगी। परंतु माता-पिता के लिए मुफ़्त के मजदूर खो देना एक बड़ा त्याग था। माता-पिता यह भी सोचते थे कि बच्चों का भविष्य कैसा होगा, कहाँ नौकरी मिलेगी, कैसा काम होगा? कोचो में कुछ काम नहीं था और गाँव से बाहर स्थायी जीवन के लिए केवल वही लोग तैयार होते थे, जो बहुत निराश या अधिक महत्त्वाकांक्षी थे।

कई बार माता-पिता का प्यार, दुख का कारण बन जाता था। खेतों पर जीवन ख़तरनाक था और वहाँ दुर्घटनाएँ होती रहती थीं। मेरी माँ ने एक घटना सुनाई। उनकी बड़ी बहन, गेहूँ के खेत के बीच में तेज़ी से आ रहे एक ट्रैक्टर के नीचे दबकर मर गई थी। इस घटना के बाद मेरी माँ, अचानक बड़ी हो गई। बीमारियों का इलाज करना महँगा साबित होता था। मेरे भाई जालो और उसकी पत्नी के कई बच्चों की बीमारी से मौत हो गई। वह बीमारी जालो की पत्नी की तरफ़ से अनुवांशिक ढंग से आई थी। वे लोग इतने ग़रीब थे कि दवाई लाना या बच्चों को डॉक्टर के पास ले जाना भी मुश्किल था। इस तरह आठ में से चार बच्चे मर गए।

मेरी बहन दीमल के तलाक़ ने उसके बच्चों को एक-दूसरे से अलग-अलग कर दिया। इराक की भांति यज़ीदी समाज में तलाक़ का कारण कुछ भी हो, लेकिन विवाह खत्म होने के बाद स्त्रियों के

पास ज़्यादा अधिकार नहीं होते। मेरा जन्म पहले खाड़ी-युद्ध के दो वर्ष बाद और ईरान-इराक युद्ध ख़त्म होने के पाँच वर्ष बाद हुआ। आठ साल चले इस युद्ध का एकमात्र उद्देश्य सद्दाम के हाथों लोगों को प्रताड़ित करना था। उन बच्चों की यादें, जिन्हें हम कभी नहीं देख सकेंगे, हमारे घर में भूतों की तरह रहने लगीं। सबसे बड़े बेटे की मौत के बाद मेरे पिता ने अपने बाल कटवा लिए। मेरे एक भाई का नाम, उसी बेटे के नाम पर रखा गया था, परंतु मेरे पिता उसे घर के नाम 'हेज़्नी' कहकर बुलाते थे, जिसका अर्थ था; "उदासी!"

हम अपने जीवन को फ़सल की कटाई और यज़ीदी छुट्टियों से नापते थे। मौसम का बदलाव हमारे लिए कष्टपूर्ण सिद्ध होता था। सर्दियों के दिनों में कोचो की गलियाँ सीमेंट जैसी मिट्टी से भर जाती थीं, जिनमें जूते धँस जाते थे। गर्मियों में इतनी तेज़ गर्मी होती कि दिन में बेहोशी से बचने के लिए हम लोग रात के समय खेत के लिए निकलते थे। कभी-कभी कटाई के मौसम में निराशा होती थी। वह उदासी कई महीनों बाद अगली फ़सल बोए जाने तक क़ायम रहती। कई बार कटाई ज़्यादा होने पर भी पैसा अधिक नहीं मिलता था। हम फ़सल के बोरे भरकर बाज़ार ले जाते और ग्राहकों को बेचते थे। हमने बड़ी मुश्किल से सीखा कि बाज़ार में क्या बिकता था और क्या नहीं। सबसे ज़्यादा मुनाफ़ा गेहूँ और जौ की बिक्री में था, प्याज भी बिकती थी, लेकिन उससे ज़्यादा पैसा नहीं मिलता था। हमने कई साल पशुओं को जरूरत से ज़्यादा पके टमाटर खिलाए, क्योंकि हमारे पास उनकी उपज बच जाती थी।

इन सब परेशानियों के बावजूद मेरे मन में कभी कोचो से दूर रहने की इच्छा नहीं हुई। कोचो की सड़कें सर्दियों में मिट्टी से भर जाती थीं, परंतु प्रियजनों से मिलने के लिए लोगों को दूर नहीं जाना पड़ता था। गर्मियों में बहुत तेज़ धूप होती थी, लेकिन हम सब मिलकर एक छत पर सोते, हंसते-बोलते और पड़ोसियों के साथ बातचीत करते थे। खेतों में काम करना मुश्किल था, किंतु हमें इतना पैसा मिल जाता था कि हम सुखी और सादा जीवन जी सकते थे। मुझे अपने गाँव से बहुत प्रेम था और बचपन में अपनी पुरानी चीज़ों और कचरे से छोटी-छोटी तसवीरें बनाना पसंद था। मैं और कैथरीन मिलकर हाथ से बहुत-सी

लकड़ी की गुड़ियाएँ बनाते फिर उनकी एक-दूसरे से शादी भी करवा देते थे। निस्संदेह हर शादी से पहले गुड़ियाओं को सजे-सजाए घर को देखना होता था, जो कि टमाटर रखने वाले प्लास्टिक क्रेट का बना होता था। मैं वहीं बाल काटने की दुकान चलाती थी।

सबसे अहम बात; मेरा परिवार कोचो में था, इसलिए मैं उन्हें छोड़कर जाना नहीं चाहती थी। हम अपने आप में एक छोटा-सा गाँव बन चुके थे। मेरे आठ भाई थे। सबसे बड़ा इलियास था, जो हमारे पिता के समान था। खैरी, सीमा पर पहरा देता था। वह परिवार के लिए अपने जीवन को ख़तरे में डालने वाला पहला सदस्य था और उसकी नौकरी से हमारा घर चलता था। पीसे, ज़िद्दी किंतु ईमानदार था। वह किसी पर मुसीबत नहीं आने देता था। अगला मसूद था, जो बड़ा होकर अच्छा मैकेनिक बन गया। वह कोचो में फ़ुटबॉल भी खेलता था। उसके जुड़वाँ भाई सउद की गाँव में एक छोटी-सी दुकान थी। जालो सबकी दिल खोलकर मदद करता था। सईद, ख़ुशदिल और शरारती था। वह सबका हीरो बनना चाहता था। फिर था हेज़्नी, जो सपने देखता था और हम सब उसका प्यार पाने की कोशिश में रहते थे। मेरी दो बहने थीं; दीमल और अदकी। दीमल, माँ जैसी थी, लेकिन अदकी, एक तरफ़ भाइयों के साथ ट्रक चलाना चाहती थी, तो दूसरी ओर भेड़ के मर जाने पर रोने भी लगती थी। दोनों बहनें घर पर रहती थीं और मेरे सौतेले भाई ख़ालिद, वालिद, हूज्जी, नवाफ़ और मेरी सौतेली बहनें हमारे साथ रहती थी।

मेरी माँ शमी ने अपना सारा जीवन, हमें अच्छा खाना-पानी देने और हमारी उम्मीदों को ज़िंदा रखने में लगा दिया। मैं जब भी माँ के बारे में सोचती हूँ, वह मुझे हर जगह दिखाई पड़ती हैं। वह बुरे दिनों में भी हमारी सब ज़रूरतों का ध्यान रखती थी। वह ग़रीबी में भी हमें पैसे देती थीं, जिससे हम टॉफ़ी ख़रीद लेते थे। एक बार कोचो में एक व्यापारी कपड़े बेचने आया, लेकिन हमारे पास उन्हें ख़रीदने के लिए पैसे नहीं थे। मेरी माँ ने वह कपड़े उधार ले लिए। मेरे एक भाई ने इसके लिए उन्हें टोका तो वह बोलीं, "कोचो में हमारा पहला ऐसा घर है, जहाँ लोग हमें ख़ुद सामान देने आते हैं!" यह कहकर माँ हँस पड़ी।

मेरी माँ ग़रीबी में पली-बड़ी थी, इसलिए वह हमें ज़रूरतमंद की तरह बड़ा नहीं करना चाहती थीं। गाँव वाले भी हमारी बहुत सहायता करते थे। वे जरूरत पड़ने पर हमें आटा और सामान देते थे। मैं जब छोटी थी, तो एक बार मेरी माँ, चक्की से थैले में थोड़ा-सा आटा लेकर घर लौट रही थीं। रास्ते में सुलेमान चाचा ने उन्हें रोक लिया। "मुझे पता है कि तुम्हें मदद की ज़रूरत है। तुम मेरे पास क्यों नहीं आतीं?" उन्होंने पूछा।

माँ ने सिर हिलाकर मना किया। "चाचा, हम ठीक हैं," उन्होंने कहा। "हमारे पास ज़रूरत की सब चीज़ें हैं।" परंतु सुलेमान ने जोर दिया, "मेरे पास बहुत-सा गेहूँ है। तुम चाहो तो थोड़ा ले सकती हो।" फिर उन्होंने गेहूँ से भरे चार बड़े कनस्तर घर पर भिजवा दिए, जिससे हमारे दो महीने के भोजन का प्रबंध हो गया। मेरी माँ शर्मिंदा थीं कि उन्हें मदद लेनी पड़ी। यह घटना बताते हुए उनकी आँखों में आँसू आ गए और उन्होंने हमारे जीवन को बेहतर बनाने की कसम खाई। उन्होंने हर दिन इसके लिए कोशिश की। आतंकियों के इतना निकट होने के बावजूद मेरी माँ की उपस्थिति से हमें हिम्मत मिलती थी। वह रोज़ कहती थी कि ईश्वर यज़ीदियों की मदद करेगा।

ऐसी कई बातें हैं, जो मुझे माँ की याद दिलाती हैं। सफ़ेद रंग, एक अच्छा चुटकुला, यज़ीदियों द्वारा पवित्र माना जाने वाला मोर, और छोटी-छोटी प्रार्थनाएँ, जो मैं मन में बोलती हूँ। मेरी माँ इक्कीस वर्ष तक हर रोज़ मेरे जीवन के केंद्र में रहीं। वह जल्दी उठकर खाना पकाती थीं। वह आटे के गोलों को चपटा करके तंदूर के अंदर जमाती, सेंकतीं और फिर फूलने के बाद बाहर निकालती थीं। ये भेड़ के सुनहरे मक्खन के कटोरे में डुबोने के लिए तैयार हो जाते थे।

मैं इक्कीस साल तक प्रतिदिन रोटी को तंदूर में थोपने की आवाज़ और मक्खन की ख़ुशबू से उठती थी। मुझे उसे सुनकर लगता था कि मेरी माँ, मेरे पास है। मैं नींद से उठकर उनके पास जा बैठती और सर्दियों में तंदूर के सामने हाथ सेंकती थी। हम स्कूल, शादी, लड़ाई-झगड़े और भाई-बहनों के बारे में बातें करते थे। मुझे भरोसा था कि घर के बाहर टीन की छत पर साँप, सँपोलों को जन्म देते थे।

मैंने माँ को समझाया था कि मैंने उनकी फुफकार सुनी है, परंतु वह हँसकर बोलतीं, "नादिया अकेले नहाने से डरती है!" मेरे भाई-बहन भी मेरा मज़ाक़ उड़ाते थे। एक बार एक सँपोला मेरे सिर पर गिर पड़ा फिर हमें बॉथरूम की मरम्मत करवानी पड़ी। मैंने भी मान लिया कि मुझे अकेला रहना पसंद नहीं था।

मैं ताज़ा ब्रेड के जले हुए किनारों को उठाती हुई भविष्य की योजना बनाने लगी थी। मैं घर में सैलून खोलना चाहती थी। हमारे पास काफ़ी पैसे हो गए थे। मैं स्कूल में इतिहास पढ़ाकर घर पर मेकअप का काम कर सकती थी। मेरी माँ कपड़े में गर्म ब्रेड को लपेटते हुए कहती, "नादिया! अगर यह करना है, तो मेरी एक शर्त है। तुम मुझे कभी छोड़कर नहीं जाओगी।" मैं हमेशा जबाव देती, "बिलकुल नहीं! मैं तुम्हें छोड़कर कभी नहीं जाऊँगी।"

3

यज़ीदी मानते हैं कि ईश्वर-यज़दान ने मनुष्य को बनाने से पहले सात दिव्य प्राणी बनाए, जिन्हें फ़रिश्ते कहते हैं। वे ईश्वर का रूप हैं। ईश्वर ने मोती जैसे गोल टुकड़ों से ब्रह्मांड का निर्माण करने के बाद अपने मुख्य फ़रिश्ते तवूसी मेलेक को धरती पर भेजा, जिसने मोर का रूप धारण किया और फिर उसने चमकीले रंगों से इस दुनिया को सजाया। आगे की कहानी यूँ है कि धरती पर आने के बाद तवूसी मेलेक ने पहले पुरुष, यानी आदम को देखा। उसे ईश्वर ने अमर-आदर्श रूप दिया था। फिर उस फ़रिश्ते ने ईश्वर के निर्णय को चुनौती दी। तवूसी का कहना था यदि आदम में प्रजनन की क्षमता है, तो वह अमर या आदर्श नहीं हो सकता। उसे गेहूँ खाना होगा, जिसे खाने के लिए ईश्वर ने मना किया है। ईश्वर अपने फ़रिश्ते से कहते हैं कि यह निर्णय उसका अपना है और यह कहकर ईश्वर ने संसार की नियति तवूसी के हाथों में सौंप दी। आदम ने गेहूँ खाया और उसे स्वर्ग से निकाल दिया गया। फिर दुनिया में यज़ीदियों की दूसरी पीढ़ी का जन्म हुआ।

ईश्वर के समक्ष अपनी योग्यता सिद्ध करने के लिए उस मोर रूपी फ़रिश्ते ने ईश्वर का पृथ्वी से और मनुष्य का स्वर्ग से संबंध जोड़ा। हम तवूसी मेलेक की प्रार्थना करते हैं। हमारे लिए नए साल का उत्सव भी तवूसी के धरती पर आगमन का दिन है। बहुत-से यज़ीदियों के घरों में मोर की रंग-बिरंगी तसवीरें पाई जाती हैं, जो हमें यह याद दिलाती है कि हमारा अस्तित्व तवूसी की दिव्य बुद्धि के कारण है। यज़ीदी, तवूसी मेलेक से इसलिए प्रेम करते हैं, क्योंकि उनकी ईश्वर

के प्रति असीम निष्ठा है और वह हमें ईश्वर से जोड़ते हैं। परंतु इराक के मुसलमान, कुछ अज्ञात कारणों से उस फ़रिश्ते की निंदा करते हैं और उसकी पूजा करने के लिए हमारी बुराई करते हैं।

यह कहते दुख होता है और यज़ीदियों को यह कहना भी नहीं चाहिए, परंतु इराक के बहुत-से लोग उस फ़रिश्ते की कहानी सुनते हैं तो वे लोग, हमें शैतान की पूजा करने वाला मानते हैं। कहते हैं, जैसे कुरान में शैतान इब्लीस होता है, उसी तरह तवूसी मेलेक ईश्वर का मुख्य फ़रिश्ता है। उनका दावा है कि हमारे फ़रिश्ते ने आदम की अवहेलना और ईश्वर की निंदा की। कुछ लोग ऐसे ग्रंथों से उद्धरण देते हैं, जिन्हें बीसवीं शताब्दी में विदेशी विद्वानों ने लिखा था और जो यज़ीदियों की मौखिक परंपरा से पूरी तरह परिचित थे। यह ग्रंथ कहते हैं कि तवूसी मेलेक को नरक में भेज दिया गया, क्योंकि उसने आदम के सामने झुकने से मना कर दिया था, लेकिन यह सच नहीं है। यह ग़लत विश्लेषण है और इसके बहुत बुरे परिणाम हुए हैं। यह वही कथा है, जिसके माध्यम से हम अपनी मुख्य आस्था को समझाते हैं और धर्म के विषय में अच्छी बातें कहते हैं। इसी के माध्यम से दूसरे लोग हमारे विरुद्ध नरसंहार को सही ठहराते हैं।

यह यज़ीदियों के बारे में कहा गया सबसे बुरा झूठ है। परंतु यह अकेला झूठ नहीं है। लोग कहते हैं कि यज़ीदी धर्म 'वास्तविक' धर्म नहीं है, क्योंकि हमारी बाइबिल और कुरान जैसी औपचारिक धार्मिक पुस्तक नहीं है। कुछ यज़ीदी बुधवार को स्नान नहीं करते, क्योंकि उस दिन तवूसी मेलेक का पहली बार पृथ्वी पर आगमन हुआ था। वह आराम और प्रार्थना का दिन होता है। परंतु वे लोग कहते हैं कि हम गंदे हैं, हम सूर्य की उपासना करते हैं। हमारा पुनर्जन्म में विश्वास है, क्योंकि यह हमें मृत्यु के बारे में सोचने में सहायता करता है और हमें अपने समाज से जोड़कर रखता है। परंतु मुसलमान इसका विरोध करते हैं, क्योंकि कोई अरबी धर्म इसमें विश्वास नहीं रखता। कुछ यज़ीदी लोग एक विशेष तरह का भोजन नहीं करते। इन विचित्र आदतों के लिए उनका मज़ाक़ उड़ाया जाता है। कुछ लोग नीला रंग नहीं पहनते, क्योंकि उसे तवूसी मेलेक का रंग मानते हैं। मनुष्य

इतना पवित्र नहीं है कि वह उस पावन रंग को धारण कर सके। लोग, यज़ीदियों की इस पसंद का भी मज़ाक़ उड़ाते हैं।

मैं कोचो में बड़ी हुई, लेकिन मुझे अपने धर्म के विषय में अधिक जानकारी नहीं थी। यज़ीदी जनसंख्या का एक बहुत छोटा हिस्सा धार्मिक जातियों में पैदा होता है। शेख और कुछ बड़े लोग उन्हें धर्म के विषय में सिखाते हैं। मेरे परिवार वाले जब मुझे बपतिस्मा (एक धार्मिक संस्कार) के लिए ले गए तो मेरी उम्र कम थी। मैं उस समय सीखने के लिए नियमित रूप से नहीं आ जा सकती थी। लगातार हो रहे हमलों और प्रताड़ना के कारण समय और ख़राब हुआ तथा हमारी संख्या कम होती गई। इस कारण हमारी धार्मिक कथाओं का मौखिक प्रचार भी मुश्किल से हो पाता था। फिर भी हमें ख़ुशी थी कि हमारे गुरु यज़ीदी धर्म की रक्षा करते थे। यह बात साफ़ थी कि ग़लत हाथों में हमारे धर्म को हमारे ही विरुद्ध प्रयोग किया जा सकता था।

कुछ बातें यज़ीदियों को कम उम्र में ही सिखा दी जाती हैं। मुझे यज़ीदी त्योहारों और छुट्टियों के बारे में पता था। हालाँकि मुझे उनके पीछे के कारण और विचारधारा से ज़्यादा जश्न मनाने की जानकारी थी। मुझे पता था कि यज़ीदियों के नववर्ष पर हम अंडों को रंगते हैं, परिवार वालों की क़ब्र पर जाते हैं, धर्म स्थलों में मोमबत्तियाँ जलाते हैं। मुझे यह भी पता था कि लैलिश जाने के लिए अक्टूबर का महीना सबसे उपयुक्त होता है। यह स्थान शेखान जिले की एक पवित्र घाटी में स्थित है, जहाँ हमारे धर्मगुरु बाबा शेख और धर्म स्थलों की देखभाल करने वाले बाबा चाविश रहते हैं। वे तीर्थ-यात्रियों से मिलते हैं। दिसंबर के महीने में हम पापों का प्रायश्चित करने के लिए तीन दिन का उपवास रखते हैं। धर्म से बाहर विवाह करना निषेध है और धर्म-परिवर्तन की भी अनुमति नहीं है। हमें यज़ीदियों के ख़िलाफ़ पुराने तेहत्तर फ़रमान पढ़ाए गए थे और प्रताड़ना की ये कहानियाँ इस तरह एक-दूसरे से जुड़ी थीं कि उन्हें सुनकर लगता था मानो यह पवित्र कहानियाँ हैं। मुझे पता था कि जिन लोगों का जन्म धर्म की रक्षा के लिए हुआ, उनमें धर्म का वास है और मैं उनमें से एक थी।

मेरी माँ ने सिखाया था किस तरह सुबह सूर्य की ओर, दोपहर में लैलिश की तरफ़ और रात को चंद्रमा की ओर देखकर पूजा करनी चाहिए। ऐसे बहुत-से नियम हैं, परंतु अधिकांश लचीले हैं। हमारे यहाँ प्रार्थना को केवल दिखावटी अनुष्ठान या रोज़मर्रा का काम नहीं, बल्कि निजी अभिव्यक्ति समझा जाता है। आप मन में या ज़ोर से, कैसे भी प्रार्थना कर सकते हैं। आप अकेले या समूह में प्रार्थना कर सकते हैं। परंतु वह समूह यज़ीदियों का होना चाहिए। प्रार्थना के दौरान कुछ काम किए जाते हैं, जैसे अधिकांश यज़ीदी औरतें अपने लाल और सफ़ेद कंगन को चूमती हैं और पुरुषों में पारंपरिक सफ़ेद बनियान के कॉलर को चूमने की परंपरा है।

मैंने देखा कि अधिकांश यज़ीदी दिन में तीन बार प्रार्थना करते हैं। यह प्रार्थना कहीं भी की जा सकती है। मैंने ये प्रार्थनाएँ, धर्म स्थलों से ज़्यादा मैदानों में, घर की छत पर या माँ के साथ खाना पकाते समय रसोईघर में की हैं। ईश्वर और तवूसी मेलेक की प्रशंसा में कुछ चुनी हुई पंक्तियाँ बोलने के बाद अपनी इच्छा से कुछ भी बोल सकते हैं। मेरी माँ कहती थी कि तवूसी मेलेक को बताओ कि तुम किस बात से परेशान हो। उन्हें बताओ यदि तुम्हें किसी से प्यार है या किसी से डर लगता है। इन चीज़ों में तवूसी मेलेक तुम्हारी मदद कर सकते हैं। मैं ज़्यादातर अपने भविष्य से जुड़ी बातों जैसे स्कूल की पढ़ाई ख़त्म करना, अपना सैलून खोलना और भाई-बहनों और माँ के भविष्य के बारे में प्रार्थना करती थी। अब मैं अपने धर्म और अपने लोगों की रक्षा की प्रार्थना करती हूँ।

यज़ीदी, अपने धर्म पर गर्व करते हैं और वह अन्य समुदायों से दूर कर दिए जाने पर भी संतुष्ट हालत में लंबे समय तक जीते रहे। हमें ज़्यादा ज़मीन या सत्ता की कामना नहीं थी। हमारे धर्म में ऐसी कोई बात नहीं जो हमें गैर-यज़ीदियों को अपने अधीन करने या अपने धर्म के प्रचार का आदेश देती है। कोई व्यक्ति, यज़ीदी धर्म को ऐसे ही नहीं अपना सकता। परंतु मैं छोटी थी तो हमारा समाज बदल रहा था। गाँव वाले टेलीविजन ख़रीदते थे, सैटेलाइट डिश टीवी के आने से पहले सरकार द्वारा दिए गए टीवी से काम चलता था। हम उसी पर तुर्की नाटक और कुर्द की ख़बरें देखते थे। फिर हमने पहली बार

बिजली से चलने वाली कपड़े धोने की मशीन ख़रीदी। यह जादू से कम नहीं था। हालाँकि मेरी माँ अपने पारंपरिक सफ़ेद बफ़र्के और कपड़े हाथ से ही धोती थीं। बहुत से यज़ीदी, अमेरिका, जर्मनी या कैनाडा चले गए और उन्होंने पश्चिमी जगत से नाता जोड़ लिया। मेरी पीढ़ी ने अवश्य एक ऐसा काम किया, जिसे करने के बारे में हमारे माता-पिता सोच भी नहीं सकते थे। हम स्कूल जाते थे।

कोचो का पहला स्कूल 1970 के दशक में सद्दाम के शासनकाल में बनाया गया। वह केवल पाँचवीं कक्षा तक था और उसमें अरबी भाषा में पढ़ाई होती थी। वहाँ कुर्द नहीं पढ़ाई जाती थी और हमारे पाठ अधिकतर राष्ट्रवाद से संबंधित थे। सरकार द्वारा तय पाठ्यक्रम बहुत स्पष्ट था कि इराक में कौन व्यक्ति महत्त्वपूर्ण था और वे लोग किस धर्म को मानते थे। मैंने स्कूल में इराकी इतिहास की जो किताबें पढ़ी, उनमें यज़ीदियों का कोई जिक्र नहीं था और कुर्दवासियों को देश के लिए ख़तरा बताया गया था। मैंने इराक का इतिहास पढ़ा और अरब इराकी सैनिकों के साथ युद्ध की कहानियाँ पढ़ीं। वह रक्तरंजित इतिहास था। उसका उद्देश्य हमें देश पर गर्व महसूस करवाना और उन नेताओं की प्रशंसा करना था, जिन्होंने अंग्रेज़ी हुक्मरानों को देश से बाहर निकाला और राजा को अपदस्थ कर दिया। परंतु मुझ पर इसका विपरीत प्रभाव पड़ा। मुझे बाद में महसूस हुआ कि इन्हीं किताबों के कारण शायद हमारे पड़ोसियों ने आईएसआईएस से नाता जोड़ा और जब आतंकियों ने यज़ीदियों पर आक्रमण किया, तो उन्होंने दख़ल नहीं दिया। इराकी स्कूल में पढ़ने वाला कोई बच्चा यह नहीं सोचता था कि धर्म की रक्षा होनी चाहिए या अनंत काल तक चलने वाले उस युद्ध में कोई बुराई थी। हमें स्कूल में पहले दिन ही हिंसा के बारे में पढ़ा दिया जाता था।

मुझे बचपन से ही अपने देश को देखकर आश्चर्य होता था। वह अपने आप में एक अलग ग्रह था, जहाँ अनेक तरह के देश थे और दशकों के प्रतिबंधों, युद्ध, ख़राब राजनीति और व्यवसाय ने पड़ोसियों को एक-दूसरे से दूर कर दिया था। कुर्द, इराक के सुदूर उत्तर में रहते थे। उन्हें आजादी चाहिए थी। दक्षिण दिशा में अधिकतर शिया मुसलमान थे, जो देश के धार्मिक और राजनीतिक बहुसंख्यक वर्ग में

शामिल हो गए थे। दोनों के बीच में राष्ट्रपति सद्दाम हुसैन के शासन के अधीन सुन्नी अरब थे। वे जिस देश पर शासन करते थे, आज उसी के ख़िलाफ़ लड़ रहे थे।

यह देश का सरल नक़्शा है, जिसमें मुख्य रूप से तीन रंगों की पट्टियाँ हैं, जो कमोवेश देश को तीन हिस्सों में बाँटती हैं। इनमें यज़ीदियों का ज़िक्र नहीं है या उन्हें 'बाहरी' समझा जाता है। इराक की सच्चाई को दर्शाना बहुत मुश्किल है, यहाँ पैदा हुए लोगों के लिए भी यह कठिन काम है। मैं जब बड़ी हुई तो कोचो में गाँव वाले राजनीति के बारे में ज़्यादा बात नहीं करते थे। हम फ़सलों के बारे में, किसकी शादी हो रही है या किसकी भेड़ ठीक दूध दे रही है या नहीं; हमारा इन बातों पर ज़्यादा ध्यान रहता था और इन्हीं को बेहतर ढंग से छोटे शहरों में समझा भी जाता था। केंद्रीय सरकार यज़ीदियों को सेना में भर्ती करना और उन्हें बाथ पार्टी में शामिल करना चाहती थी, किंतु इसके अलावा हमारे जीवन में उन्हें कोई रुचि नहीं थी। परंतु हम बहुत सोचते थे कि इराक में अल्पसंख्यक होना क्या मायने रखता है। हम यह भी सोचते थे कि अगर हमें उस नक़्शे में शामिल कर लिया जाए, तो हम उन तीन पट्टियों को किस तरह रंग-बिरंगा स्वरूप दे सकते हैं।

इराकी कुर्दिस्तान के दक्षिणी छोर के पास बिंदुओं की पंक्ति है। यह उन जगहों को दर्शाती है, जहाँ दोनों शिया और सुन्नी मुसलमान तुर्क रहते हैं। ईसाइयों में असायरी, चाल्दियन और अरमेनियाई अनेक समुदाय हैं, जो देश-भर में ख़ासतौर से निनवे के मैदानों में बिखरे हुए हैं। अन्य जगहों पर काकाई, शबाक, रोमा और मंदायनों के अलावा अफ़्रीकी और मार्श के अरब का भी निवास है। मैंने सुना है कि बगदाद के पास इराकी यहूदियों का भी एक छोटा समुदाय रहता है। धर्म, जातीयता के साथ घुल-मिल जाता है। उदाहरण के लिए, बहुत से कुर्द, सुन्नी मुसलमान हैं परंतु उनके लिए उनकी कुर्द पहचान पहले आती है। बहुत से यज़ीदी, अपने धर्म की जातिगत और धार्मिक पहचान मानते हैं। अधिकांश इराकी अरब शिया या सुन्नी मुसलमान हैं और इस विभाजन के कारण वर्षों से उनके बीच लड़ाई-झगड़ा होता

रहा है। इराक की इतिहास की किताबों में इनके विवरण कम देखने को मिलते हैं।

मुझे घर से स्कूल जाने के लिए धूल-भरी सड़क से गुज़रना होता था, जो शहर के किनारे चलती थी। वहीं बशर का घर भी था जिसके पिता को अल कायदा ने मार दिया था। रास्ते में वह घर भी पड़ता जहाँ मैं पैदा हुई थी, जहाँ मेरे पिता और सारा रहते थे। अंत में मेरी सहेली वला का घर आता था। वह बहुत सुंदर थी। उसका चेहरा, गोल किंतु कमज़ोर था। वह रोज़ सुबह दौड़कर आती और फिर हम दोनों स्कूल पैदल जाते थे। मुझे अकेले जाना बुरा लगता था। बहुत-से लोग अपने कुत्तों को बाहर आंगन में बांध देते थे और वे जानवर आने-जाने वालों पर भौंकते थे। दरवाज़ा खुला होता तो वह कई बार हम पर झपट भी पड़ते थे। वे पालतू नहीं थे और वह बड़े और ख़तरनाक थे। मुझे और वला को उनसे बचकर दौड़ना पड़ता था। हम हाँफते हुए पसीने से लथपथ स्कूल पहुँचते थे। केवल मेरे पिता का कुत्ता, जो मुझे जानता था, हमारे पीछे नहीं दौड़ता था।

हमारा स्कूल, वास्तव में कंक्रीट की बनी छोटी-सी इमारत थी, जिसे धुंधले पोस्टरों से सजाया गया था। उसके चारों ओर नीची दीवार थी और एक छोटा-सा सूखा बगीचा था। वह स्कूल देखने में जैसा भी था, परंतु मुझे वहाँ जाना, पढ़ना और अपने दोस्तों से मिलना किसी चमत्कार से कम नहीं लगता था। मैं, वला और कैथरीन कुछ अन्य लड़कियों के साथ बगीचे में खेलती थी। उस खेल में हम पत्थर, सिक्का या बोतल का ढक्कन ज़मीन में छिपा देते थे और फिर पागलों की तरह इधर-उधर दौड़ने लगते थे। फिर टीचर हम पर चिल्लाती थी। हमारे नाख़ूनों में मिट्टी भर जाती थी और फिर माँ ग़ुस्सा करती थीं। उस खेल का अंत अधिकतर रोने-धोने से होता था। वह खेल बहुत पुराना था। यहाँ तक कि मेरी माँ उसे बचपन में खेलती थीं।

इतिहास में बेशक कमियाँ होती हैं और वह अन्याय की कहानियों से भरा होता है, फिर भी मुझे वह विषय पसंद था। मेरी अंग्रेज़ी ख़राब थी और मैं उसे सीखना चाहती थी। मैं जिस समय स्कूल में पढ़ती, मेरे अन्य भाई-बहन खेतों में काम करते थे। मेरी माँ ग़रीब थीं, इसलिए

मेरे लिए दूसरे बच्चों की तरह बस्ता ख़रीदना संभव नहीं था। परंतु मैंने शिकायत नहीं कि क्योंकि मुझे चीज़ें माँगना पसंद नहीं था। मुझे गाड़ी से स्कूल भेजने के लिए जब माँ के पास पैसे नहीं बचे, तो मैंने खेत पर काम करना शुरू कर दिया। मुझे अपने गाँव में स्कूल बनकर तैयार हो जाने का इंतज़ार था। इसलिए शिकायत करने से कोई लाभ नहीं था, और मैं कोचो में अकेली लड़की नहीं थी, जिसके माता-पिता उसे पढ़ने नहीं भेज सकते थे।

वर्ष 1991 में सद्दाम द्वारा कुवैत पर हमला किए जाने के बाद संयुक्त राष्ट्र ने इराक पर अनेक प्रतिबंध लगा दिए। उन्हें विश्वास था कि इससे राष्ट्रपति सद्दाम हुसैन की ताक़त कम हो जाएगी। बचपन में मुझे पता नहीं था कि वह प्रतिबंध क्यों लगाए गए थे। हमारे घर में केवल मेरे भाई मसूद और हेज़्नी, सद्दाम के बारे में बातचीत करते थे। सद्दाम ने यज़ीदियों की निष्ठा हासिल करने की कोशिश की ताकि वे लोग उसका साथ दें और लड़ाई में शामिल हो जाएँ, परंतु सद्दाम ने इसके लिए यह शर्त रखी कि हमें उसकी बाथ पार्टी में शामिल होना पड़ेगा और ख़ुद को यज़ीदी नहीं, बल्कि अरब कहना होगा।

कई बार टीवी पर केवल सद्दाम नज़र आता था। वह टेबल पर बैठकर सिगरेट पीता और ईरान की कहानियाँ सुनाता था। उसके पीछे एक मूँछों वाला सैनिक खड़ा रहता था। वह लड़ाई में अपनी क़ाबिलियत के गुण गाता था। हम एक-दूसरे से पूछते थे कि वह क्या बोल रहा है और सब कंधे उचका देते थे। संविधान में यज़ीदियों का ज़िक्र नहीं था और विद्रोह करने वाले को तुरंत सज़ा मिलती थी। मुझे कभी-कभी टीवी पर यह देखकर हँसी आती थी। उस तानाशाह की टोपी बड़ी हास्यास्पद थी। मेरे भाई मुझे हँसने से रोकते थे। "वे हमें देख रहे हैं," मसूद कहता। "सोच-समझकर बोलो।" सद्दाम के विशाल और ख़ुफ़िया मंत्रालय की आँखें और कान सब जगह मौजूद थे।

मुझे उस समय केवल इतना पता था कि संयुक्त राष्ट्र द्वारा लगाए गए प्रतिबंधों के कारण आई मुसीबत, नेताओं या सद्दाम को नहीं, बल्कि इराकी जनता को झेलनी पड़ती थी। हमारे अस्पताल और

बाज़ार बंद हो गए, दवाइयाँ महँगी हो गईं, आटे की जगह जिप्सम मिलने लगा, जो सीमेंट बनाने के काम आता था। यह गिरावट मुझे स्कूल में ही देखने को मिलने लगी थी। इराक की शिक्षा-प्रणाली ने मिडिल ईस्ट के स्थानों से अनेक विद्यार्थियों को पढ़ने के लिए आकर्षित किया था, परंतु प्रतिबंध के चलते सारी व्यवस्था चरमरा गई। शिक्षकों की तनख़्वाह घटा दी गई, जिस कारण पढ़ाने के लिए टीचर नहीं मिलते थे। पचास प्रतिशत इराकी पुरुष बेरोज़गार हो गए। कुछ शिक्षक, जो कोचो में पढ़ाने आते थे, मेरे लिए किसी हीरो से कम नहीं थे। मैंने भी उनके साथ बहुत मेहनत से पढ़ाई की।

सद्दाम के शासनकाल में स्कूल का एक मुख्य उद्देश्य था; हमें सरकारी ख़र्च पर शिक्षा देकर सद्दाम सोचता था कि वह यज़ीदियों के रूप में हमारी पहचान छीन लेगा। यह बात हर पुस्तक के हर पाठ में देखने को मिलती थी। उनमें हमारा, हमारे परिवार, हमारे धर्म अथवा हमारे ख़िलाफ़ जारी फ़रमानों का कोई ज़िक्र नहीं था। यद्यपि अधिकांश यज़ीदी, कुर्द भाषा बोलकर बड़े होते थे, परंतु हमारी पढ़ाई अरबी में होती थी, जिसे कुर्द-विरोधी भाषा समझा जाता था और कुर्द बोलने वाले यज़ीदियों को सरकार विरोधी की तरह देखती थी। इसके बावजूद मैं हर रोज़ स्कूल जाती थी और मैंने जल्दी ही अरबी भाषा सीख ली। मुझे ऐसा नहीं लगा कि अरबी सीखकर या अधूरा इराकी इतिहास पढ़ने से मैंने सद्दाम का साथ दिया अथवा यज़ीदियों के साथ विश्वासघात किया। ऐसा करने से मुझे भीतर से ताक़त मिलती थी और लगता था कि मैं ज़्यादा समझदार हो गई हूँ। मैं घर पर कुर्द भाषा ही बोलती और उसी में प्रार्थना करती थी। मैं अपनी दोनों सहेलियों वला और कैथरीन को स्कूल के नोट्स भी कुर्द भाषा में लिख कर देती थी। मैंने ख़ुद को कभी यज़ीदी के अलावा कुछ नहीं माना। मेरे विचार से स्कूल जाना बहुत ज़रूरी था। कोचो के सब बच्चे स्कूल जाते थे और इससे हमारा देश और दुनिया के साथ संबंध बदल रहा था। हमारा समाज भी पहले से अधिक जागरूक हो गया था। युवा अपने धर्म से प्यार करते थे, परंतु वे बाहर की दुनिया का भी हिस्सा बनना चाहते थे। हम बड़े हुए तो मुझे लगा हम भी शिक्षक बनेंगे, इतिहास की किताबों में यज़ीदियों का ज़िक्र होगा और हम संसद चलाएँगे और

बगदाद में यज़ीदियों के अधिकारों की लड़ाई लड़ेंगे। उस समय मुझे लगता था कि हमें मिटा देने की सद्दाम की योजना का उल्टा असर पड़ेगा।

4

वर्ष 2003 में मेरे पिता की मृत्यु के कुछ महीने बाद अमेरिका ने बगदाद पर हमला कर दिया। उस समय लड़ाई देखने के लिए ना सैटेलाइट टीवी था और ना ही बाक़ी के देश से जुड़ने के लिए मोबाइल फ़ोन उपलब्ध थे। हमें धीरे-धीरे पता लगा कि सद्दाम का अंत कैसे हुआ। गठबंधन के सहयोगी शोर करते हुई राजधानी तक पहुँचने के लिए कोचो के ऊपर से उड़ान भर रहे थे। उसे सुनकर हम झटके-से उठ बैठे। मैंने पहली बार हवाई जहाज देखा था। हमें बिलकुल अंदाज़ा नहीं था कि वह युद्ध कितने दिन चलेगा और इराक पर इसका क्या प्रभाव पड़ेगा, परंतु हमें यह आशा थी कि सद्दाम के जाने के बाद खाना पकाने की गैस ख़रीदना पहले से आसान हो जाएगा।

उस हमले के कुछ महीनों के बाद मुझे बस एक ही बात याद थी। उस दौरान हमारा सबसे बड़ा नुक़सान यह हुआ था कि मेरे पिता की मृत्यु हो गई। मुझे और कुछ याद नहीं है। यज़ीदियों में यदि किसी की अचानक मृत्यु हो जाती है तो उसका शोक लंबे समय तक चलता है और पूरा गाँव उसमें शामिल हो जाता है। मृतक के परिवार के साथ दोस्त और पड़ोसी भी सामान्य जीवन त्याग देते हैं। हर घर और दुकान से गलियों तक शोक का माहौल रहता है, जैसे हर कोई कड़वी चीज़ खाकर बीमार पड़ गया हो। विवाह आदि रद्द कर दिए जाते हैं, छुट्टियों का जश्न घर के अंदर ही मनाया जाता है, और स्त्रियाँ सफ़ेद वस्त्र छोड़कर काले कपड़े पहनने लगती हैं। इस दौरान हम ख़ुशी को चोर की तरह देखते हैं, जिससे दूर रहना ज़रूरी है। हम जानते हैं कि ख़ुशी

मनाने से हमारे मृत प्रियजन की स्मृति जल्दी मिट जाती है। इसलिए हम ऐसी बातों से अपना ध्यान नहीं भटकने देते। यहाँ तक कि टीवी और रेडियो भी बंद रखे जाते हैं, फिर चाहे बगदाद में कुछ भी चल रहा हो।

मेरे पिता, अपनी मृत्यु से कुछ समय पहले मुझे और कैथरीन को यज़ीदी नववर्ष मनाने सिंजर पर्वत पर ले गए थे। वह अंतिम मौक़ा था, जब मैं अपने पिता के साथ पहाड़ों पर गई थी। हमारा नया साल अप्रैल माह में आता है। उस समय उत्तरी इराक के पहाड़ पर छटा बिखरी होती है और ठंडक कम हो जाती है। अप्रैल का महीना अच्छी फ़सल का बड़ा वादा लेकर आता है। हम आगामी कई महीने ठंडे और भीड़-भाड़ वाले घरों से दूर रहकर गुज़ारते हैं। यज़ीदियों का प्रकृति से बहुत जुड़ाव होता है। प्रकृति हमें भोजन और आश्रय देती है। हमारा नया साल हमें इसी बात की याद दिलाता है कि मृत्यु के बाद हमारा शरीर भी मिट्टी हो जाता है।

नए साल के मौक़े पर हम सब से मिलते हैं, जिन्होंने परिवार में भेड़ चराने का काम किया होता है, क्योंकि वह उन्हें पहाड़ों पर ले जाते और फिर वापस लाते हैं। इस काम में मज़ा भी है। भेड़ चराने वाले लोग हाथ से बुने कंबल ओढ़कर बाहर सो जाते थे और सादगी से जीवन बिताते थे। उनके पास सोचने के लिए बहुत समय था। वे निश्चिंत रहते थे, परंतु उन्हें बहुत मेहनत करनी पड़ती थी। उन्हें घर और परिवार से दूर रहना होता था और कोचो वालो को भी उनकी याद आती थी। मेरी माँ जब भेड़ों की देखभाल के लिए गई थी, तो मैं स्कूल में पढ़ती थी। मैं इतनी परेशान हुई कि हर कक्षा में फ़ेल होने लगी। "मुझे तुम्हारे बिना कुछ नहीं सूझता," मैंने माँ के लौटकर आने पर उनसे कहा था।

मैं नए साल पर अपने पिता के साथ घूमने गई थी। कैथरीन और मैं ट्रक के पीछे बैठे थे तथा पिता और इलियास आगे बैठे थे। वे शीशे में से हम पर नज़र रखते थे ताकि हम कोई लापरवाही नहीं कर बैठें। हम आगे बढ़ रहे थे और परिदृश्य पीछे छूट रहा था। गीली घास पर पीले गेहूँ की बालियां लहरा रही थीं। हम एक-दूसरे का हाथ

पकड़े बातचीत करते और घर लौटकर दिन-भर की घटनाओं को बढ़ा-चढ़ाकर सुनाते थे। हमें स्कूल और काम से दूर मैदानों में बहुत मज़ा आता था। मैं और कैथरीन ट्रक में बैठकर ख़ूब उछलते थे। हम सोचते थे कि घर जाकर बच्चों को बताएँगे कि हमने कितनी टॉफ़ियाँ और मिठाइयाँ खाईं तो उनका चेहरा देखने लायक़ होगा। "हमने सारी रात नृत्य किया और जब सुबह होने लगी तो हम सोने गए। तुम्हें यह सब देखना चाहिए था।"

हालाँकि सत्य इससे थोड़ा ही कम रोमांचक था। हम पिताजी से मिठाई माँगते तो वह मुश्किल से मना कर पाते थे। पहाड़ की तलहटी में चरवाहों से मिलना बहुत अच्छा लगता था। बाद में मेरे पिता एक बड़ी भेड़ को काटते और औरतें उसे पकाती थीं। उसका स्वाद लाजवाब था। फिर हम एक बड़ा-सा घेरा बनाकर नाचते थे। भोजन ख़त्म करके और संगीत समाप्त हो जाने के बाद सब लोग हवा से बचने के लिए रीड से बनी छोटी-छोटी बाड़ से घिरे टेंट में सोने चले जाते थे। जब मौसम सुहाना होता था, तो हम खुले में सोते थे। हमारा जीवन बहुत सरल और सहज था। आपको बस आसपास के लोगों और चीज़ों की फ़िक्र करनी होती थी और वे सब पर्याप्त नज़दीक रहते थे।

मुझे नहीं पता कि मेरे पिता जीवित होते तो उन्हें अमेरिका द्वारा इराक पर हुए हमले और सद्दाम को सत्ता से बेदख़ल किए जाने पर कैसा लगता। परंतु मेरी इच्छा थी कि वह इराक में हो रहे बदलाव को देखने के लिए कुछ दिन और ज़िंदा रहते। कुर्दों ने अमेरिकी सैनिकों का स्वागत किया, उनकी इराक में प्रवेश करने में सहायता की। उन्हें ख़ुशी थी कि सद्दाम को हटा दिया गया था। उस तानाशाह ने कुर्दवासियों पर दशकों तक अत्याचार किया और 1980 के दशक के अंत में सद्दाम की सेना ने रासायनिक हथियारों द्वारा कुर्दवासियों को ख़त्म करने की कोशिश भी की। इस नरसंहार ने कुर्दवासियों का जीवन बदल दिया। वह किसी भी तरह बगदाद की सरकार से अपनी रक्षा करना चाहते थे। इस अभियान के कारण अमेरिका, ब्रिटेन और फ़्रांस ने उत्तरी कुर्द और दक्षिण में शिया इलाकों के ऊपर नो-फ़्लाई जोन स्थापित कर दिया। कुर्द के लोग हमेशा से ही उनके सहयोगी

बनने के इच्छुक थे। आज तक कुर्दवासी 2003 के उस अमेरिकी हमले को 'मुक्ति' का नाम देते हैं और उसे सबसे बड़ा रुपांतरण मानते हैं, क्योंकि उसी के बाद से यह सब छोटे और असुरक्षित गाँवों से होटलों और तेल की कंपनियों के दफ़्तर वाले बड़े आधुनिक शहरों में तब्दील हो गए थे।

सामान्य तौर पर यज़ीदियों ने भी अमेरिकियों का स्वागत किया, परंतु उन्हें पता नहीं था कि सद्दाम के बाद उनका जीवन कैसा होगा। प्रतिबंधों के कारण अन्य इराकियों की तरह हमारा जीवन भी कठिन हो गया था। हम जानते थे कि सद्दाम ऐसा तानाशाह था, जिसने डर के ज़ोर पर इराक पर शासन किया। हम ग़रीब थे, शिक्षा से दूर थे और हमें इराक में ख़तरनाक और कम पैसे वाले काम करने को कहा जाता था। परंतु बाथ पार्टी के सत्ता में होने के कारण हम कोचो में अपने धर्म का पालन कर पाए। हमने अपनी ज़मीन पर खेती की और परिवार बनाने शुरू किए। सुन्नी अरब परिवारों, विशेषकर किरीव से हमारे अच्छे संबंध थे। हम उन्हें अपने परिवार का हिस्सा मानते थे। हमारे अकेलेपन ने हमें यह सिखाया था कि संबंध क़ीमती होते हैं, जबकि हमारी ग़रीबी ने हमें व्यवहारिक रहने की शिक्षा दी थी। बगदाद और कुर्द की राजधानी अर्बिल, कोचो से मानो किसी दूसरी दुनिया जितनी दूर थी। कुर्द और अरब के अमीर लोगों का केवल एक निर्णय ऐसा था, जो हमारे लिए महत्त्वपूर्ण था; वह था - हमें अकेला छोड़ देने का निर्णय।

अमेरिकियों ने रोज़गार, आज़ादी और सुरक्षा को लेकर जो वादे किए उनके कारण यज़ीदी बहुत जल्दी उनके समर्थन में आ गए। अमेरिकियों ने हम पर इसलिए भरोसा कर लिया, क्योंकि हमारे पास उनके शत्रुओं से मिल जाने का कोई कारण नहीं था। हमारे कई लोग इराकी और अमेरिकी सेना में नौकरी करते थे या दुभाषिए का काम करने लगे थे। सद्दाम छिपने पर मजबूर हो गया। फिर उसे ढूँढ़कर फाँसी दे दी गई और उसकी संस्थाओं को ख़त्म कर दिया गया। कोचो के नज़दीक रहने वाले सुन्नी अरब लोगों का देश में अधिकार समाप्त हो गया और सिंजर के यज़ीदी जनसंख्या वाले हिस्सों में सुन्नी अरब पुलिसवालों और राजनेताओं की जगह कुर्दवासियों ने ले ली।

सिंजर एक विवादित क्षेत्र है, जिस पर बगदाद और कुर्दिस्तान दोनों दावा करते हैं। यह इलाक़ा मोसुल और सीरिया के निकट है, और यहाँ प्राकृतिक गैस के संसाधन होने की संभावना है। पूर्वी इराक के एक और विवादित क्षेत्र किरकुक की तरह कुर्द की राजनीतिक पार्टियाँ, सिंजर को भी कुर्दिस्तान का हिस्सा मानती हैं। उनके अनुसार सीरिया के बिना कुर्द, यदि राष्ट्र बन भी गया तो वह अधूरा कहलाएगा। साल 2003 के बाद अमेरिकी सहयोग से और सुन्नी अरब लोगों के धन और सत्ता जाने के बाद केडीपी के सहयोगी कुर्दवासियों ने सीरिया आकर उस ख़ाली जगह को भर दिया था। उन्होंने वहाँ राजनीतिक दफ़्तर स्थापित किए और उन दफ़्तरों में पार्टी के सदस्यों को भर्ती कर लिया। सुन्नी घुसपैठ बढ़ी तो उन्होंने पूरी सड़क पर नाकेबंदी कर दी। वे बोले, "सद्दाम हमें अरब कहता था, लेकिन यह ग़लत है। हम सदा से ही कुर्दवासी थे।"

2003 के बाद कोचो में बड़े बदलाव हुए। कुछ ही सालों में कुर्दवासियों ने वहाँ पर सेल फ़ोन के टावर खड़े कर दिए। मैं स्कूल ख़त्म होने के बाद अपने दोस्तों के साथ गाँव के बाहर खेत में से गगनचुंबी इमारत की तरह खड़े उन विशाल ढाँचों को देखती थी। "आख़िरकार, कोचो भी बाहरी दुनिया से जुड़ सकेगा," मेरे भाइयों ने ख़ुश होकर कहा। बहुत जल्द अधिकांश लोगों के पास सेल फ़ोन पहुँच गए। हमारे घर की छत पर सैटेलाइट डिश लगने से अब हम सीरियाई फ़िल्मों और इराकी सरकार के टेलीविज़न तक ही सीमित नहीं थे। हमारे घरों से सद्दाम की परेड और उसके भाषण भी ग़ायब हो गए। सैटेलाइट डिश लगाने वाले लोगों में मेरे चाचा पहले व्यक्ति थे। उन्होंने जैसे ही डिश घर पर लगाया, हम उनके घर जाकर टीवी पर कार्यक्रम देखने बैठ जाते थे। मेरे भाई समाचार सुनते थे। उनकी रुचि कुर्द चैनलों में थी। मुझे एक तुर्की नाटक अच्छा लगता था, जिसके पात्र लगातार प्यार करते और फिर ठोकर खाते थे।

हमने किसी तरह ख़ुद को अरब कहलाने का विरोध तो किया; किंतु हमारे लोगों ने स्वयं को कुर्दवासी कहना स्वीकार कर लिया था। अनेक यज़ीदी स्वयं को कुर्द का नज़दीकी मानते थे। हमारी भाषा और सांस्कृतिक विरासत एक जैसी है। सिंजर में कुर्दवासियों के आने

के बाद हुए सुधार की उपेक्षा करना असंभव था। हालाँकि वे सुधार बरज़ानी की तुलना में अमेरिकियों के कारण अधिक हुए थे। सेना और सुरक्षा बलों में यज़ीदियों के लिए अचानक भर्ती खोल दी गई थी। मेरे कुछ भाई और अन्य रिश्तेदार होटल और रेस्तरां में काम की तलाश में अर्बिल चले गए थे। वहाँ लगभग प्रतिदिन एक नया होटल बन कर तैयार हो जाता था। इराक और अन्य जगहों से वहाँ बिजली बेहतर मिलती थी और शेष देशों की तुलना में हिंसा भी कम थी। मेरा भाई सउद, कुर्दिस्तान के पश्चिम में किसी जगह पर निर्माण कार्य में व्यस्त था। वह सीमेंट मिक्सर चलाता था। वह घर आता तो कुर्दवासियों के बारे में बताता था जो यज़ीदियों को नीची नज़र से देखते थे। परंतु हमारी विवशता थी कि हमें पैसों की ज़रूरत थी।

मेरे भाई खैरी को सीमा पर गार्ड की नौकरी मिल गई थी। कुछ समय बाद हेज़्नी, सिंजर में पुलिस में भर्ती हो गया। उन दोनों की तनख़्वाह हमारे परिवार की पहली स्थाई आय थी। हमारा जीवन पहले से बेहतर हुआ था। हम भविष्य के बारे में सोच सकते थे। हमने खेती के लिए ज़मीन ख़रीदी। हमारे पास अपनी भेड़ें थीं और इसलिए हमें दूसरे ज़मींदारों के लिए काम नहीं करना पड़ता था। कोचो से बाहर पक्की सड़कें, पहाड़ों तक पहुँचने का आसान और तेज़ तरीक़ा थीं। हम कभी-कभी गाँव के पास वाले मैदानों में पिकनिक मनाने जाते थे। वहाँ मीट और कटी हुई सब्ज़ियाँ खाते थे, पुरुष तुर्की बीयर पीते और वहाँ की चाय इतनी मीठी होती थी कि हमारे होंठ चिपक जाते थे। शादियों में ज़्यादा सजावट होने लगी और लोग कपड़ों की ख़रीदारी के लिए दो बार सिंजर शहर जाते थे। अधिक भेड़ काटी जाने लगीं।

कुछ यज़ीदी सिंजर में एक मज़बूत स्थानीय सरकार की कल्पना करने लगे थे। कुछ अन्य लोगों का विचार था कि हम अंत में स्वतंत्र कुर्दिस्तान का हिस्सा बन जाएँगे। कोचो में केडीपी का दफ़्तर और सिंजर में पेशमेरगा के होने के कारण मैं यही सोचती थी कि हमारी यही नियति है। हम अपने सुन्नी अरब पड़ोसियों से बहुत दूर हो गए थे और कुर्दिस्तान जाना आसान हो गया था। परंतु सुन्नी गाँवों में पहुँचना मुश्किल था, क्योंकि वहाँ घुसपैठ और उनका समर्थन करने

वाली विचारधारा ज़ोर पकड़ रही थी। इस बीच सुन्नी अरब लोगों को कुर्दिस्तान के लोगों की मौजूदगी पसंद नहीं थी। उन्हें अपनी खोई सत्ता की याद आती थी। इसलिए उनके लिए यज़ीदी गाँवों में आना मुश्किल था। कुर्द के पेशमेरगा उनसे नाकेबंदी पर पूछताछ करते थे। अमेरिकी सेना के आने और सद्दाम की संस्थाओं के समाप्त हो जाने के बाद अनेक लोगों की आय और नौकरियाँ ख़त्म हो गईं। वे हाल में अमीर और समृद्ध हुए थे, लेकिन अमेरिका की सत्ता होने के कारण सुन्नी अरब लोगों की ताक़त अचानक ख़त्म हो गई थी। वे अपने ही गाँव में अकेले पड़ गए थे। उन्होंने इसका विरोध करने का निश्चय किया। कुछ ही समय में उनका झगड़ा धार्मिक असहिष्णुता के कारण और उग्र हो गया, जिससे वे यज़ीदी लोग, जिनके पास इराक में कभी सत्ता नहीं थी, उनके निशाने पर आ गए।

उस समय मुझे यह पता नहीं था कि कुर्द की सरकार यज़ीदीयों को हमारे अरब पड़ोसियों से दूर करके संतुष्ट थी, क्योंकि इससे उन्हें सिंजर पर क़ब्ज़ा करने के अभियान में सहयोग मिलता था। मुझे यह भी पता नहीं था कि अमेरिकी व्यवसाय आम सुन्नियों के लिए कितना हानिकारक था। मैं इस बात से अनभिज्ञ थी कि अपने स्कूली दिनों में एक अनजान घुसपैठ अभियान, अल कायदा के लिए रास्ता तैयार कर रहा था और वही आगे चलकर हमारे पड़ोस के गाँव में आईएसआईएस का केंद्र बन गया। इराक में सुन्नी जातियों ने बगदाद की शिया सरकार के विरुद्ध बग़ावत करने की कोशिश की लेकिन वे असफल रहे। वे लंबे समय से चल रही हिंसा और कड़े अनुशासन के इतने अभ्यस्त हो चुके थे कि मेरी और मुझसे कम उम्र के सुन्नी बच्चों को उन्हें युद्ध और इस्लाम के कट्टरवादी विश्लेषण के अतिरिक्त कुछ पता नहीं था।

आईएसआईएस ने धीरे-धीरे हमारी सीमा से सटे गाँवों में अपनी पकड़ मज़बूत कर ली। यह ऐसी चिंगारी थी, जिस पर मेरा ध्यान नहीं गया और इसने जल्द ही बड़ी आग का रुप ले लिया। अमेरिकी और कुर्दवासियों का नियंत्रण स्थापित होने के बाद एक छोटी-सी यज़ीदी लड़की के जीवन में सुधार हुआ था। कोचो का धीरे-धीरे विस्तार हो रहा था। मैं स्कूल जाने लगी और हम ग़रीबी से बाहर निकल रहे

थे। नए संविधान ने कुर्दवासियों को पहले से ज़्यादा अधिकार प्रदान किए। यह माँग उठी कि अल्पसंख्यकों को भी सरकार में हिस्सा बनाया जाना चाहिए। मुझे पता था कि मेरे देश में लड़ाई चल रही थी, परंतु वह हमारे लिए अपनी लड़ाई नहीं थी।

शुरु में अमेरिकी सैनिक सप्ताह में एक बार कोचो में भोजन और अन्य वस्तुओं की आपूर्ति करते थे। वे गाँव के मुखिया से भी बातचीत करते थे। वे पूछते थे कि क्या हमें स्कूल, पक्की सड़कों, पानी आदि की ज़रूरत है। इन सवालों का जवाब निस्संदेह 'हाँ' था। अहमद जासो, सैनिकों के अच्छे भोजन की व्यवस्था करता था। हमें यह सुनकर गर्व होता था, जब अमेरिकी हमसे कहते थे कि वे कोचो में सुरक्षित महसूस करते हैं। अहमद जासो को विश्वास था कि वे सैनिक समय आने पर हमारी रक्षा करेंगे।

अमेरिकी सैनिकों के कोचो आने पर उनकी हथियारबंद गाड़ियों से बहुत धूल उड़ती और पूरा गाँव उनकी गाड़ियों की तेज़ आवाज़ में डूब जाता था। गाँव के बच्चे दौड़कर उनके पास जाते; क्योंकि वे सैनिक, बच्चों के लिए टॉफ़ी और चॉकलेट लाते थे। वे हमें हँसते देख फ़ोटो खींचते। हमें उनकी कड़क वर्दी देखकर अच्छा महसूस होता था और उनका बातचीत का ढंग भी मैत्रीपूर्ण था। वे पहले वाले इराकी सैनिकों से बिलकुल अलग थे। उन्हें कोचो में रहना बहुत सुविधाजनक लगता था। हमारा गाँव बहुत साफ़ था और हम यह जानते थे कि अमेरिका ने ही हमें सद्दाम से आज़ाद करवाया था। वे बोलते थे, "अमेरिकी यज़ीदियों से मुहब्बत करते हैं। हमें कोचो में घर जैसा महसूस होता है।" उन्होंने जब यहाँ आना लगभग बंद कर दिया तो भी हमें उनसे मिली प्रशंसा को सोचकर गर्व महसूस होता था।

मैं, साल 2006 में तेरह वर्ष की थी। उस समय एक अमेरिकी सैनिक ने मुझे एक लाल पत्थर की अँगूठी भेंट की थी। वह पहला आभूषण था, जो मुझे किसी से भेंट में मिला था। मुझे वह बहुत पसंद था। मैं उसे हमेशा अँगुली में पहनकर रखती थी। वह अँगूठी स्कूल

में, खेत में, रसोई में और यहाँ तक कि रात को सोते समय भी मेरे हाथ में रहती थी। एक साल बाद अँगूठी मेरे लिए छोटी हो गई। फिर मैंने उसे उतारकर अपनी सबसे छोटी अँगुली में पहन ली, लेकिन उसमें वह थोड़ी ढीली थी। मुझे डर था कि वह खो जाएगी। मैं उसे बार-बार देखती रहती थी और अधिकतर समय मुट्ठी को बंद करके रखती थी, जिससे यह मेरी अँगुली से दबी रहती थी।

एक दिन मैं अपने भाई बहनों के साथ खेत में प्याज़ बो रही थी। तभी मुझे पता लगा कि अँगूठी ग़ायब हो गई थी। मुझे प्याज़ बोना बिलकुल पसंद नहीं था। उससे हाथों से दुर्गंध आती थी। और अब उस काम में मेरी अँगूठी गुम हो गई थी। मेरे भाई-बहनों ने मुझे परेशान देखा तो कारण पूछा। "मेरी अँगूठी खो गई है!" मैंने उन्हें बताया। वे सब अपना काम रोककर अँगूठी ढूँढ़ने लगे। वे जानते थे कि उसका मेरे लिए बहुत महत्त्व था।

हम पूरे खेत में घूमे और काली मिट्टी में लाल रंग की ज़रा-सी झलक पाने के लिए प्रयास करते रहे। हमने बहुत कोशिश की, लेकिन अँगूठी नहीं मिली। सूरज ढलने लगा था। हमारे पास अँगूठी को ढूँढ़ना छोड़, घर लौटने के अलावा कोई अन्य विकल्प नहीं था। "नादिया, यह बड़ी बात नहीं है," इलियास ने घर लौटते समय कहा। "वह छोटी-सी चीज़ है। तुम्हें जीवन में ऐसी और चीज़ें मिलती रहेंगी।" मुझे याद है कि मैं कई दिनों तक रोती रही। मुझे पता था कि मुझे वैसी सुंदर चीज़ फिर कभी नहीं मिल पाएगी। मुझे यह भी चिंता थी कि जब उस अमेरिकी सैनिक को, जिसने मुझे अँगूठी भेंट की थी, इस बात का पता लगेगा तो वह नाराज़ होगा कि मैंने उसका दिया उपहार खो दिया था।

एक साल के बाद चमत्कार हुआ। हम प्याज़ की नई फ़सल लेने खेत में काम कर रहे थे। तभी खैरी को मिट्टी में कुछ नज़र आया। "नादिया, तुम्हारी अँगूठी!" वह ख़ुशी से चिल्लाया। मैं दौड़कर गई और मैंने उसके हाथ से अँगूठी ले ली और अपने भाई को गले लगा लिया। मैंने उसे पहनने का प्रयास किया तो देखा कि वह अब मेरी छोटी अँगुली में भी नहीं आ पाई। मेरी माँ ने उस अँगूठी को मेज़ पर

रखा देखा तो उसे बेचने का सुझाव दिया। "नादिया, यह तुम्हारे लिए अब छोटी हो गई है। इसे घर में रखने का कोई फ़ायदा नहीं है। अगर तुम इसे पहन नहीं सकती तो इसे बेच देते हैं।" मैं हमेशा माँ का कहना मानती थी। मैं उसे लेकर सिंजर के बाज़ार में बेचने चली गई और दुकानदार ने वह अँगूठी मुझसे ख़रीद ली।

बाद में मुझे बहुत दुख हुआ। वह अँगूठी मुझे भेंट दी गई थी। उसे बेचकर मुझे अच्छा नहीं लगा। यदि वह सैनिक लौटकर आया और उसने मुझसे पूछा तो उसे सुनकर कैसा लगेगा। क्या वह सोचेगा कि मैंने उसे धोखा दिया या मुझे अँगूठी पसंद नहीं थी? सैनिकों की हथियारबंद गाड़ियाँ अब कोचो में कम आती थीं। देश में लड़ाई तेज़ हो रही थी और अमेरिकी सैनिकों की संख्या घटती जा रही थी। मैंने महीनों से किसी सैनिक को नहीं देखा था। मेरे कुछ पड़ोसियों ने शिकायत की कि अमेरिकी हमें भूल गए हैं। उन्हें चिंता थी कि अमेरिकियों की सुरक्षा के बिना कोचो के लिए ख़तरा पैदा हो सकता था। मुझे इस बात का संतोष था कि मुझे अँगूठी के बारे में किसी को बताना नहीं पड़ेगा। वह सैनिक हालाँकि दयालु था, परंतु मैं सदा यही सोचती थी कि उसे अँगूठी के बेचे जाने का पता लगा तो उसे जरूर बुरा लगेगा। वह अमेरिका का रहने वाला था, इसलिए वह यह कभी समझ नहीं पाएगा कि हमारे लिए अँगूठी को बेचने से मिली कुछ रक़म का भी कितना महत्त्व था।

5

इराक की स्थिति बहुत ख़राब थी। कोचो के यज़ीदी, देश में हो रही हिंसा का प्रभाव वैसे ही सहन कर रहे थे जैसे भूकंप के बाद हल्के झटके लगते हैं। हम बहुत बुरी घटनाएँ देख रहे थे। अनबर में घुसपैठियों और अमेरिकी मरीन के बीच चल रही लड़ाई के साथ बगदाद में शिया शासन का उदय और अल कायदा के मज़बूत होने की प्रक्रिया भी देखने को मिली। टेलीविज़न पर यह सब देखकर हम चिंतित होते थे, क्योंकि हमारे गाँव के बहुत से लोग पुलिस और सेना में काम कर रहे थे। लेकिन देशभर में प्रतिदिन होने वाले बम धमाकों और विस्फोटों से कोचो शहर बचा हुआ था। आज की तारीख़ में इराक इस कदर विघटित हो चुका है कि इसे फिर से दुरुस्त करना असंभव है। हम इसे दूर से टूटता देख रहे थे।

मेरे भाई खैरी, हेज़्नी और जालो लड़ाई की कहानियाँ लेकर घर लौटते थे। वे कभी-कभी कुर्दिस्तान चले जाते थे, जहाँ आतंकी हमले सबसे कम होते थे। कई बार उन्हें इराक के अनजाने क्षेत्रों में भेज दिया जाता था, जिस कारण हम लोगों को डर लगता था। इस तरह की नौकरियाँ ख़तरनाक हो सकती हैं। यदि इस दौरान लड़ाई या आतंकवाद से सामना नहीं होता तो भी अमेरिकियों के साथ दुभाषिए के काम में ख़तरा था। घुसपैठियों को जब पता लगा कि कुछ यज़ीदी अमेरिकी लोगों के लिए काम कर रहे हैं, तो उन यज़ीदियों ने अमेरिका में पनाह ली थी, क्योंकि उनका जीवन ख़तरे में था।

वह लड़ाई अपेक्षा से अधिक समय चली। लोग शुरुआती अच्छे दिनों को जल्दी भूल गए; जब सद्दाम को शासन से बेदख़ल किया

गया था। उसकी मूर्ति बगदाद के फ़िरदौस स्क्वायर में गिरा दी गई थी और अमेरिकी सैनिक देशभर में गाँव वालों से हाथ मिलाते घूम रहे थे। उन्होंने स्कूल बनाने, राजनीतिक क़ैदियों को रिहा करने और आम इराकी का जीवन बेहतर बनाने का वादा किया था। वर्ष 2007 में सद्दाम का शासन खत्म होने के कुछ वर्ष बाद इराक हिंसा की आग में जल उठा। अमेरिका ने बीस हज़ार अतिरिक्त सैनिक भेजे, जो मुख्य रूप से बगदाद और अनबर की हिंसा में हुई वृद्धि के बदले में की गई कार्रवाई थी। कुछ समय के लिए यह कार्रवाई कारगर सिद्ध हुई और हमले कम हो गए। सेना ने शहर को अपने अधीन कर लिया और वे घर-घर जाकर घुसपैठियों को पकड़ने लगे। परंतु यज़ीदियों के लिए वह एक साल ऐसा था; मानो युद्ध स्वयं चलकर हमारे दरवाज़े पर आ पहुँचा हो।

अगस्त, 2007 में सीबा शेख खिदर और तेल अज़ीर (जो कातनिया और जज़ीरा नामों से जाने जाते थे) पर इराक युद्ध का सबसे बुरा और इतिहास का दूसरा सबसे ख़तरनाक आतंकी हमला हुआ। ये दोनों यज़ीदी आबादी वाले शहर थे, जो कोचो से पश्चिम की ओर स्थित थे। 14 अगस्त की रात को इंधन से भरा एक टैंकर और तीन गाड़ियाँ शहर के बीच लाकर खड़े कर दिए गए। कुछ लोगों ने बताया कि उनमें यज़ीदियों के लिए ज़रूरी सामान और भोजन था, लेकिन उनमें ज़ोरदार धमाका हुआ। उसमें आठ सौ लोग मारे गए और हज़ारों लोग, बम धमाकों के प्रभाव से गिरी इमारतों के नीचे दबकर घायल हो गए। ये धमाके इतने ख़तरनाक थे कि आग की लपटों और उससे निकले धुएँ ने कोचो को घेर लिया। हमने अपने गाँव से गुज़रने वाली सड़कों पर नज़र रखी और हमें अनजान गाड़ियों को देखकर डर लग रहा था।

यज़ीदियों और सुन्नी अरब लोगों के बीच तनाव बढ़ रहा था, और बाद में इसमें वृद्धि हो गई, क्योंकि सिंजर में कुर्दवासियों का प्रभाव पहले से ही था, और सुन्नी इलाक़ों में भी सुधार जोर-शोर से चल रहा था। फिर उसी साल के आरंभ में अमेरिकी सेना के आने के कुछ ही महीनों के भीतर सुन्नी लोगों ने दुआ खलील अस्वाद नाम की एक यज़ीदी युवती की मौत का बदला लेने की कसम खाई। उस लड़की

को उसके ही रिश्तेदारों ने पत्थर मारकर हत्या कर दी थी, क्योंकि उन्हें संदेह था कि वह लड़की धर्म-परिवर्तन करके किसी मुसलमान से शादी करना चाहती थी। हालाँकि यज़ीदी इस घटना से घबराए हुए थे, परंतु इसका सुन्नियों पर कोई असर नहीं पड़ा। बाहरी लोग हमें निर्मम और मुसलमान-विरोधी समझते थे।

इराक के बाक़ी स्थानों की तरह यज़ीदी समाज में भी ऑनर किलिंग होती है और धर्म-परिवर्तन को समाज तथा परिवार के साथ विश्वासघात की तरह देखा जाता है। शताब्दियों से यज़ीदियों को अपना धर्म-परिवर्तन के लिए मजबूर किया जाता रहा है; फिर भी यज़ीदी, अपना धर्म छोड़ देने वाले पुरुषों या स्त्रियों को मारते नहीं हैं। दुआ खलील के परिवार ने उस लड़की के साथ जो किया, उसे सुनकर हमें शर्मिंदगी हुई। लोगों ने पत्थर मारकर उसकी जान ले ली। लोग डरे हुए थे, लेकिन कोई उसे रोक नहीं पाया। उसकी हत्या का एक वीडियो भी ऑनलाइन जारी किया गया था, जिसे बाद में न्यूज़ चैनलों ने हमें हमले का ज़िम्मेदार ठहराने के लिए इस्तेमाल किया। हमने कड़े शब्दों में उसकी निंदा की थी।

दुआ परिवार की यह कहानी जैसे ही फैली, हम यज़ीदियों को विश्वासघाती और मौत के लायक़ कहा जाने लगा। यह दुष्प्रचार था। यही भाषा आज आईएसआईएस इस्तेमाल करता है और यही प्रचार मोसुल के आसपास फैलाया जा रहा था। कुर्दवासी, जो अधिकतर सुन्नी हैं, भी हमारे ख़िलाफ़ हो गए। हम डर और शर्म से जीने लगे। कुर्दिस्तान और मोसुल के स्कूलों में पढ़ने वाले यज़ीदी यूनिवर्सिटी के विद्यार्थियों ने पढ़ाई छोड़ दी। विदेश में रहने वाले यज़ीदीयों को अचानक लगने लगा कि उन्हें ऐसे लोगों से ख़तरा था, जिन्होंने कभी यज़ीदी धर्म के विषय में सुना तक नहीं था और जो यह सोचते थे कि हमारा धर्म हत्यारों को पनाह देता है।

मीडिया और राजनीति में यज़ीदियों का प्रतिनिधित्व करने वाला या उनकी हक़ीक़त समझने वाला कोई नहीं था। इस कारण हमारे ख़िलाफ़ सुन्नी समाज में घृणा का माहौल बढ़ने लगा। वह माहौल पहले से मौजूद था लेकिन दबा हुआ था। परंतु अब वह सामने आ

गया और तेज़ी से फैलने लगा। दुआ की हत्या के दो सप्ताह बाद सुन्नी हथियारबंद लोगों ने यज़ीदी नागरिकों से भरी एक बस को रोककर उसके तेईस यात्रियों को मार डाला। उनका कहना था कि ऐसा करके उन्होंने दुआ की हत्या का बदला लिया था। हम ऐसे और हमलों के लिए तैयार होने लगे, परंतु हमें यह उम्मीद नहीं थी कि सीबा शेख खिदर और तेल अज़ीर के जैसी घटना फिर से हो सकती थी।

मेरे भाइयों ने ज्यों ही गाड़ियों में विस्फोट होता देखा, वे जल्दी से कारों में बैठकर उस जगह पर पहुँचे और सैकड़ों यात्रियों के साथ मिलकर उन्होंने गाँव में खाना, गद्दे और दवाइयाँ पहुँचाईं। वे जब रात को देर से घर आए तो उनके सिर उदासी और थकान से झुके हुए थे। "यह इतना बुरा दृश्य था कि तुम उसकी कल्पना नहीं कर सकते," इलियास ने कहा। "पूरा शहर नष्ट कर दिया गया है, और चारों ओर लाशों के ढेर लगे हैं!"

मेरी माँ ने उनके लिए चाय बनाई। इस बीच उन्होंने हाथ-मुँह धो लिए। "मैंने एक लाश को आधा कटा हुआ देखा," हेज़्नी काँपते हुए बोला। "ऐसा लगता है पूरा शहर ख़ून में डूबा हुआ है। विस्फोट से शरीर के चिथड़े उड़ गए थे और उसके बालों और कपड़ों के टुकड़े ऊपर से गुज़रती बिजली की तारों से चिपक गए थे।" अस्पतालों और डॉक्टर के क्लीनिक में पीड़ितों से बिस्तर भर गए थे। मेरे भाई का एक दोस्त शौकत किसी की लाश देखकर इतना परेशान हुआ कि वह उस शव को डॉक्टर के हाथ से लेकर ख़ुद शव-गृह तक ले गया। "यह किसी का पिता या बेटा होगा। इसे बुरी तरह धूल में घसीटा गया है," उसने कहा।

मेरे घर के लोग विनाश के उस दृश्य को देख रहे थे। हवा में चारों ओर धुँआ और धूल थी। सब अपने-अपने परिजनों के लिए रो रहे थे। आख़िर, पूरे गाँव की सफ़ाई हो गई और लाशों की पहचान कर ली गई तो परिवार वालों ने उन्हें सामूहिक रूप से दफ़ना दिया। "ऐसे हालात में शायद ज़िंदा रहना ज़्यादा मुश्किल है" हेज़्नी ने कहा।

उस हमले के बाद हमने कुछ सावधानियाँ बरतीं। गाँव के पुरुष बारी-बारी से पहरा देते थे। दो लोग पूर्व में और दो पश्चिम दिशा

में कलाश्निकोव व पिस्तौलें लेकर खड़े रहते थे। वे लोग किसी भी अपरिचित गाड़ी में बैठे लोगों से पूछताछ करते हैं, जिनमें अधिकतर सुन्नी अरब और कुर्दवासी होते थे। उनकी कोशिश रहती थी कि वे ख़तरे को भाँप लें। शेष यज़ीदियों ने शहर में जगह-जगह कूड़े के ढेर से गतिरोधक बनाए और गड्ढे खोद दिए ताकि गाड़ी में बम आदि रखकर कोई गाँव में प्रवेश न कर सके। हम, सुन्नी अरब ग्रामीण लोगों के बहुत निकट थे। हमने बाद में कई सालों तक कूड़ा इकट्ठा नहीं किया और ना कोई गड्ढा खोदा। मुझे नहीं पता ऐसा क्यों था? शायद हमें भरोसा था कि हमारे पड़ोसियों के साथ संबंध इतने मज़बूत थे कि वह ज़रूरत के समय हमारी रक्षा करेंगे। हम ख़ुद को अकेला महसूस नहीं होने देना चाहते थे। एक साल तक जब कोई हमला नहीं हुआ तो गाँववालों ने पहरा देना छोड़ दिया।

मेरे परिवार में केवल हेज़्नी था, जिसने इराक छोड़ने की कोशिश की। यह बात उस हमले से दो साल बाद वर्ष 2009 की है। उसे हमारे पड़ोस की एक लड़की जीलन से प्रेम हो गया था, लेकिन उसके माता-पिता शादी के लिए तैयार नहीं थे, क्योंकि हमारे पास ज़्यादा पैसा नहीं था। फिर भी हेज़्नी ने कोशिश नहीं छोड़ी। जीलन के माता-पिता ने मेरे भाई को घर नहीं आने दिया तो वे दोनों छत की दीवार लाँघकर घरों के बीच गली में बातचीत करने लगे। इसके बाद जीलन के माता-पिता ने घर की छत की दीवार को ऊँचा करवा दिया, तो हेज़्नी ने बहुत-सी ईंटें जमा कर लीं। फिर वह उन पर खड़ा होकर दीवार के ऊपर से देखता था। "मुझे कोई नहीं रोक सकता," हेज़्नी कहता था। वह स्वभाव से शर्मीला था, लेकिन वह जीलन से इतना प्रेम करने लगा कि उसके लिए कुछ भी करने को तैयार था।

हेज़्नी, अपने भाइयों को जीलन के घर भेजता था और जब जीलन के माता-पिता मेरे भाइयों को चाय-नाश्ता करवाने में व्यस्त हो जाते तो जीलन और हेज़्नी मिल लिया करते थे। जीलन भी मेरे भाई से बहुत प्यार करती थी। उसने अपने माता-पिता से कहा कि

वह हेज़्नी से शादी करना चाहती है, मगर उन्होंने हामी नहीं भरी। मुझे उनकी इस बात पर ग़ुस्सा आता था। हेज़्नी जीलन से प्यार करता था और जीलन बहुत भाग्यशाली थी। लेकिन मेरी माँ भी इस बात को हँसी में उड़ा देती थी। "जीलन के माता-पिता हमें इसलिए पसंद नहीं करते, क्योंकि हम ग़रीब हैं," मेरी माँ ने कहा। "और ग़रीब होने में कोई बुराई नहीं है।"

हेज़्नी जानता था कि जीलन के माता-पिता उनके विवाह पर राज़ी नहीं होंगे, क्योंकि उसके पास पैसा नहीं था। उसे दुर्भाग्य से इराक में कोई नौकरी भी नहीं मिली। वह निराश हो गया था। उसे लगा कि उसके पास जीलन के अलावा और कोई नहीं था और उसे वह पा नहीं सकता था। इसलिए हेज़्नी को घर में रहने का कोई फ़ायदा नज़र नहीं आया। एक बार गाँव के कुछ लोगों ने जर्मनी जाने की योजना बनाई, जहाँ पहले से कुछ यज़ीदी रहते थे। हेज़्नी ने भी उनके साथ जाने का निश्चय कर लिया। उसने सामान बाँधा तो हम रोने लगे। मुझे उसका जाना बुरा लग रहा था। अपने किसी भी भाई के बिना मुझे घर में अच्छा नहीं लगता था।

हेज़्नी ने जर्मनी जाने से पहले जीलन को कोचो गाँव के बाहर एक शादी के मौक़े पर बुलाया। जीलन वहाँ आई और उसने हेज़्नी को ढूँढ़ लिया। हेज़्नी को आज भी याद है कि जीलन सफ़ेद कपड़े पहन कर आई थी। "मैं दो-तीन साल में लौट आऊँगा," उसने जीलन से कहा। "तब हमारे पास नया जीवन शुरू करने के लिए पर्याप्त पैसा होगा।" हम वर्ष में दो बार उपवास रखते हैं। उनमें से एक उपवास के शुरू होने से कुछ दिन पहले हेज़्नी अपने साथियों के साथ कोचो छोड़कर चला गया।

वे पहले उत्तरी इराक की सीमा पार करके तुर्की और फिर वहाँ से आगे इस्तांबुल पहुँच गए। फिर उन्होंने एक तस्कर को पैसे दिए जो उन्हें ट्रैक्टर ट्रेलर में बैठाकर ग्रीस ले गया। तस्कर ने उनसे कहा, "सीमा-प्रहरी से कहना कि तुम फ़िलिस्तीन से आए हो। यदि उन्हें पता लगा कि तुम इराकी हो तो वो तुम्हें बंदी बना लेंगे।" फिर उसने ट्रक के दरवाज़े बंद कर दिए और सीमा पार निकल गया।

कुछ दिन बाद हेज़्नी ने फ़ोन किया तो वह जेल से बोल रहा था। हम लोग उपवास खोलने की तैयारी कर रह थे कि तभी माँ का फ़ोन बज उठा। हेज़्नी के साथ गए इराकी लोगों में से एक व्यक्ति इतना घबरा गया कि वह झूठ नहीं बोल सका। उसके कारण सब पकड़े गए। हेज़्नी ने बताया कि जेल की हालत बहुत ख़राब थी। उसमें पत्थर के स्लैब रखे थे, जिन पर सोने के लिए पतले गद्दे बिछे थे। उन्हें कोई यह बताने वाला नहीं था कि उन्हें कब रिहा किया जाएगा या कि उन्हें किस अपराध के लिए बंदी बनाया गया था। एक बार कुछ लोगों ने जेल के पहरेदार का ध्यान भटकाने के लिए गद्दों में आग लगा दी। हेज़्नी को डर था कि धुँए से सबका दम घुट जाएगा। उसने हमारा हाल पूछा और कहा, "मुझे भी भूख लगी है।" उस दिन के बाद से जब भी हेज़्नी का फ़ोन आता तो मेरी माँ बहुत रोती थी। इसलिए मेरे भाइयों में से कोई भी हेज़्नी के फ़ोन का जवाब देने के लिए उसे जल्दी से उठा लेता था।

साढ़े तीन महीने के बाद हेज़्नी कोचो में वापस आ गया। वह बहुत घबराया हुआ और शर्मिंदा था। मुझे ख़ुशी थी कि मुझे जर्मनी जाने की बिलकुल इच्छा नहीं थी। मेरा ऐसा मानना है कि यदि डर के कारण किसी को अपना घर छोड़ना पड़े तो यह मनुष्य के साथ बहुत अन्याय है। यदि आपकी हर उस चीज़ को, जिससे आप प्रेम करते हैं, चुरा लिया जाए, किसी स्थान पर रहकर आपका जीवन ख़तरे में पड़ जाए और यदि आपकी पहचान केवल युद्ध और आतंकवाद वाले देशवासी की बन जाए, तो इसका अर्थ है कि आपको कोई पसंद नहीं करता। फिर आप शेष जीवन पीछे छूट गई चीज़ों को याद करते बिता देते हैं, और मन में बस यही उम्मीद रहती है कि आपको वापस लौटकर नहीं जाना पड़े। मुझे हेज़्नी की कहानी से हमेशा यही ख़याल आता था कि इराकी शरणार्थियों का रास्ता उन्हें पीछे ले जाता है। उस पर जेल जाना पड़ता या लौटकर वहीं आना पड़ता है, जहाँ से हम निकले थे।

हेज़्नी की असफलता में भी एक अच्छी बात थी। वह घर लौटा तो जीलन से शादी करने के लिए पहले से भी अधिक कृतसंकल्प था। वे दोनों दूर रहे तो उस बीच जीलन ने भी ख़ुद को शादी के

लिए तैयार कर लिया था। उसका परिवार अब भी राज़ी नहीं था, लेकिन दोनों को यज़ीदी परंपरा का समर्थन प्राप्त था। हमारी संस्कृति के अनुसार यदि दो लोग एक-दूसरे से प्रेम करते और शादी करना चाहते हैं, तो वे अपने परिवार को छोड़कर शादी कर सकते हैं। इससे सिद्ध होता है, यज़ीदी किसी भी अन्य चीज़ से ज़्यादा एक-दूसरे को महत्त्व देते हैं। बाद में उनकी शादी से राज़ी होने की ज़िम्मेदारी उनके परिवार की हो जाती है। यह पुराना फैशन या पिछड़ापन लग सकता है, क्योंकि परंपराओं में किसी लड़की के 'भागने' को ग़लत समझा जाता है। परंतु ध्यान से देखें, तो इससे ताक़त मिलती है और यह ताक़त, माता-पिता से हटकर प्रेमी-जोड़े को, विशेषकर लड़की को मिल जाती है, क्योंकि वह इस योजना में शामिल होने के लिए अपनी सहमति प्रदान करती है।

एक दिन शाम को जीलन बिना किसी से कुछ कहे अपने घर के पिछले दरवाज़े से चुपचाप निकली और हेज़्नी के मिलने पहुँच गई। वह जालो की गाड़ी में इंतज़ार कर रहा था। वे लोग किसी पास के गाँव में चले गए। उन्होंने अल कायदा-नियंत्रित रास्ता चुना था, क्योंकि वह मुख्य हाइवे से नहीं जाना चाहते थे; जहाँ जीलन के पिता के मिल जाने की संभावना थी। (हेज़्नी ने मज़ाक़ किया कि वह आतंकवादियों से अधिक जीलन के पिता से डरता था)। कुछ दिन बाद उन्होंने शादी कर ली। इसके बाद दोनों के परिवार वालों में काफ़ी लंबी बातचीत हुई, जो मुख्य रूप से पैसों को लेकर थी। ऐसी बातचीत का अंत कभी सुखद, तो कभी तनाव में होता था। बाद में कोचो में उनकी औपचारिक रूप से शादी हुई। फिर हेज़्नी जब भी कोचो छोड़ने की असफल प्रयास के बारे में बात करता तो हँसकर कहता था, "ईश्वर का शुक्र है, मैं ग्रीस में पकड़ा गया!" फिर वह जीलन को खींचकर अपने पास बुला लेता था।

इतना होने के बाद भी हमने कोचो में ही रहने का फ़ैसला किया। बाहर ख़तरा बढ़ रहा था। साल 2010 के संसदीय चुनावों के बाद जब अमेरिकी सैनिक, कुछ दिनों के लिए चले गए, तो देश-भर में विभिन्न समुदायों के बीच सत्ता के लिए ज़बरदस्त संघर्ष शुरू हो गया। हर रोज़ इराक में बम धमाके होते थे, जिनमें शिया जायरीनों या बगदाद

में बच्चों के मरने की ख़बर आती थी। अमेरिकी सैनिकों के इराक से चले जाने के बाद हमें शांति बहाल होने की आशा थी, लेकिन वह टूटकर बिखर गई थी। बगदाद में शराब के यज़ीदी व्यापारियों को आतंकवादियों ने अपने निशाने पर ले रखा था और इसलिए हमें अपने शहरों और गाँवों में ही सुरक्षित महसूस होता था।

इसके कुछ ही समय बाद ट्यूनीशिया में शुरू हुए सरकार-विरोधी प्रदर्शन सीरिया तक पहुँच गए; जहाँ के राष्ट्रपति बशर-अल-असद ने बहुत जल्दी और निर्ममता से उन प्रदर्शनों को कुचल दिया। वर्ष 2012 तक सीरिया, गृह-युद्ध में पूरी तरह घिर चुका था और 2013 में इस्लामिक स्टेट ऑफ़ इराक और अल-शम नाम का एक आतंकवादी समूह तैयार हो गया था। इसने पहले इराकी युद्ध के बाद ज़ोर पकड़ा था और फिर धीरे-धीरे सीरिया में पनपने लगा। उसने जल्द ही सीरिया के अधिकांश हिस्से पर अपने पैर पसार लिए और फिर सीमा पार करके इराक तक पहुँच गया। उसके प्रति सुन्नी प्रभावित इलाक़ों में सहानुभूति थी और वे बेसब्री से उसका इंतज़ार कर रहे थे। दो साल बाद आईएसआईएस ने इराकी सेना को उत्तर दिशा में पूरी तरह दबा दिया और इराकी सेना अपनी चौकियों को छोड़कर पीछे हट गई। उसने शत्रु को कमज़ोर समझा था। जून, 2014 में आईएसआईएस ने कोचो से लगभग 80 मील पूर्व में स्थित इराक के दूसरे सबसे बड़े शहर मोसुल पर क़ब्ज़ा कर लिया।

मोसुल पर क़ब्ज़ा होने के बाद कुर्दिस्तान रीजनल गवर्मेंट (केआरजी) ने यज़ीदी शहरों की रक्षा के लिए सिंजर में अतिरिक्त पेशमेरगा नियुक्त कर दिए। उनके सैनिक ट्रकों में भरकर आए थे, और उन्होंने हमें आश्वासन दिया कि वह हमारी सुरक्षा करेंगे। कुछ लोग आईएसआईएस से घबराए हुए थे, और उन्हें लगा कि इराकी कुर्दिस्तान हमारे लिए ज़्यादा सुरक्षित रहेगा। वे सिंजर छोड़कर कुर्द कैंपों में जाना चाहते थे, जहाँ पहले से शिया और सुन्नी तथा सीरिया से आए शरणार्थी रहने लगे थे। परंतु कुर्द के अधिकारियों ने हमें

ऐसा करने से मना किया। जिन यज़ीदियों ने सिंजर छोड़कर इराकी कुर्दिस्तान में जाने की कोशिश की, उन्हें चेक-प्वाइंट पर खड़े कुर्द सैनिकों ने निश्चिंत रहने की सलाह देकर वापस भेज दिया।

कुछ परिवारों का मानना था कि कोचो में रहना आत्महत्या करने जैसा था। "हम तीन तरफ़ से दाएश से घिरे हुए हैं," उन्होंने विरोध करते हुए कहा। *'दाएश'* आईएसआईएस के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला अरबी शब्द है। कोचो से सीरिया जाने वाली केवल एक सड़क ऐसी थी, जो दुश्मन से दूरी पर थी। परंतु हमें कोचो पर गर्व था। हमने वहाँ की चीज़ों को मेहनत से बनाया था - हमारे मकान और परिवार, वहाँ के स्कूल, हमारी भेड़-बकरियाँ, वे कमरे जहाँ बच्चों का जन्म हुआ। हम उन चीज़ों को छोड़कर नहीं जाना चाहते थे। इराकी लोग, यज़ीदियों द्वारा सिंजर पर किए दावे पर प्रश्न उठाते थे। हमें लगता था, अगर हमने सिंजर शहर छोड़ दिया, तो इसका आशय यह होगा कि हमें सिंजर से प्यार नहीं है। अहमद जासो ने एक बैठक बुलाई और फ़ैसला हुआ कि हम इसी गाँव में रहेंगे। जासो का कहना था कि सुन्नी और अरब गाँव वालों के साथ हमारे संबंध अच्छे थे, इसलिए हमने वहीं रहने का फ़ैसला किया।

मेरी माँ ने स्थिति को यथासंभव सामान्य रखने का बहुत प्रयास किया। फिर भी हम किसी अजनबी या डरावनी आवाज़ को सुनकर सतर्क हो जाते थे। जुलाई महीने की एक रात में लगभग ग्यारह बजे, हम भाई-बहन खेत से कुछ दूरी पर जानवरों के लिए चारा लेने जा रहे थे। गर्मियों के दिनों में खेत पर इतनी गर्मी होती थी कि वहाँ रुकना मुश्किल होता था। इसलिए हम रात को निकलते थे। उस समय चाँद की रोशनी होती थी और हवा भी कुछ ठंडी हो जाती थी। हम धीरे-धीरे चल रहे थे। चारा काटना मुश्किल काम था, जो किसी को पसंद नहीं था। भरपूर सावधानी के बावजूद हमारे बालों और कपड़ों के अंदर चारे की धूल भर जाती थी। फिर हमें बदन में खुजली होती रहती थी।

हम सब मिलकर काम निपटा रहे थे। हमारा समय बातचीत करते और हँसते हुए बीत रहा था। परंतु हमें थोड़ा तनाव भी था। उस मैदान

से कोचो के आगे का खुला इलाक़ा नज़र आता था। तभी हमें लगा कि सामने कुछ हलचल हो रही है। अचानक हमें सड़क पर बहुत-सी गाड़ियाँ दिखाई दीं। हम काम रोककर देखने लगे। धीरे-धीरे रोशनी तेज़ होती गई और वह हमारे बहुत नज़दीक आ गई। हमने देखा कि वे बड़े-बड़े बख़्तरबंद ट्रक थे। एक तरह से पूरी सेना हमारे नज़दीक आ गई थी।

"हमें यहाँ से निकलना चाहिए," कैथरीन ने धीरे-से कहा। हम दोनों डर गए थे। लेकिन अदकी ने भागने से मना कर दिया। "हमें काम करते रहना चाहिए," वह बोली। "हम सदा इस तरह डरकर नहीं जी सकते!"

उस दिन हमारा भाई खैरी घर पर था। वह सीमा पर पहरा देता था, लेकिन उस दिन उसकी छुट्टी थी। उसे सबसे ज़्यादा जानकारी थी कि कोचो से बाहर क्या चल रहा था। उसकी नज़र हमसे तेज़ थी। उसने ट्रकों की लाइट देखी तो हाथों में पकड़ा चारे का बंडल नीचे गिरा दिया और हाथ रखकर आँखों पर पड़ रही रोशनी को रोका। "ये आईएसआईएस के लोग हैं," उसने कहा। "ऐसा लगता है कि ये लोग सीमा के रास्ते सीरिया में प्रवेश कर रहे हैं।" उसने बताया कि उनका नज़दीक आ जाना सामान्य बात थी।

6

3 अगस्त, 2014 की सुबह सूर्यादय से पहले आईएसआईएस के लोग कोचो की बाहरी सीमा पर पहुँच गए थे। उनके ट्रक आने शुरू हुए, तो मैं अदकी और दीमल घर की छत पर सो रहे थे। इराक में गर्मियों के मौसम में हवा बहुत गर्म और धूल-भरी होती है। फिर भी मुझे बाहर सोना ही अच्छा लगता था। घर के विवाहित जोड़ों के एकांत का ध्यान रखते हुए हमने छत को हिस्सों में बाँट रखा था और हम उनसे पर्दों के ऊपर से बात कर लेते थे। मुझे आमतौर पर जल्दी नींद आ जाती थी। मेरे पड़ोसी दिनभर की गतिविधियों पर बात करते और मन में प्रार्थना करते रहते थे। इराक में हिंसा शुरू होने के बाद छत से हमें आसपास का नज़ारा दिखता था, जिससे हमारा डर कम हो जाता था।

उस रात कोई नहीं सो पाया। कुछ ही घंटों पहले आईएसआईएस ने पास के गाँव पर अचानक हमला करके हज़ारों यज़ीदियों को घरों से निकाला और सिंजर पहाड़ की ओर भेज दिया। आतंकियों ने हर उस आदमी को मार डाला जो धर्म परिवर्तन करने से मना या जो वहाँ से जाने में आनाकानी कर रहा था। उन्होंने भीड़ में चल रहे लोगों से तेज़ चलने को कहा, उन पर गोलियाँ चलाईं और उनके गले तक काट डाले। कोचो के निकट आने पर उनके ट्रकों की आवाज़ गाँव की शांत हवा में बम के धमाके जैसी सुनाई पड़ रही थी। हम डरे हुए थे।

आईएसआईएस ने सिंजर पर आसानी से क़ब्ज़ा कर लिया। केवल कुछ यज़ीदियों ने उनका विरोध किया, जो गाँव की रक्षा

करने में जुटे थे। लेकिन शीघ्र ही उनके पास हथियारों की कमी हो गई। हमने यह भी सुना कि हमारे सुन्नी अरब पड़ोसियों ने आतंकियों को पनाह दी, यज़ीदियों को सुरक्षित स्थान पर जाने से रोका और आतंकियों की गैर-सुन्नी लोगों को पकड़ने में मदद की। फिर उन्होंने आतंकवादियों के साथ मिलकर ख़ाली पड़े यज़ीदी गाँवों को लूट लिया। हमें तब और भी हैरानी हुई जब कुर्दवासी भी उसमें शामिल हो गए, जिन्होंने हमारी सुरक्षा का वचन दिया था। देर रात बिना कोई चेतावनी दिए और हमारी सुरक्षा का आश्वासन देने के बाद भी पेशमेरगा सिंजर छोड़कर भाग गए। वे आईएसआईएस के आतंकवादियों के पहुँचने से पहले ही ट्रकों पर सवार होकर सुरक्षित स्थान पर निकल गए थे।

कुर्द सरकार ने बाद में इसे 'रणनीतिगत वापसी' का नाम कहकर टाल दिया। उन्होंने कहा कि उनके पास उस इलाक़े की सुरक्षा के लिए पर्याप्त सैनिक नहीं थे, और उनके कमांडरों को लगा कि वहाँ रुकना आत्महत्या करने के बराबर था। उन्हें इराक के दूसरे हिस्सों में लड़ने का ज़्यादा लाभ था, क्योंकि वहाँ जीतने की संभावना ज़्यादा थी। हमें उन सिपाहियों से ज़्यादा कुर्द के नेताओं पर ग़ुस्सा आ रहा था जिन्होंने यह निर्णय लिया था। हालाँकि हमें यह समझ नहीं आया कि वह हमें बिना चेतावनी दिए या हमारी सुरक्षा का प्रबंध किए बिना क्यों भाग गए। अगर हमें उनके जाने के बारे में पता होता तो हम कुर्दिस्तान चले जाते और आईएसआईएस के हमला करने से पहले कोचो ख़ाली हो गया होता।

गाँववालों ने इसे विश्वासघात का नाम दिया। गाँव की सीमा पर बनी पोस्ट के नज़दीक रहने वाले लोगों ने पेशमेरगा को जाते देखा था और उनसे याचना की थी कि वे गाँव वालों के लिए कुछ हथियार छोड़ जाएँ, लेकिन पेशमेरगा ने इतनी भी सहायता नहीं की। यह समाचार गाँव में जल्दी ही फैल गया, लेकिन हमें इस पर विश्वास करने में थोड़ा समय लगा। हम पेशमेरगा की बहुत इज़्ज़त करते थे कि और हमें पूरा विश्वास था कि वे लौटकर आएँगे और अपना दायित्व पूरा करेंगे। हमारा उन पर विश्वास इतना ज़्यादा था कि पहली बार

हमने कोचो में आईएसआईएस की गोलीबारी सुनी तो *"हमें लगा कि पेशमेरगा हमें बचाने आ गए थे।"*

पेशमेरगा के चले जाने के बाद आतंकवादियों ने बहुत तेज़ी से ख़ाली किए गए पोस्ट और चेक-प्वाइंट पर क़ब्ज़ा कर लिया और हमारे गाँव को घेर लिया। हमारे पास भागने की कोई योजना नहीं थी। आईएसआईएस ने तुरंत सिंजर के गाँवों को जोड़ने वाली सड़क बंद कर दी। भागने की कोशिश कर रहे परिवारों को पकड़ लिया गया। उनका अपहरण हो गया या फिर उन्हें मार डाला गया। मेरी माँ के भतीजे ने अपने परिवार के साथ भागने की कोशिश की, लेकिन आईएसआईएस ने गाड़ी रोककर उनकी हत्या कर दी। "मुझे नहीं पता कि उनकी औरतों के साथ क्या हुआ," मेरी माँ ने फ़ोन पर मुझे बताया। हमने ऐसी डर से भरी बहुत-सी कहानियाँ सुनीं।

आईएसआईएस के लोग हमारे गाँव आए तो हेज़्नी और सउद कोचो से बाहर गए हुए थे। हेज़्नी, सिंजर शहर में और सऊदी कुर्दिस्तान में था। उन्होंने रात-भर फ़ोन किया। वे बहुत परेशान थे, क्योंकि वे दोनों हमसे दूर किंतु सुरक्षित थे। उन्होंने हमें सिंजर के हालात के बारे में बताया कि यज़ीदी किस तरह उस जगह से भाग रहे थे। हज़ारों की संख्या में लोग अपने मवेशियों को साथ लेकर पहाड़ की ओर निकल पड़े थे। उनमें से कुछ भाग्यशाली लोग गाड़ियों में बैठकर या ट्रकों पर लटककर जल्दी निकल गए। कुछ ने बुजुर्गों को पीठ पर बैठाया और कुछ ने उन्हें गाड़ियों में धकेल दिया। दोपहर में गर्मी बहुत तेज़ थी। कुछ बहुत बीमार और बूढ़े लोग रास्ते में ही मर गए। उनके दुबले शरीर पेड़ की टहनियों की तरह रास्ते में गिरे पड़े थे। लोगों को पहाड़ तक पहुँचने की इतनी जल्दी थी कि वे शवों के पास से गुज़र गए और किसी ने उनकी ओर ध्यान तक नहीं दिया।

यज़ीदी, पहाड़ों पर जाते हुए अपना सामान धीरे-धीरे गिराते जा रहे थे। किसी के कपड़े, किसी का कोट, खाना पकाने का घड़ा, बर्तन आदि। इन चीज़ों के बिना घर से निकलना मुश्किल था। बर्तनों के बिना कैसे खाएँगे? क्या होगा जब बच्चे को गोद में उठाते हुए उनके हाथ दर्द करने लगेंगे? क्या वे सर्दी शुरू होने से पहले घर पहुँच

पाएँगे? धीरे-धीरे रास्ता कठिन होता गया। हर क़दम के साथ पहाड़ की दूरी और लंबी होती गई। उन्होंने बेकार सामान रास्ते में छोड़ दिया। बच्चे पैर घसीटते हुए चल रहे थे। उनके जूते फट चुके थे। वे पहाड़ तक पहुँचे तो कुछ लोग इधर-उधर छिप गए, कुछ गुफाओं और धर्म स्थलों में या पहाड़ पर बने गाँव में छिप गए। घुमावदार सड़कों पर गाड़ियाँ तेज़ी से दौड़ रही थीं। पर्वतीय पठार बेघर लोगों से भर चुका था।

पहाड़ के ऊपर राहत की गुंजाइश ही नहीं थी। कुछ यज़ीदी, भोजन और पानी की तलाश में या अपने खोए संबंधियों को ढूँढ़ने निकल पड़े। वे गाँव में रहने वाले लोगों से मदद माँग रहे थे। कुछ जस के तस बैठ गए। वे शायद बहुत थक चुके थे अथवा वे सिंजर में आईएसआईएस आने के बाद शांत क्षणों में बैठकर सोच रहे थे कि यह उनके साथ अचानक क्या हो गया। उनके गाँव पर क़ब्ज़ा हो गया था और उनका सामान, किसी और की संपत्ति बन चुका था। आईएसआईएस के आतंकवादियों ने पहाड़ की तलहटी पर बने कई छोटे धर्म स्थल नष्ट कर दिए। पहाड़ के पास ही एक क़ब्रिस्तान था, जो बच्चों को दफ़नाने के लिए आरक्षित था, लेकिन वह भी अब हर उम्र के शवों से भर गया था। उन्हें आईएसआईएस ने मारा या वे पहाड़ तक पहुँचने के रास्ते में जान दे बैठे। सैकड़ों लोग मारे गए, लड़कों और युवतियों का अपहरण कर उन्हें मोसुल या सीरिया पहुँचा दिया गया। मेरी माँ की उम्र की बूढ़ी औरतों को मारकर सामूहिक क़ब्रों में दफ़न कर दिया गया।

पहाड़ पर पहुँचे यज़ीदी, अपने निर्णय पर पुनर्विचार कर रहे थे। क्या उन्होंने पहाड़ पर पहले पहुँचने के लिए किसी को पीछे छोड़ दिया था? क्या उन्होंने रास्ते में किसी पैदल चल रहे आदमी की मदद नहीं की? क्या वह अपने साथ मवेशियों को ला सकते थे? क्या वे किसी की जान बचाने के लिए कुछ देर रुक सकते थे? मेरी माँ का भतीजा जन्म से विकलांग था। उसके लिए पैदल चलना मुश्किल था। आईएसआईएस के लोग जब गाँव पहुँचे तो उसने अपने परिवार को आगे जाने दिया, क्योंकि वह जानता था कि वह पैदल नहीं पहुँच पाएगा। क्या वह कभी पहाड़ तक पहुँचेगा? जो बचकर निकल

गए, वे झुलसा देने वाली गर्मी में पहाड़ पर फँसे थे और नीचे आईएसआईएस के लोग फैले हुए थे। वहाँ से बचकर भागने का कोई तरीक़ा नहीं था।

हमें लगा कि यह हमारे आने वाले समय की झलक थी। हम प्रार्थना करने लगे। हमने सुन्नी अरब गाँवों और कुर्दिस्तान में सभी परिचितों से बात की, लेकिन किसी के पास आशाजनक कहने को कुछ नहीं था। आईएसआईएस ने उस दिन कोचो पर हमला तो नहीं किया, लेकिन उन्होंने हमें बता दिया कि अगर हमने भागने की कोशिश की तो वह हमें मार देंगे। गाँव की सीमा पर रहने वाले लोगों ने हमें बताया कि आईएसआईएस वाले कैसे दिखते थे। कुछ की आँखों तक स्कार्फ बँधे थे और अधिकतर की लंबी दाढ़ी थी। उनके पास अमेरिकी हथियार थे, जो अमेरिकी सैनिकों ने जाते हुए इराकी सेना को दिए थे और सेना के चले जाने के बाद वे हथियार आईएसआईएस के क़ब्ज़े में आ गए। आतंकवादी बिलकुल वैसे ही दिख रहे थे, जैसे वे टीवी पर नज़र आते थे और ऑनलाइन वीडियो में दिखते थे। वे मुझे कहीं से भी सामान्य नहीं लगे। वे मुझे बंदूकों और टैंकों की तरह हथियारों जैसे दिखते थे और वे मेरे गाँव पर निशाना साधे हुए थे।

पहले दिन यानी 3 अगस्त को आईएसआईएस का एक कमांडर कोचो आया। उसके बाद अहमद जासो ने सबको जेवात में बुलाया। इलियास हम सब में बड़ा था, इसलिए वह देखने गया था। हम उसके लौटने की प्रतीक्षा करने लगे।

मेरे पास कैथरीन बैठी थी और वह बहुत डरी हुई थी। हालाँकि हमारे बीच कुछ ही सालों का फ़ासला था, लेकिन हम स्कूल में एक क्लास में पढ़ते थे और हमेशा साथ रहते थे। अपनी किशोरावस्था में हम दोनों को मेकअप और बाल काढ़ने का बहुत शौक था। हम एक-दूसरे के साथ उसका अभ्यास करते थे। हम गाँव की शादियों में नए स्टाइल देखते और फिर उनका अभ्यास करते थे। वही एक दिन होता

था, जब दुल्हनें अपनी साज-सज्जा पर सबसे अधिक पैसा और समय ख़र्च करती थीं। उनकी तसवीरें, मैगजीन में छपी फ़ोटो की तरह नज़र आती थीं। मैं उनके हर स्टाइल को ध्यान से देखती थी। *उसने बाल इस तरह कैसे बनाए होंगे? इसने कौन-से रंग की लिपस्टिक लगाई है?* मैं दुल्हन की एक फ़ोटो अपने संग्रह में जमा कर लेती थी। मेरी सैलून खोलने की इच्छा थी। मुझे लगता था कि सैलून में आने वाली औरतें उस एल्बम को देखेंगी, तो उसी में से अपने लिए स्टाइल पसंद करेंगी। आईएसआईएस के आने तक मेरे पास दो सौ से अधिक फ़ोटोग्राफ़ इकट्ठे हो गए थे। उनमें से मेरा मनपसंद फ़ोटो एक लड़की का था। उसके बाल घुंघराले थे, जो उसने सिर के ऊपर बाँधे थे और उनमें सफ़ेद रंग के छोटे फूल गूँथे गए थे।

मैं और कैथरीन बाल लंबे करने के लिए बहुत मेहनत करते थे। हम उनमें तेल लगाते और हिना से रंगते थे। परंतु उस दिन हमने बालों में कंघी भी नहीं की। मेरी भतीजी का रंग पीला पड़ गया था। वह मुझे अचानक अपनी उम्र से बहुत बड़ी दिखने लगी। "तुम बिलकुल चिंता मत करो," मैंने उसका हाथ पकड़कर कहा। "सब ठीक हो जाएगा।" मेरी माँ भी मुझसे यही कहती थीं; हालाँकि मैंने उनकी बात पर कभी विश्वास नहीं किया। बच्चों को आशा बँधाना उनका काम था और अब कैथरीन को आशा बँधाना मेरा काम था।

तभी इलियास आ गया। सब उसे देखने लगे। वह हाँफ रहा था, क्योंकि वह शायद भागकर आया था। फिर उसने ख़ुद को सँभाला। "दाएश ने कोचो को घेर लिया है," उसने कहा। "अब यहाँ से निकलना असंभव है!"

आईएसआईएस के कमांडर ने गाँववालों को चेतावनी दी थी कि अगर किसी ने भागने की कोशिश की तो उसे सज़ा मिलेगी। इलियास ने कहा, "चार परिवार यह कोशिश करके देख चुके हैं। उन्होंने ने उन्हें रोका। लोगों ने जब धर्म-परिवर्तन करने से मना कर दिया, तो आईएसआईएस ने उन्हें गोली मार दी। औरतें अपने बच्चों को कसकर पकड़े बैठी थीं, लेकिन उन्होंने बच्चों को भी माँ से अलग कर दिया। वे उनकी गाड़ियों और बेटियों को उठाकर ले गए।"

"पेशमेरगा ज़रूर लौटकर आएँगे," मेरी माँ ने धीरे-से कहा। "हमें प्रार्थना करनी चाहिए। ईश्वर हमारी रक्षा करेंगे।"

"कोई हमारी सहायता के लिए अवश्य आएगा," मसूद ने कहा। उसे ग़ुस्सा आ रहा था। "वे हमें इस तरह अकेला छोड़कर नहीं जा सकते।"

"कमांडर का कहना है कि हमें सिंजर पहाड़ पर चढ़ गए अपने संबंधियों को वापस नीचे बुलाना चाहिए," इलियास ने कहा। "कमांडर बोल रहा है कि अगर वे पहाड़ से नीचे उतर आए तो उन्हें छोड़ दिया जाएगा।"

हम चुपचाप बैठकर उसकी बात सुन रहे थे। पहाड़ पर जो भी परेशानी हो, पर कुछ यज़ीदी जो ऊपर पहुँच गए थे, वह आईएसआईएस के हाथों से दूर सुरक्षित थे। हमें भरोसा था कि वह पर्वत, हमें प्रताड़ित होने से बचाएगा। कई बार यज़ीदियों ने पर्वत की गुफाओं में शरण ली थी, उसकी जलधारा का पानी पिया था और उस पर उगने वाले फल-फूल खाकर पेट भरा था। उसके चारों ओर हमारे पवित्र धर्म स्थल थे। हमें विश्वास था कि ईश्वर हमें जरूर देख रहा होगा। हेज़्नी पहाड़ तक पहुँच चुका था। उसने हमसे निश्चिंत रहने को कहा। "तुम हमारे लिए रो रहे हो और हम तुम्हारे लिए परेशान हैं," वह बोला। "हमारी जान बच गई है!"

हमने आतंकवादियों की बात मानने का फ़ैसला किया। वे हर घर से हथियार इकट्ठे करने लगे। हमने उन्हें अपनी एक बंदूक छोड़कर, सबकुछ दे दिया। हमने वह बंदूक एक रात पहले खेत में छिपाई थी। हम कहीं और भाग नहीं सकते थे। हर दिन इलियास या हमारा कोई भाई जेवात से इस्लामिक स्टेट कमांडर का आदेश लेकर आता था। हम सब घर में रहते और पूरा दिन शांति से बीत जाता था। वह बंदूक, जिसे हमने खेत में दबाया था, वहीं दबी रह गई। आईएसआईएस ने हमसे कई वादे किए, लेकिन हमने तय किया कि हम मर जाएँगे, लेकिन हेज़्नी या किसी अन्य व्यक्ति को सिंजर पहाड़ से लौटने को नहीं कहेंगे। सब जानते थे कि यज़ीदी पहाड़ से नीचे उतरे तो क्या होगा!

7

कोचो पर क़ब्जा हुए लगभग दो हफ़्ते हो गए थे। कुछ दिन तो धुंधलके-से बीत गए, जिसमें एक पल, दूसरे पल के समान बीतता था, जबकि बाक़ी दिनों पर हर पल जैसे काँटे की तरह चुभता था। सुबह के समय आईएसआईएस के चेक-प्वाइंट से प्रार्थना की गूँज सुनाई देती थी। वह आवाज़ कोचो में असामान्य थी, परंतु सिंजर के इस्लाम स्कूल में पढ़ने के कारण मेरे लिए वह परिचित थी। कुछ बूढ़े यज़ीदी उसे सुनकर आपत्ति जताते थे। "सिंजर अब यज़ीदियों का शहर नहीं रह गया है," वे लोग भड़ककर कहते। उन्हें भरोसा था कि हम इन छोटे गाँवों और कस्बों तक सीमित रह जाएँगे और संपन्नशाली यज़ीदी क्षेत्रों पर अमीर कुर्द लोगों का क़ब्जा हो जाएगा। मुझे प्रार्थना से परेशानी नहीं थी, लेकिन आईएसआईएस ने जब हमारे घरों को घेर लिया तो फिर हमें उस आवाज़ से पीड़ा होने लगी।

एक-एक करके हमारे संबंधी घर आने लगे। हेज़्नी की पत्नी जीलन ने पड़ोस का घर ख़ाली कर दिया और हमारे साथ आकर रहने लगी। मेरे दूसरे भाई-बहन भी हमारे पास आ गए थे। वे अपने साथ छोटे बक्सों में खाना आदि लाए थे। सउद की पत्नी ने हाल में बच्चे को जन्म दिया था। वह भी अपने नवजात शिशु को लेकर हमारे घर आ गई। हमारे घर के कमरे कपड़ों व कंबलों और दूसरी चीज़ों से भर गए। दिन में हम टेलीविज़न के सामने बैठकर सिंजर में यज़ीदियों की हत्या की ख़बरें देखते थे। वह किसी बुरे सपने से कम नहीं था। हवाई जहाज, सहायता-सामग्री गिराने के लिए बहुत नीचे नहीं उतर पाते थे

और विशाल सिंजर पहाड़, मानो भोजन और पानी के पैकेट ख़ुद ही निगल जाता था।

इराकी सेना के हेलीकॉप्टर सड़कों पर उतरते तो यज़ीदी पागलों की तरह उसमें चढ़ने के लिए भागते थे। सैनिक उन्हें पीछे धकेल देते थे, क्योंकि हेलीकॉप्टर में ज़्यादा जगह नहीं होती। "हेलीकॉप्टर इतने लोगों को लेकर नहीं उड़ सकता," वे चिल्लाकर लोगों से कहते थे, लेकिन उनका यह तर्क पहाड़ पर फँसे लोगों को समझाने में असमर्थ था। हमने सुना कि एक औरत हेलीकॉप्टर में चढ़ने के लिए इतनी बेताब थी कि वह उसे पकड़कर लटक गई। बाद में उसका हाथ छूट गया और वह नीचे गिर गई। वह नीचे चट्टान पर गिरी तो लगा कि कोई तरबूज फट गया।

आईएसआईएस के शहर पर क़ब्ज़ा होने से थोड़ी देर पहले ही हेज़्नी पहाड़ पर पहुँचा था। उसकी पुलिस चौकी ख़ाली हुई तो वह अपने एक साथी के साथ पहाड़ पर चला गया। वे आतंकवादियों के लिए हथियार छोड़कर नहीं जाना चाहते थे, इसलिए उसकी यूनिट का हर व्यक्ति अपनी-अपनी राइफ़ल साथ लेकर गया था। रास्ते में धूल और गर्मी थी। उन्हें डर था कि उन्हें रास्ते में छिपे हुए आतंकवादी पकड़ लेंगे। उन्होंने वहाँ से क़रीब आधा मील की दूरी पर देखा कि एक आईएसआईएस का ट्रक शहर की शिया मस्जिद की तरफ़ गया और थोड़ी देर बाद वह मस्जिद, धमाके के साथ ढह गई। वे दोनों हाईवे पर जाते समय तीन आईएसआईएस के आतंकवादियों से भरे ट्रकों की नज़र से बच गए। उन लोगों ने कुछ ही मिनट के बाद हेज़्नी और उसके साथी के पीछे आ रहे कई लोगों को मार डाला था। "किसी चमत्कार ने मेरी जान बचा ली," मेरे भाई ने मुझे बाद में बताया।

पहाड़ के ऊपर दिन में ज़बरदस्त गर्मी और रात में ख़ून जमा देने वाली ठंड पड़ती थी। लोगों के पास खाने को भोजन नहीं था और वे प्यास से मरने लगे थे। पहले दिन उन्होंने एक भेड़ को काटा, जिससे सबको थोड़ा मीट खाने को मिल गया। दूसरे दिन हेज़्नी और कुछ लोग पूर्वी दिशा से पैदल चलकर एक छोटे-से गाँव पहुँच गए। वहाँ

आईएसआईएस ने क़ब्जा नहीं किया था। उन्होंने एक ट्रैक्टर में गेहूँ भरा और उसे लेकर वापस पहाड़ पर आ गए। फिर उन्होंने गेहूँ को उबाला और सब में बाँट दिया, जिससे कुछ लोगों का पेट भर गया। फिर एक दिन वाईपीजी के कुछ उग्रवादी सीरिया से ब्रेड और भोजन लेकर आ गए। वाईपीजी पीकेके या कुर्दिस्तान वर्कर्स पार्टी की ही सीरियाई शाखा है, जो कुर्दिस्तान गोरिल्ला सेना की टुकड़ी है।

आख़िरकार वाईपीजी की टुकड़ी ने अमेरिकी हवाई हमले की सहायता से यज़ीदियों के लिए सिंजर से लेकर सीरिया के कुर्दिस्तान वाले इलाक़ों तक का क्षेत्र ख़ाली करवा दिया। उस इलाक़े में कुर्दवासी अपना क्षेत्र स्थापित करना चाहते थे। आईएसआईएस ने भागते हुए लोगों पर गोलियाँ चलाईं, परंतु हज़ारों लोग पहाड़ के रास्ते सुरक्षित स्थान पर पहुँचने में सफल हो गए। हेज़्नी भी पहाड़ से भागकर एक परिचित के घर में पहुँच गया। यज़ीदी, जब कुर्दिस्तानी सीरिया को पार करके इराकी कुर्दिस्तान में पहुँचे तो वहाँ रहने वाले कुर्दवासियों ने, जिनमें से अधिकांश सुन्नी थे, उन्हें भोजन, पानी और कपड़े दिए। अन्य लोगों ने उनके लिए अपने भंडार-गृह और स्कूल भी खोल दिए। यज़ीदियों को शरण मिल गई थी। वह करुणा तथा सहायता का ऐसा प्रदर्शन था, जिसे सोचकर हम आज भी भावुक हो जाते हैं।

नरसंहार से पहले मैंने पीकेके के विषय में ज़्यादा विचार नहीं किया था। सिंजर में उनकी विशेष मौजूदगी नहीं थी। मैंने कई बार टेलीविज़न पर उनके चित्र देखे थे। वे ईरान की सीमा पर कंदील के पहाड़ों के आसपास, खाकी वर्दी पहने और हाथ में राइफ़लें लेकर बैठे रहते थे। उनकी लड़ाई तुर्की सरकार के ख़िलाफ़ नहीं थी, परंतु उन्होंने पहाड़ पर फँसे यात्रियों की जान बचाई तो पीकेके की टुकड़ी सिंजर में नायक बनकर उभरी। उन्होंने आसानी से पेशमेरगा की जगह ले ली। इससे उनके और बरज़ानी की पार्टी केडीपी के बीच बढ़ता तनाव ख़त्म हो गया। केडीपी सिंजर में अपना प्रभाव बढ़ाना चाहती थी। उन्होंने हमें एक अलग तरह के युद्ध में झोंक दिया था, जिसका प्रभाव अगले कई वर्षों तक देखने को मिलता रहा। हम पीकेके के आभारी थे कि उन्होंने पहाड़ पर फँसे यज़ीदियों की जान बचाई और सिंजर

में आईएसआईएस के आतंकियों से लड़ने के लिए अपने सैनिक भेज दिए।

कोचो को किसी तरह की सहायता मिलने का संकेत नहीं मिल रहा था। हर रोज़ मेरा कोई भाई जेवात तक जाता और वहाँ से ख़बर लेकर आता था। लेकिन हमें आशा नहीं होती थी। उन्होंने बताया कि कोचो के लोग कुछ योजना बना रहे थे, लेकिन गाँव से बाहर का कोई व्यक्ति सहायता करने को तैयार नहीं था। माँ ने कहा, "अमेरिकी शायद हवाई जहाज की मदद से हमारी सहायता करें।" कोचो में घुसे आईएसआईएस के आतंकवादी उस समय अवश्य थोड़ा डर गए थे, जब उन्होंने हवाई जहाज और हेलीकॉप्टर की आवाज़ सुनी। मेरी माँ को उस समय भी सहायता की उम्मीद थी, लेकिन मेरे भाइयों ने, जो अमेरिकी सेना के साथ काम कर चुके यज़ीदी अनुवादकों के संपर्क में थे, सहायता मिलने की आशा छोड़ दी थी।

कई बार गाँव के ऊपर से हवाई जहाज और हेलीकॉप्टर उड़कर गए, लेकिन वे कोचो में नहीं उतरे, बल्कि पहाड़ पर चले गए। हमें पता था कि पीकेके भी सहायता के लिए नहीं आ सकेगी। पीकेके के उग्रवादी बहादुर थे और उन्हें लंबा प्रशिक्षण प्राप्त था। उन्होंने तुर्की सेना से लगभग आधी शताब्दी तक लड़ाई लड़ी थी। वे पहाड़ी लड़ाई में निपुण थे। उन्हें ज़मीनी स्तर पर आईएसआईएस से लड़ने में मुश्किल हो सकती थी। कोचो अब दुश्मन का इलाक़ा था और वहाँ पहुँचना भी मुश्किल था। हमें मदद की अब कोई आशा नहीं थी।

इसके बावजूद हम लंबे समय तक यह उम्मीद लगाए रहे कि अमेरिकी सैनिक, कोचो की घेराबंदी अवश्य तोड़ देंगे। मेरा एक भाई जालो अमेरिकी आक्रमण के बाद एयरपोर्ट पर तैनात था। अमेरिका में उसका एक दोस्त था, जिसका नाम हैदर इलियास था। उसे ह्यूस्टन में शरण दी गई थी, क्योंकि उसने अमेरिकियों के लिए अनुवादक का काम किया था। उनकी प्रतिदिन बात होती थी। हालाँकि हैदर ने जालो को फ़ोन नहीं करने के लिए सावधान किया था। उसे डर था कि यदि आईएसआईएस ने जालो का फ़ोन देखा और उन्हें अमेरिकी नंबर नज़र आ गया तो वे उसे तुरंत मार डालेंगे।

हैदर कुछ यज़ीदियों के साथ मिलकर इराक में फँसे यात्रियों की मदद करने की कोशिश कर रहा था। वे लोग वाशिंगटन और बगदाद की सरकार को आवेदन भी दे रहे थे। परंतु उन्हें कोचो में कोई सफलता नहीं मिली। हैदर से जालो बात करता था और फिर उसकी आशा टूट जाती थी। मेरा भाई अमेरिकियों के साथ था और वह जानता था कि अमेरिकी सैनिकों का ज़मीन पर क्या सामर्थ्य था। जालो को यह विश्वास था कि अगर अमेरिका ने अपने सैनिकों को कोचो के आसपास आईएसआईएस के चेक-प्वाइंट पर भेजा तो वह अवश्य उस घेराबंदी को तोड़ देंगे। आईएसआईएस वाले कई बार जेवात में बैठकर सिंजर में चल रही अमेरिकी गतिविधियों की निंदा करते थे और ओबामा को समाज-सुधारक मानते थे। तब जालो ने हैदर से कहा, "मुझे लगता है उनका नियंत्रण ख़त्म हो रहा है। वे शायद हमें छोड़ देंगे।" कुछ ही दिन पहले आईएसआईएस के लोग अहमद जासो को उसके बीमार होने पर इलाज के लिए शहर ले गए थे। "यदि वे हमें मारना ही चाहते हैं, तो ऐसा क्यों कर रहे हैं?" जालो ने पूछा।

जालो को अमेरिका से प्यार था। वह कोचो पर क़ब्ज़ा होने से पहले हैदर को फ़ोन करके उसके नए जीवन के विषय में पूछता था। हैदर, अमेरिकी कॉलेज में पढ़ता था, जबकि जालो को हाई स्कूल जाने का मौक़ा भी नहीं मिला। "मेरे लिए एक अमेरिकी पत्नी ढूँढ़ देना," जालो मज़ाक़ में कहता। "थोड़ी बूढ़ी भी चलेगी। मुझे बस एक अमेरिकी लड़की से शादी करनी है!"

हैदर को भरोसा नहीं था कि अमेरिकी, कोचो की मदद के लिए आएंगे। उसे लगता था कि हवाई हमलों के कारण आईएसआईएस, कोचो के ख़िलाफ़ था। "तुम सावधान रहना," उसने जालो से कहा। "हो सकता है कि वह तुम्हें मूर्ख बना रहे हो ताकि तुम सोचो कि वे कमज़ोर हैं। वह तुम्हें आसानी से जाने नहीं देंगे।" इराकी गतिविधियों को लेकर सब परेशान थे। मीडिया में कोचो पर हुए क़ब्ज़े से जुड़ी कोई ख़बर नहीं आती थी। इलियास बोला, "उनके पास हमारे लिए सोचने का वक्त नहीं है।"

हमने इंतज़ार किया। गाँव में शांति थी और सड़कें ख़ाली रहतीं, सब लोग घर के अंदर रहते थे। हमने खाना कम कर दिया था। मेरा भाई कमज़ोर होता जा रहा था और उसका चेहरा पीला पड़ने लगा। मुझे भी अंदर से अच्छा नहीं लगता था, लेकिन मैं ख़ुद को शीशे में देखना नहीं चाहती थी। हमें नहाने का भी मौक़ा नहीं मिलता था। इतना ही नहीं हमारे घरों से दुर्गंध आने लगी। हम रात के समय घर की छत पर एक-दूसरे के पास लेटकर सो जाते थे। हमें आतंकियों की नज़र से बचने के लिए छत पर भी झुककर चलना पड़ता था, क्योंकि छत की चारदीवारी छोटी थी। हम बहुत धीरे-धीरे बोलते थे ताकि हमारी आवाज़ किसी को सुनाई ना पड़े। अचानक शिरीन का नवजात शिशु रोने लगा। उसे सुनकर हम चिंता में पड़ गए। परंतु इससे फ़र्क़ नहीं पड़ता था, क्योंकि आईएसआईएस वाले जानते थे कि हम घर में ही छिपे थे।

आईएसआईएस के आतंकियों ने हमें हमारे घरों में क़ैद कर दिया था। वे सिंजर में चारों ओर नरसंहार करते घूम रहे थे। उनके पास हमारी देखभाल का समय नहीं था। उन्होंने यज़ीदियों के घर लूट लिए, उनके जेवर, गाड़ी की चाबी और मोबाइल फ़ोन भी छीन लिए। वे यहाँ तक की यज़ीदियों की गायों और भेड़ों को भी ले जाना चाहते थे। वे इराक और सीरिया में मौजूद आतंकवादियों के पास जवान लड़कियाँ भेजते थे, जिन्हें ग़ुलाम बनाकर रखा जाता था। वे बूढ़े पुरुषों को मार देते थे। उन्होंने हज़ारों की संख्या में यज़ीदियों को मार दिया गया था। उनके शव चारों ओर बिखरे पड़े थे। आईएसआईएस ने कोशिश की, लेकिन वे इतने शवों को छिपा नहीं पाए।

हमारे पड़ोसी गाँव ही हमारे लिए सहायता की आख़िरी उम्मीद थे। वहाँ हमारे सुन्नी अरब दोस्त और क़ रीबी लोग रहते थे। हमने सुना कि अरब लोगों ने यज़ीदियों को शरण दी और उन्हें सुरक्षित स्थानों पर पहुँचाया। परंतु हमने यह भी सुना था कि उन्होंने कुछ यज़ीदियों को पकड़कर आईएसआईएस को सौंप दिया और फिर

खुद भी आतंकवादी बन गए। कुछ बातें अफवाह थीं और कुछ ख़बरें विश्वसनीय लोगों से मिलती थीं। हमें पता था कि यह सब सच होगा। एक दिन सुबह मेरा एक चचेरा भाई अपने परिवार को लेकर किसी के पास सहायता के लिए गया। परिवार ने उनका स्वागत किया और उन्हें सुरक्षित महसूस करवाया। "तुम यहाँ रुक सकते हो," उन्होंने कहा। "हम तुम्हारी मदद करेंगे।" लेकिन उन्होंने यह ख़बर आईएसआईएस के कमांडर को दे दी, जिन्होंने अपने लोगों को भेज कर मेरे भाई और उसके परिवार वालों को पकड़ लिया।

मेरे भाइयों ने गाँव में लगभग सबको फ़ोन किया। वे छत पर चढ़कर फ़ोन करते थे, जहाँ से मोबाइल का सिग्नल ठीक आता था। उनकी जितने लोगों से बात हुई, वे सब हमारे लिए चिंतित थे, परंतु उनमें से किसी के पास हमारी समस्या का समाधान या कोई जवाब नहीं था। उन्होंने सिर्फ़ यही कहा कि हम जहाँ हैं, हमें वहीं रहना चाहिए। "धीरज रखो!" उन्होंने कहा। हमारे कुछ मुसलमान पड़ोसी हमारे लिए खाना लेकर आए। उन्होंने कहा कि हमारा दर्द उनका दर्द था। उन्होंने हमसे वादा किया कि वे हमारा साथ नहीं छोड़ेंगे। परंतु एक-एक करके सब हमें छोड़ गए।

हमारे सुन्नी पड़ोसी चाहते तो हमारी सहायता कर सकते थे। यदि उन्हें पता होता कि औरतों के साथ क्या होने वाला है, तो उन्हें काले कपड़े पहनाकर बचाया जा सकता था। लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया। उन्होंने कुछ नहीं किया। हमारे साथ जो विश्वासघात हुआ, वह गोलियों से भी अधिक पीड़ादायक था।

एक दिन मैं अपने सौतेले भाइयों - दीमल, खैरी, इलियास और खालिद के साथ अपने खेत पर गई ताकि रात के भोजन के लिए एक भेड़ के मेमने का इंतजाम हो सके। कई लोगों की भूख मर चुकी थी, लेकिन छोटे बच्चे भोजन के लिए रोते-बिलखते थे। कोचो में भोजन-सामग्री नहीं आ सकती थी, इसलिए हमें अपनी एक भेड़ का मेमना कुर्बान करना पड़ा।

खेत पर मोबाइल का सिग्नल ठीक आता था, इसलिए इलियास फ़ोन साथ लाया था ताकि मेमने को तलाशने के दौरान लोग मदद के

लिए कॉल कर सकें। तभी हमने सुना कि मेरी एक रिश्तेदार बासो को आईएसआईएस वालों ने पकड़ लिया था, जब वह ताल कस्साब के पहाड़ से भागने की कोशिश कर रही थी। वह अपने बीमार भाई की देखभाल के लिए जाना चाहती थी। फिर उसे ताल अफ़ार के स्कूल ले जाना चाहती थी। हमने यह भी सुना कि उस स्कूल में यज़ीदी लड़कियों और औरतों को रखा गया था। हमारा एक सुन्नी टीचर, जिसका नाम मोहम्मद था, उसी इलाक़े का रहने वाला था। मुझे लगा कि वह बासो को ढूँढ़ने में हमारी मदद कर सकता था।

हमारे अधिकांश टीचर कोचो के बाहर मोसुल के रहने वाले सुन्नी अरब थे। हम उनका बहुत आदर करते थे और उन्हें अपने गाँव का ही मानते थे। आईएसआईएस वाले उनके घर में घुस आए थे। मैं सोचने लगी कि उन पर क्या बीत रही होगी! किसी ने कोचो का हाल जानने की कोशिश नहीं की। मेरे लिए यह कल्पना करना भी मुश्किल था कि उन्हें आईएसआईएस से बचकर भागने में कितनी मुश्किल हुई होगी। घेराबंदी का समय जैसे-जैसे बढ़ता गया, मुझे लगा कि टीचर भी शायद आईएसआईएस की मौजूदगी से ख़ुश थे। उन्हें लगता था कि मेरे जैसे सब विद्यार्थी काफ़िर थे। यह सोचकर मेरी तबीयत बिगड़ने लगी।

मैंने एक किताब के पीछे सभी टीचरों के फ़ोन नंबर लिख रखे थे। मैंने इलियास के फ़ोन से मोहम्मद साहब को फ़ोन किया। कुछ देर घंटी बजने के बाद उन्होंने फ़ोन उठाया।

"*मरहबा, उस्ताद* मोहम्मद!" मैंने कहा। मैं मोहम्मद साहब की क्लास में बिताए दिनों के विषय में सोचने लगी। मुझे उम्मीद थी कि मैं पास होकर अगली कक्षा में चली जाऊँगी। मेरा जीवन आगे बढ़ेगा। मुझे उन पर भरोसा था।

"कौन? कौन बोल रहा है?" उनका स्वर असामान्य और शांत था, जिसे सुनकर मेरे दिल की धड़कन तेज़ हो गई।

"मैं नादिया हूँ, *उस्ताद* जी!" मैंने कहा। "मैं कोचो से बोल रही हूँ।"

"नादिया, क्या बात है?" उन्होंने पूछा। अचानक उनका स्वर तेज़ हो गया। उनकी आवाज़ में बेचैनी और रुखापन महसूस होने लगा।

मैंने उन्हें बताया, "बासो को आईएसआईएस पकड़कर ताल अफ़ार ले गई है। वे कह रहे थे कि स्कूल लाल रंग से पुता हुआ है। हम यह सब जानते हैं। हम कोचो छोड़कर नहीं जा सकते। दाएश ने पूरा गाँव घेर रखा है। वे कहते हैं कि कोई जाने की कोशिश करेगा तो उसे मार देंगे। क्या आप जानते हैं कि वह स्कूल कहाँ है?"

एक पल के लिए उस्ताद चुप हो गए। मुझे लगा उन्हें मेरी आवाज़ सुनाई नहीं दे रही थी। शायद आईएसआईएस वालों ने फ़ोन सेवा काट दी या इलियास के फ़ोन के पैसे ख़त्म हो गए थे। फिर मोहम्मद साहब की आवाज़ आई तो वह बिलकुल बदली हुई सुनाई पड़ रही थी। मुझे लगा यह कोई और आदमी था। यह वह नहीं था, जिसने कुछ महीने पहले तक मुझे पढ़ाया था। उनकी आवाज़ बिलकुल अलग सुनाई पड़ रही थी। "मैं तुमसे बात नहीं कर सकता नादिया," उन्होंने धीरे से कहा। "तुम ज़्यादा चिंता मत करो। वे उसे धर्म-परिवर्तन करने को कहेंगे और कोई उससे शादी कर लेगा।" यह कहकर उन्होंने मेरे जवाब का इंतज़ार नहीं किया और फ़ोन काट दिया। उनसे बात करके मुझे वह फ़ोन एक सस्ता और घटिया प्लास्टिक का टुकड़ा लग रहा था!

"बदमाश!" इलियास ने कहा। फिर उसने भेड़ के मेमने को पकड़ा और घसीटता हुआ घर ले गया। हमने कई लोगों को फ़ोन किया, लेकिन किसी ने जवाब नहीं दिया।

उसी एक पल में मेरे अंदर कुछ बदल गया। मुझे हमेशा से यह आशा थी कि कोई हमारी मदद अवश्य करेगा। वह उम्मीद टूट गई थी। मोहम्मद साहब भी हमारे ही जैसे थे। शायद वह ख़ुद डरे हुए और अपने परिवार के लिए चिंतित थे। उन्होंने ज़िंदा रहने के लिए जो ठीक समझा, वही किया। यह भी संभव था कि उन्हें आईएसआईएस के आने की ख़ुशी थी, क्योंकि वह संसार की नई परिकल्पना से ख़ुश थे। उन्होंने इस्लाम का नृशंस विश्लेषण किया था। उन्हें एक ऐसी दुनिया चाहिए थी, जहाँ कोई यज़ीदी नहीं होगा या कहें कि कोई

अनास्थावादी शख्स नहीं होगा। मुझे नहीं पता क्या बात थी, लेकिन उसी क्षण मुझे उस व्यक्ति से नफ़रत हो गई थी।

www.The-Gyan.in

8

मैंने कोचो की घेराबंदी के बाद छठे दिन पहली बार आईएसआईएस के आतंकवादी को इतना क़रीब से देखा था। हमारे पास आटा और पीने के लिए पानी ख़त्म हो गया था, इसलिए मैं अदकी और अपनी दो बहनों रोजियान और नसरीन के साथ सामान लेने जालो के घर गई थी। जालो का घर हमारे घर से कुछ ही मिनटों की दूरी पर था। बीच में एक पतली गली थी और गाँव की सड़कों पर आम तौर पर आईएसआईएस के सदस्य दिखते नहीं थे। वे ज़्यादातर गाँव की सीमा पर पहरा देते थे, ताकि कोई गाँव से भागने की कोशिश नहीं कर सके।

हमें घर से निकलने में डर लगता था। घर के आगे वाले दरवाज़े से बाहर निकलना किसी और ग्रह पर जाने के समान था। हमारे लिए अब कोचो में अच्छा लगने जैसी कोई बात नहीं रह गई थी। आमतौर पर गाँव की गलियाँ लोगों से भरी रहती थीं। बच्चे सड़कों पर खेलते थे और उनके माता-पिता छोटी-छोटी दुकानों पर ख़रीदारी करते थे। परंतु अब अधिकांश गाँव सूना और शांत हो चुका था। मैंने अदकी से कहा, "मेरे नज़दीक चलो!" वह मुझसे आगे चल रही थी। उसे बहादुर बनने का शौक था। हम इतना सहमे हुए थे कि हमें अपनी परछाइयों से भी डर लग रहा था।

मेरी माँ ने हमें काम से भेजा था। "इस काम के लिए आदमियों को भेजने की ज़रूरत नहीं है," उन्होंने कहा। हमने उनकी बात मान ली। हम घर में बैठकर टीवी देखते और रोते रहते थे। हम कमज़ोर

होते जा रहे थे। मेरे भाई जेवात जाते थे और वहाँ मुख़्तार या आईएसआईएस के कमांडर की कही बातों की घर पर चर्चा करते थे। फिर वह फ़ोन पर लोगों से मदद माँगते थे। आख़िर भूख और थकान से उनकी हिम्मत टूट गई। मेरे भाई भी हमारे पिता की तरह बहुत बहादुर थे। मैंने उन्हें इतना हताश पहले कभी नहीं देखा। इसलिए अब सहायता करने की बारी मेरी थी।

कोचो की बनावट भव्य नहीं थी। वह गाँव जब बसा होगा तो मेरे विचार से किसी ने उसके घरों और गलियों का नक़्शा नहीं बनाया होगा। आपके पास जब अपनी ज़मीन होती है तो आप कहीं भी कुछ भी बना सकते हैं। हमारा गाँव भी इस कारण आड़ा-तिरछा बना हुआ था। गाँव के घरों का इतना विस्तार हो गया था कि उनके आसपास के रास्ते भूल-भुलैया जैसे लगते थे। किसी को भी गाँव का नक़्शा याद नहीं था और एक घर से दूसरे घर तक का रास्ता याद करने में पूरी ज़िंदगी गुज़र सकती थी।

जालो का घर गाँव के दूसरे छोर पर था। उसके और कोचो से बाहर की दुनिया के बीच केवल एक ईंट की दीवार थी। उसके आगे रेगिस्तान जैसा सिंजर शहर, मोसुल तक फैला हुआ था। वह आईएसआईएस की राजधानी बन चुका था। हमने गेट खोला और हम रसोईघर में चले गए। घर ख़ाली और साफ़-सुथरा था। उसे देखकर ऐसा नहीं लगा कि जालो और उसका परिवार जल्दबाजी में निकले होंगे। फिर भी मुझे उनकी गैर-मौजूदगी में घबराहट हो रही थी। हमने खाने-पीने का सामान जल्दी से थैलों में भर लिया।

हम निकलने लगे तो रोजियान ने बगीचे की दीवार की ओर संकेत किया। उसकी एक ईंट निकली हुई थी, जिसके कारण उसमें छेद हो गया था। हमारे अंदर घर की छत से आतंकवादियों को देखने की हिम्मत नहीं थी। हालाँकि दीवार के छेद से हम कोचो से बाहर जाने वाले पहले चेक-प्वाइंट को देख सकते थे। "क्या तुम्हें लगता है कि वहाँ दाएश मौजूद है?" रोजियान ने पूछा। हम तीनों ने हाथों में पकड़ा सामान नीचे रखा और दीवार से सटकर बाहर की दुनिया को देखने लगे।

वहाँ से लगभग दो सौ गज की दूरी पर कुछ आतंकवादी चेक-प्वाइंट पर बैठे थे। वहाँ पहले कभी पेशमेरगा और उनसे भी पहले इराकी सेना का क़ब्ज़ा था। उन्होंने काले रंग की ढीली पतलून, काली कमीज पहनी थी और बगल में हथियार लटके थे। वे सब रेतीली सड़क पर घूमते हुए एक-दूसरे से बात कर रहे थे। उनके हाव-भाव देखकर हमें डर लग रहा था।

कुछ मिनटों पहले हम रास्ते में आईएसआईएस के सदस्य के मिल जाने की संभावना से डरे हुए थे, लेकिन अब वे हमारे सामने घूम रहे थे। काश! मैं उनकी बातें सुन पाती। हमें यदि समझ में आता कि आगे क्या होने वाला है तो हमारे भाइयों को मदद मिल सकती थी। संभवतः वे सिंजर पर क़ब्ज़े की बुरी नीयत रखते थे और यदि हम इसके बारे में सुनते तो गुस्से में आकर उनसे लड़ बैठते।

"वे क्या बातें कर रहे होंगे?" रोजियान ने धीरे-से पूछा। "ये अच्छा तो नहीं बोल रहे होंगे!" अदकी ने धीरे-से कहा। "चलो, हम चलते हैं। हमें घर जाकर माँ को सामान भी देना है।"

अविश्वास से भरे हम लोग घर लौट रहे थे। रास्ते में नसरीन ने चुप्पी तोड़ी। "ये वही लोग होंगे, जिन्होंने बासो को बंदी बना रखा है। वह ज़रूर भयभीत होगी।"

लौटते समय हमें सड़कें पहले से सँकरी लग रही थीं। हम तेज़ गति से चल रहे थे। हमने घर जाकर माँ को बताया कि हमने क्या देखा था। वे लोग उस घर के कितने पास थे, जहाँ कि जालो के बच्चे कुछ दिन पहले सोए थे। नसरीन और मैं ख़ुद को रोक नहीं सके। हमें रोना आ गया। हम उम्मीद नहीं छोड़ना चाहते थे, लेकिन मैं अपनी माँ को अपने मन के डर का अहसास दिलाना चाहती थी। ताकी वह मुझे उम्मीद बंधा सकें।

"वे हमारे बहुत पास हैं," मैंने कहा। "वे हमें किसी भी समय पकड़ सकते और चाहें तो आसानी से हमारे साथ कुछ बुरा भी कर सकते हैं।"

"हमें इंतज़ार करना होगा। हम प्रार्थना करेंगे," माँ ने उत्तर दिया। "शायद हमें कोई बचा ले। हो सकता है वह हमें चोट ना पहुँचाएँ।

शायद हम बच जाएँ।" कोई दिन ऐसा नहीं होता था, जब माँ हमारी हिम्मत नहीं बँधाती थीं।

हमारे कपड़े धूल और पसीने से मैले हो गए थे। परंतु हमने उन्हें बदलने के बारे में विचार नहीं किया। हमने खाना छोड़ दिया था और हम केवल पानी पीकर काम चला रहे थे। बिजली गुल हो गई थी और घेराबंदी के दौरान दोबारा नहीं लौटी। हम अपना जनरेटर केवल मोबाइल फ़ोन को चार्ज करने और आईएसआईएस से जारी लड़ाई के बारे में टीवी पर समाचार सुनने के लिए इस्तेमाल करते थे। हमें ख़बरें सुनकर बुरा लगता था। सिंजर पहाड़ पर भूख और प्यास से लगभग चालीस बच्चों की मौत हो गई थी और कई भागते हुए मारे गए थे। मोसुल के निकट दो मुख्य यज़ीदी गाँवों बाशिका व बहजानी पर भी आईएसआईएस का क़ब्ज़ा हो गया था। परंतु सौभाग्य से, बहुत-से लोग इराकी कुर्दिस्तान में सुरक्षित पहुँच गए थे। सिंजर के पार हज़ारों यज़ीदी औरतों और लड़कियों का अपहरण हो रहा था। हमने सुना कि आईएसआईएस उनका यौन शोषण करती थी।

निनवेह में एक ईसाई शहर काराकोश भी आईएसआईएस के क़ब्ज़े में था। वहाँ की अधिकांश जनसंख्या इराकी कुर्दिस्तान भाग गई थी। वे लोग अधबने मॉल्स व एक चर्च के बगीचे में लगे टेंटों में शरणार्थी बनकर रह रहे थे। शिया तुर्कमेन तेल अफ़ार में ख़ुद को घेराबंदी से बचाने के लिए जूझ रहे थे। आईएसआईएस के लोग अर्बिल तक पहुँच चुके थे, लेकिन उन्हें अमेरिकियों ने रोक दिया था। वे सिंजर पहाड़ पर फँसे यज़ीदियों को बचाने का भी प्रयास कर रहे थे। बगदाद में अफरा-तफरी मची हुई थी। अमेरिकी राष्ट्रपति ओबामा ने इस अत्याचार को यज़ीदियों के 'दबे-छिपे नरसंहार' का नाम दिया था, परंतु कोचो की घेराबंदी के बारे में कोई बात नहीं कर रहा था।

यह किसी नई दुनिया से कम नहीं था। कोचो में जनजीवन पूरी तरह ठप हो गया था। सब लोग आईएसआईएस की नज़रों से बच

के रहना चाहते थे। एक-दूसरे से दूर कटकर रहना अज़ीब था। हमें मिलने-जुलने और रात को साथ में भोजन करने की आदत थी। हम सोने से पहले छतों पर बैठकर बातचीत करते थे। परंतु कोचो में आईएसआईएस के आने के बाद पास बैठे व्यक्ति से धीमे स्वर में बात करने में भी डर लगता था। हम उनकी नज़र से बचकर रहना चाहते थे। भोजन नहीं करना भी ख़ुद को बचाने जैसा था। हमें लगता था कि हम खाना-पीना छोड़ देंगे तो शायद उन्हें दिखना बंद हो जाएँगे। लोग घर से केवल किसी संबंधी से मिलने या फिर खाने का समान लाने अथवा किसी बीमार की मदद के लिए निकलते थे और फिर कीड़े-मकोड़ों की तरह तेज़ी से घर में घुस जाते थे।

एक रात आईएसआईएस की मौजूदगी के बावजूद हम लोगों ने बज़्मी उत्सव मनाने का निश्चय किया। यह एक त्योहार है, जो मूल रूप से तुर्की से आए यज़ीदी परिवार मनाते हैं। यह आमतौर पर यह त्योहार दिसंबर में आता है, परंतु गाँव में ख़लाफ़ नाम के एक आदमी ने सोचा कि ऐसे हालात में जब सब डर के माहौल में जी रहे थे, तो हमें उस त्योहार को ज़रूर मनाना चाहिए। हम बज़्मी के दौरान तवूसी मेलेक से प्रार्थना करते हैं। गाँव पर हुए क़ब्ज़े के समय तो यह और भी ज़रूरी हो गया था। हम उन यज़ीदियों को भी याद करते हैं, जिन्हें घर से मजबूर होकर जाना पड़ा। तुर्की निवासी ख़लाफ़ के पूर्वजों जैसे इन यज़ीदियों को ऑटोमनों द्वारा निकाल बाहर करने के कारण अपना वतन छोड़कर जाना पड़ा था।

कोचो के सभी लोग ख़लाफ़ के घर आमंत्रित थे। चार पाक समझे जाने वाले अविवाहित लोगों को बज़्मी ब्रेड बनाने का जिम्मा सौंपा गया था। सब लोग सूरज ढलने का इंतज़ार करते रहे और अंधेरा होने पर ख़लाफ़ के घर पहुँच गए। हम सब रास्ते में शांति से चलते रहे। गाँव की गलियों से गुज़रते हुए हम फुसफुसा रहे थे, "शोर मत करना।" मैं अदकी के साथ चल रही थी। हम दोनों डरे हुए थे। अगर आईएसआईएस ने हमें देख लिया तो ख़लाफ़ को इस काफ़िराना आयोजन की सज़ा मिलेगी। मुझे पता नहीं था कि आतंकवादी और क्या करेंगे, लेकिन मुझे उम्मीद थी कि ईश्वर से अपनी बात कहने का यही उपयुक्त मौक़ा था।

ख़लाफ़ के घर में बत्तियाँ जल रही थीं। सब ब्रेड के आसपास जमा थे। घर के मुखिया द्वारा आशीर्वाद दिए जाने से पहले उस ब्रेड को एक विशेष बर्तन में भूना जाता था। अगर वह ब्रेड टूटती नहीं है, तो यह अच्छा शकुन माना जाता है, लेकिन अगर वह टूट जाए तो यह किसी बुरे अपशकुन का प्रतीक होता है। उस दिन सादी ब्रेड बनाई गई थी, क्योंकि गाँव पर क़ब्जा था अन्यथा उसमें किशमिश और बादाम लगे रहते थे। वह गोल और मज़बूत थी। उसके टूटने का अंदेशा बिलकुल नहीं था।

ओवन के अंदर लकड़ी के कभी-कभी चटकने की हल्की आवाज़ को छोड़कर ख़लाफ़ के घर में बिलकुल शांति थी। ओवन के धुँए की परिचित गंध मुझ पर छा गई थी। मैंने वला या अपने स्कूल के दोस्तों को ढूँढ़ने की कोशिश भी नहीं की हालाँकि मैंने गाँव पर क़ब्जा होने के बाद से उन्हें नहीं देखा था। मेरा पूरा ध्यान कार्यक्रम पर था। ख़लाफ़ ने प्रार्थना शुरु की। "ईश्वर से प्रार्थना है कि वह पूरे गाँव के लिए मेरी रूह की कुर्बानी स्वीकार करें," उसने कहा। फिर वह ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा। मुझे लगता है कि ख़लाफ़ के घर में रोना, कमज़ोरी का नहीं, बल्कि बहादुरी का लक्षण था, क्योंकि उसकी आवाज़ इतनी तेज़ थी कि वह बाहर चेक-प्वाइंट तक जा सकती थी।

मैं और अदकी चुपचाप रात के सन्नाटे में घर लौट आए। फिर हम आगे के दरवाज़े से छत पर चले गए, जहाँ घर में पहरा देने वाले बाक़ी लोग सतर्क होकर बैठे थे। हमारे सुरक्षित लौट आने से उन्हें राहत मिली। घर की औरतें छत पर एक तरफ़ और पुरुष दूसरी तरफ़ सोते थे। मेरे भाई फ़ोन पर किसी से बात कर रहे थे। हम उन्हें परेशान नहीं करना चाहते थे। उस रात मुझे ठीक से नींद नहीं आई। सुबह होने से कुछ देर ही पहले मेरी आँख लगी थी और तभी मेरी माँ ने मुझे जगा दिया। "नीचे जाने का समय हो गया है," माँ ने कहा। मैं सीढ़ी से उतरकर अंधेरे आँगन में गई। मैं प्रार्थना कर रही थी कि कोई मुझे देख नहीं ले।

मेरा एक सौतेला भाई था, हाजी। वह आईएसआईएस के ख़िलाफ़ विद्रोह के बारे में बहुत बातें करता था। आतंकी भी यही कहते थे कि यदि हमने इस्लाम धर्म नहीं अपनाया तो वह हमें सिंजर पहाड़ पर ले जाएँगे। लेकिन हाजी को विश्वास था कि आतंकी झूठ बोल रहे थे। "वे हमें शांत रखना चाहते हैं," उसने कहा। "वे हमें पलटवार करने से रोकने की कोशिश कर रहे हैं।"

मैंने कई बार हाजी को बगीचे की दीवार के ऊपर से पड़ोसियों से बात करते देखा था। उसे देखकर लगता था कि वे कोई योजना बना रहे थे। आईएसआईएस की गाड़ियाँ गाँव से गुज़रती तो वे बड़े ध्यान से उन्हें देखते थे। "वे नरसंहार के लिए ही आए हैं," हाजी कहता। वह रातभर बैठकर टीवी देखता और सुबह होने तक चह ग़ुस्से से उबल रहा होता था।

आतंकियों के ख़िलाफ़ विद्रोह की सोच रखने वालां में हाजी अकेला नहीं था। हमारे जैसे और कई परिवार थे, जिन्होंने आईएसआईएस की नज़रों से हथियार छिपा कर रखे थे और वे किसी तरह चेक-प्वाइंट पर हमला करने के बारे में चर्चा करते रहते थे। गाँव के पुरुषों ने युद्ध का प्रशिक्षण ले रखा था। इसलिए वे स्वयं को सिद्ध भी करना चाहते थे। परंतु वे जानते थे कि केवल साधारण चाकू या एके-47 राइफ़लों से इतने सारे आईएसआईएस के आतंकियों से निपटना संभव नहीं था और ऐसे में बहुत-से लोगों की हत्या होना निश्चित था। यदि हम मिलकर आतंकियों को मार डालते तो भी हमारे पास जाने के लिए कोई जगह नहीं थी। उन्होंने कोचो की बाहरी सड़कों पर नियंत्रण कर लिया था। उनके पास बहुत-सी गाड़ियाँ, ट्रक और हथियार थे। उनके ख़िलाफ़ विद्रोह करना योजना नहीं, बल्कि केवल एक सपना हो सकता था। परंतु हाजी जैसे पुरुषों के लिए पलटवार करना ही ख़ुद को संतुलित रखने का एकमात्र तरीक़ा था। जिससे उनका दिमाग़ संतुलित रहता था।

गाँव के लोग प्रतिदिन जेवात में बैठकर एक नई योजना बनाते थे। यदि हम भाग नहीं सकते और उनसे लड़ या छुप भी नहीं सकते तो क्या हमारे लिए आईएसआईएस के साथ चालाकी करना संभव था?

यदि हम इस्लाम धर्म अपनाने को तैयार हो जाएँ तो शायद हमें कुछ समय मिल सकता था। फिर यही तय हुआ कि यदि कोई आतंकी किसी लड़की को छूने या उसे डराने की कोशिश करे तो हम धर्म-परिवर्तन का दिखावा करके उसे रोकने का प्रयास करेंगे। परंतु यह योजना भी लागू नहीं हो सकी।

स्त्रियों ने पुरुषों को आईएसआईएस के हमलावरों से बचाने के तरीक़ों पर विचार किया। कोचो में ऐसे अनेक स्थान थे, जिन्हें खोजना आईएसआईएस के लिए मुश्किल था। ऐसे कई गहरे कुँए थे, जिनमें पानी नहीं था और ज़मीन के नीचे भी छिपने के स्थान थे। यहाँ तक कि जानवरों का चारा और उसके अस्तबलों में भी छिपने की जगह थी। इस तरह मरने से बचा जा सकता था, परंतु पुरुषों ने छिपने से मना कर दिया। "हम दाएश के पास तुम्हें अकेला नहीं छोड़ेंगेय चाहे हमारी जान ही क्यों ना चली जाए," उन्होंने कहा। हमें जब किसी से सहायता मिलने की उम्मीद नहीं रही तो हम आईएसआईएस के हाथों में पड़ने पर अपनी तक़दीर पर फ़ैसले का इंतज़ार करने लगे। हम सब अपने परिवार को लेकर चिंतित थे। मेरे मन में मरने के विचार भी आने लगे थे।

आईएसआईएस के आने से पहले युवाओं को मरता नहीं देखा था। मुझे मौत के विचार से ही डर लगता था। साल 2014 के शुरु में कोचो के दो जवान लड़कों की मौत हो गई। एक लड़का सीमा पर काम करता था और दूसरा पुलिस में काम करने वाला इस्माइल था। वह अल कायदा प्रभावित इलाक़े में काम करते हुए एक आतंकी हमले में मारा गया था। वहाँ आईएसआईएस ने धीरे-धीरे पैर पसार लिए थे। इस्माइल की उम्र हेज़्नी के बराबर थी। वह शांत और धार्मिक स्वभाव का लड़का था। यह पहला मौक़ा था, जब कोचो का कोई व्यक्ति आईएसआईएस द्वारा मारा गया था। सबको अपने परिवार वालों की चिंता होने लगी थी, जो सरकारी नौकरी करते थे।

इस्माइल का शव जब गाँव पहुँचा तो हेज़्नी पुलिस चौकी पर तैनात था। इसलिए उसे गाँव के अधिकांश लोगों से पहले ही इस्माइल की मौत का पता लग चुका था। यहाँ तक कि उसके

परिवार और पत्नी को भी उसकी मौत की सूचना बाद में मिली। वे हमारी तरह ग़रीब थे और इस्माइल भी मेरे भाइयों की तरह सेना में भर्ती हुआ था क्योंकि उन्हें पैसों की ज़रूरत थी। उस दिन सुबह मैं उनके घर से दूर रहने के लिए लंबा रास्ता लेकर स्कूल गई थी। मुझसे यह ख़याल बर्दाश्त नहीं हुआ कि वह मर चुका था और उसके परिवार को पता तक नहीं था। यह ख़बर गाँव में फैली तो लोगों ने शोक व्यक्त करने के लिए हवा में राइफ़लों से गोलियाँ दागीं। गोलियों की आवाज़ सुनकर क्लास में बैठी लड़कियाँ चिल्लाने लगीं।

यज़ीदी, दफ़नाने से पहले शव को तैयार करना आशीर्वाद समझते हैं। वे सूरज के ऊपर चढ़ने तक शव के निकट घंटों तक बैठे रहते हैं। मेरे भाई ने इस्माइल को तैयार किया। उसने शव को नहलाया, उसके बाल सँवारे, सफ़ेद कपड़े पहनाए। उसकी पत्नी वह कंबल लाई, जो उन्होंने शादी की पहली रात को इस्तेमाल किया था। उसने इस्माइल के शरीर को उसी कंबल में लपेट दिया। गाँववासी लंबी कतार बनाकर शहर की सीमा तक आए थे और उसके बाद उसके शव को ट्रक में डालकर क़ब्रिस्तान ले जाया गया।

इस घटना की कुछ महीनों बाद मेरी दोस्त शिरीन को ग़लती से उसी के भतीजे ने गोली मार दी। वे खेत पर शिकार करने वाली बंदूक से खेल रहे थे। शिरीन की जिस रात मौत हुई, उससे एक दिन पहले मैं उसके साथ थी। हमने परीक्षाओं के बारे में बात की थी। शिरीन ने इस्माइल को बड़ा किया था। शिरीन ने इस्माइल की मौत से एक रात पहले सपना देखा था। वह बोली, "मैंने सपने में देखा कि कोचो में कुछ बुरा होने वाला है। सब रो रहे थे।" उसने यह भी कहा, "मुझे लगता है इस्माइल मरने वाला है।" इस्माइल की मौत के बाद मुझे विश्वास हो गया कि शिरीन ने सच कहा था।

शिरीन को दफ़नाने के लिए मेरी माँ ने उसे तैयार किया था। उन्होंने उसके हाथों में मेहंदी लगाई और फिर सफ़ेद स्कार्फ़ से बाँध दिया। वह अविवाहित थी, इसलिए उसकी चोटी बनाई गई। यदि उसके पास सोने का कोई ज़ेवर होता तो उसे भी साथ में दफ़ना दिया जाता। अगर इंसान को दफ़ना सकते हैं, तो सोने को भी दफ़न किया

जा सकता है। इस्माइल की तरह शिरीन के शव को भी नहलाकर सफ़ेद कपड़ों में लपेटा गया। फिर उसका शव गाँव की सीमा तक ले गए। गाँव के शोकाकुल लोग साथ गए थे। वहाँ से आगे उसे ट्रक से ले जाया गया था।

रीति-रिवाज जरूरी होते हैं, क्योंकि यज़ीदी धर्म के अनुसार पुनर्जन्म एक चुनौती है, जहाँ मृतकों को भी मनुष्यों की तरह पीड़ा भोगनी पड़ती है। मृत लोग हमें सपनों में आकर बताते हैं कि उन्हें किस चीज़ की आवश्यकता है। लोग कई बार अपने प्रियजनों को स्वप्न में देखते हैं और उन्हें पता लगता है कि वे भूखे हैं या उन्हें कपड़ों की ज़रूरत है। हम यह मानते हैं कि ग़रीबों को भोजन या कपड़ा देने से ईश्वर, मृतकों को वह भोजन और कपड़ा पहुँचाता है। हम पुनर्जन्म में विश्वास करते हैं, इसलिए हमें लगता है कि पाक यज़ीदी होने के नाते अच्छे कार्य करना ज़रूरी है। हम यह मानते हैं कि यदि आपने जीवन में अच्छे काम किए हैं और यज़ीदी धर्म को पूरी निष्ठा से निभाया है, तो आपकी रुह का फिर से जन्म होगा और आप उन लोगों से फिर के साथ मिलेंगे, जिन्होंने आपके लिए शोक मनाया था। लेकिन उससे पहले आपको ईश्वर और उसके फ़रिश्तों को यह विश्वास दिलाना पड़ता है कि आप फिर से पृथ्वी पर लौटने के योग्य हैं।

हमारी रुह, जिस बीच पुनर्जन्म की यात्रा करती है और नया जन्म लेने की प्रतीक्षा में होती है, तब आत्मा के निकल जाने के बाद हमारे शरीर के साथ है क्या होता है, यह प्रक्रिया बहुत सरल है। हमें नहलाकर कपड़ों में लपेटकर दफ़ना दिया जाता है और हमारी क़ब्र पर एक माला लटका दी जाती है। मिट्टी और हमारे शरीर के बीच ज़्यादा कुछ नहीं होता ताकि शरीर जल्दी मिट्टी में मिलकर मिट्टी हो जाए। यज़ीदियों को ठीक से दफ़न करना और उनके लिए प्रार्थना करना ज़रूरी माना जाता है। इन रिवाजों के बिना हमारी रुह फिर से जन्म नहीं ले सकती और हमारा शरीर उस घर में नहीं लौट सकता जहाँ उसे होना चाहिए।

9

12 अगस्त को आईएसआईएस का एक कमांडर जेवात पहुँचा। उसने सबको चेतावनी दी कि हमें या तो इस्लाम धर्म अपना कर ख़िलाफ़त का हिस्सा बनना होगा या फिर परिणाम भुगतने होंगे। इलियास ने हमारे घर के आँगन में खड़े होकर आँखें तेज़ी से चमकाते हुए बताया, "हमारे पास फ़ैसला करने के लिए तीन दिन हैं। पहले उन्होंने यह कहा था कि हमने धर्म-परिवर्तन नहीं किया तो हमें जुर्माना भरना पड़ेगा।"

इलियास यह समाचार लेकर लौटा तो मैं नहा रही थी। मैंने दरवाज़े की दरार से झाँक कर उसे माँ से बात करते सुना। फिर दोनों रोने लगे। मेरे सिर पर साबुन लगा था। मैं उसे बिना धोए, सीधे कपड़े पहनकर बाहर निकल आई और अपने परिवार के साथ शामिल हो गई।

"हमने जुर्माना नहीं भरा तो क्या होगा?" माँ ने पूछा।

"फिलहाल उन्होंने कहा है कि वे हमें पहाड़ पर ले जाएँगे और ख़ुद कोचो में रहने लगेंगे," इलियास ने बताया। उसकी बनियान मिट्टी और धूल से मैली हो गई थी, उसकी आवाज़ स्थिर थी, लेकिन वह रो नहीं रहा था। लेकिन वह घबराया हुआ था। इराकी ईसाइयों की तरह यज़ीदियों को यह विकल्प नहीं दिया गया था कि वह धर्म-परिवर्तन करने की जगह जुर्माना भर सकते हैं। इलियास को विश्वास था कि आतंकी विकल्प की बात कहकर झूठ बोल रहे थे। वह शांत रहने की कोशिश कर रहा था। उसे सुनकर पता लगता था कि उसने यह ख़बर घर में देने से पहले काफ़ी अभ्यास किया था। वह मेरा बहुत

अच्छा भाई था। फिर वह बोला, "इससे कुछ नहीं होगा। इससे कुछ नहीं होगा!"

मेरी माँ अचानक बोलीं - "सब जल्दी अपना सामान बाँधो," माँ ने कहा और फिर घर के अंदर चली गईं। हमने सामान इकट्ठा किया, कुछ कपड़े, डायपर, बच्चों के खाने का सामान और अपने इराकी पहचान-पत्र जिन पर लिखा था कि हम यज़ीदी हैं। हमने अपना कुछ क़ीमती सामान भी साथ रखा हालाँकि हमारे पास ज़्यादा कुछ नहीं था। माँ ने सरकार द्वारा जारी किया राशन-कार्ड साथ रख लिया, जो उन्हें मेरे पिता की मृत्यु के बाद मिला था। मेरे भाइयों ने बैग में मोबाइल फ़ोन की अतिरिक्त बैटरियाँ और चार्जर रख लिए। जीलन ने हेज़्नी की एक काली कमीज़ भी साथ रख ली थी, जिसे वह घेराबंदी के दौरान रखे रही।

मैंने अपने कमरे से अपनी मनपसंद चीज़ें निकालीं। एक लंबा घनाकार जर्कोनियम जड़ा चाँदी का हार और एक कड़ा। मेरी माँ वह सामान मेरे लिए 2013 में सिंजर शहर से लाई थीं। यह उन दिनों की बात है जब खेत में ट्रैक्टर पर चारा भरते समय एक तार टूट गया था। उस तार से मुझे ज़ोर का झटका लगा। मुझे लगा मेरी मौत हो जाएगी। मैं जब अस्पताल में बेहोश पड़ी थी, तो माँ बाज़ार गई और मेरे लिए यह आभूषण ख़रीदकर लाई थी। "तुम्हें अस्पताल से छुट्टी मिलेगी तो मैं इसके साथ कान की बालियाँ भी लाऊँगी," उन्होंने धीरे-से मेरा हाथ दबाकर कहा था। मुझे ज़िंदा रखने का यह उनका अपना तरीक़ा था।

मैंने वह हार और कड़ा सेनेटरी पैड फाड़कर उसके बीच में छिपा दिया। फिर उन्हें एक छोटे काले बैग में अतिरिक्त कपड़ों के ऊपर रखकर उसकी चेन बंद कर दी। माँ ने दीवार से चित्र उतारने शुरू कर दिए। हमारा घर, परिवार की तसवीरों से भरा था। हेज़्नी और जीलन की शादी के फ़ोटो और जालो, दीमल और अदकी के मैदान में बैठे हुए, सिंजर के मौसम बदलने के फ़ोटो इतने सुंदर थे कि उन्हें देखकर लगता था कि वे नक़ली हैं। उनमें हमारे परिवार का इतिहास था। हम ग़रीब थे और छोटे-से घर में रहते थे। वर्षों के संघर्ष के बाद हमारा

जीवन थोड़ा बेहतर हुआ था। उन तसवीरों को उतारने के बाद दीवारों पर धुंधले निशान बाक़ी थे। "एल्बम खोजो नादिया!" माँ ने मुझे कहा। "सब आँगन से बाहर निकालकर तंदूर के पास ले आओ!"

मैंने माँ का कहा मान लिया। मेरे हाथ एल्बम से भरे थे। मैं उन्हें लेकर आँगन में आ गई। माँ तंदूर के पास बैठी थी। उन्होंने सब तसवीरें एक-एक करके तंदूर में झोंक दीं। वह तंदूर हमारे घर का केंद्र था। उसमें न केवल बज़्मी के लिए बल्कि हर मौक़े पर ब्रेड पकाई जाती थी। माँ अतिरिक्त बची ब्रेड को कोचो के ग़रीब लोगों में बाँट देती थी, जो हमारे परिवार के लिए आशीर्वाद था। हम ग़रीबी में उसी तंदूर की ब्रेड खाकर जीवित रहे।

सारे चित्र तंदूर में जलकर राख़ हो गए। उससे काला रासायनिक धुँआ निकल रहा था। उनमें कैथरीन के लैलिश में बचपन की, व्हाइट स्प्रिंग में बपतिस्मा किए जाने और पत्थर से बने पुराने धर्म स्थल के नीचे दौड़ने की फ़ोटो थी। मेरे स्कूल के पहले दिन की फ़ोटो थी। मैं उस दिन माँ से अलग होकर बहुत रोई थी। खैरी की मोना से शादी का भी फ़ोटो था, जिसमें दुल्हन के बालों को फूलों से सजाया गया था। *हमारा अतीत राख़ हो चुका है,* मैंने सोचा। मेरे सामने सारे चित्र एक-एक कर आग में राख़ होते गए। फिर माँ ने सफ़ेद कपड़ों का ढेर उठाया और उसे भी आग की लपटों के हवाले कर दिया। "मैं नहीं चाहती कि उन्हें हमारे बारे में कुछ भी पता लगे," माँ ने कहा। फिर सफ़ेद कपड़े भी जलकर काले हो गए। "वे इन्हें हाथ नहीं लगा सकेंगे!"

मुझसे जलते चित्र देखे नहीं गए। मैं वापस घर के अंदर आ गई। फिर मैंने अलमारी खोली। मैं कमरे में अकेली थी, तो मैंने अपना फ़ोटो एल्बम निकाला और उसे धीरे-से खोलकर देखा। उसमें दुल्हनों की तसवीरें थीं। कोचो में लड़कियाँ अपने शादी से कई दिन पहले ही तैयारियाँ शुरू कर देती थीं और यह उन चित्रों में साफ़ नज़र आता था। उनके जूड़े, उनकी चोटियाँ, मेहंदी से लाल बाल और ऐसी अनेक साज-सज्जा होती थी। किसी की आँखों पर मोटा काजल तो किसी

की पलकें चमकीली नीली या गुलाबी थीं। उनके बालों में छोटे-छोटे मोती भी जड़े रहते थे।

दुल्हन के तैयार होने के बाद उसे गाँववालों को सौंप दिया जाता था। सुबह होने तक सब नाचते-गाते और खाते-पीते थे। इसके बाद दूल्हा-दुल्हन को अकेला छोड़ दिया जाता था। अगले दिन दुल्हन की सहेलियाँ पहली रात की कहानी सुनती थीं। वह खिलखिलातीं और फिर चादर पर ख़ून के धब्बे देखने लगती थीं। गाँव की शादियाँ कोचो को परिभाषित करती थीं। औरतें, मेकअप की तैयारी में लग जाती थीं और पुरुष, मिट्टी में पानी का छिड़काव करते थे, ताकि उन्हें अगले दिन नृत्य में परेशानी नहीं हो। हम पूरे सिंजर में धूमधाम से पार्टियाँ करने के लिए मशहूर थे। लोग कहते हैं - हमारी औरतें बहुत सुंदर होती हैं। मेरे एल्बम की हर दुल्हन अपने आप में कला का एक उत्कृष्ट नमूना थी। मैं सोचती थी कि जब भी सेलून खोलूँगी तो सबसे पहले उस एल्बम को वहाँ सजाऊँगी।

मुझे बाद में समझ आया कि माँ ने परिवार की फ़ोटो क्यों जला दीं। वह नहीं चाहती थीं कि आतंकी उन तसवीरों को बुरी नज़र से देखें या छुएँ। मैं सोचने लगी कि वे हमारा मज़ाक़ उड़ाएँगे। एक ग़रीब यज़ीदी परिवार, जो इराक में ख़ुश रहना चाहता था, जो सोचता था कि उनके बच्चे स्कूल जा सकते हैं, उनकी शादी होगी और वे अपने देश में ख़ुश रहेंगे। यह सोचकर मुझे ग़ुस्सा आ रहा था। परंतु मैं उस एल्बम को आँगन में जलाने नहीं ले गई। मैंने उसे फिर से अलमारी में रखा और अलमारी पर ताला लगा दिया।

मेरी माँ को यदि पता लगता कि मैंने एल्बम छिपा दिया तो वह मुझसे कहती कि अपने फ़ोटो जलाना और दूसरों के बचाकर रखना अच्छी बात नहीं है। उनकी बात ठीक थी। वैसे भी वह एल्बम अलमारी में सुरक्षित नहीं थी। आतंकी उस अलमारी को तोड़ सकते थे और उन्हें वह सबसे पहले दिखाई पड़ती। यदि माँ मुझसे उस एल्बम को छिपाने का कारण पूछती तो मैं कुछ नहीं कह पाती। मुझे नहीं पता कि उस एल्बम का मेरे लिए इतना महत्त्व क्यों था।

परंतु आतंकियों से हमारे भयभीत होने के बावजूद मैं, उन तसवीरों को जलता नहीं देख सकती थी।

उस रात हम छत पर बैठे थे। तभी खैरी के पास एक फ़ोन आया। वह किसी यज़ीदी मित्र का था, जो पहाड़ पर था। पीकेके ने सीरिया जाने के लिए सुरक्षित मार्ग स्थापित कर दिया था। बहुत-से यज़ीदियों ने पहाड़ से नहीं उतरने का फ़ैसला किया। हालाँकि ऊपर रहना कठिन था। उन्हें लगता था कि वह ऊँचा और खड़ा पहाड़ उन्हें आईएसआईएस से सुरक्षित रख सकता था। उनके मन में पहाड़ के लिए धार्मिक समर्पण भी था। वे सिंजर छोड़ने से मर जाना बेहतर समझते थे। उनका विचार था कि वे बाद में एक विशाल शरणार्थी शिविर स्थापित कर लेंगे, जो पठार पर पूरब से पश्चिम तक फैला होगा और वहाँ पीकेके के सैनिक पहरा देंगे। उनमें से कई बहादुर यज़ीदी पुरुष थे, जिन्होंने जब तक मुमकिन हो सका सिंजर का बचाव किया।

"चाँद को देखो!" खैरी का दोस्त बोला। यज़ीदी मानते हैं कि ईश्वर के साथ सात फ़रिश्ते भी रहते हैं। उनमें से दो सूरज और चाँद भी हैं। उस रात, चाँद बड़ा और चमकदार था। उसके उजाले से पूरा खेत रोशन था। हम उसी रोशनी में अपने घर चले जाते थे। "हम चाँद से प्रार्थना कर रहे हैं। तुम कोचोवासियों से कहो कि वे भी हमारा साथ दें," खैरी के दोस्त ने कहा।

खैरी ने एक-एक करके सबको जगा दिया। "चाँद को देखो," उसने कहा। हम घर की छत पर झुककर नहीं, बल्कि सीधे खड़े रहकर प्रार्थना करना चाहते थे। "अगर कोई तुम्हें देख भी लेगा तो क्या फ़र्क़ पड़ता है? ईश्वर तुम्हारी रक्षा करेंगे!"

मेरी माँ ने चेताया, "एक समय में कुछ देर के लिए।" हम धीरे-धीरे छोटे-छोटे समूहों में सीधे खड़े हो गए। चाँद की रोशनी हमारे चेहरे पर पड़ रही थी। माँ की सफ़ेद पोशाक चमक रही थी। मैं अपनी भाभी के साथ प्रार्थना करने लगी। मैंने अपनी कलाई में पहने लाल और सफ़ेद कड़े को चूमा और धीरे-से कहा, "हमें उनसे बचाना!" यह कहकर मैं, चंद्रमा से प्रार्थना करने लगी।

राजदूत बनने की कोशिश में जुटे अहमद जासो ने अगले दिन पड़ोस की सुन्नी जनजाति के पाँच मुखियाओं को जेवात में भोजन पर आमंत्रित किया। ये वही लोग थे, जिनके सदस्यों ने दिशान का अपहरण किया था। गाँव की औरतों ने मुखियाओं के लिए भोजन तैयार किया, चावल बनाए, सब्ज़ियाँ काटीं और भोजन के बाद के लिए मीठी चाय भी बनाई। मेहमानों के लिए तीन भेड़ें काटी गईं, जो उनको सम्मान देने का सूचक था।

भोजन के समय मुख़्तार ने सुन्नी नेताओं से सहायता माँगी। हमारे पड़ोसियों में यही एक जाति थी, जिनकी धार्मिक विचारधारा अत्यंत संकीर्ण थी। इसीलिए आईएसआईएस के साथ उनके अच्छे संबंध होने की सबसे अधिक संभावना थी। "आप चाहें तो उन्हें समझा सकते हैं," अहमद जासो ने कहा। "उन्हें हमारे बारे में बताइए और कहिए कि हम उन्हें कोई क्षति नहीं पहुँचाना चाहते।"

मुखिया ने सिर हिला दिया। "हम आपकी मदद करना चाहते हैं," उन्होंने जासो से कहा। "लेकिन हम कुछ नहीं कर सकते। दाएश किसी की नहीं सुनते। हमारी भी नहीं!"

जनजातीय मुखियाओं के जाने के बाद मुख़्तार के चेहरे पर उदासी छा गई। अहमद के भाई नईफ़ जासो ने इस्तांबुल से फ़ोन किया। वह अपनी बीमार पत्नी को लेकर अस्पताल गया था। "ये लोग शुक्रवार को तुम्हें मार डालेंगे," उसने अपने भाई अहमद जासो को बताया।

"नहीं, ऐसा नहीं है," मुख़्तार ने कहा। "उन्होंने बोला है कि वे हमें पहाड़ पर ले जाएँगे।" उसे अंत तक यही आशा थी कि कोई समाधान ज़रूर निकलेगा। हालाँकि बगदाद या अर्बिल में से कोई भी इसमें हस्तक्षेप करने को तैयार नहीं था। यहाँ तक कि वाशिंगटन के अधिकारियों ने भी जासो के दोस्त हैदर को कहा कि वे कोचो पर हवाई हमला नहीं कर सकते, क्योंकि इससे आम नागरिकों की जान को ख़तरा ज़्यादा था। उनका कहना था कि कोचो के आसपास बमबारी करने से आईएसआईएस के अलावा हम भी सब मारे जाएँगे।

दो दिन बाद आईएसआईएस के आतंकी कोचो में बर्फ़ लेकर आए। दो सप्ताह से रखा हुआ पीने का पानी धूप में उबल रहा था। अगस्त की गर्मी में उनका बर्फ़ लाना बहुत अच्छा लगा। अहमद जासो ने फ़ोन करके भाई को इस बारे में बताया। "उन्होंने वादा किया है कि अगर हम उनकी बात मान लेंगे तो वे हमारे साथ बुरा बर्ताव नहीं करेंगे," उसने अपने भाई से कहा। "वे हमें मारना चाहते, तो बर्फ़ क्यों लेकर आते?"

यह सुनकर भी अहमद के भाई नईफ़ को संतोष नहीं हुआ। वह इस्तांबुल के अस्पताल में फ़ोन से हाल-चाल लेता रहा। पैंतालीस मिनट बाद अहमद ने नईफ़ को फिर फ़ोन किया। "उन्होंने हमें प्राइमरी स्कूल में जमा होने को कहा है। वहाँ से वे हमें पहाड़ पर ले जाएँगे।"

"वे पहाड़ पर नहीं ले जाएँगे," नईफ़ ने अपने भाई से कहा। "वे तुम सबको मार डालेंगे!"

"यहाँ लोग ज़्यादा हैं। वे सबको नहीं मार सकते," अहमद जासो ने कहा। "यह नामुमकिन है!" फिर हमने वही किया जो आईएसआईएस ने करने को कहा था। हम स्कूल की ओर चलने लगे।

हमने जब यह बात सुनी तो हम खाना पका रहे थे। बच्चे भूख से लगातार रो रहे थे। हमने उस दिन सुबह कुछ चूज़ों को उबाला था। सामान्य तौर पर हम उन्हें बड़ा होने देते थे, क्योंकि उनसे अंडे मिलते थे। परंतु उस दिन मजबूरी थी। हमारे पास बच्चों को खिलाने के लिए कुछ नहीं था।

खाना पक रहा था कि तभी माँ ने हमें स्कूल जाने वाली बात बताई। "जितने कपड़े पहन सकते हो, पहन लो," वह बोली। "वे शायद हमारे बैग छीन लें।" हमने चूल्हा बंद कर दिया। मैंने एक के ऊपर एक, चार पैंट पहन लीं। एक ड्रेस, दो कमीज़ें और एक गुलाबी जैकेट भी पहनी। गर्मी में इससे ज़्यादा कपड़े पहनना मुश्किल था। मेरी पीठ से पसीना बहने लगा। "तंग कपड़े मत पहनना, जिससे तुम्हारी चमड़ी नज़र आए," माँ ने कहा। "कपड़े ऐसे पहनो कि तुम शालीन महिला नज़र आओ।"

मैंने दो और पोशाकों के साथ एक सफ़ेद स्कार्फ भी बस्ते में रख लिया। उनमें से एक कैथरीन की सूती और एक दीमल की पीली पोशाक थी। परंतु वह उसे पहन नहीं पाई। बचपन में हम कपड़ों के फट जाने तक उन्हें पहनते रहते थे, लेकिन अब हमारे पास इतना पैसा था कि हम साल में एक नई पोशाक ख़रीद सकते थे। मेरे लिए अपनी नई पोशाक छोड़कर जाना मुश्किल था। मैंने बिना कुछ सोचे अलमारी में मेकअप का सामान और दुल्हनों की तसवीरों वाली एल्बम रखकर उस पर फिर ताला लगा दिया।

बहुत-से लोग स्कूल की दिशा में चलना शुरू कर चुके थे। मैं उन्हें खिड़की से देख रही थी। वे सब अपने-अपने बैग साथ लेकर चल रहे थे। छोटे बच्चे अपनी माँओं की गोद में लटके थे और बड़े बच्चे थके क़दमों से धीरे-धीरे साथ में आगे बढ़ रहे थे। कुछ बूढ़े लोगों को गाड़ी में बैठाकर ले जाया जा रहा था। वे थकान के कारण लाश के जैसे नज़र आ रहे थे। बहुत ज़बरदस्त गर्मी थी और कपड़े पसीने से भीग चुके थे। गाँववालों के चेहरों पर थकान थी, वे कमज़ोर हो गए थे। मुझे उनकी कराहने की आवाज़ें आ रही थीं। मगर कुछ स्पष्ट सुनाई नहीं दे रहा था।

हेज़्नी ने अपनी मौसी के घर से फ़ोन किया। हम पहले ही परेशान थे और इस पर वह हमारे ऊपर जंगली जानवर की तरह चिल्लाने लगा। वह कोचो लौटना चाहता था। "यदि तुम लोगों के साथ कुछ बुरा हो रहा है, तो मुझे भी वहीं होना चाहिए था," वह बोला।

जीलन ने उसे सांत्वना देने का प्रयास किया। उन्होंने हाल में ही अपना परिवार बढ़ाने का फ़ैसला लिया था। आईएसआईएस के लोग जब सिंजर पहुँचे तो वे अपने नए पक्के घर की छत डाल चुके थे। मेरी माँ ने हमें हेज़्नी और सउद के मोबाइल नंबर याद रखने को कहा था। "तुम्हें उन्हें फ़ोन करने की ज़रूरत पड़ सकती है," माँ बोली। इसलिए हमने उनके नंबर याद कर लिए थे।

मैंने अपने घर में आख़िरी चक्कर लगाया। हर कमरे में हमारी यादें थीं। घर की बैठक में मेरे भाई गर्मियों में शाम को बैठकर गाँव के लोगों के साथ चाय पीते थे। एक रसोई थी, जहाँ मेरी बहनें मेरे लिए

मनपसंद भोजन पकाती थीं। एक हमारा सोने का कमरा था, जहाँ मैं और कैथरीन बालों में तेल लगाने के बाद सिर पर पॉलिथीन लपेट कर सोते थे। हम सब घर के आँगन में बैठकर भोजन करते थे। हम चटाई पर बैठकर चावल और मक्खन लगी ब्रेड का आनंद लेते थे। वह साधारण-सा घर था, जिसमें बहुत-से लोग रहते थे। हेज़्नी हमेशा परिवार को छोड़ने की बात करता था, ताकि हमें रहने के लिए अधिक जगह मिल जाए। परंतु उसने ऐसा कभी नहीं किया।

मुझे भेड़ों की आवाज़ आ रही थी। उनके शरीर पर ऊन बढ़ता जा रहा था। वह कमज़ोर हो गई थीं। हमारे जाने के बाद उनके मर जाने या आतंकियों द्वारा उन्हें मारकर खा लिए जाने का ख़याल मुझे बेचैन करने लगा। हमारे पास और कुछ नहीं था। मैं अपने घर की हर छोटी-छोटी चीज़ को याद कर लेना चाहती थी। बैठक में तकियों के भड़कीले रंग, रसोई में मसालों की सुगंध, यहाँ तक कि बाथरूम में पानी के टपकने की आवाज़! मैं रसोईघर में एक बार रुकी। वहाँ ब्रेड के पैकेट रखे थे। हमने बच्चों को उन्हें चिकन के साथ खिलाने के लिए बाहर निकाल रखा था। परंतु उन्हें किसी ने छुआ तक नहीं था। मैंने ब्रेड के कुछ टुकड़े निकाले। वे ठंडे हो चुके थे। मैंने उन्हें एक प्लास्टिक की थैली में रख लिया। मुझे लगा मैंने सही किया था। मुझे आशा थी कि वह पवित्र भोजन हमारी आईएसआईएस से रक्षा करेगा। "हे ईश्वर, जिसने यह भोजन पकाया है, हमारी सहायता करना!" मैंने धीमे-से प्रार्थना की और फिर इलियास के साथ बाहर निकल गई।

www.The-Gyan.in

10

3 अगस्त के बाद पहली बार कोचो की सड़कों और गलियों में भीड़ दिखाई पड़ी थी। परंतु वे लोग ख़ुद ही भूत नज़र आते थे। किसी ने किसी का अभिवादन नहीं किया, कोई मुस्कराया नहीं। हमारे शरीरों से दुर्गंध आ रही थी, क्योंकि हम कई दिन से नहाए नहीं थे। पसीने और मिट्टी के साथ मैल की दुर्गंध नाक में भर गई। मुझे गर्मी में लोगों के करहाने की आवाज़ें आ रही थीं। आईएसआईएस के कुछ लोग रास्ते में और घरों की छतों पर खड़े चिल्ला रहे थे। वे हमें स्कूल की ओर धकेल रहे थे। उनके चेहरे आँखों तक ढँके थे। वे हमारे धीमे होने पर नज़र रख रहे थे और कड़ी मेहनत करा रहे थे।

मैं, दीमल और इलियास के साथ चल रही थी। मैंने उनका हाथ नहीं पकड़ा, फिर भी उनके साथ रहने से अकेलापन कम महसूस हो रहा था। हमें जब तक अपने परिवार के साथ थे और एक जगह जा रहे थे, तब तक कोई चिंता नहीं थी। हमें पता था कि हमारी नियति एक-सी होगी। फिर भी घर छोड़ने का कारण केवल डर था। यह मेरे जीवन का सबसे मुश्किल काम था।

हमने रास्ते में एक-दूसरे से कोई बात नहीं की। हमारे घर के बगल की गली में इलियास का एक दोस्त रहता था। उसका नाम अम्र था। वह दौड़कर हमारे पास आया। वह हाल में ही पिता बना था और बहुत घबराया हुआ था। "मैं बच्चे के लिए खाना लेना भूल गया हूँ," उसने कहा। "मुझे घर जाना होगा।" वह भीड़ से निकलकर दौड़ते हुए जाने को तैयार था।

इलियास ने अम्र के कंधे पर हाथ रखकर कहा, "यह मुमकिन नहीं है। तुम्हारा घर यहाँ से दूर है। तुम स्कूल चले जाओ। वहाँ किसी के पास खाना ज़रूर होगा।" अम्र ने गर्दन हिलाई और फिर चुपचाप दूसरे लोगों के साथ स्कूल के लिए चल पड़ा।

हमने मुख्य सड़क में खुलने वाली गलियों में आतंकियों को देखा। वे भी हमें देख रहे थे। उनके हाथों में बंदूकें थीं। हमें उन्हें देखकर ही डर लग रहा था। औरतों ने सिर पर कपड़ा डाल लिया, मानो वह कपड़ा उन्हें आतंकियों की नज़र से बचा लेता। वे चलते समय नज़रें झुका कर चल रही थीं। हर बढ़ते क़दम के साथ धूल उड़ रही थी। मैं, इलियास की दूसरी ओर चली गई। इससे मेरा भाई, मेरे और आईएसआईएस के बीच में आ गया। हम ऐसे चल रहे थे मानो हमारा अपनी गति और दिशा पर नियंत्रण ही नहीं था। सब बिना रुह के दिखाई पड़ रहे थे।

उस रास्ते का हर घर हमसे परिचित था। गाँव के डॉक्टर की लड़की और मेरी क्लास की दो और लड़कियाँ भी उसी रास्ते पर रहती थीं। आईएसआईएस के लोग जब पहली बार सिंजर आए, तो उनके परिवार वालों ने भागने की कोशिश की। मुझे नहीं पता उनके साथ क्या हुआ।

कुछ घर मिट्टी की ईंटों से बने थे और कुछ हेज़्नी के मकान की तरह पक्के थे। अधिकतर पर पुताई की गई थी, तो कुछ पर चटकीले रंग थे। उन पर टाइलें लगी थीं। उन्हें बनाने के लिए लोगों ने जीवन-भर की पूँजी लगा दी थी। उनके मालिक सोचते थे कि उनके बच्चे और पोते, उनके मरने के बाद भी वहीं रहेंगे। कोचो के घरों में काफ़ी लोग रहते थे और वहाँ भीड़भाड़ व ख़ुशनुमा माहौल रहता था। परंतु अब सब वीरान और उदास था। हम धीरे-धीरे आगे बढ़ रहे थे। हमारे जानवर आँगन में खड़े थे और उनकी रखवाली करने वाले कुत्ते, असहाय-से दरवाज़ों पर बँधे भौंक रहे थे।

एक बूढ़ा दंपति, जिसे चलने में परेशानी हो रही थी, सड़क किनारे आराम करने के लिए रुक गया। तभी एक आईएसआईएस का सदस्य आया और चिल्लाने लगा। "चलते रहो! रुको मत!" लेकिन

बूढ़ा आदमी इतना थका हुआ था कि उसे कुछ सुनाई नहीं पड़ा। वह सड़क पर ही गिर पड़ा। "मैं पहाड़ तक नहीं पहुँच सकूँगा," उसने अपनी पत्नी से कहा। उसकी पत्नी उसे चलने को कह रही थी। "मुझे यहीं छोड़ दो। मैं मरना चाहता हूँ।"

"नहीं, तुम्हें चलना होगा!" उसकी पत्नी ने उसे सहारा दिया। फिर वह उठा और धीरे-धीरे चलने लगा। "हम पहुँचने ही वाले हैं।"

उस वृद्ध दंपति को चलते देख मुझे इतना ग़ुस्सा आया कि मेरे भीतर का डर निकल गया। मैं भीड़ से निकलकर एक घर की तरफ़ भागी, जिसकी छत पर आतंकी पहरा दे रहा था। मैंने अपना सिर ऊपर उठाकर पूरी ताक़त से उसकी ओर थूक दिया! यज़ीदी संस्कृति में थूकना बहुत बुरा माना जाता है। मेरे परिवार में इससे बुरी कोई बात नहीं मानी जाती है। हालाँकि मैं उस आतंकी से बहुत दूर थी और मेरा थूक उस तक नहीं पहुँच सकता था, परंतु मैं उसे अपने मन में व्याप्त घृणा की एक झलक दिखाना चाहती थी।

"कुतिया!" वह पलटकर चिल्लाया। उसे देख कर लगा कि वह छत से नीचे कूदकर मुझे पकड़ लेगा। "हम यहाँ तुम्हारी मदद के लिए आए हैं!"

तभी इलियास ने मेरा हाथ पकड़कर मुझे भीड़ में पीछे खींच लिया।

दीमल ने मुझे समझाते हुए कहा, "चुपचाप चलती रहो। तुमने ऐसा क्यों किया? वे हमें मार डालेंगे।" मेरा भाई और बहन ग़ुस्से में थे। इलियास ने मुझे कसकर पकड़ रखा था। वह मुझे आतंकी की नज़रों से छिपाने का प्रयास कर रहा था।

"मुझसे ग़लती हो गई," मैंने धीरे-से कहा। मैंने झूठ बोला था। मुझे दुख था कि वह आतंकी मुझसे दूर था और मैं उसके चेहरे पर थूक नहीं सकी।

हमें पहाड़ नज़र आने लगा था। वह लंबा और सँकरा था। वह गर्मी में बिलकुल सूखा हुआ दिख रहा था। वह पहाड़ हमारी उम्मीद की अंतिम किरण था। यह मुझे दैवीय लगता था कि सिंजर पहाड़ का अस्तित्व है। पूरा सिंजर मैदानी प्रदेश था और वह साल के अधिकांश

समय रेगिस्तान की तरह जलता था। उसके बीच में यह पहाड़ था। लोगों ने उसके ऊपर तंबाकू की खेती कर उसे हरा-भरा बना दिया था। वह पिकनिक और घूमने-फिरने के लिए बढ़िया स्थान था और उसकी चोटी आसमान को छूती थी। वह सर्दियों में बर्फ़ से ढँका रहता था। उसके शिखर पर एक छोटा-सा सफ़ेद धर्म स्थल था। हम वहाँ पहुँच पाते तो धर्म स्थल में ईश्वर से प्रार्थना कर सकते थे। मन में बसे डर के बावजूद मुझे आशा थी कि हम पहाड़ तक पहुँच जाएँगे। मुझे लगा मानो इराक का वह पहाड़ यज़ीदियों की सहायता के लिए ही मौजूद था। मुझे उसका कोई अन्य उद्देश्य समझ नहीं आया।

गाँव से स्कूल के रास्ते में मुझे बहुत-सी चीज़ों का पता नहीं था। मुझे नहीं पता था कि हमारे लैलिश को भी ख़ाली करा दिया गया था। वहाँ केवल पुजारी और नौकर तथा धर्म स्थल की सफ़ाई व दिया-बत्ती करने वाले लड़के मौजूद थे। मुझे यह भी नहीं पता था कि इस्तांबुल में बैठा नईफ़ जासो अपने मित्रों को फ़ोन करके उनके हाल-चाल पता कर रहा था या नहीं। मुझे इस बात की भी ख़बर नहीं थी कि अमेरिका में बैठे यज़ीदी, वाशिंगटन और बगदाद के नेताओं से हमारी सहायता के लिए प्रयास कर रहे थे और यह कि उन्हें अभी तक सफलता नहीं मिली थी।

मुझे नहीं पता था कि वहाँ से डेढ़ सौ मील दूर जाख़ो नाम की जगह पर हेज़्नी, कोचो की घटनाओं को सुनकर पागल हो गया था। वह अपनी मौसी के घर से एक कुएँ की ओर दौड़ा। घर के लोगों ने उसे किसी तरह कूदने से रोक लिया। मेरा भाई लगातार इलियास को दो दिन तक फ़ोन करता रहा। फ़ोन बजता रहा और फिर एक दिन वह बजना भी बंद हो गया।

मुझे यह नहीं पता था कि आईएसआईएस के आतंकी हमसे घृणा करते थे और वे हमारे साथ क्या कर सकते थे। हम डरे हुए थे। किसी को नहीं पता था कि हमारे साथ किस तरह का दुर्व्यवहार किया जाएगा। उन्होंने चलते हुए लोगों को भी मारना शुरू कर दिया था। शहर के उत्तर में गाँव से बाहर एक यज़ीदी औरत, अपने कच्चे मकान में रहती थी। उसका घर हाईवे के निकट था। वह बहुत ज़्यादा बूढ़ी

नहीं थी, लेकिन उसे देखकर ऐसा लगता था कि वह सैकड़ों सालों से ज़िंदा हो। उसका अधिकांश जीवन दुख में बीता था। वह कभी घर से बाहर नहीं निकलती थी। उसकी त्वचा सिकुड़ गई थी और वर्षों तक रोने के कारण सूज गई आँखों के चारों ओर गहरी लकीरें थीं।

कई दशक पहले उसके सभी बेटे और उसका पति ईरान-इराक युद्ध में मारे गए थे। उसके पास जीने का कोई उद्देश्य बाक़ी नहीं था। वह अपना घर छोड़कर हाईवे के पास एक कच्चे मकान में रहती थी। वह किसी को अंदर नहीं आने देती थी। प्रतिदिन गाँव का कोई व्यक्ति उसके पास जाकर कपड़ा या भोजन पहुँचा देता था। वह ज़िंदा थी, इसलिए यह मान लेना चाहिए कि वह अवश्य कुछ खाती होगी। वह बहुत अकेली थी और हर क्षण अपने परिवार को याद करती थी। उसने अपना सबकुछ खो दिया था। परंतु वह स्वयं जीवित थी। आईएसआईएस के आतंकी जब सिंजर आए और उन्होंने उस बुढ़िया को गाँव के बाहर कच्चे मकान में पाया तो उसे भी जाने को कहा। परंतु वह इसके लिए तैयार नहीं हुई तो उन्होंने उसे घर के अंदर ही ज़िंदा जला दिया!

खण्ड-II

1

मुझे तब तक अंदाज़ नहीं था कि मेरा गाँव कितना छोटा था, जब तक कि सब गाँववाले उस स्कूल में नहीं पहुँच गए। हम सब सूखी घास पर खड़े थे। कुछ लोग एक-दूसरे से जानने की कोशिश कर रहे थे कि क्या होने वाला था। कुछ सदमे में थे और बिलकुल चुप खड़े थे। किसी को कुछ पता नहीं था। उस क्षण के बाद मेरा हर विचार और हर कदम ईश्वर को समर्पित था। अचानक आतंकियों ने अपनी बंदूकें हमारे ऊपर तान दीं। "औरतें और बच्चे दूसरी मंज़िल पर जाएँगे!" उन्होंने चिल्लाकर कहा। "सब पुरुष नीचे रुकेंगे।"

वे हमें शांत रखने की कोशिश कर रहे थे। "यदि तुम मजहब बदलना नहीं चाहते तो हम तुम्हें पहाड़ पर जाने देंगे," उन्होंने कहा। यह सुनकर हम दूसरी मंज़िल पर चले गए। हमने जाने से पहले पुरुषों को अलविदा कहा। यदि हमें पता होता कि पुरुषों के साथ क्या होने वाला था तो कोई माँ, अपने बेटे को या कोई औरत, अपने पति को छोड़कर नहीं जाती।

सब औरतें ऊपरी मंज़िल पर जमा हो गईं। वह स्कूल, जहाँ मैंने कई वर्ष पढ़ते-लिखते और दोस्तों के साथ खेलते बिताए थे, बिलकुल एक अलग तरह का स्थान लग रहा था। कमरे में केवल रोने की आवाज़ें आ रही थी। कोई पूछता कि वहाँ क्या चल रहा है, तो आईएसआईएस का कोई आतंकी चिल्लाकर हमें चुप करवा देता था। कमरे में फिर भयावह शांति छा जाती थी। बूढ़े और कम उम्र के

लोगों को छोड़कर, सब खड़े हुए थे। कमरे में इतनी गर्मी थी कि साँस लेना मुश्किल हो रहा था।

कमरे की खिड़कियों को खोल दिया गया, जिससे हवा अंदर आने लगी और हम भी स्कूल की दीवार के पार देख सकते थे। सब दौड़कर खिड़की के नज़दीक आ गए और बाहर देखने लगे। मैं पीछे खड़ी थी। सब नीचे अपने बेटे, भाई या पति को देख रहे थे। हमें पुरुषों को देखकर दुख हो रहा था। वे बहुत निराश थे। तभी कुछ पिकअप ट्रक, स्कूल के गेट के सामने एक साथ आकर रुके। उनके इंजन चालू थे। उन्हें देखकर हम घबरा गए, लेकिन आतंकियों ने हमें चुप रहने को कहा जिससे हम पुरुषों के नाम लेकर चीख़ पुकार नहीं मचाएँ।

कुछ आतंकी बड़े-बड़े बैग लेकर कमरे में घूम रहे थे। उन्होंने हमसे मोबाइल फ़ोन, जेवर और पैसे बैग में डालने को कहा। अधिकांश औरतों ने जो सामान घर से उठाया था, वह सब बैगों में डाल दिया। हमसे जो छिपाया गया, हमने उसे छिपा लिया। मैंने औरतों को पहचान-पत्र और कानों से बालियाँ कपड़ों में छिपाते देखा था। हम सब डरे हुए थे, लेकिन हिम्मत नहीं छोड़ना चाहते थे। हमें लगा कि हमें पहाड़ पर ले जाने से पहले आतंकी हमारा सामान छीन रहे थे। ऐसी बहुत-ही चीज़ें थी, जिन्हें हम छोड़ना नहीं चाहते थे।

इसके बावजूद आतंकियों ने तीन बड़े बैगों में पैसे, मोबाइल, अंगूठियाँ, घड़ियाँ और पहचान-पत्र भर लिए थे। उन्होंने छोटे बच्चों का सामान भी नहीं छोड़ा। एक आतंकी ने अपनी बंदूक एक छोटी लड़की पर तान दी। उस बच्ची ने कानों में बालियाँ पहनी थीं। "इन्हें उतारकर बैग में डालो!" उसने कहा। परंतु उस बच्ची ने उसकी बात नहीं मानीय उसकी माँ ने कहा, "बालियाँ उतारकर दो ताकि हम पहाड़ पर जा सकें।" माँ की बात सुनकर लड़की ने कान से बालियाँ उतारी और बैग में डाल दीं। मेरी माँ ने भी अपनी शादी की अँगूठी उतारकर बैग में डाल दी। वह उनके लिए बेशक़ीमती चीज़ थी।

मैंने खिड़की से देखा कि तीस वर्ष का एक पुरुष बगीचे की दीवार से पीठ सटाकर बैठा था। मैंने उसे पहचान लिया। मैं सब गाँववालों को पहचानती थी। अन्य यज़ीदी पुरुषों की तरह उसे भी

ख़ुद पर अपनी हिम्मत पर भरोसा था। वह व्यक्ति स्वयं को ताक़तवर और लड़ाकू समझता था। उसे देख कर पता लगता था कि वह हिम्मत नहीं हारेगा। परंतु जब एक आईएसआईएस का आतंकी उसके पास गया और उसने उस व्यक्ति की कलाई की तरफ़ इशारा किया तो आदमी ने विरोध नहीं किया और अपनी कलाई से घड़ी उतारकर आतंकी के बैग में डाल दी। उस क्षण मुझे समझ में आया कि आईएसआईएस के लोग कितने ख़तरनाक थे। उन्होंने लोगों को निराशा की अंतिम सीमा तक धकेल दिया था।

"इन्हें अपने ज़ेवर दे दो, नादिया," माँ ने मुझसे कहा। वह एक रिश्तेदार के साथ कोने में बैठी थी। सब एक-दूसरे को पकड़कर घबराए हुए बैठे थे। "यदि उन्होंने देख लिया तो वह तुम्हें मार डालेंगे।"

"मैं यह नहीं दूँगी," मैंने माँ से कहा। मैंने अपना बैग कसकर पकड़ा हुआ था। मैंने अपने सेनेटरी पैड के अंदर कई क़ीमती चीज़ें छिपा रखी थीं। मैंने ब्रेड को नीचे से पकड़ रखा था। मुझे चिंता थी कि आतंकी उसे छोड़ने को कहेंगे।

"नादिया...!" मेरी माँ ने बहस करना चाही, लेकिन थोड़ी देर के लिए ही। वह किसी का भी ध्यान हमारी ओर खींचना नहीं चाहती थीं।

अहमद जासो नीचे फ़ोन पर अपने भाई नईफ़ से बात कर रहा था, जो अब भी इस्तांबुल के अस्पताल में अपनी पत्नी के साथ था। उसने हेज़्नी को भी बताया कि आतंकी हमारा सामान हमसे ले रहे थे। अहमद ने अपने भाई से कहा, "उन्होंने कहा है कि इसके बाद भी वे हमें पहाड़ पर ले जाएँगे। स्कूल के गेट के सामने कुछ ट्रक आकर खड़े भी हो गए हैं।"

"अहमद, मुमकिन है!" नईफ़ ने कहा। उसने मन ही मन सोचा कि *शायद यह भी हो सकता है कि यह हमारी आख़िरी बातचीत हो!* अहमद से बात करने के बाद नईफ़ ने अपने पड़ोसी गाँव के एक अरबी दोस्त को फ़ोन किया और कहा, "तुम्हें गोलियों की आवाज़ सुनाई दे तो मुझे फ़ोन करना।" यह कहकर उसने फ़ोन काट दिया।

आख़िर, आतंकियों ने मुख़्तार से उसका फ़ोन भी ले लिया। उन्होंने कहा, "तुम गाँव के प्रतिनिधि हो। तुमने क्या फ़ैसला किया? तुम मजहब बदलोगे या नहीं?"

अहमद जासो ने पूरा जीवन कोचो की सेवा करते बिताया था। गाँव में कोई झगड़ा होता तो वह जेवात में लोगों को समझाता था। किसी भी तरह का झगड़ा होने पर अहमद जासो को उसे निपटाने का जिम्मा सौंपा जाता था। पूरे कोचो गाँव को जासो पर विश्वास था। उसे अब गाँव की क़िस्मत तय करने को कहा जा रहा था।

"हमें पहाड़ पर ले चलो," उसने कहा।

खिड़कियों के नज़दीक हलचल हो रही थी। मैं पीछे हट गई। आईएसआईएस के आतंकियों ने सभी पुरुषों को ट्रक में बैठने का आदेश दिया और फिर उन्हें कतार में खड़ा करके ट्रकों में धकेलने लगे। वह एक-एक ट्रक में अधिक से अधिक लोगों को भर रहे थे। ऊपर बैठी औरतें यह देखकर आपस में बातें करने लगीं। वे डरी हुई थीं। तभी एक आतंकी ने खिड़की बंद कर दी। छोटे-छोटे लड़कों को, जिनकी उम्र तेरह वर्ष से भी कम थी, बड़ी उम्र के पुरुषों के साथ ट्रकों में भरा जा रहा था। वे सभी निराश दिख रहे थे।

मेरी आँखें नीचे बगीचे और ट्रकों में अपने भाइयों को ढूँढ़ रही थीं। मैंने एक ट्रक में मसूद को देखा, किंतु उसने ऊपर मेरी ओर नहीं देखा। मेरा दूसरा भाई सउद, कुर्दिस्तान में सुरक्षित था। परंतु आईएसआईएस के घेराबंदी करने के बाद से मसूद ने हमसे मुश्किल से दस शब्द बोले थे। वह सब भाइयों में सबसे शांत था। उसे चुप रहना पसंद था और वह अपने हर काम को नियमित ढंग से करता था। मसूद के एक नज़दीकी दोस्त को अपने परिवार के साथ पहाड़ पर जाने की कोशिश करते समय मार दिया गया था। परंतु मसूद ने उस विषय में भी कुछ नहीं कहा। वह पूरा दिन टीवी पर सिंजर पहाड़ से आने वाली ख़बरों को देखता था। हम भी यही करते थे। वह रात

में छत पर आकर सो जाता था। परंतु वह कुछ खाता या बोलता नहीं था। वह हेज़्नी और खैरी की तरह किसी बात पर रोता भी नहीं था।

मैंने उसी ट्रक में इलियास को भी जाते देखा। वह हमारे लिए पिता समान था। मेरे पिता की मृत्यु के बाद उसी ने घर का दायित्व सँभाला। मुझे यह देखकर संतोष हुआ कि कैथरीन मेरे साथ खिड़की पर नहीं खड़ी थी। मैं नहीं चाहती थी कि वह इलियास को ऐसी हालत में देखे। मेरे आस-पास सबकुछ धुंधला होता जा रहा था; पास खड़ी औरतों का रोना, आतंकियों के कदमों की आवाज़, गर्मी-भरी दोपहर और यहाँ तक कि अपने भाइयों का ट्रक में बैठकर जाना। मुझे गर्मी का भी अहसास नहीं हो रहा था। मसूद एक कोने में और इलियास पीछे खड़ा था। फिर ट्रक का दरवाज़ा बंद हो गया और सारे ट्रक स्कूल के पीछे चले गए। कुछ ही देर में हमें गोलियों की आवाज़ सुनाई दी।

कमरा चीख़ों से भर गया। मैं खिड़की से दूर जा गिरी। "उन्होंने सबको मार दिया।" औरतें चिल्लाने लगीं। आतंकी हमें चुप होने को कह रहे थे। मेरी माँ फ़र्श पर बैठी थी। वह बिलकुल शांत थी। मैं भागकर माँ के पास गई। मुझे जब कभी डर लगता था, तो मैं अपनी माँ के पास ही जाती थी। "नादिया, सब ठीक है," वह मुझसे कहतीं। फिर वह मेरे बालों में उंगलियाँ फेरतीं और मुझे शांत करने का प्रयास करती थीं। "सब ठीक हो जाएगा।" मैंने हमेशा अपनी माँ पर विश्वास किया। मेरी माँ ने बहुत कष्ट सहन किया था, लेकिन कभी शिकायत नहीं की।

मैं, अपना सिर हाथों में पकड़े नीचे बैठी थी। "उन्होंने मेरे बच्चों को मार दिया!" यह कहकर माँ रोने लगीं।

"कोई नहीं चिल्लाएगा!" एक आतंकी ने कमरे में लोगों को हिदायत दी। "मुझे किसी की भी आवाज़ आई तो हम तुम्हें भी मार देंगे!" औरतों की रोने की आवाज़ धीरे-धीरे दब गई। वह ख़ुद को रोने से रोकना चाहती थीं। मैं प्रार्थना करने लगी कि मैंने जिस तरह अपने भाइयों को ट्रक में जाते देखा, काश! मेरी माँ ने उन्हें उस हालत में नहीं देखा हो।

नईफ़ के अरब दोस्त ने उसे गाँव से फ़ोन किया। "मैंने गोलियों की आवाज़ सुनी है," वह रोते हुए बोला। कुछ ही देर बाद नईफ़ ने मुख़्तार के चचेरे भाई को गाँव की ओर दौड़ते देखा।

नईफ़ का चचेरा भाई हाँफते हुए नीचे गिर गया। "उन्होंने सबको मार दिया," वह बोला। "उन्होंने सबको कतार में खड़ा किया और फिर सबको नीचे खुदे गड्ढे में उतरने को कहा। फिर उन्होंने छोटी उम्र के लड़कों से हाथ उठाने को कहा और उनकी बगल के बाल देखे। जिनकी बगल में बाल नहीं थे, उन्हें वापस ट्रक में भेज दिया। बाक़ी सबको उन्होंने गोली मार दी।" लगभग सब लोग मारे गए। उनके शव कटे पेड़ की तरह एक-दूसरे के ऊपर ऐसे गिर रहे थे; मानो सबके ऊपर एकसाथ बिजली गिर गई हो!

उस दिन सैकड़ों लोगों को स्कूल के पीछे ले जाया गया था। बहुत कम लोग गोलीबारी में बच पाए थे। मेरे भाई सईद के पैर और कंधे में गोली लगी थी। वह गिरा और उसने अपनी आँखें बंद कर लीं। फिर उसके ऊपर किसी और का शव गिर पड़ा। वह कोई बड़ा भारी आदमी था, जो मर चुका था। सईद उसके भार से दबा जा रहा था फिर वह कराहने लगा। *उसे अचानक ख़याल आया कि वह भारी आदमी उसे आतंकियों की नज़र से बचा लेगा।* उसने आँखें बंद कर लीं। गड्ढे में ख़ून की ज़बर्दस्त दुर्गंध भरी थी। सईद के पास एक और आदमी पड़ा दर्द से कराह रहा और सहायता माँग रहा था। तभी सईद को आतंकियों के क़दमों की आवाज़ आई। वे उसकी ओर आ रहे थे। एक आतंकी बोला, "यह कुत्ता अभी तक ज़िंदा है!" फिर उसने गोली चला दी।

एक गोली सईद की गर्दन में लगी। उसके मुँह से आवाज़ नहीं निकली। आतंकी जब आगे निकल गए, तो सईद ने हिम्मत करके एक हाथ लगाकर गर्दन से बहता ख़ून रोकने की कोशिश की। उसके निकट अली नाम का टीचर भी घायल पड़ा था। वह ज़िंदा था। उसने धीरे-से सईद से कहा, "यहाँ नज़दीक ही एक किसान का छप्पर है। वे लोग शायद दूर निकल गए हैं। यदि हम किसी तरह उस छप्पर तक

पहुँच जाएँ, तो शायद हमारी जान बच सकती है।" मेरे भाई ने हामी भरी और दर्द से कराहने लगा।

कुछ देर बाद सईद और अली ने ख़ुद को शवों के नीचे से निकाला और गड्ढे से बाहर निकल आए। उन्होंने चारों तरफ़ जब देख लिया कि उन्हें कोई आतंकी देख नहीं रहा था, तो वह तेज़ी से छप्पर तक पहुँच गए। मेरे भाई के पैर में छह गोलियाँ लगी थीं। वह भाग्यशाली था कि कोई गोली उसकी हड्डी या किसी ज़रूरी अंग के पार नहीं हुई थी। अली की पीठ में गोली लगी थी। हालाँकि वह चल सकता था, लेकिन काफ़ी ख़ून बह जाने से वह बेहोश होने लगा। "मेरा चश्मा रह गया है," उसने सईद से कहा। "मुझे बिना चश्मे के दिखाई नहीं देता। मुझे चश्मा लाना पड़ेगा।"

"नहीं, मेरे दोस्त! हम लौट नहीं सकते," सईद ने कहा। "हम वापस गए तो वे हमें ज़रूर मार डालेंगे।"

"ठीक है," अली बोला। फिर वह एक लंबी साँस लेकर छप्पर की दीवार के सहारे बैठ गया। उसने कुछ देर बाद फिर वही बात कही। "दोस्त, मुझे कुछ दिखाई नहीं दे रहा।" वह बार-बार चश्मे के लिए गिडगिड़ाता रहा। सईद भी उसे लगातार यही कहता रहा कि यदि हम गए तो फिर वापस नहीं लौट पाएँगे।

मेरे भाई ने छप्पर के फ़र्श से मिट्टी खुरची और उसे घाव पर लगा दिया। वह बहता ख़ून रोकने की कोशिश कर रहा था। उसे डर था कि ज़्यादा ख़ून बह जाने से उनकी मौत हो सकती थी। उनका सिर घूमने लगा था। वे अब भी स्कूल के पीछे से आ रही आवाज़ों को सुनने की कोशिश कर रहे थे। वे सोचने लगे कि अगर आईएसआईएस के लोगों ने शवों को दफ़नाना शुरू कर दिया तो औरतों का क्या होगा। कुछ देर बाद उन्हें छप्पर के पास से बुलडोज़र के गुज़रने की आवाज़ सुनाई दी। सईद समझ गया कि वे गड्ढे को मिट्टी से भरने की कोशिश कर रहे होंगे।

मेरे सौतेले भाई ख़ालिद को गाँव के दूसरे छोर पर ले जाया गया था। वहाँ भी पुरुषों को कतार में खड़ा करके गोली मारी जा रही थी। उसने भी सईद की तरह मरने का दिखावा किया और फिर वहाँ से

जान-बचाकर निकल भागा। उसका एक हाथ गोली लगने के कारण बेकार होकर एक तरफ़ लटक गया था, लेकिन उसके पैर काम कर रहे थे। वह तेज़ी से भागा। उसे भागते देख एक आदमी ने उससे सहायता माँगी। "मेरी गाड़ी गाँव में खड़ी है," उस आदमी ने ख़ालिद से कहा। "मुझे गोली लग गई है और मैं चल नहीं सकता। तुम गाड़ी ले आओ और मुझे यहाँ से ले जाओ। हम दोनों पहाड़ पर जा सकते हैं। कृपया मेरी मदद करो।"

ख़ालिद ने उस आदमी को देखा। उसके दोनों पैर गोली लगने से बेकार हो चुके थे। उसे हिलाने का मतलब था कि वे दोनों सबकी नज़र में आ सकते थे। उस आदमी की अस्पताल जाने से पहले मौत होनी तय थी। ख़ालिद कहना चाहता था कि वह वापस लौटेगा, लेकिन उसके पास झूठ बोलने के लिए शब्द नहीं थे। वह उस आदमी को देखता रहा फिर बोला, "मुझे माफ़ कर दो!" और वहाँ से वह भाग गया।

आईएसआईएस के आतंकियों ने कोचो के स्कूल की छत से ख़ालिद को भागते देखा तो उस पर गोली चला दी। ख़ालिद ने देखा कि तीन आदमी पहाड़ की दिशा में भाग रहे थे और आईएसआईएस का एक ट्रक उनका पीछा कर रहा था। आतंकियों ने गोलियाँ चलानी शुरू कीं तो ख़ालिद घास के ढेर में छिप गया और सूरज ढलने तक वहीं छिपा रहा। उसे बहुत दर्द हो रहा था, लेकिन वह बाहर नहीं निकला। वह अंधेरा हो जाने पर खेत से निकलकर सिंजर पहाड़ की तरफ़ चला गया।

सईद और अली भी सूरज छिप जाने तक छप्पर में बैठे रहे। सईद एक छोटी-सी खिड़की से स्कूल की तरफ़ देख रहा था। अली ने पूछा, "क्या तुम देख सकते हो कि औरतों और बच्चों के साथ क्या हो रहा है?"

"नहीं, कुछ नहीं मेरे भाई," सईद ने कहा। "वहाँ कुछ नहीं हुआ।"

"अगर उन्हें औरतों और बच्चों को मारना होता तो क्या वे अब तक ऐसा कर नहीं देते?" अली ने पूछा।

सईद कुछ नहीं बोला। वह ख़ुद भी नहीं जानता था कि हमारे साथ क्या होने वाला था।

अंधेरा हुआ तो सभी ट्रक गाँव लौट आए और स्कूल के दरवाज़े के सामने आकर खड़े हो गए। फिर आतंकियों ने हमें भी स्कूल की बिल्डिंग से बाहर निकाला और ट्रकों में भर दिया। सईद भीड़ में हमें देखने की कोशिश कर रहा था। उसने दीमल को स्कार्फ़ से पहचान लिया और उसे देखकर रोने लगा।

"वहाँ क्या हो रहा है?" अली ने पूछा।

सईद को भी कुछ पता नहीं था। "वे अब औरतों को भी ट्रकों में भर रहे हैं," उसने कहा। "मुझे नहीं पता वे क्या कर रहे हैं।" सब ट्रक भरने के बाद वहाँ से चल पड़े।

सईद ने धीरे-से कहा, "मैं ज़िंदा बचा तो मैं ईश्वर की कसम खाता हूँ कि फौजी बनूँगा और अपनी बहनों और माँ को बचाऊँगा।" सूरज के छिपने के बाद सईद और अली ख़ुद को किसी तरह घसीटकर बाहर निकले और तेज़ी से पहाड़ की ओर चले गए।

2

हम में स्कूल में चल रही गोलियों की आवाज़ सुनाई दे रही थी। आवाज़ बहुत तेज़ थी और गोलियाँ लगभग एक घंटे तक चलती रहीं। खिड़की पर खड़ी कुछ औरतों ने बताया कि उन्होंने स्कूल के पीछे मिट्टी के बादल उठते देखे थे। सब शांत होने के बाद आतंकियों का ध्यान हमारी ओर गया। अब कोचो में केवल औरतें और बच्चे बचे थे। हम बहुत घबराए हुए थे, लेकिन हमें चुप रहना था। हम आतंकियों को ग़ुस्सा नहीं दिलाना चाहते थे। मेरी माँ जहाँ बैठी थी; वहीं से बोलीं, "मेरे पिता का घर बिखर गया!" यह एक कहावत है, जो बुरे समय में कही जाती है। इसका अर्थ होता है कि हमने अपना सबकुछ खो दिया है। मेरी माँ निराश हो चुकी थी। मेरे ख़याल से उन्होंने इलियास और मसूद को ट्रक में बैठते देख लिया था।

एक आतंकी ने हमें नीचे जाने को कहा। हम उसके पीछे चलकर पहली मंज़िल पर पहुँचे। वहाँ केवल आईएसआईएस के आतंकवादी थे। नूरी नाम के बारह वर्ष के लड़के को उसके बड़े भाई अमीन के साथ गड्ढे तक ले जाया गया। अमीन को अन्य पुरुषों के साथ गोली मार दी गई, लेकिन नूरी को वापस भेज दिया गयाय क्योंकि उसके बगल में बाल नहीं थे। "यह बच्चा है, इसे वापस ले जाओ," उनके कमांडर ने कहा। स्कूल में बच्चे को चिंतित आंटियों ने घेर लिया।

मैंने सीढ़ियों से देखा कि कैथरीन ने नीचे झुककर अमेरिकी डॉलर का एक बंडल उठाया। वह शायद किसी के बस्ते से गिरा था। वह

उसे देखने लगी। मैंने उससे कहा, "यह रख लो और छिपा दो। हमने बाक़ी सब सामान इन्हें दे दिया है।"

कैथरीन पैसे नहीं रखना चाहती थी। वह डरी हुई थी और उसे लगा अगर उसने सहयोग किया तो शायद आतंकवादी उसे और उसके परिवार को छोड़ देंगे। "मैं उन्हें यह पैसा दे दूँ तो शायद वह हमें छोड़ दें," कैथरीन ने कहा। फिर उसने वह बंडल पास खड़े एक आतंकवादी को पकड़ा दिया। उसने भी कुछ नहीं कहा और चुपचाप पैसे रख लिए।

हमने देखा कि सभी ट्रक लौटकर स्कूल के गेट पर आ गए थे। हमने पुरुषों के लिए रोना बंद कर दिया। अब हमें ख़ुद के लिए घबराहट होने लगी थी। आतंकवादी हमें धक्का दे रहे थे और सब तरफ़ अफरा-तफरी मची थी। कोई अपनी बहन या अपनी माँ को छोड़ना नहीं चाहता था। हमने उनसे पूछा, "तुमने आदमियों के साथ क्या किया? तुम हमें कहाँ ले जा रहे हो?" उन्होंने हमारी एक नहीं सुनी और बंदूक की नोक पर हमें ट्रकों में चढ़ा दिया।

मैंने कैथरीन को पकड़ने की कोशिश की, लेकिन हमें अलग कर दिया गया। मुझे और दीमल को सोलह-सत्रह लड़कियों के साथ लाल पिकअप ट्रक में बैठाया गया। यह ऐसा खुला ट्रक था, जिसमें बैठना मुझे पसंद था। कुछ लड़कियाँ, हम दोनों के बीच में आ गईं। मैं पीछे की ओर बैठी थी। हमारे साथ और भी कई औरतें और बच्चे कंधे से कंधा मिलाकर फ़र्श को घूरते हुए बैठे थे। इससे पहले कि हम कुछ देख पाते, वह ट्रक चल पड़ा।

ड्राइवर, ट्रक को कोचो से बाहर ले गया। वह सड़क बहुत सँकरी और गड्ढेदार थी। वह जिस तरह से ट्रक चला रहा था, उसे देखकर लगता था कि वह ग़ुस्से में था और उसे जल्दी थी। ट्रक में इतने झटके लग रहे थे कि ऐसा लगता था मानो कमर ही टूट जाएगी। लगभग आधे घंटे बाद हमें थोड़ी राहत मिली, जब ट्रक की गति धीमी हुई और हम सिंजर शहर से बाहर आ गए।

सिंजर शहर में केवल सुन्नी मुसलमान रह गए थे। मुझे यह देखकर हैरानी हुई कि उनका जीवन सामान्य ढंग से चल रहा था।

औरतें बाज़ार से ख़रीदारी कर रही थीं, जबकि उनके पति चाय की दुकानों पर सिगरेट पी रहे थे। टैक्सी ड्राइवर अपनी सवारियाँ खोज रहे थे और किसान भेड़ों को चराने के लिए ले जा रहे थे। हमारे चारों ओर बहुत-सी गाड़ियाँ थीं, लेकिन किसी का ध्यान ट्रक में बैठी औरतों और बच्चों की तरफ़ नहीं गया। हम लोगों को ट्रक में बुरी तरह ठूँसा गया था फिर भी कोई हमारी मदद क्यों नहीं कर रहा था?

मेरे मन में उम्मीद बाक़ी थी। मैं उस शहर से परिचित थी और मुझे वहाँ सुकून मिलता था। मुझे वहाँ की गलियों की पहचान थी, सब्ज़ी की दुकानें थीं और दुकानों पर रंग-बिरंगे फल बिक रहे थे। शायद हम पहाड़ की ओर जा रहे थे। आतंकियों ने शायद झूठ नहीं कहा था और वे सचमुच हमसे छुटकारा चाहते थे। वे हमें सिंजर पहाड़ की तलहटी में कठिन और विषम परिस्थितियों के बीच छोड़ देना चाहते थे। उन्होंने सोचा होगा कि हमारे लिए वह भी मौत के ही समान था। काश वह ऐसा ही करते! हमारे घरों पर क़ब्ज़ा हो चुका था और घर के आदमियों को मार दिया गया था। फिर भी हमें यह संतोष था कि पहाड़ पर हमारे साथ के यज़ीदी लोग होंगे। हमें उम्मीद थी कि हेज़्नी भी मिल जाएगा और हम बिछड़ गए लोगों का शोक मना सकेंगे। फिर कुछ समय के बाद हम अपने लोगों के साथ एक नया जीवन शुरू कर पाएँगे।

मुझे क्षितिज पर पहाड़ की छवि नज़र आ रही थी। वह शिखर पर ऊँचा और चपटा था। परंतु वह ट्रक पहाड़ पर नहीं जाकर पूर्वी दिशा की ओर मुड़ गया। हम पहाड़ से दूर जा रहे थे। ट्रक के दरवाज़े से इतनी हवा आ रही थी कि यदि मैं ज़ोर से भी चिल्लाती तो मेरी ओर किसी का ध्यान नहीं जाता।

मुझे जैसे ही पता लगा कि वे हमें पहाड़ पर नहीं ले जा रहे हैं, तो मैं बैग में हाथ डालकर ब्रेड खोजने लगी। मुझे ग़ुस्सा आ रहा था। किसी ने हमारी मदद क्यों नहीं की? मेरे भाइयों को क्या हो गया? ब्रेड गंदी और सूख कर बासी हो चुकी थी। सिंजर पीछे छूट गया था। मैंने बैग से ब्रेड निकाली और उसे ट्रक से एक ओर बाहर फेंक दिया। वह सड़क से उछलकर कूड़े के ढेर में जा गिरी।

हम सूर्यास्त से पहले सोलाग़ पहुँच गए और गाड़ी एक इंस्टिट्यूट के सामने रुक गई। वह इमारत अंधेरे में डूबी हुई थी। मुझे और दीमल को पहले ट्रक से उतारा गया। हम थक कर बैठ गए। हमारे सामने औरतों और बच्चों को ट्रक से खींच कर नीचे उतार लिया गया। नसरीन लगातार रो रही थी। "चुप हो जाओ," मैंने उससे कहा, "हमें नहीं पता क्या होने वाला है।"

सोलाग़ झाड़ू बनाने के काम के लिए मशहूर था। गाँव और परिवार का कोई भी सदस्य वहाँ जाकर झाड़ू ख़रीद लाता था। मैं ख़ुद एक बार आईएसआईएस के आने से पहले वहाँ गई थी। उस समय वह शहर बहुत सुंदर और हरा-भरा था। मुझे वहाँ जाकर बहुत अच्छा लगा, लेकिन इस बार उसे देखकर मुझे लगा कि यह कोई अन्य देश है।

मेरी माँ बाद के ट्रकों में से एक में थी। मुझे आज भी उनकी शक्ल याद है। तेज़ हवा से उनका सफ़ेद स्कार्फ़ उड़ रहा था। उनके बाल बिखर चुके थे और स्कार्फ़ से केवल मुँह ढँका था। सफ़ेद कपड़े मैले हो गए थे। उन्हें नीचे उतारा गया, तो वह लड़खड़ाई। "चलती रहो!" एक आतंकी ने पीछे से उन्हें धक्का दिया। फिर वह माँ को देखकर हँसा। अन्य बूढ़ी औरतें भी ठीक से चल नहीं पा रही थीं। मेरी माँ दरवाज़े से भीतर आईं और हमें देखने लगीं। फिर वह चुपचाप नीचे बैठ गई और उन्होंने अपना सिर मेरी गोद में रख लिया। मेरी माँ पुरुषों के सामने कभी नहीं लेटती थीं।

आईएसआईएस के एक सदस्य ने इंस्टिट्यूट के दरवाज़े पर लगे ताले पर हथौड़ा मार कर उसे तोड़ दिया था। फिर उसने सबको अंदर जाने का आदेश दिया। "पहले अपने सिर से स्कार्फ़ उतारो," उसने कहा। "इन्हें उतारकर दरवाज़े के पास छोड़ दो।"

हमने उसकी बात मान ली। उन आतंकियों ने हमें नज़दीक से ध्यान से देखा और फिर हमें अंदर भेजने लगे। ट्रक से उतारी गई औरतें अंदर आती गईं - बच्चे अपनी माँ के घाघरे से चिपकने लगे, युवतियों की आँखें अपने मारे गए पति की याद में रो-रोकर लाल

हो गईं और दरवाज़े पर स्कार्फ़ का ढेर बड़ा होता गया। उसमें सफ़ेद और रंगीन, कई तरह के स्कार्फ़ थे। सूरज अस्त हो चुका था और ट्रकों की आवाजाही भी बंद हो गई थी। फिर एक आतंकी ने अपनी बंदूक स्कार्फ़ के ढेर में घुसाई और हँसकर कहा, "मैं तुम्हें यह सारे स्कार्फ़ ढाई सौ दीनार में बेचने को तैयार हूँ!" वह जानता था कि वह क़ीमत बहुत कम थी। लगभग बीस अमेरिकी सेंट के बराबर! वह यह भी जानता था कि हमारे पास पैसे नहीं थे।

हम सब को एक कमरे में बैठा दिया गया। वहाँ बहुत गर्मी थी। मुझे लगा कि मुझे बुखार हो रहा है। गर्भवती महिलाएँ कराह रही थीं और दीवार के सहारे बैठी थीं। हमें केवल कपड़ों के उठापटक करने और दबी हुई सिसकियों की आवाज़ें सुनाई पड़ रही थीं। तभी एक औरत, जो मेरी माँ से उम्र में छोटी थी, ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगी। "तुमने हमारे घरवालों को मार डाला!" उसे सुनकर दूसरी औरतें भी रोने-चिल्लाने लगीं। ऐसा लगा कि चिल्लाने से उनका दुख बाहर आ रहा था।

उनकी चीख़-पुकार सुनकर आतंकियों को ग़ुस्सा आ गया। "रोना बंद करो, वरना मैं तुम्हें मार डालूँगा!" एक आतंकी ने कहा और बंदूक उस औरत पर तान दी। फिर उसके सिर पर एक थप्पड़ मारा। परंतु उस औरत पर मानो भूत सवार था। वह खुद को रोक नहीं पा रही थी। कुछ औरतों ने उसे समझाने का प्रयास किया। उन्होंने कहा, "यह मत सोचो कि हमारे घरवालों के साथ क्या हुआ। फिलहाल, हमें एक दूसरे की मदद करनी है।"

उन्होंने हमें पानी की कुछ बोतलों के साथ खाने के लिए आलू के चिप्स और चावल दिए थे। अधिकतर लोगों ने सुबह घर से निकलने के बाद से कुछ खाया-पिया नहीं था। फिर भी हमें भूख नहीं थी। हमें उनका दिया खाना खाने से डर लग रहा था। उन्होंने हमें ज़बर्दस्ती खाने के पैकेट पकड़ाए और कहा, "इन्हें खाओ!" यह भी आदेश था। यदि हम मना करते तो उन्हें बुरा लग सकता था। फिर उन्होंने बड़े लड़कों को प्लास्टिक के कुछ बैग दिए और कमरे में फैले कचरे को उठाकर उसमें भरने को कहा।

काफ़ी देर हो चुकी थी। हम सब थके हुए थे। मेरी माँ ने अब भी अपना सिर मेरी गोद में रखा हुआ था। वह आने के बाद से कुछ नहीं बोली थीं और उनकी आँखें खुली थीं। मेरा अनुमान था कि हमें पूरी रात वहीं बितानी थी। मुझे यह भी संदेह था कि हम रात में सो पाएँगे। मेरा मन हुआ कि मैं, माँ से बात करूँ, लेकिन उस समय बात करना मुश्किल था। काश! मैंने उनसे कुछ बात की होती। खाना ख़त्म होने के बाद आतंकियों ने हमें फिर छोटे-छोटे टुकड़ों में बाँटकर बगीचे के सामने भेज दिया। "शादीशुदा औरतें, अपने बच्चों के साथ यहाँ रहेंगी," उन्होंने चिल्लाकर कहा। "और बूढ़ी औरतें और लड़कियाँ बाहर जाएँगी!"

हमें उनकी बात समझ में नहीं आई इसलिए हम घबरा गए। माताओं ने अपने बड़े बच्चों के हाथ पकड़ लिए थे। वे उन्हें छोड़ना नहीं चाहती थीं। परंतु कमरे में आतंकी घूमते रहे और परिवार के सदस्यों को एक-दूसरे से अलग कर रहे थे। उन्होंने छोटी उम्र की अविवाहित लड़कियों को दरवाज़े की ओर धकेल दिया। मैं और कैथरीन, माँ के साथ बैठे थे। कैथरीन भी बहुत डरी हुई थी, क्योंकि उसे हमसे अलग किया जाना था। उसने माँ की बाँहों में अपना सिर छुपा लिया। तभी एक आतंकी बोला, "सुनो!" उसने मेरी माँ की ओर इशारा किया, "वहाँ जाओ!"

मैंने सिर हिला कर मना कर दिया और मैं अपनी माँ के और निकट आ गई। फिर वह आतंकी नीचे झुका और उसने मेरा स्वेटर खींचा। "चलो मेरे साथ!" वह बोला, लेकिन मैंने जवाब नहीं दिया। उसने मुझे खींचा, तो मैंने मुँह मोड़ लिया। फिर उसने मुझे बाँहों से पकड़ा और माँ से दूर मुझे बगीचे की दीवार के पास ले गया। मैं चिल्लाने लगी। फिर उसने कैथरीन के साथ भी यही किया। वह माँ का हाथ पकड़े बैठी थी और उनसे अलग नहीं होना चाहती थी। "मुझे माँ के साथ रहने दो," उसने कहा। "इनकी तबीयत ठीक नहीं है।" लेकिन आतंकियों ने किसी की नहीं सुनी। वे कैथरीन को खींचकर माँ से दूर ले गए।

"मुझसे हिला नहीं जा रहा। मुझे लगता है कि मैं मर जाऊँगी," माँ ने उस आतंकी से कहा।

"चलो मेरे साथ!" वह बोला। "हम तुम्हें एयरकंडीशनर वाली जगह पर ले जाएँगे।" मेरी माँ थके और भारी क़दमों से उस आतंकी के पीछे चल पड़ीं।

बड़ी उम्र की अकेली औरतों ने जान बचाने के लिए झूठ बोलना शुरू कर दिया। उन्होंने आतंकियों से कहा कि वह विवाहित हैं और उन्होंने किसी भी बच्चे का हाथ पकड़ कर उसे अपना बच्चा बना लिया। हम नहीं जानते थे कि हमारे साथ क्या होगा। परंतु ऐसा लग रहा था कि आतंकियों की माताओं और विवाहित औरतों में कम रुचि थी। दीमल और अदकी ने हमारे दो भतीजों को खींचकर अपने पास बुला लिया। "ये हमारे बेटे हैं," उन्होंने आतंकियों से कहा। वे उन्हें एक पल घूरते रहे और फिर आगे चले गए। दीमल ने अपने तलाक़ के बाद से अपने बच्चों को नहीं देखा था, हालाँकि वह एक अच्छी माँ थी। यहाँ तक कि अदकी भी, जिसका अभी विवाह नहीं हुआ था, माँ की भूमिका को अच्छी तरह निभा सकती थी। उन्होंने एक क्षण में निर्णय लिया और जीवित बचने का वही एकमात्र तरीक़ा था। मुझे अपनी बहनों को अलविदा कहने का मौक़ा तक नहीं मिला। उन्हें पहले ही लड़कों के साथ ऊपर भेज दिया गया था।

औरतों को अलग करने में लगभग एक घंटा लग गया। मैं कैथरीन, रोजियान और नसरीन के साथ बाहर बैठी थी। आतंकियों ने हमें फिर से चिप्स और पानी दिया। हम बहुत डरे हुए थे और हमारी खाने की इच्छा बिलकुल नहीं थी। फिर भी मैंने थोड़ा पानी पिया। मुझे अपनी प्यास तक का अहसास नहीं था। मैं, माँ और अपनी बहनों के बारे में सोच रही थी। मुझे नहीं पता था कि आईएसआईएस वाले उनके साथ क्या करेंगे। मेरे आस-पास बैठी लड़कियों के चेहरे रोने से लाल हो गए और बाल बिखर गए थे। मैं इतनी थक चुकी थी कि मेरा सिर मानो मेरे शरीर के अंदर धँसा जा रहा था। मैंने उम्मीद नहीं छोड़ी। तभी मुझे स्कूल के सामने तीन बसें आकर रुकती दिखाई पड़ीं। वें बड़ी बसें थीं। ऐसी बसों में आम तौर पर पर्यटकों और तीर्थ-यात्रियों

को इराक और मक्का ले जाया जाता है। मैं, समझ गई कि वे बसें हमें ले जाने आई थीं।

"ये हमें कहाँ ले जाएँगे?" कैथरीन ने रोते हुए कहा। उसने यह कहा नहीं, लेकिन हमें डर था कि हमें सीरिया ले जाया जाएगा। हालाँकि कुछ भी हो सकता था, किंतु मुझे विश्वास था कि हमारी मौत सीरिया में होगी।

मैंने अपना बैग कसकर पकड़ लिया। ब्रेड के निकल जाने से वह हल्का हो गया था। मुझे ब्रेड को फेंक देने का दुख हो रहा था। हमारे यहाँ ब्रेड को फेंकना पाप है। ईश्वर यह नहीं देखता कि यज़ीदी कितनी बार प्रार्थना करते हैं या कब जियारत पर जाते हैं। हमें बड़े-बड़े पूजा घर बनाने की अथवा धार्मिक पढ़ाई की भी ज़रूरत नहीं है। हमारे परिवार में धार्मिक अनुष्ठान भी तब होते हैं, जब परिवार के पास ऐसे कामों के लिए पर्याप्त धन या समय होता है।

हमारी आस्था कर्मों में निहित है। हम घर में अतिथियों का स्वागत करते हैं, उन्हें पैसा और भोजन देते हैं और अंतिम संस्कार से पहले अपने प्रियजन के शव के पास थोड़ी देर समय बिताते हैं। एक अच्छा विद्यार्थी होना और पति या पत्नी के प्रति उदार व्यवहार व्यक्त करना भी प्रार्थना के बराबर समझा जाता है। ऐसी सब साधारण चीज़ें जैसे भोजन आदि, जो हमें ज़िंदा रखती हैं और ग़रीबों के काम आती हैं, पवित्र समझी जाती हैं।

ग़लतियाँ करना मनुष्य के स्वभाव का हिस्सा है। हम, भाई-बहन यज़ीदी जाति के सदस्य हैं और एक-दूसरे को धर्म के बारे में बताते हैं। इससे हमें अगले जन्म में सहायता मिलती है। मेरी बहन मुझसे उम्र में बड़ी थी। वह मुझसे अधिक सुंदर थी और उसे यज़ीदी धर्म के विषय में भी अधिक जानकारी थी। उसकी शादी हुई, फिर तलाक़ हुआ और वह जब फिर नए परिवार के साथ रहने आई, तो उसने ख़ुद को पूरी तरह ईश्वर और धर्म के प्रति समर्पित कर दिया। आईएसआईएस के आने से पहले वह भागने में कामयाब हो गई थी। वह अब जर्मनी में पूरी तरह सुरक्षित थी। भाई-बहनों का सबसे ज़रूरी काम यह है कि वे आपके मरने के बाद ईश्वर और तवूसी मेलेक के पास बैठकर आपका

पक्ष लेते हैं और कहते हैं, "मैं इसे अच्छी तरह जानती थी। आपकी बहन आपके लिए ऐसा कहती थी। इसकी रूह को फिर से धरती पर लौटना चाहिए। यह एक अच्छी मनुष्य है!"

मुझे पता है कि मेरे मरने के बाद मेरी बहन को मेरे अपराधों के लिए मेरा बचाव करना होगाय जैसे कोचो की दुकान से टॉफ़ी चुराना। मुझे अपने भाई-बहनों के साथ खेत पर जाने में बहुत आलस आता था। अब उसे मेरा बचाव एक और बड़े काम के लिए करना होगा। मैंने अपनी माँ की बात नहीं मानी और दुल्हनों का एल्बम बचा लिया, मैंने बैग से ब्रेड फेंक दी और अब मैं बस में बैठी थी। मुझे आशा है कि मेरी बहन मुझे इन सबके लिए माफ़ कर देगी।

3

मेरी जैसी और बहुत-सी लड़कियों को दो बसों में बैठा दिया गया। मेरे भतीजे की तरह और कई लड़कों, जिन्हें कोचो में उनकी कम आयु की वज़ह से छोड़ दिया गया था, को तीसरी बस में बैठाया गया। वे भी हमारी तरह डरे हुए थे। आईएसआईएस के आतंकियों से भरी कुछ हथियारबंद जीपें बसों के साथ चलने का इंतज़ार कर रही थीं। ऐसा लग रहा था मानो हम किसी लड़ाई पर जा रहे हों।

मैं बस में बैठी थी कि एक आतंकी मेरे निकट आया। यह वही आदमी था जिसने स्कार्फ़ के ढेर में बंदूक घुसाई थी। उसके हाथ में हथियार था। "क्या तुम अपना मजहब बदलोगी?" उसने मुझसे पूछा। वह पहले की तरह अब भी हमारा मज़ाक़ उड़ा रहा था।

मैंने सिर हिलाकर मना कर दिया।

"अगर तुम धर्म बदल लो तो यहाँ रुक सकती हो," उसने कहा। फिर उसने इंस्टिट्यूट के पिछले भाग की ओर इशारा किया; जहाँ मेरी माँ और बहनें थीं। "तुम अपनी माँ और बहनों के साथ रह सकती हो और उन्हें भी मजहब बदलने के लिए कह सकती हो।"

मैंने फिर सिर हिला दिया। मैं इतना डरी हुई थी कि मुझसे कुछ बोला नहीं गया।

"अच्छी बात है!" उसने कहा और फिर मुझे घूरने लगा। "फिर तुम्हें अन्य के साथ इसी बस में बैठना होगा।"

वह बस अंदर से बहुत बड़ी थी। उसमें छह-छह सीटों की लगभग चालीस कतारें थीं। चारों ओर खिड़कियाँ थीं, जिन पर पर्दे डले थे। सीटें भरती गईं और बस के अंदर दबाव बढ़ता गया। हमें साँस लेने में कठिनाई होने लगी। हमने पर्दे हटाकर खिड़की खोलने की कोशिश की तो एक आतंकी चिल्लाया और उसने हमें चुपचाप बैठने को कहा। मैं आगे की ओर थी, इसलिए मुझे ड्राइवर की बात सुनाई दे रही थी। वह फ़ोन पर किसी से बात कर रहा था। मुझे उम्मीद थी कि वह बातचीत के दौरान ज़रूर बताएगा कि वे कहाँ जा रहे थे। लेकिन वह तुर्की भाषा में बात कर रहा था, इसलिए मुझे उसकी बात समझ में नहीं आई। मैं आगे की सीट पर बैठ सामने के शीशे से रास्ता देख रही थी। हम इंस्टिट्यूट से चले तो अंधेरा हो चुका था, इसलिए गाड़ी की हेडलाइट चालू करने के बाद मुझे आगे का रास्ता नज़र आने लगा। पीछे का कोई दृश्य दिखाई नहीं पड़ रहा था। सोलाग़ इंस्टिट्यूट भी अब नज़र नहीं आ रहा था, जहाँ मेरी माँ और बहनें पीछे रह गई थीं।

गाड़ी तेज़ चल रही थी। लड़कियों से भरी दो बसें आगे थी और लड़कों की गाड़ी पीछे चल रही थी। कुछ सफ़ेद जीप भी साथ चल रही थीं। हमारी बस में बहुत शांति थी। मुझे बस में केवल एक आतंकी की चलने की आवाज़ सुनाई दे रही थी। एक अन्य आवाज़ इंजन की घरघराहट से पैदा हो रही थी। मैंने आँखें बंद करने का प्रयास किया, लेकिन बस पसीने और शरीर की दुर्गंध से भरी थी। एक लड़की ने अपने ही हाथ में उल्टी कर दी। उल्टी से बस में दुर्गंध और तेज़ हो गई थी और उसे सहन करना मुश्किल हो गया। इससे साथ बैठी दूसरी लड़कियों को भी उल्टी आने लगी। उन्हें कोई सँभाल नहीं पा रहा था। हमें एक-दूसरे को छूने या आपस में बात करने की इज़ाज़त नहीं थी।

वह आतंकी लगभग पैंतीस वर्ष का था। उसका नाम अबू बटाट था। उसे देखकर लगता था कि उसे अपना काम पसंद था। वह बीच-बीच में लड़कियों को देखता था। फिर उसने एक लड़की को सीट से उठाया और उसे पीछे भेज दिया। फिर उसने लड़कियों को मुस्कराने को कहा और सेलफ़ोन पर उनकी फ़ोटो खींची। उसे उनकी घबराहट

देखकर मज़ा आ रहा था। वे डरकर नीचे देखतीं तो अबू ज़ोर-से चिल्लाता, "ऊपर देखो!" उसकी हिम्मत बढ़ती जा रही थी।

मैंने आँखें बंद कर लीं। बस में जो हो रहा था, मैं उसे देखना नहीं चाहती थी। मुझे डर लगा रहा था, लेकिन मैं इतनी थक चुकी थी कि मुझे तुरंत नींद आ गई। मुझे बिलकुल आराम नहीं मिल पाया। मेरी जैसे ही आँख लगती तो मेरा दिमाग़ मुझे उठा देता था। मैं आँख खोलकर खिड़की से देखती तो मुझे याद आता था कि मैं कहाँ थी।

मैं ठीक से नहीं कह सकती, लेकिन मुझे ऐसा महसूस हो रहा था कि वह सड़क मोसुल की ओर जा रही थी। मोसुल, उस समय इराक में इस्लामिक स्टेट की राजधानी थी। पूरे शहर पर क़ब्ज़ा करना आईएसआईएस के लिए बड़ी जीत थी। वे ऑनलाइन वीडियो में जश्न मनाते नज़र आते थे। वे चारों तरफ़ सड़कों पर फैले हुए थे और उन्होंने मोसुल जाने के सभी रास्ते बंद कर दिए थे। इस बीच कुर्द और इराकी सेना ने कसम खाई कि वे आईएसआईएस से अपना शहर वापस लेंगे, चाहे इसमें कितना ही समय लग जाए। *हमारे पास इतना समय नहीं है,* मैंने सोचा और फिर मुझे नींद आ गई।

मुझे अचानक अपने बाएँ कंधे पर किसी का हाथ महसूस हुआ। मैंने आँख खोलकर देखा तो अबू बटाट खड़ा था। उसकी हरी आँखें चमक रही थीं और हांठों पर तिरछी मुस्कान थी। मेरा चेहरा उसकी पिस्तौल के ठीक सामने था। मैं चट्टान की तरह शांत बैठी थी। मैंने फिर से आँखें बंद कर ली और प्रार्थना करने लगी। फिर उसने मेरे कंधे पर हाथ रखा फिर उसका हाथ मेरी गर्दन से नीचे खिसककर मेरे बाएँ स्तन पर रुक गया। मेरे अंदर जैसे आग जल रही थी। मुझे पहले किसी ने नहीं छुआ गया था। मैंने आँखें खोलीं, लेकिन उसकी ओर नहीं देखा। मैं सामने देखती रही। अबू बटाट ने अपना हाथ मेरे कपड़ों के अंदर घुसा दिया और फिर और मेरे स्तन को पकड़ लिया। उसने मुझे ज़ोर से दबाया। वह मुझे चोट पहुँचाना चाहता था। फिर वह आगे बढ़ गया।

आईएसआईएस के साथ बिताया हर क्षण, शरीर और आत्मा के लिए धीमी दर्दनाक मौत की तरह था। वह अबू बटाट के साथ मेरी

मौत की शुरुआत थी। मैं गाँव की रहने वाली थी और मेरा पालन-पोषण अच्छे परिवार में हुआ था। मैं घर से निकलती तो या कहीं जाती तो मेरी माँ बहुत ध्यान से मुझे देखती थी। "नादिया! अपनी शर्ट के बटन बंद करो। अच्छी लड़की बनकर रहो।"

एक अजनबी मुझे निर्ममता से छू रहा था और मैं कुछ नहीं कर सकती थी। अबू बटाट बस में चहल-कदमी करता रहा और लड़कियों को इधर-उधर से पकड़ता रहा। वह हमारे शरीर पर बेरहमी से हाथ फेर रहा था। उसे हमारे ग़ुस्से या किसी भी तरह के विरोध का डर नहीं था। वह मेरे पास दोबारा आया तो मैंने उसका हाथ पकड़ लिया और उसे रोकना चाहा। मैं उससे बात नहीं करना चाहती थी। मैं रोने लगी। मेरे आँसू उसके हाथ पर गिर रहे थे, लेकिन वह नहीं रुका। *इस तरह की चीज़ें तो शादी के बाद प्रेमी-प्रेमिका के बीच होती हैं,* मैंने सोचा। दुनिया और प्यार के बारे में मेरा यही विचार था। परंतु अबू बटाट ने मुझे जिस तरह छुआ, उससे मेरी ये अवधारणाएँ चकनाचूर हो गईं।

"वह सब लड़कियों के साथ ऐसा ही कर रहा है," मेरे साथ बैठी लड़की ने कान में कहा। "वह सबको छू रहा है।"

"तुम मेरी सीट पर बैठ जाओ," मैंने उससे प्रार्थना की। मैं नहीं चाहती कि अबू मुझे फिर इस तरह छुए।

"मैं नहीं आ सकती!" उसने कहा। "मुझे बहुत डर लग रहा है।"

अबू बटाट चहलकदमी करते हुए अपनी पसंद की लड़की के सामने रुक जाता था। मैंने आँखें बंद कर लीं। फिर भी मुझे उसकी पतलून की सरसराहट और चप्पलों की आवाज़ आ रही थी। उसके रेडियो पर बीच-बीच में अरबी भाषा में कुछ संदेश आता था, लेकिन वह इतना अस्पष्ट था कि मुझे पता नहीं चला कि वह क्या बात कर रहा था।

हर बार वह पास से गुज़रते समय मेरे कंधे और छाती को छूकर निकलता था। मुझे बहुत पसीना आ रहा था। मुझे लगा मैं नहाकर निकली थी। मैंने देखा कि वह उन लड़कियों के पास नहीं गया, जिन्होंने उल्टी की थी। यह देखकर मैंने अपनी अँगुलियाँ मुँह में डालकर उल्टी करने की कोशिश की। मैं चाहती थी कि मेरे कपड़ों

पर उल्टी गिर जाए ताकि वह मुझे छूना बंद कर दे। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। मुझे गले में दर्द हुआ, लेकिन कुछ बाहर नहीं निकला।

हमारी बस सिंजर से लगभग 30 मील की दूरी पर तुर्कमान शहर में एक जगह पर रुक गई। आतंकियों ने सेलफ़ोन और रेडियो पर बात करना शुरू कर दिया। वे वरिष्ठ अधिकारियों से आगे की कार्रवाई के बारे में पूछ रहे थे। "वे कह रहे हैं कि लड़कों को यही उतार दो," ड्राइवर ने अबू बटाट से कहा। फिर वे दोनों बस से उतरकर चले गए। मैंने खिड़की से देखा कि अबू बटाट दूसरे आतंकियों से बात कर रहा था। मुझे उनकी बात समझ नहीं आई। ताल अफ़ार के तीन-चौथाई निवासी सुन्नी तुर्क थे और सिंजर शहर में आईएसआईएस के आने के कुछ महीने पहले शिया लोग वहाँ से भाग गए थे। उन्होंने आतंकियों के लिए सारी जगह खुली छोड़ दी थी।

मेरे शरीर का बायां हिस्सा दर्द कर रहा था, क्योंकि अबू बटाट ने उसे बार-बार दबाया था। मैं ईश्वर से प्रार्थना करने लगी कि वह बस में फिर नहीं चढ़े, लेकिन कुछ ही मिनटों बाद वह लौट आया। बस फिर चल पड़ी। मैंने खिड़की से देखा कि एक बस पीछे ही छूट गई थी। मुझे बाद में पता लगा कि उसमें लड़के थे और उनमें मेरा भतीजा मलिक भी था। आईएसआईएस ने उसे आतंकी बनाने की कोशिश की। उनकी यही योजना थी कि युद्ध चलता रहेगा और वे कम उम्र के लड़कों को ढाल और बम-दस्ते की तरह इस्तेमाल करते रहेंगे।

अबू बटाट ने बस में दोबारा चढ़ते ही हमारे साथ फिर छेड़छाड़ शुरू कर दी। उसने कुछ लड़कियों को पसंद कर लिया था। वह बार-बार उन्हीं के पास जाता था और उनके शरीर पर हाथ फेरता था। ऐसा लग रहा था कि वह हमारे शरीर को नोच डालेगा। बस चलने के दस मिनट बाद मुझसे यह सहन नहीं हुआ। मुझे दोबारा अपने कंधे पर उसका हाथ महसूस हुआ तो मैं ज़ोर-से चिल्लाई। मुझे देखकर दूसरी लड़कियाँ भी चिल्लाने लगीं। कुछ ही देर में बस के अंदर तूफान खड़ा हो गया। यह देखकर अबू बटाट डर गया। "चुप हो जाओ! तुम सब चुप हो जाओ!" वह चिल्लाया। लेकिन कोई चुप नहीं हुआ। *यदि इसने मुझे भी मार दिया तो मुझे चिंता नहीं है,* मैंने सोचा। मैं सचमुच

मर जाना चाहती थी। ड्राइवर ने गाड़ी रोक दी। वह फ़ोन पर ज़ोर-ज़ोर से कुछ बोल रहा था। कुछ ही देर में एक सफ़ेद जीप, जो हमारे आगे चल रही थी, रुकी और उसमें से एक आदमी निकलकर बस की ओर आने लगा।

मैंने उसे पहचान लिया था। उसका नाम नफ़ाह था। उसने सोलाग़ इंस्टिट्यूट में हमारे साथ बड़ी बेरहमी से बर्ताव किया था। उसमें मानवता नाम की चीज़ नहीं थी। वह ज़ोर-से चिल्लाता था और मशीन की तरह काम करता था। उसे देखकर ड्राइवर ने दरवाज़ा खोला। नफाह बस के अंदर आ गया। "यह किसने शुरू किया?" उसने अबू बटाट से पूछा। बटाट ने मेरी ओर इशारा कर दिया। "इसने!" वह बोला। यह सुनकर नफ़ाह मेरे पास आया।

इससे पहले वह कुछ कर पाता, मैंने बोलना शुरू कर दिया। नफ़ाह आतंकवादी था, परंतु क्या आईएसआईएस के स्त्रियों के साथ व्यवहार करने के नियम नहीं थे? अगर वे स्वयं को मुसलमान समझते हैं, तो उन्हें अबू बटाट द्वारा किए दुर्व्यवहार पर आपत्ति दर्ज करनी चाहिए। "तुम हमें यहाँ लेकर आए हो। तुमने हमें बस में बैठाया। तुमने हमारे साथ ज़बरदस्ती की। हमारे पास कोई विकल्प नहीं था। यह आदमी..." मैंने अबू बटाट की ओर इशारा करते हुए कहा, "यह बार-बार अपना हाथ हमारी छाती पर रखता है। यह हमें पकड़ता है और हमारा पीछा नहीं छोड़ रहा।"

मेरे बोलने के बाद नफ़ाह शांत हो गया। मुझे लगा कि वह अबू बटाट को उसकी हरकतों के लिए डाँटेगा। लेकिन मेरा सोचना ग़लत था। अबू बटाट बोला, "तुम्हें क्या लगता है कि तुम्हें क्यों लाया गया है?" उसने मुझसे कहा। वह इतनी जोर-से बोल रहा था कि बस में बैठे सब लोग सुन रहे थे। "क्या तुम्हें सचमुच नहीं पता?"

अबू बटाट, नफ़ाह के पास से निकलकर आया और उसने मेरी गर्दन पकड़ ली। उसने मेरा सिर सीट पर दबाते हुए अपनी बंदूक मेरे माथे पर रख दी। मेरे पास बैठी लड़कियाँ चिल्लाने लगीं। मुझे इतना डर लग रहा था कि मेरे मुँह से आवाज़ नहीं निकली। "अगर तुमने आँखें बंद कीं तो मैं तुम्हें गोली मार दूँगा!" वह बोला।

फिर नफ़ाह बस के दरवाज़े की ओर लौट गया। फिर उसने मुड़कर सबसे कहा, "तुम्हें क्या लगता है कि तुम्हें यहाँ क्यों लाया गया है? लेकिन तुम्हारे पास कोई चारा नहीं है। तुम यहाँ सबाया बनने आई हो और वही करोगी जो हम कहेंगे। अगर कोई चिल्लाया तो विश्वास करो कि स्थिति और बिगड़ जाएगी।" इस बीच अबू बटाट मुझ पर बंदूक ताने खड़ा रहा। फिर नफ़ाह बस से उतरकर चला गया।

यह पहला मौक़ा था, जब मैंने अपने लिए अरबी शब्द सुना था। आईएसआईएस ने सिंजर पर क़ब्ज़ा किया और फिर वे यज़ीदियों का अपरहण करने लगे। वे उन्हें सबाया बुलाते थे। उसका अर्थ था - कम उम्र की लड़कियाँ, जिन्हें वे यौन-शोषण के लिए ख़रीदते और बेचते थे। उनकी यही योजना थी। उनका कहना था कि कुरान में यही कहा गया है, जबकि कुरान के इस विश्लेषण पर दुनियाभर के मुस्लिम समुदायों ने बहुत पहले प्रतिबंध लगा दिया था। यज़ीदी लड़कियों को ग़ुलाम समझा जाता था और आतंकियों द्वारा कुरान के विश्लेषण के आधार पर किसी ग़ुलाम के साथ बलात्कार करना पाप नहीं था। हमारा इस्तेमाल युवा लड़कों को लुभाकर उन्हें आतंकी बनने के लिए राज़ी करने के लिए किया जाने वाला था। फिर वे निष्ठा और अच्छे व्यवहार के लिए हमें इनाम के रूप में आगे बढ़ा देते थे। बस में बैठी हर लड़की के साथ यही होने वाला था। हम लड़कियाँ मनुष्य नहीं थीं। हम सबाया

बन चुकी थीं। अबू बटाट ने मेरी गर्दन छोड़ दी और बंदूक हटा ली। लेकिन उस पल से लगभग एक घंटे बाद मोसुल पहुँचने तक उसने मुझे अपना मुख्य लक्ष्य बनाए रखा। वह दूसरी लड़कियों को भी छूता रहा, लेकिन उसका ध्यान मुझ पर अधिक था। वह जल्दी-जल्दी लौटकर मेरे पास आता और अपना हाथ मेरे कपड़ों में घुसा देता था। मुझे पता था कि मेरी चमड़ी छिल गई होगी। मेरे शरीर का बायाँ हिस्सा सुन्न पड़ चुका था। परंतु मैं चुप थी, क्योंकि मुझे पता था अगर मैंने फिर कुछ कहा तो वह मुझे मार डालेगा। लेकिन मेरे दिमाग़ के भीतर उठ रही चीख़ें नहीं थम रही थीं।

रात में आकाश साफ़ था, और मुझे खिड़की से तारे नज़र आ रहे थे। मुझे आसमान देखकर एक पुरानी अरबी प्रेम कहानी याद आ गई, जो मेरी माँ मुझे सुनाती थी। वह "लैला और मजनूं" की कहानी थी। उस कहानी में कैस नाम का आदमी लैला नाम की एक औरत से अपने प्यार की अभिव्यक्ति इतनी खुलकर करता है कि उसके लिए ढेर सारी कविताएँ लिखता है। लोग उसे मजनूं के नाम से पुकारने लगते हैं, जिसका अर्थ अरबी भाषा में "पागल" है। जब मजनूं, लैला से शादी के लिए उसका हाथ माँगने उसके पिता के पास जाता है, तो वह शादी से मना कर देता है और कहता है कि मजनूं दिमाग़ी तौर पर असंतुलित है; इसलिए वह अच्छा पति साबित नहीं हो सकेगा।

यह एक दुख-भरी कहानी है। लैला की शादी ज़बरदस्ती किसी और पुरुष से कर दी जाती है और उसका दिल टूट जाता है। वह मर जाती है। मजनूं, गाँव को छोड़कर रेगिस्तान में भटकता रहता है। वह अपने आप से बातें करता है और रेत पर कविताएँ लिखता है। एक दिन वह घूमता हुआ लैला की क़ब्र तक जा पहुँचता है। वह अपने मरने तक उसी क़ब्र के पास रहता है। मुझे उन दोनों के बारे में सोचकर रोना आता था, लेकिन जब मेरी माँ इस कहानी को सुनाती तो मुझे अच्छा लगता था। उस रात साफ़ आसमान देखकर मन में प्रेम के बजाय डर पैदा हो गया था। लैला का अर्थ अरबी में "रात" है। मेरी माँ कहानी सुनाकर हमें आसमान में दो चमकते सितारे दिखाती और कहती थीं कि लैला और मजनूं मिलकर साथ नहीं रह सके इसलिए उन्होंने मरने के बाद साथ रहने की प्रार्थना की। इसलिए ईश्वर ने उन्हें सितारा बना दिया।

मैंने प्रार्थना की, "हे ईश्वर! मुझे भी सितारा बना दो ताकि मैं बस से निकलकर ऊपर आसमान में चली जाऊँ!" मैंने धीरे-से कहा, "अगर एक बार यह किया है, तो आप ऐसा फिर कर सकते हैं।" लेकिन हमारी बस मोसुल की तरफ़ चलती जा रही थी।

4

मोसुल पहुँचने तक अबू बटाट हमें लगातार छूता रहा। बस की खिड़की के ऊपर लगी घड़ी में रात के दो बजे थे। हम एक बड़ी इमारत के सामने रुके। मुझे लगा वह किसी धनी परिवार का घर रहा होगा। सभी जीपें गैराज के भीतर चली गईं। बस को घर के सामने रोक दिया गया था। दरवाज़े खुलने लगे। "चलो, जल्दी बाहर निकलो!" अबू बटाट चिल्लाकर बोला। हम सब अपनी-अपनी सीट से उठकर खड़े हो गए। कोई सो नहीं पाया था। हम सब बैठे-बैठे थक चुके थे। मैं तो अबू बटाट के दुर्व्यवहार से पहले ही त्रस्त थी। परंतु मेरा सोचना ग़लत था कि वह बस रुकने के बाद मुझे अकेला छोड़ देगा। हम दरवाज़े से निकलने के लिए कतार बनाकर अपना-अपना सामान पकड़कर खड़े हो गए। वह दरवाज़े के पास खड़ा हमारी प्रतीक्षा कर रहा था। जैसे-जैसे लड़कियाँ बस से उतरती रहीं, वह उनके साथ छेड़छाड़ करता रहा। उसने मुझे भी बस से उतरते समय सिर से पैर तक सब जगह छुआ था।

हम सब भीतर चले गए। मैंने इतना शानदार घर पहले कभी नहीं देखा था। वह बहुत बड़ा था। उसमें बड़े-बड़े कमरे और शयनकक्ष थे। उसमें आराम से आधा दर्जन परिवार रह सकते थे। कोचो में अहमद जासो का घर भी इतना बड़ा नहीं था। वहाँ किसी के पास इतना बड़ा घर नहीं था। उन कमरों में पुराने कालीन बिछे थे, जो घर में रहने वाले परिवार के रहे होंगे। मैंने देखा कि एक आतंकी किसी से कुछ कह रहा था। घर में उस परिवार की एक तसवीर थी। मैं सोचने लगी कि उनके साथ क्या हुआ होगा।

चारों तरफ़ आईएसआईएस के आतंकी थे। वे वर्दी पहने हाथ में रेडियो लेकर घूम रहे थे। रेडियो पर लगातार संदेश चल रहा था। हमें तीन कमरों में भेज दिया गया। कैथरीन कुछ अन्य लड़कियों के साथ बैठी थी। मैं दूसरे कमरों में देख सकती थी। वहाँ बहुत-सी लड़कियाँ और औरतें पहले से मौजूद थीं और वे सब बसों से उतरने वालों में अपने परिचित लोगों को खोज रही थीं। कमरा पूरा भर चुका था। हम ज़मीन पर बैठ गए। हमारी आँखें नहीं खुल रही थीं। हमें बहुत ज़ोर से नींद आ रही थी।

उस कमरे में दो खिड़कियाँ थीं, लेकिन दोनों बंद थीं। उन पर पर्दे लगे थे। सौभाग्य से किसी ने एक कूलर चला दिया था, जिससे थोड़ी हवा आ रही थी और हम साँस ले पा रहे थे। कमरे में कोई फ़र्नीचर नहीं था और बाथरूम से दुर्गंध आ रही थी। कोई फुसफुसाया, "एक लड़की के पास सेलफ़ोन था। वे लोग उसे खोजने आए तो उसने अपना फ़ोन टॉयलेट में बहाने की कोशिश की।" मैंने बाथरूम के भीतर फूल-पत्तियों जैसे फ़र्श पर उसी तरह के बहुत-से स्कार्फ़ देखेय जैसे हम सोलाग़ में छोड़कर आए थे।

कमरे जब पूरी तरह भर गए तो एक आतंकी ने मेरी ओर इशारा किया और कहा, "मेरे साथ चलो।" फिर वह मुड़कर दरवाज़े की ओर चल पड़ा। "इसके साथ मत जाओ," कैथरीन ने मुझसे लिपटकर कहा। वह मुझे रोकना चाहती थी।

मुझे नहीं पता था कि वह आदमी क्या चाहता था। मैं उसे मना नहीं कर सकती थी। "अगर मैं नहीं गई तो यह मुझे ज़बरदस्ती ले जाएँगे," मैंने कैथरीन से कहा। फिर मैं आतंकी के साथ चल पड़ी।

वह मुझे पहली मंज़िल पर एक गैराज के पास ले गया। वहाँ अबू बटाट और नफ़ाह के साथ एक और आतंकी बैठा था। तीसरा आतंकी कुर्द भाषा में बात कर रहा था। मैंने उसे जैसे ही देखा, मैं स्तब्ध रह गई। वह सिंजर शहर का दुकानदार सुहैब था। यज़ीदी कई बार उसकी दुकान पर जाते थे। मुझे विश्वास है कि ज़्यादातर लोग उसे अपना दोस्त समझते थे। तीनों आदमियों ने मुझे ग़ुस्से से देखा। वे मुझे बस में किए हंगामे के लिए सज़ा देना चाहते थे। "तुम्हारा नाम

क्या है?" नफ़ाह ने मुझसे पूछा। मैंने पीछे हटने की कोशिश की, तो उसने मेरे बाल पकड़ लिए और मुझे दीवार की तरफ़ धक्का दिया।

"नादिया!" मैंने उत्तर दिया।

"तुम किस साल में पैदा हुईं?" उसने पूछा। मैंने उसे जवाब में कहा, "1993।"

फिर उसने मुझसे पूछा, "क्या तुम्हारे परिवार का कोई सदस्य यहाँ है?"

मैं सोचने लगी। मुझे नहीं पता था कि वह मेरे साथ कैथरीन और अन्य लोगों को भी सज़ा देना चाहता था या नहीं। इसलिए मैंने उनसे झूठ बोल दिया। "मैं यहाँ दूसरी लड़कियों के साथ आई हूँ। मुझे नहीं पता मेरे परिवार के साथ क्या हुआ।"

नफ़ाह ने मेरे बाल ज़ोर से पकड़ लिए और फिर मुझसे पूछा, "तुम बस में चिल्लाई क्यों थीं?"

मैं डर गई। मैं बहुत दुबली-पतली थी। मुझे लगा कि उसके हाथों में तो मैं ग़ायब ही हो जाऊँगी। मैं उसे कहना चाहती थी कि मैं अपनी बहन के पास जाना चाहती हूँ। लेकिन मैंने उत्तर में कहा, "मैं डर गई थी। यह तुम्हारे सामने बैठा आदमी," मैंने अबू बटाट की ओर इशारा करके कहा, "यह मुझे छू रहा था। सोलाग़ से लेकर पूरे रास्ते यह हम सबको परेशान करता आया है।"

"तुम्हें क्या लगा कि तुम्हें यहाँ क्यों लाया गया है?" नफ़ाह ने वही प्रश्न किया, जो उसने बस में भी किया था। "तुम्हारा कोई ईमान नहीं है। तुम एक सबाया हो और अब तुम्हें इस्लामिक स्टेट के साथ रहना है। इसलिए तुम्हें इसकी आदत डालनी होगी।" फिर उसने मेरे मुँह पर थूक दिया।

अबू बटाट ने एक सिगरेट निकाली और उसे जलाकर नफ़ाह को दे दी। मुझे देखकर बहुत हैरानी हुई। मैंने सोचा कि इस्लामिक स्टेट के क़ानून में सिगरेट पीने पर पाबंदी होगी। परंतु वे सिगरेट पीना नहीं चाहते थे। *यह मेरे चेहरे पर नहीं लगा दें,* मुझे ऐसा ख़याल आया। मुझे उस समय अपनी सुंदरता का ध्यान था। परंतु नफ़ाह ने जलती सिगरेट मेरे कंधे पर लगाई और उसे मेरे कपड़े पर पूरी तरह दबा दी।

वह जलती सिगरेट टकराई और फिर बुझ गई। कपड़े और त्वचा के जलने की दुर्गंध भयानक थी। यदि मैं चिल्लाती, तो मेरी मुसीबत और बढ़ सकती थी।

उसने एक और सिगरेट जलाई और फिर मेरे पेट पर उसे लगाकर बुझाया। मुझसे रहा नहीं गया। मैं ज़ोर से चिल्लाई।

"यह अभी चिल्ला रही है। क्या यह कल भी चिल्लाएगी?" अबू बटाट ने पूछा। वह चाहता था कि दूसरे लोग मेरे साथ और बुरा बर्ताव करें। "इसे यह समझने की ज़रूरत है कि यह कौन है, और इसे यहाँ क्यों लाया गया है।"

"मुझे अकेला छोड़ दो। मैं ऐसा फिर नहीं करूँगी," मैंने कहा।

नफ़ाह ने मेरे चेहरे पर दो थप्पड़ मारे और मुझे छोड़ दिया। "जाओ और दूसरी सबाया के साथ बैठ जाओ," उसने कहा। "फिर कभी शोर मत करना!"

ऊपर का कमरा अंधकार और भीड़-भाड़ से भरा था। मैंने कंधे से अपने बाल हटाए और हाथ को पेट पर रखकर जले के निशान को छिपाने की कोशिश की। मैंने देखा कि कैथरीन तीस वर्ष की एक औरत के साथ बैठी थी। वह औरत कोचो की रहने वाली नहीं थी। उसे कहीं और से लाया गया था। उसके साथ उसके दो छोटे बच्चे भी थे। एक तो दूध पीने वाला था। वह गर्भवती भी थी। उसने अपने बच्चे को छाती से लगा रखा था और वह उसे हिला-डुलाकर चुप करवा रही थी। उसने मुझसे पूछा कि नीचे क्या हुआ। मैंने सिर हिलाकर बात को टालने की कोशिश की।

"क्या तुम्हें दर्द हो रहा है?" उस औरत ने मुझसे पूछा।

हालाँकि मैं उसे नहीं जानती थी, लेकिन मैं उसका सहारा लेकर बैठ गई। मुझे बहुत कमज़ोरी महसूस हो रही थी। मैंने सिर हिलाकर हामी भर दी।

मैंने उसे सब कुछ बताया। कोचो छोड़ना, अपनी माँ और बहनों से अलग होना और अपने भाईयों को खुद से दूर जाता देखना। मैंने उसे बस में अबू बटाट वाली घटना के बारे में भी बताया। "उन्होंने मुझे

मारा," मैंने कहा। फिर मैंने उसे कंधे और पेट पर सिगरेट से जलाने के पीड़ादायक निशान दिखाए।

उसने अपने बैग में हाथ डाला और मुझे एक ट्यूब निकालकर दी। "यह लोशन लगा लो। इससे जलन में आराम मिलेगी।"

मैंने उसे धन्यवाद दिया और लोशन लेकर बाथरूम में चली गई। मैंने वह लोशन अपने कंधे और पीठ पर लगाया। उससे सचमुच जलन में आराम मिला। फिर मैंने उसे अपने शरीर के अन्य हिस्सों पर भी लगाया, जहाँ अबू बटाट ने मुझे छुआ था। मुझे मासिक धर्म भी शुरू हो गया था। मैंने एक आतंकी से सेनेटरी पैड माँगे, जो उसने बिना मेरी तरफ़ देखे मुझे पकड़ा दिए।

मैं वापस कमरे में पहुँची, तो मैंने उस औरत से पूछा, "यहाँ क्या हो रहा है? इन लोगों ने तुम्हारे साथ क्या किया?"

"क्या तुम जानना चाहती हो?" उसने पूछा। मैंने हामी भर दी। "3 अगस्त को लगभग 400 औरतों और बच्चों को यहाँ लाया गया था," उसने बताया। "यह इस्लामिक स्टेट का केंद्र है। यहाँ इनके अधिकतर आतंकी रहते और काम करते हैं। इनकी संख्या बहुत ज़्यादा है।" फिर वह रुक कर मुझे देखने लगी। यह वही जगह है, जहाँ हमें बेचा और आगे बढ़ा दिया जाता है।"

"तुम्हें अब तक क्यों नहीं बेचा गया?" मैंने पूछा।

"मैं शादीशुदा हूँ, इसलिए यह लोग मुझे किसी आतंकी को उसकी सबाया बनाने से पहले 40 दिन इंतज़ार करेंगे," उस औरत ने मुझे बताया। "यह उनका एक नियम है। मुझे नहीं पता यह तुम्हारे पास कब आएँगे। अगर इन्होंने तुम्हें आज नहीं चुना, तो कल ज़रूर चुनेंगे। ये जब भी यहाँ आते हैं, तो कुछ औरतों को साथ ले जाते हैं, बलात्कार करते हैं और फिर वापस छोड़ देते हैं। मुझे लगता है कई बार वे उन्हें अपने पास भी रख लेते हैं। कभी-कभी ये किसी कमरे में बलात्कार करते हैं और काम ख़त्म हो जाने के बाद उन्हें यहाँ वापस ले आते हैं।"

मैं चुपचाप बैठी रही। मेरे जख़्मों में दर्द हो रहा था। मुझे लग रहा था जैसे कोई पानी से भरा बर्तन उबल रहा है। उस औरत ने मुझसे

पूछा, "क्या तुम्हें दर्द की कोई दवाई चाहिए?" मैंने मना कर दिया। "मुझे दवाई खाना पसंद नहीं है।" मैंने उत्तर दिया।

"तो कुछ पी लो," उसने कहा। मैंने उसे धन्यवाद देकर उससे बोतल ले ली और उसमें से गुनगुने पानी के कुछ घूँट पिए। उसका बच्चा चुप हो गया था, और वह सोने वाला था।

"ज़्यादा वक्त नहीं लगेगा," उसने धीमी आवाज़ में कहा। "वे आएँगे और तुम्हें ज़रूर लेकर जाएँगे। फिर तुम्हारे साथ बलात्कार करेंगे। कुछ लड़कियाँ अपने मुँह पर राख़ या गंदगी लगा लेतीं या अपने बाल खोल लेती हैं, लेकिन इससे कुछ नहीं होता, क्योंकि वे लोग लड़कियों को नहला-धुलाकर फिर से सुंदर बना देते हैं। कुछ लड़कियों ने आत्महत्या कर ली या करने की कोशिश की। उन्होंने कलाई की नस काट ली। तुम चाहो तो बाथरूम की दीवार पर ख़ून देख सकती हो।" उस औरत ने मुझसे यह नहीं कहा, "चिंता मत करो या सब ठीक हो जाएगा।" उसने बोलना बंद किया, तो मैंने अपना सिर उसके कंधे पर रख दिया। उसका बच्चा भी उसके कंधे पर सिर रखकर सो रहा था।

उस रात मैं बहुत थकी हुई थी, लेकिन मुझे डर से नींद नहीं आई। गर्मी के दिन थे; इसलिए सूरज सुबह जल्दी निकल आया और खिड़की पर पड़े भारी पर्दों से हल्की धूप अंदर आने लगी। मैंने देखा कि ज़्यादातर लड़कियाँ मेरी तरह रात-भर से जाग रही थीं। उन्हें आलस आ रहा था। वे आँखें खोले बैठी उबासियाँ ले रही थीं। आतंकी, प्लास्टिक की प्लेटों में चावल और टमाटर का सूप नाश्ते में लाए थे। मुझे बहुत भूख लगी थी। नाश्ता जैसे ही सामने आयाय मैंने जल्दी से खा लिया।

बहुत-सी लड़कियाँ रात में रोती रहीं और सुबह फिर रोने लगीं। कोचो की एक लड़की दीमल की उम्र की थी। परंतु वह दीमल की तरह आतंकियों को मूर्ख नहीं बना सकी। वह उन्हें बताना चाहती थी कि वह शादीशुदा है। वह मेरे पास बैठी थी। "हम कहाँ हैं?" उसने पूछा। वह किसी इमारत या सड़क को नहीं पहचान पाई।

"मुझे भी नहीं पता," मैंने कहा। "यह शायद मोसुल में कोई जगह है।"

"मोसुल!" उसने धीमे-से कहा। हम सब निकट स्थित शहर में बढ़े हुए थे। परंतु हमने वह जगह पहले नहीं देखी थी।

तभी कमरे में एक शेख़ घुसा। हमने बातचीत बंद कर दी। वह सफ़ेद बालों वाला बूढ़ा आदमी था। उसने काले रंग की ढीली पतलून और चप्पल पहनी थी। आईएसआईएस आतंकियों में यह वेशभूषा सामान्य थी। हालाँकि उसकी पतलून छोटी थी और उसके शरीर पर ठीक से बैठती नहीं थी। वह कमरे में चारों ओर अकड़कर घूम रहा था। उसे देखकर मुझे लगा कि वह कोई बड़ा आदमी था। उसने कोचो की एक लड़की को देखकर पूछा, "यह कितने साल की है?" वह लगभग तेरह वर्ष की थी। "इसकी उम्र बहुत कम है," दूसरा आतंकी गर्व से बोला।

मैं, शेख़ की बात सुनकर समझ गई कि वह मोसुल का रहने वाला था। उसने आतंकवादियों की शहर पर क़ब्ज़ा करने में मदद की होगी। वह शायद कोई अमीर व्यापारी था, जो आईएसआईएस की बढ़त बनाने में उनकी मदद कर रहा था या धर्मगुरु अथवा कोई महत्त्वपूर्ण व्यक्ति जो सद्दाम हुसैन के सत्ता में होने के समय मौजूद था। वह इस समय की प्रतीक्षा कर रहा था, जब उसे अमेरिकियों और शिया लोगों द्वारा छीन लिए अधिकार वापस मिलेंगे। यह भी संभव था कि उसने धार्मिक प्रचार पर विश्वास कर लिया था। उनसे पूछा गया कि वे आईएसआईएस के साथ क्यों जुड़े, तो उन्होंने यही बताया कि उनमें से कुछ लोग अरबी भाषा भी नहीं जानते थे और उन्हें प्रार्थना करने का तरीक़ा भी नहीं आता था, लेकिन उन्हें पता था कि वह सही काम कर रहे हैं और अल्लाह उनके साथ है।

वह शेख़ इस तरह इशारे कर रहा था जैसे कि उस कमरे में बैठी हर लड़की पर उसका अधिकार हो। फिर उसने कुछ मिनटों में कोचो की तीन लड़कियाँ चुन लीं। उसने एक आतंकी को मुट्ठी-भर अमेरिकी डॉलर दिए और फिर कमरे से बाहर निकल गया। उसके बाद वे लोग उन तीनों लड़कियों को घसीटकर नीचे ले गए।

कमरे में घबराहट का माहौल था। हम जान चुके थे कि आईएसआईएस ने हमारे लिए क्या सोच रखा था। परंतु हम नहीं जानते थे कि नए ग्राहक कब आएँगे और हमारे साथ कैसा व्यवहार किया जाएगा। वहाँ बैठकर इंतज़ार करना पीड़ा से कम नहीं था। कुछ लड़कियाँ भाग निकलने के बारे में भी बात कर रही थीं, लेकिन ऐसा करना असंभव था। खिड़की के रास्ते निकलना मुश्किल था, क्योंकि वह घर आईएसआईएस का केंद्र था और आतंकियों से भरा था। इतने लोगों की नज़रों से बचकर निकलने का कोई तरीक़ा नहीं था। मोसुल बहुत बड़ा और अपरिचित शहर था। अगर हम किसी तरह निकल भी जाते तो भी हमें यह नहीं पता था कि हमें किस दिशा में जाना है। वे सारी खिड़कियाँ बंद करके हमें रात के समय लेकर आए थे। वे किसी क़ीमत पर हमें ज़िंदा निकलने का मौक़ा नहीं देने वाले थे।

हमारी बातचीत जल्द ही आत्महत्या की तरफ़ मुड़ गई। मैं यह मानती हूँ कि यह विचार मेरे भी दिमाग़ में आया था। एक रात पहले उस औरत ने मुझे जो कुछ बताया उसकी तुलना में कुछ भी और करना बेहतर था! मैंने और कैथरीन ने अन्य लड़कियों के साथ एक समझौता किया। "हम दाएश द्वारा बेचे और इस्तेमाल किए जाने की अपेक्षा मर जाना पसंद करेंगे।" उनके सामने समर्पण करने से अपनी जान देना बेहतर था। हमारे पास उनसे लड़ने का यही एक तरीक़ा था। परंतु कोई आत्महत्या करता और दूसरे लोग देखते रहते, यह होना भी मुश्किल था। एक लड़की ने शॉल, गर्दन में लपेट कर आत्महत्या करने की कोशिश की, लेकिन दूसरी औरतों ने उसे बचा लिया। किसी ने कहा, "हम भाग कर नहीं जा सकते, लेकिन अगर किसी तरह छत पर पहुँच जाएं तो वहाँ से नीचे कूद सकते हैं।" मुझे अपनी माँ का ख़याल आ रहा था। मेरी माँ का यह मानना था कि जीवन में इतना बुरा कुछ नहीं हो सकता कि हमें आत्महत्या करनी पड़े। हमें ध्यान रखना चाहिए कि ईश्वर हमारा ख़याल रखता है। एक बार खेत पर मेरे साथ दुर्घटना हुई थी। वह मेरे साथ अस्पताल में बैठकर प्रार्थना करती थीं। उन्हें विश्वास था कि मैं ज़िंदा बच जाऊँगी। उन्होंने मेरे ठीक हो जाने पर मेरे लिए ज़ेवर ख़रीदने के लिए पैसा भी ख़र्च किया। वह मुझे बचाना

चाहती थीं, इसलिए भी मेरे लिए आत्महत्या के बारे में सोचना सही नहीं था।

यह सोचकर हमने वह विचार छोड़ दिया। हमने तय किया कि हम आत्महत्या नहीं करेंगे, बल्कि एक-दूसरे की मदद करेंगे और मौक़ा मिलते ही निकल भागेंगे। उस घर में रहते हुए हमें समझ आया कि आईएसआईएस के क़ब्ज़े में स्थित मोसुल में ग़ुलामों का व्यापार किस तरह फैल चुका था। हज़ारों यज़ीदी लड़कियों को उनके घरों से अपहरण करके ख़रीदा-बेचा जाता था। उच्च पद पर बैठे आतंकी और शेख़, लड़कियों को इराक और सीरिया तक ले जाते थे। एक लड़की के मर जाने से किसी को कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता था। आईएसआईएस को हमारे मरने की चिंता नहीं थी। कई लड़कियाँ मर चुकी या भाग गई थीं, इसलिए आतंकी बहुत ध्यान रखते थे कि कोई लड़की अपनी कलाई की नस नहीं काट ले या स्कार्फ़ से गला नहीं घोंट ले।

फिर एक आतंकी कमरे में घुसा और हमसे हमारे काग़ज़ात माँगने लगा। "ऐसा कोई भी काग़ज़, जिससे पता लगता है कि तुम यज़ीदी हो, मुझे दे दो," उसने कहा। फिर वह हमसे काग़ज़ छीन कर अपने बैग में डालने लगा। उन्होंने सारे काग़ज़ पहचान पत्र, राशन कार्ड, जन्म प्रमाण पत्र आदि जमा करके जला डाले। उनका मानना था कि हमारे काग़ज़ात जला देने से वे इराक से यज़ीदियों का अस्तित्व मिटा देंगे। मैंने अपनी माँ का राशन-कार्ड छोड़कर सब कुछ उन्हें सौंप दिया। मैंने राशन कार्ड ब्रा में छिपा रखा था। मेरे पास माँ की वही एक निशानी बाक़ी थी।

मैंने बाथरूम में चेहरे पर पानी डाला और हाथों को गीला किया। सिंक के ऊपर शीशा लटक रहा था, लेकिन मैंने अपनी नज़र नीचे रखी। मैं ख़ुद को देख नहीं पा रही थी। मुझे पता था कि मैं सामने शीशे में खड़ी लड़की को पहचान नहीं सकूँगी। नल के पास दीवार पर ख़ून के निशान थे। यह शायद वही ख़ून था, जिसके बारे में उस औरत ने मुझे एक रात पहले बताया था। वे निशान ज़रूर उन यज़ीदी लड़कियों के होंगे, जो मुझसे पहले वहाँ आई थीं।

इसके बाद हम लोगों को फिर से दो हिस्सों में बाँट दिया गया। मैं और कैथरीन एक साथ थे। हमें फिर से बसों में बैठा दिया गया। कोचो की अनेक लड़कियाँ पीछे छूट गई थीं। हम उन्हें अलविदा भी नहीं कह सके। बाद में पता लगा कि उन्हें सीमा पार सीरिया में आईएसआईएस की राजधानी रक्का ले गए। मुझे इराक पहुँचकर राहत मिली। मुझे लगा कि मैं अपने देश में जब तक रहूँगी, ज़िंदा रहूँगी।

मैं बस की पिछली सीट की ओर चली गई और खिड़की के पास वाली सीट पर बैठ गई। मैंने सोचा कि वहाँ बैठने से मैं अबू बटाट और अन्य आतंकियों की पहुँच से बच जाऊँगी। भारी पर्दों से ढँके कमरे में कई दिन बिताने के बाद गर्मियों की धूप में बाहर निकलना अज़ीब लग रहा था। मैं बस की खिड़की से मोसुल की सड़कों को देखने लगी। शुरू में वहाँ सबकुछ सामान्य लगा। शहर की सड़कें सिंजर जैसी थीं, लोग सामान ख़रीद रहे और बच्चे स्कूल जा रहे थे। केवल एक अंतर था। मोसुल शहर, आईएसआईएस के आतंकियों से भरा था। जगह-जगह उनके लोग खड़े थे, जो पहरा दे रहे थे। कुछ ट्रकों में घूम रहे थे। कुछ लोग सामान ख़रीदते और पड़ोसियों से बात भी करते नज़र आ रहे थे। औरतें पूरी तरह काले बुर्के और नक़ाब में घूम रही थीं। आईएसआईएस ने किसी औरत के लिए चेहरे से कपड़ा हटाकर घूमने पर प्रतिबंध लगा रखा था। मैंने सड़कों पर जितनी औरतें देखीं, वे सब पूरी ढँकी हुई थीं।

हम लोग चुपचाप भयभीत बैठे थे। मैंने ईश्वर को धन्यवाद दिया कि कैथरीन, नसरीन, जीलन और रोजियान मेरे साथ ही थे। उनके साथ होने से मुझे हिम्मत मिल रही थी। हर कोई इतना भाग्यशाली नहीं था। कोचो की एक लड़की अन्य लड़कियों से अलग हो गई थी। वह रोने लगी। "तुम सबके साथ कोई है, लेकिन मैं अकेली हूँ!" ऐसा कहकर वह ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी। हम उसे चुप कराना चाहते थे, परंतु हमारे भीतर इतना भी साहस नहीं था।

सुबह के लगभग दस बजे हम दो-मंज़िला हरे मकान के पास पहुँचे, जो पहले वाले मकान से थोड़ा छोटा था। फिर हमें भीतर

धकेल दिया गया। उस मकान की दूसरी मंज़िल पर एक कमरा पहले से साफ़ कर दिया गया था। वहाँ एक शेल्फ पर बाइबल और क्रॉस देखकर पता लगता था कि वह घर ईसाई परिवार का था। हमारे पहुँचने से पहले भी कुछ लड़कियाँ वहाँ बैठी थीं। वे तेल अज़ीर की थीं। दीवार के सहारे बहुत-से पतले पतले गद्दे बिछे थे। कमरे की छोटी-छोटी खिड़कियों के शीशों को तो काला कर दिया गया था या उन्हें पर्दों से ढँक दिया गया था, जिससे सूरज की रोशनी भी भीतर नहीं आ सकती थी। सफ़ाई के लिए किसी घोल का इस्तेमाल किया गया था, जिससे कमरे में दुर्गंध आ रही थी। यह घोल कोचो में महिलाओं द्वारा रसोईघर और बाथरूम की सफ़ाई में इस्तेमाल किए जाने वाले नीले पेस्ट जैसा था।

हम बैठे थे कि तभी एक आतंकी कमरे में आया और उसने सब खिड़कियों की ध्यान से जाँच की। उसने सुनिश्चित किया कि सब खिड़कियाँ ढँकी थीं और हम बाहर नहीं देख सकते थे। फिर उसने बाइबिल और क्रॉस को देखा तो वह बाहर से एक प्लास्टिक का डिब्बा लाया और दोनों चीज़ें उसमें डालकर ले गया। उसने बाहर जाते समय ज़ोर-से कहा, "तुम यज़ीदियों में से क्या हमेशा ऐसी ही दुर्गंध आती है?" फिर उसने हमें हीनता भरी नज़र से देखा। यह सुनकर मुझे सउद की याद आ गई। वह कुर्दिस्तान से लौटकर हमें बताता था कि वहाँ के लोग यज़ीदियों का मज़ाक़ उड़ाते और कहते थे कि उनके शरीर से दुर्गंध आती है। मुझे उस समय भी ग़ुस्सा आता था। अबू बटाट जैसे लोगों से बचने के लिए वह गंदगी, हमारा कवच थी। मैं, चाहती थी कि आतंकी हमारी दुर्गंध के कारण हमसे दूर रहें। गर्मी में बैठने से कई लड़कियों को उल्टी आ गई। वे चाहती थीं कि उनके कपड़े ख़राब हो जाएँ ताकि कोई उन्हें हाथ नहीं लगाए। फिर उन आतंकवादियों ने हमें ज़बरदस्ती बाथरूम में धकेल दिया और कहा, "शरीर से गंदगी साफ़ करो। तुम्हारे शरीर से दुर्गंध नहीं आनी चाहिए।" हमें जैसा कहा गया, हमने किया। हमने हाथ-मुँह धोए, परंतु कपड़े उतारकर आदमियों के सामने निर्वस्त्र होना मुश्किल था।

आतंकी के जाने के बाद कुछ लड़कियाँ आपस में बात करने लगीं। एक लड़की ने डेस्क पर रखे एक लैपटॉप की ओर इशारा

किया। वह बोली, "शायद यह काम करता हो। इसमें इंटरनेट की सुविधा भी हो सकती है। फिर हम फ़ेसबुक के ज़रिए लोगों को संदेश दे सकते हैं कि हम मोसुल में क़ैद हैं।"

मुझे लैपटॉप या कंप्यूटर चलाना नहीं आता था। मैंने उसे पहली बार देखा था। कुछ लड़कियाँ टेबल के पास गईं। मैं उन्हें देखती रही। फ़ेसबुक पर संदेश भेजने के ख़याल से कुछ आशा बंधी थी। कुछ लड़कियों ने रोना बंद कर दिया और कुछ सोलाग़ छोड़ने के बाद पहली बार अपने पैरों पर उठकर खड़ी हो गईं। मेरे दिल की धड़कन तेज़ हो गई थी। हम सब चाहते थे कि वह मशीन काम करने लग जाए।

एक लड़की ने लैपटॉप चालू किया, तो उसकी स्क्रीन पर कुछ नज़र आया। हम सब ख़ुश हो गए। कुछ लड़कियाँ दरवाज़े पर आतंकियों पर नज़र रखने लगीं। उस लड़की ने कुछ बटन दबाए, परंतु फिर उसने वह बंद कर दिया और सिर झुकाकर कहा, "यह काम नहीं करता। मुझे माफ़ कर दो।" फिर वह रोने लगी।

उसकी सहेलियाँ उसे घेरकर सांत्वना दे रही थीं। हम सब निराश थे। "कोई बात नहीं। तुमने अपनी तरफ़ से अच्छी कोशिश की," उन्होंने उस लड़की से कहा। "अगर यह काम करता तो आतंकी इसे यहाँ छोड़कर नहीं जाते।"

मेरी नज़र दीवार की ओर गई जहाँ तेल अज़ीर की अन्य लड़कियाँ बैठी थीं। हमारे आने के बाद से उनमें से किसी ने कुछ नहीं कहा था। वे सब एक-दूसरे से सटकर बैठी थीं। उन्होंने मेरी ओर देखा तो उनके चेहरे दुख और हताशा के मुखौटे लग रहे थे। तब मुझे ख्याल आया कि शायद मेरा चेहरा भी ऐसा ही दिख रहा होगा।

5

गुलामों का बाज़ार रात को खुलता था। हमें नीचे से चहल-पहल की आवाज़ें सुनाई दे रही थीं। वहाँ आतंकी पंजीकरण आदि कर रहे थे और जैसे ही पहला आदमी कमरे में आया, सारी लड़कियाँ चिल्लाने लगीं। वह किसी विस्फोट जैसा दृश्य था। हम सब कराह रहे थे, मानो हमें चोट लगी थी। हम एक-दूसरे के ऊपर पड़े उल्टियाँ कर रहे थे। आतंकियों पर इसका कोई फ़र्क़ नहीं पड़ा। वह कमरे में घूमने लगे। हम सब उनसे चिल्लाकर प्रार्थना कर रहे थे। जिसे अरबी भाषा आती थी, वह अरबी में प्रार्थना कर रहा था और जिन्हें केवल कुर्द भाषा आती थी, वह ज़ोर से चिल्ला रही थीं। परंतु आतंकी ऐसे बर्ताव कर रहे थे, मानो हम रोते हुए बच्चे थे, जो उन्हें परेशान कर रहे थे, लेकिन हम पर ध्यान देना ज़रूरी नहीं था।

वे सबसे पहले सुंदर लड़कियों के पास गए। उन्होंने पूछा, "तुम्हारी उम्र कितनी है?" फिर वे उनके बाल और चेहरे देखने लगे। "ये सब कुँवारी हैं न?" उन्होंने पहरेदार से पूछा। उसने सिर हिलाकर कहा, "जी बिलकुल!' वह किसी दुकानदार की तरह अपना सामान दिखाने में गर्व महसूस कर रहा था। कुछ लड़कियों ने मुझे बाद में बताया कि उनकी डॉक्टरी जाँच भी हुई थी। वे देखना चाहते थे कि लड़कियों ने अपने कुँवारेपन को लेकर झूठ तो नहीं बोला था। मेरी जैसी कुछ लड़कियों से केवल सवाल पूछा गया। कुछ लड़कियों ने कहा कि वह कुँवारी नहीं थीं और उन्होंने पहले सेक्स किया था। उन्होंने सोचा था कि शायद यह सुनकर आतंकी पीछे हट जाएँगे। लेकिन आतंकियों ने उनका झूठ पकड़ लिया। "इनकी उम्र बहुत कम

है और यह यज़ीदी हैं," वह बोला। "कोई यज़ीदी लड़की शादी से पहले सेक्स नहीं करती!" फिर आतंकियों ने हमें सब जगह छूना शुरू कर दिया। उनके हाथ हमारे छाती और पैरों पर ऐसे चल रहे थे मानो हम इंसान नहीं पशु हों।

कमरे में अफरा-तफरी मची थी। आतंकी, लड़कियों की जाँच कर रहे थे और उनसे अरबी या तुर्क भाषा में सवाल पूछ रहे थे। जब बाज़ार खुला तो नफ़ाह भी आ गया। उसने एक कम उम्र की लड़की को पसंद किया। उसे देखकर दूसरे आतंकी हँसने लगे। "हमें पता था...! तुम इसे ही चुनोगे," उन्होंने नफ़ाह को छेड़ते हुए कहा। "तुम्हारा काम हो जाए, तो इसे मुझे सौंप देना।"

"शांत हो जाओ! चुप हो जाओ!" आतंकी चिल्लाकर हमें चुप करने का प्रयास कर रहे थे। लेकिन उनके ऐसा कहने से हमारी चीख़ें और तेज़ होती जा रही थीं। तभी एक बूढ़ा आतंकी अंदर आया। वह मोटा था और उसका पेट बाहर निकला हुआ था। उसका नाम हाजी शाकिर था। वह मोसुल का नेता था। उसके साथ एक लड़की थी, जिसने नक़ाब और अबाया पहना था। आईएसआईएस के शहरों में सभी स्त्रियाँ यही पहनती थीं। "यह मेरी सबाया है," उसने कहा। फिर उसे कमरे में धकेल दिया। "यह तुम्हें बताएगी कि यह मुसलमान बनकर कितनी ख़ुश है!"

उस लड़की ने अपना नक़ाब हटाया। वह दुबली-पतली थी, लेकिन बहुत सुंदर थी। उसके मुँह में छोटा-सा सोने का एक दाँत भी चमक रहा था। उसकी उम्र सोलह वर्ष से ज़्यादा नहीं थी। "यह 3 अगस्त से मेरी सबाया है। तब हमने हरदान को आज़ाद कराया था," हाजी शाकिर ने कहा। "इन्हें बताओ कि तुम कितने आराम से रहती हो और अब तुम काफ़िर नहीं हो।" उसने लड़की से दोबारा कहा। लेकिन वह चुप रही। "इन्हें बताओ!" वह ज़ोर-से चिल्लाया।

लड़की, नीचे फ़र्श की ओर देखती रही, लेकिन उसने कुछ नहीं कहा। उसे देखकर लग रहा था कि वह बोल नहीं सकती थी। तभी बाज़ार की चहल-पहल शांत हो गई। मैंने कुछ देर बाद देखा कि वह

लड़की जा चुकी थी। हाजी शाकिर इस बीच एक और सबाया के पास गया। वह कोचो की रहने वाली एक छोटी उम्र की लड़की थी।

यह देखकर मुझसे रहा नहीं गया। "यदि कोई आतंकवादी ज़बरदस्ती मुझे ले जाएगा, तो मैं उसे इतनी आसानी से काम नहीं करने दूँगी," मैं चिल्लाई। मैंने उसके हाथों को रोकने की कोशिश की। दूसरी लड़कियाँ भी यही कर रही थीं। वे सब फ़र्श पर लेटकर ख़ुद को बचाने की कोशिश में लगी थीं। हमें अब मार खाने का भी डर नहीं था। मैं और मेरे साथ की दूसरी लड़कियाँ यह सोचने लगीं कि क्या हम आतंकियों को इतना परेशान कर सकते थे कि वे हमें मार डालें। तभी एक आतंकी ने मुझे थप्पड़ मारा और कहा, "यही लड़की कल भी परेशान कर रही थी।" उसके मारने से मुझे ज़्यादा चोट नहीं आई, परंतु उससे अधिक कष्ट मुझे तब हुआ, जब उसने मेरी छाती पर हाथ लगाया। उसके जाने के बाद मैं गिर पड़ी। नसरीन और कैथरीन ने मुझे सँभाल लिया।

फिर एक और आतंकी सामने आ गया। मुझे उसके जूते दिखाई पड़ रहे थे। उसका नाम सलवान था और वह किसी महत्त्वपूर्ण पद पर था। वह एक लड़की के साथ आया था। वह भी हरदान की यज़ीदी थी। वह उसे घर पर छोड़कर उसकी जगह किसी और को ख़रीदना चाहता था। मैंने उसकी ओर देखा तो पाया कि वह विशालकाय था। मैंने इतना बड़ा दैत्याकार आदमी पहले नहीं देखा था। उसकी दाढ़ी लाल रंग की थी। नसरीन, रोजियान और कैथरीन खुद को छिपाने के लिए मेरे आस-पास बैठी थीं, लेकिन वह पास ही खड़ा रहा।

"उठो!" उसने कहा। मैं नहीं उठी तो उसने मुझे लात मारी। "तुम! पिंक जैकेट वाली लड़की! मैंने कहा, जल्दी उठो!"

हम एक-दूसरे के निकट आ गए। यह देखकर सलवान को ग़ुस्सा आ गया। वह नीचे झुका और उसने हमें अलग करने की कोशिश की। हमने उसका विरोध किया, तो उसका ग़ुस्सा बढ़ गया। उसने चिल्लाकर हमें उठने के लिए कहा। फिर उसने हमारे कंधों और हाथों पर लात मारी। यह देखकर पहरेदार भी उसकी सहायता के लिए आ गया और उसने भी हमें लातों से मारा। हमें इतना दर्द हो रहा था

कि हमें एक-दूसरे को छोड़ना पड़ा। सलवान झुका और मुझे देखने लगा। मैंने पहली बार उसका चेहरा देखा था। उसकी आँखें, उसके चौड़े मांसल चेहरे के अंदर धँसी थीं और अधिकांश चेहरा बालों से ढँका था। वह देखने से इंसान कम, राक्षस ज़्यादा दिखाई पड़ता था।

हमारे लिए और विरोध करना संभव नहीं था। "मैं तुम्हारे साथ चलूँगी," मैंने कहा। "परंतु तुम्हें कैथरीन, रोजियान और नसरीन को भी साथ लेकर चलना होगा।"

इतनी देर में नफ़ाह भी आ पहुँचा। मुझे देखकर उसका चेहरा ग़ुस्से से लाल हो गया। "फिर तुम?" उसने चिल्लाकर पूछा। उसने हम सबको थप्पड़ मारे। "मैं इनके बिना नहीं जाऊँगी!" मैं चिल्लाई। नफ़ाह हमें और मारने लगा। हमारे चेहरे सूज गए और रोजियान के मुँह से ख़ून बहने लगा।

वह और सलमान, मेरा और रोजियान का हाथ पकड़कर कैथरीन और नसरीन से अलग करके हमें नीचे ले गए। मुझे कैथरीन या नसरीन को अलविदा कहने का भी मौक़ा नहीं मिला।

सिंजर पर हमला और लड़कियों को सेक्स के लिए ग़ुलाम बनाना, युद्धभूमि में किसी लालची सैनिक द्वारा लिया गया त्वरित निर्णय नहीं था। आईएसआईएस ने इसकी पूरी योजना बनाई थी कि कैसे वे लोग हमारे घरों में घुसेंगे, किस आधार पर कोई लड़की कम या ज़्यादा अनमोल होगी, किन आतंकियों को इंसेंटिव के रूप में सबाया मिलेगी और किन्हें उनकी क़ीमत चुकानी पड़ेगी। यहाँ तक कि उनकी प्रचार-पत्रिका *दबिक़* में नए रंगरूटों को आकर्षित करने के लिए सबाया पर चर्चा भी होती थी। सीरिया और इराक के केंद्रों से ग़ुलामी के इस धंधे को नियोजित किया जाता था और वहीं से यह भी तय होता था कि इस्लामिक क़ानून में कौन-सी बात जायज है और कौन सी नहीं। उन्होंने सब कुछ लिख लिया था ताकि आईएसआईएस के सभी सदस्य उन नियमों का पालन करते रहें। आईएसआईएस के शोध और फतवा विभाग द्वारा जारी एक पर्चे में सबाया की पूरी

योजना का विवरण है। उसे कोई भी पढ़ सकता है। उसे देखकर दुख होता है, क्योंकि आईएसआईएस ने उन बातों का उल्लेख इतने आत्मविश्वास से किया है मानो इन सब बातों को कुरान की स्वीकृति प्राप्त है।

आईएसआईएस के पर्चे में लिखा है कि सबिया, सिर्फ़ एक संपत्ति है; जिसे उसके मालिक की इच्छा से उपहार या मुफ़्त में किसी को भी दिया जा सकता है अथवा बेचा भी जा सकता है। औरतों को छोटे बच्चों से अलग नहीं किया जाना चाहिए। इसलिए दीमल और अदकी को सोलाग़ में छोड़ दिया गया था, लेकिन मलिक जैसे बड़ी उम्र के लड़कों को उनकी माँ से अलग कर सकते हैं। यह भी नियम है कि किसी गर्भवती स्त्री को बेचा नहीं जा सकता और उसका मालिक यदि मर जाए तो उसकी संपत्ति के अनुसार लड़की को बाँटा जा सकता है। यदि कोई ग़ुलाम लड़की, संभोग के योग्य है, तो उसका मालिक चाहे तो उस लड़की के साथ संभोग कर सकता है। यदि लड़की तैयार नहीं है, तो बिना संभोग किए, उसके साथ आनंद लिया जाना पर्याप्त है।

इन बातों के समर्थन में उन्होंने कुरान की आयतें भी उद्धृत की हैं और कुछ पुराने इस्लामिक क़ानूनों का हवाला भी दिया है। आईएसआईएस अपनी इच्छा से उनका प्रयोग करता है और अपने अनुयायियों से अपेक्षा करता है कि वे भी शब्दशः उसका पालन करें। यह एक भयानक और डरावना दस्तावेज है। बलात्कार को इतिहास में युद्ध के हथियार के रूप में हमेशा से इस्तेमाल किया जाता रहा है। मैंने कभी नहीं सोचा था कि मुझमें और रवांडा की औरतों में कोई समानता भी हो सकती है। इससे पहले मुझे यह तक नहीं पता था कि रवांडा नाम का कोई देश है। परंतु अब मैं उनसे जुड़ चुकी हूँ। मैं एक पीड़िता हूँ। यह दुख की बात है कि इस अपराध के लिए किसी को सज़ा नहीं मिली। यह सब आईएसआईएस के सिंजर आने से पहले महज सोलह वर्षों के भीतर ही शुरू हुआ है।

नीचे आईएसआईएस का एक सदस्य नोट बुक में कुछ हिसाब लिख रहा था। उसने हमारे और उन आतंकियों के नाम लिखे जो हमें

साथ ले गए थे। ऊपरी मंज़िल की तुलना में नीचे व्यवस्था अधिक थी और वहाँ शांति भी ज़्यादा थी। मैं कुछ लड़कियों के साथ नीचे बैठ गई। मैं और रोजियान बहुत डरे हुए थे। हमने किसी से बात नहीं की। मेरे दिमाग़ में सलवान का विचार घूम रहा था। वह इतना ताक़तवर था कि मुझे आसानी से हाथों से दबाकर मार सकता था। मैं कितनी भी कोशिश करती, लेकिन मेरे लिए उससे लड़ना मुश्किल था। उसके शरीर से सड़े अंडों की दुर्गंध रही थी।

मैं आतंकियों और उनके साथ जा रही लड़कियों के पैरों को देख रही थी। मुझे उस भीड़ में एक पुरुष की चप्पलें दिखाई प ड़ीं। उसके पैर औरतों की तरह पतले थे। मैंने अचानक लपककर उसके पैर पकड़ लिए और उससे प्रार्थना की। "मुझे अपने साथ ले चलो," मैंने कहा। "तुम जो चाहो कर लेना, लेकिन मैं उस राक्षस के साथ नहीं जा सकती।" मुझे यह सोचकर बहुत आश्चर्य होता है कि हमने कैसे-कैसे निर्णय लिए थे। हमें लगता था कि एक विकल्प से हमें यातना मिलेगी और दूसरे को चुनने से हम बच जाएँगे। परंतु हमें यह अहसास नहीं था कि अब हम ऐसी दुनिया में पहुँच चुके थे, जहाँ के सब रास्ते एक ही भयानक जगह पर जाकर मिलते थे।

मुझे नहीं पता कि उस दुबले आदमी ने मेरी बात क्यों मान ली। उसने मुझे एक बार देखा और फिर सलवान से कहा, "यह मेरी है!" सलवान ने भी उसके साथ बहस नहीं की। वह आदमी मोसुल में जज था और उसकी बात को कोई मना नहीं कर सकता था। मैंने सिर उठाया, तो मेरी सलवान को देखकर मुस्कराने की इच्छा हुई। मुझे लगा मैं जीत गई थी। परंतु सलवान ने मेरे बाल खींचे और कहा, "यह तुम्हें अभी ले जा रहा है, लेकिन कुछ दिन के बाद तुम मेरे पास ही आओगी।" फिर उसने मुझे आगे की ओर धक्का दे दिया।

मैं उसे दुबले आदमी के साथ चल पड़ी। "तुम्हारा नाम क्या है?" उसने मुझसे पूछा। उसकी आवाज़ पतली, लेकिन क्रूर थी। "नादिया!" मैंने उत्तर दिया। फिर उसने मुड़कर रजिस्ट्रार को देखा। वह तुरंत सूचना दर्ज करने लगा। उसने लिखते समय हमारे नाम बोले - "नादिया, हाजी सलमान!" फिर उसने मुझे बंदी बनाने वाले

आदमी का नाम पुकारा। उसकी आवाज़ कुछ कह रही थी। वह बहुत घबराया हुआ था। मुझे लगा मुझसे कोई बड़ी ग़लती हो गई थी।

6

सलवान अपने साथ रोजियान को ले गया। वह बहुत छोटी और भोली थी। मेरी इच्छा है कि इन आतंकियों को सख़्त सज़ा मिलनी चाहिए। केवल अबू बटाट और अल बगदादी जैसे नेताओं को ही नहीं, बल्कि उन पहरेदारों, ग़ुलामों के मालिकों के साथ उस आदमी को भी सज़ा होनी चाहिए, जिसने बंदूक का ट्रिगर दबाया और मेरे भाइयों को मार डाला, हर वह व्यक्ति जिसने छोटे-छोटे बच्चों के दिमाग़ में ज़हर भरा और उन्हें अपनी माँ से नफ़रत करने पर मजबूर कर दिया, हर वह इराकी, जिसने आतंकवादियों का स्वागत किया, शहर में पनाह दी और उनकी मदद की। *सबका यही मानना था कि नास्तिकों से आख़िर छुटकारा मिल जाएगा।* इन सब पर पूरी दुनिया के सामने मुकदमा चलना चाहिए, ठीक उसी तरह जैसे दूसरे विश्वयुद्ध के बाद नाज़ी नेताओं पर चला था।

मैं कल्पना करने लगी कि सलवान पर सबसे पहले मुकदमा चल रहा है और मोसुल की सब लड़कियाँ कोर्ट में उसके ख़िलाफ़ गवाही दे रही हैं। "यही वह आदमी है," मैंने उसकी ओर इशारा करते हुए कहा, "यही वह राक्षस है, जिसने हमें डराया। वह मुझे पिटता देखता रहा।" इसके बाद रोजियान को कचहरी में कहना चाहिए कि उस राक्षस ने उसके साथ क्या किया। उसे डर लगे तो मैं उसकी ओर से बोल सकती हूँ। "सलवान ने उसे न केवल ख़रीदा और बार-बार उसका शोषण किया, बल्कि वह जब चाहता, तब उसे पीटता।" मैं कोर्ट को बताती।

उस पहली रात को रोजियान बहुत डरी और थकी हुई थी। वह सलवान से लड़ने के बारे में सोच भी नहीं सकती थी। सलवान को यह देखकर ग़ुस्सा आया कि रोजियान ने बहुत-से कपड़े पहने थे। रोजियान भाग निकली तो सलवान ने उसकी माँ को ख़रीद लिया और फिर उसे बंधक बनाकर रखा। उसकी माँ का सोलह दिन का एक छोटा बच्चा था, जिसे सलवान ने उससे अलग कर दिया। नियम कहते हैं कि छोटे बच्चों को उनकी माता से अलग नहीं किया जा सकता। सलवान ने यह भी कहा कि वह औरत अपने बच्चे को फिर कभी नहीं देख पाएगी। मुझे बाद में पता लगा कि आईएसआईएस के अधिकांश नियम तोड़ने के लिए ही बनाए जाते थे। मैं कोर्ट में हर छोटी-छोटी बात कहूँगी कि उस आदमी ने औरत के साथ क्या किया। मैं ईश्वर से प्रार्थना करूँगी कि सलवान ज़िंदा पकड़ा जाए।

उस औरत को न्याय मिलना एक सपना था। हमारे बचने की भी संभावना कम ही थी। रोजियान और सलवान मेरे पीछे थे और हाजी सलवान घर के बाहर तथा बगीचे में रहा। ग़ुलामों के बाज़ार से चीख़ें सुनाई दे रही थीं। पूरा शहर उन चीख़ों की आवाज़ से गूँज रहा था। मैं उन गलियों में रहने वाले परिवारों के बारे में सोच रही थी। क्या वे खाना खा रहे होंगे? या बच्चों को सुला रहे होंगे? उन्हें निश्चित तौर पर शोरगुल सुनाई पड़ रहा होगा। आईएसआईएस ने संगीत और टेलीविज़न पर भी पाबंदी लगा रखी थी। शायद वे हमारी दर्दनाक चीख़ों को ही सुनना चाहते थे। यह सबूत था कि सत्ता आईएसआईएस के हाथ में थी। मुझे यह सब सोचकर ही सिहरन हो रही थी कि जब इराक और कुर्द की फौजें मोसुल को अपने क़ब्ज़े में लेने के लिए आगे बढ़ेंगी तो क्या होगा।

इसके बाद हम एक गाड़ी में बैठ गए। मैं और रोजियान पीछे वाली सीट पर और दोनों आदमी आगे बैठे थे। "मेरे घर चलते हैं," हाजी सलमान ने फ़ोन पर किसी से कहा। "अब आठ लड़कियाँ हो गई हैं। इनसे पीछा छुड़ाओ!"

हमारी गाड़ी एक बड़े हॉल के सामने रुकी, जिसे देखकर लगता था कि वहाँ शादियाँ होती होंगी। वहाँ दोहरे दरवाज़ों की व्यवस्था

थी। शायद उसका इस्तेमाल मस्जिद की तरह होता होगा। भीतर एक कमरा था, जिसमें आईएसआईएस के आतंकी थे। वे लगभग तीन सौ लोग थे, जो भीतर बैठे इबादत कर रहे थे। उन्होंने हम पर ध्यान नहीं दिया। हाजी सलमान ने दो जोड़ी चप्पल उठाई और हमें पकड़ा दीं। वे पुरुषों की चप्पल थीं, जो चमड़े की बनी थी। वे हमारे लिए बड़ी और कड़क थी। लेकिन आईएसआईएस के आतंकियों ने हमारे जूते छीन लिए थे और हम नंगे पैर थे। हम सावधानी से चलते हुए प्रार्थना कर रहे पुरुषों के पास से गुज़र गए।

सलवान किसी दूसरी गाड़ी में इंतज़ार कर रहा था। जिससे यह साफ़ था कि मैं और रोजियान अलग होने वाले थे। हम दोनों एक-दूसरे को कसकर पकड़े खड़े थे। हमने उनसे प्रार्थना की थी कि हमें अलग नहीं करें। लेकिन किसी ने हमारी बात नहीं सुनी। सलमान ने रोजियान को कंधे से पकड़ा और उसे खींचकर मुझसे दूर ले गया। वह कम उम्र की थी। हम एक-दूसरे का नाम पुकारते रहे, लेकिन कोई फ़ायदा नहीं हुआ। सलवान, रोजियान को एक गाड़ी में अपने साथ ले गया। मैं, हाजी सलमान के साथ खड़ी थी। मुझे लगा कि मैं दुख से मर जाऊँगी।

मैं और हाजी सलमान एक छोटी सफ़ेद गाड़ी में बैठ गए। उसमें एक ड्राइवर और एक पहरेदार था। उसका नाम मुर्तजा था। मुर्तजा ने मुझे देखा। फिर मैं उसके साथ सीट पर बैठ गई। यदि हाजी सलमान मेरे साथ नहीं होता तो मुर्तजा मुझे ग़ुलाम बाज़ार के लोगों की तरह ज़रूर छूने की कोशिश करता। मैं उससे दूर हटकर खिड़की के नज़दीक बैठ गई।

गलियाँ लगभग ख़ाली हो चुकी थीं और अंधेरा हो गया था। केवल कुछ ही घरों की बत्तियाँ जनरेटर से जल रही थीं। हम लगभग बीस मिनट चलते रहे। फिर गाड़ी रुकी। "गाड़ी से उतरो, नादिया!" हाजी सलमान ने हुक्म दिया। उसने मुझे पकड़ा और एक बगीचे में ले गया। तब मुझे समझ आया कि हम पहले मकान में ही लौट आए थे जो आईएसआईएस का गढ़ था। वहीं से आतंकियों ने लड़कियों को

सीमा पार करने के लिए अलग किया था। "क्या तुम मुझे सीरिया ले जा रहे हो?" मैंने पूछा। हाजी सलमान ने जवाब नहीं दिया।

हमें लड़कियों के चीख़ने की आवाज़ें आ रही थीं। कुछ ही मिनटों के बाद अबाया और नक़ाब पहने आठ लड़कियाँ नज़र आईं। वे पास से गुज़रीं तो उन्होंने मुझे मुड़कर देखा। वे शायद नसरीन और कैथरीन थी। लेकिन वे इतनी डरी हुई थी कि उन्होंने मुझसे कुछ नहीं कहा। उनके चेहरे नक़ाब से ढँके थे। फिर उन्हें एक छोटी बस में बैठा दिया गया। बस के दरवाज़े बंद हुए और वह चली गईं।

एक पहरेदार मुझे ख़ाली कमरे में ले गया। मुझे किसी लड़की की आवाज़ नहीं सुनाई दी। लेकिन मैंने वहाँ बहुत-से यज़ीदी स्कार्फ़ और कपड़े पड़े देखे। वे उन लड़कियों के होने का सबूत थे, जो किसी समय वहाँ रखी गई होंगी। हमारे काग़ज़ात को जला दिया गया था और उनकी राख़ का ढेर भी वहीं पड़ा था। कोचो की एक लड़की का पहचान-पत्र आंशिक तौर पर बचा था। वह काग़ज़ राख़ के ढेर से किसी छोटे से पौधे की तरह बाहर निकला दिखाई पड़ रहा था।

आईएसआईएस ने परिवार के निजी सामान को हटाने की ज़रूरत नहीं समझी। घर का सामान इधर-उधर बिखरा पड़ा था। एक कमरे में पहलवानी और कसरत करते हुए एक लड़के के फ़्रेम में फ़ोटो लगी थी। दूसरे कमरे में पूल जैसा कुछ खेलने का सामान था। सबसे ज़्यादा दुख बच्चों के कमरों को देखकर हुआ। वह खिलौनों और चटक रंग के कंबलों से भरा हुआ था, जो कि वहाँ आने वाले बच्चों के लिए थे।

"यह घर किसका है?" मैंने हाजी सलमान से पूछा।

"एक शिया का है," उसने कहा। "वह जज है।"

"उन्हें क्या हुआ?" मैंने पूछा। मुझे आशा थी कि वे बचकर किसी सुरक्षित जगह पहुँच गए होंगे। हालाँकि वे यज़ीदी नहीं थे फिर भी मुझे उनके लिए दुख हो रहा था। कोचो में भी आईएसआईएस ने बहुत-से परिवारों का सबकुछ छीन लिया था।

"वह जहन्नुम में चला गया!" हाजी सलमान ने जवाब दिया। फिर मैंने उससे सवाल पूछने बंद कर दिए।

हाजी सलमान नहाने चला गया। वह लौटकर आया तो उसने पहले वाले कपड़े पहने हुए थे। मुझे उसके कपड़ों से पसीने और साबुन की मिली-जुली गंध आ रही थी। उसने दरवाज़ा बंद किया और फिर मेरे पास बैठ गया। मैंने घबराते हुए कहा, "मुझे महीना चल रहा है।" फिर मैं दूसरी ओर देखने लगी। लेकिन उसने जवाब नहीं दिया।

वह मेरे पास बैठ गया। फिर उसने पूछा, "तुम कहाँ की रहने वाली हो?"

"कोचो!" मैंने जवाब दिया। मैं इतना डरी हुई थी कि मुझे सिर्फ़ अपनी चिंता थी कि मेरे साथ क्या होने वाला था। इसके अलावा मेरे दिमाग़ में अपने घर, परिवार या किसी और चीज़ का ख़याल नहीं आया। मुझे अपने गाँव का नाम लेने से भी दुख हो रहा था। इससे मुझे अपने घर और अपने लोगों की याद आ रही थी। सबसे ज़्यादा मुझे अपनी माँ की याद आ रही थी। सोलाग़ में इंतज़ार करते वक़्त उनका मेरी गोद में बिना सिर ढँके लेटना याद आ रहा था।

"यज़ीदियों का ईमान नहीं होता!" हाजी सलमान ने कहा। वह बहुत धीरे बोल रहा था, लेकिन उसके स्वभाव में नरमी नहीं थी। "अल्लाह चाहता है कि तुम्हारा धर्म परिवर्तन हो जाए। यदि ऐसा नहीं हुआ तो फिर हम अपनी इच्छा से तुम्हारे साथ कुछ भी कर सकते हैं।"

उसने कुछ रुककर फिर पूछा, "तुम्हारे परिवार का क्या हुआ?"

"हम सब वहाँ से निकल गए थे," मैंने झूठ बोल दिया। "केवल तीन लोग पकड़े गए।"

"मैं 3 अगस्त को सिंजर गया था, जब यह शुरू हुआ था," उसने कहा। फिर वह बिस्तर पर लेट गया, मानो कोई दुखद कहानी सुना रहा था। "मैंने सड़क किनारे पुलिस की वर्दी में तीन यज़ीदियों को देखा। वे भागने की कोशिश कर रहे थे। लेकिन मैंने उन्हें पकड़कर मार डाला।"

मैं नीचे देखने लगी। मुझसे बात नहीं की जा रही थी।

"हम सिंजर के पुरुषों को मारने ही आए थे," उसने बताया। "हमें अपने साथ औरतों और बच्चों को ले जाना था, लेकिन दुर्भाग्य से उनमें से कुछ पहाड़ पर चढ़ गए।"

हाजी सलमान लगभग एक घंटा बोलता रहा। मैं बिस्तर के किनारे बैठी रही। मैं उसकी कोई बात सुनना नहीं चाहती थी। उसने मेरे घर, परिवार और धर्म को गालियाँ दीं। उसने मुझसे कहा कि उसने मोसुल के जेल में सात साल बताए थे और वह इराक में बेईमान लोगों से बदला लेना चाहता था। "सिंजर में जो हुआ, बहुत अच्छा हुआ!" उसने कहा। "तुम्हें ख़ुश होना चाहिए कि आईएसआईएस ने इराक से यज़ीदी धर्म को मिटाने की योजना बनाई है।" उसने मुझे धर्म-परिवर्तन के लिए मनाने की कोशिश की, लेकिन मैंने मना कर दिया। मैं उसकी ओर देख नहीं पा रही थी। उसके शब्द मेरे लिए निरर्थक थे। फिर वह चुप हो गया, क्योंकि उसकी पत्नी का फ़ोन आ गया था। उसका नाम सारा था।

वह सबकुछ मुझे दुखी करने के लिए कह रहा था। लेकिन मैं चाहती थी कि वह बोलता रहे, क्योंकि जब तक वह बोलता रहा उसने मुझे हाथ नहीं लगाया। लड़के और लड़कियों के साथ रहने के यज़ीदियों के नियम उतने कड़क नहीं हैं, जितने इराक के दूसरे समुदायों में हैं। कोचो में मेरे कई मित्र लड़के थे। मैं उनके साथ गाड़ी में घूमती और पैदल अपने स्कूल भी जाती थी। लोग कुछ नहीं कहते थे। उन लड़कों ने भी मुझे हाथ लगाने या परेशान करने की कभी कोशिश नहीं की। हाजी सलमान से पहले मैंने कभी किसी पुरुष के साथ इस तरह समय नहीं बिताया था।

"तुम मेरी चौथी सबाया हो," वह बोला। "बाक़ी तीनों मुसलमान बन चुकी हैं। मैंने ही उनका धर्म परिवर्तन करवाया था। यज़ीदी बेईमान होते हैं। इसीलिए हम यह सब कर रहे हैं। यह तुम्हारी भलाई के लिए है।" फिर वह चुप हो गया और उसने मुझे अपने कपड़े उतारने को कहा।

मैं रोने लगी। "मुझे महीना चल रहा है," मैंने उसे फिर से कहा।

"साबित करो!" वह बोला। फिर वह अपने कपड़े उतारने लगा। "पहले वाली सबाया ने भी यही कहा था।"

मैंने कपड़े उतार दिए। मुझे सचमुच महीना चल रहा था। उसने मेरे साथ बलात्कार नहीं किया। आईएसआईएस के नियम किसी मासिक धर्म वाली सबाया के साथ संभोग करने की अनुमति नहीं देते। लेकिन उनमें यह ज़रूर लिखा है कि मालिक को लड़की के मासिक-धर्म समाप्त होने का इंतज़ार करना चाहिए ताकि उसके गर्भवती होने की संभावना नहीं रहे। शायद इसीलिए हाजी मस्तान ने उस रात मेरे साथ कुछ नहीं किया।

परंतु उसने मुझे अकेला भी नहीं छोड़ा। हम पूरी रात कपड़े उतार कर लेटे रहे। वह मुझे छूता रहा। मुझे बिलकुल वैसा महसूस हो रहा था, जैसा अबू बटाट के साथ बस में लगा था। वह ज़बरदस्ती मेरी छाती को सहला रहा था। मेरा शरीर दुखने लगा। हाजी सलमान की अँगुलियाँ मेरे शरीर को छूतीं तो वह सुन्न पड़ जाता था। मैं बहुत डरी हुई थी। मेरे लिए उससे लड़ना मुश्किल था और उसका लाभ भी नहीं होता। मेरी उम्र कम थी और मैं कमज़ोर थी। मैंने कई दिनों से ठीक से खाना नहीं खाया था। यदि वह चाहता तो आसानी से कुछ भी कर सकता था।

सुबह हुई तो हाजी मस्तान मुझसे पहले उठ चुका था। मैं कपड़े पहनने लगी, लेकिन उसने मुझे रोक दिया। "नादिया! तुम नहा लो," वह बोला। "आज बड़ा दिन है।"

मेरे नहाने के बाद हाजी सलमान ने मुझे काले रंग का अबाया और नक़ाब दिया। वह मैंने अपने कपड़ों के ऊपर पहन लिया। मैंने पहली बार कट्टर मुस्लिम औरत के कपड़े पहने थे। हालाँकि वह कपड़ा वज़न में हल्का था, लेकिन मुझे साँस लेने में मुश्किल हो रही थी। नक़ाब के अंदर से मैंने दिन के उजाले में पहली बार देखा। शिया धर्म का वह जज, जिसका वह मकान था, बहुत अमीर रहा होगा। वह मोसुल के ऐसे इलाक़े में रहता था, जहाँ शानदार घर बने हुए थे

और आसपास ऊँची दीवारें थीं। आईएसआईएस का धार्मिक प्रचार संभावित जिहादियों को आकर्षित करने में सक्षम था। परंतु दुनिया-भर के आतंकी पैसे के वादे और प्रलोभन में फँस जाते थे। उन्हें रहने के लिए शानदार घर मिलता था। वहाँ के निवासियों को, जिन्होंने शहर छोड़ा नहीं था, कहा गया था कि 2003 के बाद उन्होंने जो अधिकार खो दिए थे, वे सब उन्हें वापस मिल जाएँगे। उस वर्ष अमेरिका ने बाथ संगठनों को भंग कर दिया था और शियाओं को इराक में पुनः सत्ता सौंप दी थी। परंतु आईएसआईएस ने उन पर भारी कर लगाया। मुझे आईएसआईएस लालच पर चलने वाला एक आतंकी समूह नज़र आता था।

आईएसआईएस ने शहर की सबसे महत्त्वपूर्ण इमारतों पर क़ब्ज़ा कर लिया था। उन्हें इस काम में आनंद आता था। उन्होंने अपनी इच्छा से कहीं भी सफ़ेद और काले झंडे लगाए। स्थानीय एयरपोर्ट, मोसुल युनिवर्सिटी, इराक के बेहतरीन स्कूल और सब जगहों पर धीरे-धीरे सैनिकों के अड्डे बन गए। आतंकियों ने मोसुल के संग्रहालय पर क़ब्ज़ा कर लिया। वह इराक में दूसरा सबसे बड़ा संग्रहालय था। उन्होंने उन सब चीज़ों को नष्ट कर दिया, जो उनके हिसाब से इस्लाम विरोधी थीं। फिर बाक़ी चीज़ों को काले बाज़ार में बेच दिया, जिससे उन्हें लड़ाई के लिए धन मिलता था। यहाँ तक कि उन्होंने 1980 के दशक में सद्दाम हुसैन के समय बनाए शानदार पाँच सितारा निनवेह ओबेराय होटल पर भी क़ब्ज़ा कर लिया। उस होटल के सबसे बेहतरीन कमरे आत्मघाती दस्तों के लिए आरक्षित रखे जाते थे।

जब आईएसआईएस 2014 में आए तब सैकड़ों लोगों ने मोसुल छोड़ दिया। वे घंटों तक केआरजी चेक-प्वाइंट पर कुर्दिस्तान जाने के लिए इंतज़ार करते रहे। उनके भागने के बाद छोटा-छोटा सामान सड़कों पर बिखरा था। मैं और हाजी सलमान वहाँ से गुज़र रहे थे। सड़क पर गाड़ियों को जला दिया गया था और इराकी पुलिस वालों की वर्दी के टुकड़े सड़क पर बिखरे पड़े थे। ये उन अफ़सरों की पोशाकें थीं, जिन्होंने सोचा था कि अगर उन्होंने अपनी वर्दियाँ छोड़ दीं तो उनके ज़िंदा रहने की संभावना बढ़ जाएगी। सरकारी दफ़्तर, कचहरी, स्कूल, पुलिस स्टेशन और सैन्य अड्डे, सब आईएसआईएस

के क़ब्ज़े में थे। उन्होंने हर जगह अपने झंडे लगा दिए थे। मस्जिदों के लाउडस्पीकर से भाषण सुनाई देते थे। उन्होंने एक स्कूल की दीवार पर बने बच्चों के चेहरों पर कालिख पोत दी थी, क्योंकि उन्हें इस तरह के चित्र हराम या कहें, पाप नज़र आते थे।

बदूश जेल के क़ैदियों को छोड़ दिया गया था और बदले में उन सब ने आईएसआईएस के प्रति निष्ठावान रहने की कसम उठाई थी। उन्होंने आतंकियों के साथ मिलकर ईसाईयों, सूफी और शिया लोगों के धर्म-स्थलों को विस्फोट करके उड़ा दिया। मोसुल की एक विशाल मस्जिद, पुराने शहर में खड़ी थी। बगदादी ने वहीं से इराक के दूसरे सबसे महत्त्वपूर्ण शहर को आईएसआईएस की राजधानी घोषित किया था। फिर 2017 तक उसे भी बाक़ी शहर की तरह नष्ट कर दिया गया।

हम मोसुल की कचहरी के सामने आकर रुक गए। वह टिगरिस नदी के पश्चिमी तट पर बनी एक बड़ी इमारत थी, जिसे देखकर मुझे मस्जिद की याद आती थी। कचहरी पर बड़ा-सा आईएसआईएस का झंडा फहरा रहा था। मोसुल में नया क़ानून स्थापित करने के लिए आईएसआईएस के लिए वह इमारत ज़रूरी थी। हमारे पुराने पहचान-पत्रों की जगह नए आईएसआईएस के पहचान-पत्र जारी किए गए और गाड़ियों पर भी आईएसआईएस की लाइसेंस प्लेट लगने लगी। औरतों को हर समय नक़ाब और अबाया में रहना पड़ता था। अगर वे घर से बाहर निकलतीं तो उनके साथ किसी पुरुष का होना आवश्यक था। यहाँ तक कि सिगरेट पीने पर भी पाबंदी थी। जिन्होंने सदस्यता नहीं ली, उन्हें शहर छोड़ने के लिए कुछ भुगतान करना पड़ता था और तब उन्हें कुछ समय के लिए बाहर जाने दिया जाता था। यदि वे समय पर नहीं लौट पाते तो उनके परिवार के किसी सदस्य को सज़ा दी जाती थी। उनके घर या संपत्ति को 'ख़िलाफ़त विरोधी कामों' के आरोप में ज़ब्त कर लिया जाता था। उस कचहरी में ऐसे बहुत-से मुकदमे चलाए गए थे।

बहुत लोग जजों और क्लर्क आदि से मिलने के लिए इंतज़ार करते थे। एक विशेष कमरे के सामने काले कपड़ों में कई औरतें

कतार में खड़ी रहती थीं। मेरे विचार से वे मेरी तरह सबाया थीं। हमें कुछ काग़ज़ात भरने पड़ते थे, जिनसे औपचारिक तौर पर पहचान हो जाती थी कि किस लड़की का मालिक कौन था। हमें जबरदस्ती धर्म परिवर्तन करके मुस्लिम बनाया गया और परिवर्तन की रिकॉर्डिंग भी की जाती थी। फिर एक जज हमें अपने ख़रीदार की संपत्ति घोषित कर देता था। यह दरअसल, बलात्कार के लिए एक अनुबंध था; जिसे हाजी सलमान जैसे आतंकवादी 'शादी' का नाम देते थे।

वहाँ खड़े आतंकियों ने हाजी सलमान को देखा तो वह हमें कतार में आगे की तरफ़ ले गए। मुझे उनकी बातचीत सुनकर समझ में आया कि हाजी सलमान ने आईएसआईएस के लिए क्या किया था। वह एक जज था और उसका काम यह बताना था कि किसी ऐसे प्रार्थी को, जिस पर अपराध साबित हो चुका था, मौत की सज़ा मिलनी चाहिए अथवा नहीं।

हम भीतर गए तो कमरा ख़ाली था। वहाँ केवल एक सफ़ेद दाढ़ी वाला जज बड़ी-सी मेज़ पर बैठा था। उसके आसपास बहुत सारे काग़ज़ पड़े थे। पीछे आईएसआईएस का बड़ा-सा एक झंडा कूलर की हवा में लहरा रहा था। दो झंडे उसकी वर्दी पर लगे थे। हम अंदर गए तो मैंने ईश्वर से प्रार्थना की। मैं चाहती थी कि जो कुछ हो उसके लिए *ईश्वर मुझे क्षमा कर दें*। मैंने प्रार्थना में कहा, *"मैं हमेशा यज़ीदी ही रहूँगी।"*

हुसैन नाम का जज बहुत कड़क और कार्यकुशल था। "अपना नक़ाब उठाओ!" उसने कहा। मैंने नक़ाब उठाकर उसे अपना चेहरा दिखाया। "क्या तुम्हें *शहादा* पता है?" उसने मुझसे पूछा। मैंने कहा, "हां!" वह एक साधारण-सी इस्लाम की प्रार्थना थी, जिसमें धर्म-परिवर्तन करने वाले व्यक्ति की इस्लाम के प्रति निष्ठा का उल्लेख था। सभी मुसलमान उसे पढ़ते थे। मैंने उसे पढ़ा तो हुसैन का चेहरा चमक उठा। "अल्लाह तुम्हारा भला करे!" उसने कहा। "तुम जो कर रही हो, वह बहुत नेक काम है।" फिर उसने एक कैमरा उठाया और मेरी फ़ोटो खींच ली।

उसने हाजी सलमान से कहा, "यह अब आपकी सबाया है। आप इसके साथ जो चाहें, कर सकते हैं।" फिर हम कचहरी से बाहर निकल आए।

इस तरह की शादियों द्वारा आईएसआईएस, यज़ीदी लड़कियों और उनके धर्म की हत्या करता चला गया। पहले उन्होंने हमें घरों से उठाया, यज़ीदी पुरुषों को मार डाला और फिर उन्होंने हमारी माताओं और बहनों से हमें अलग किया। हम जहाँ भी गए, हमें यही कहा गया कि हम किसी की संपत्ति हैं। कोई भी हमें जैसे चाहे, छू सकता था, हमारा शोषण कर सकता था। अबू बटाट ने इसी आधार पर बस में मेरी छाती को सहलाया था और नफ़ाह ने मेरे शरीर पर जलती सिगरेट लगाई थी। ये यातनाएँ हमारी रूह को मारने के लिए ही थीं।

हमसे हमारा धर्म छीन लेना सबसे बड़ी क्रूरता थी। कचहरी से बाहर निकलकर मुझे लगा कि मैं बिलकुल ख़ाली हो चुकी हूँ। अगर मैं यज़ीदी नहीं तो फिर मैं कौन हूँ? मुझे विश्वास था कि मेरे इस्लाम की प्रार्थना पढ़ने के बावजूद मेरा उससे कोई संबंध नहीं था। आईएसआईएस ने मेरी आत्मा की हत्या कर दी थी, परंतु वह दूसरे जन्म में ईश्वर और तवूसी मेलेक के साथ रहेगी। उसके बाद ही आईएसआईएस को मेरा शरीर मिल पाएगा।

"मेरी फ़ोटो, क्या पहचान-पत्र के लिए ली गई है?" मैंने हाजी सलमान से पूछा।

"नहीं!" वह बोला, "उस फ़ोटो के जरिए वे तुम पर नज़र रखेंगे कि तुम किसके साथ रहती हो।" फिर उसने मुझे कसकर पकड़ लिया। "अगर तुमने भागने की कोशिश की तो तुम्हारी फ़ोटो की कॉपियाँ और मेरा नाम और फ़ोन नंबर हर चेक-प्वाइंट पर लटका दिया जाएगा ताकि तुम्हें ढूँढ़कर फिर से मेरे पास लाया जा सके। तुम फिर लौटकर मेरे पास आ जाओगी!"

मुझे उसकी बात पर भरोसा था।

बाएँ से दाएँ: मेरी बहन अदकी, मेरा भाई जालो और मेरी बहन दीमल।

मेरे पिता, बसी मुराद ताहा अपनी युवावस्था में।

2013 में किसी विवाह के मौक़े पर मेरी भतीजी, कैथरीन।

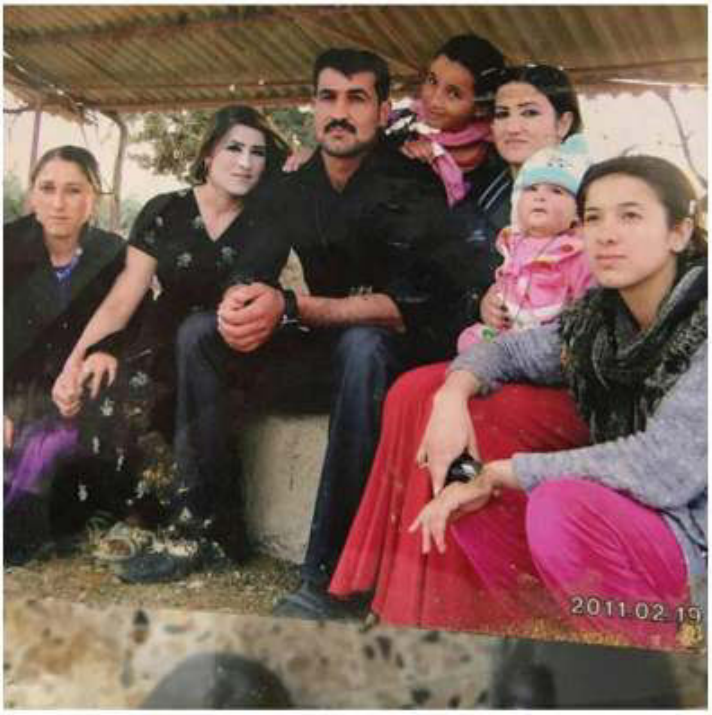

बाएँ से दाएँ: मेरी भाभी सेस्टर, मेरी बहन अदकी, मेरा भाई खैरी, मेरी भतीजी बासो, मेरी बहन दीमल, मेरी भतीजी माइसा और मैं 2011 में।

पिछली पंक्ति में बाईं से दाईं ओर: मेरी भाभी जीलन, मेरी भाभी मोना, मेरी माँ, मेरी भतीजी बासो, मेरी बहन अदकी, मेरी भतीजियाँ कैथरीन और माइसा, और मैं 2014 में कोचो में अपने घर पर।

मुझे और कैथरीन (बाएँ) को हमारे ट्रैक्टर में पीछे
बैठाकर ले जाता मेरा भाई हेज़्नी।

2014 में मेरे भाई और सौतेले भाई। पिछली पंक्ति बाएँ से दाएँ: हेज़्नी, एक पड़ोसी, मेरा सौतेला भाई ख़ालिद और मेरा भाई सईद। अगली पंक्ति: मेरा सौतेला भाई वालिद, मेरा भाई सउद और मैं।

वर्ष 2014 में अपनी शादी के मौक़े पर जीलन और हेज़्नी।

मेरी माँ, अपने पोते की शादी में।

बाएँ से दाएँ: मेरे भाई मसूद, सउद और हेज़्नी।

मेरा सौतेला भाई हज्जी।

2011 में अपनी कक्षा की सहेली के साथ मैं।

मेरी माँ, शमी।

7

हम कचहरी से निकलकर एक दूसरे घर पर गए, जहाँ मुर्तजा अपने परिवार के साथ रहता था। हाजी सलमान के घर की तुलना में यह बहुत बढ़िया नहीं था। उसमें केवल एक ही मंज़िल थी, लेकिन मेरे अपने घर से यह काफ़ी अच्छा था। मेरा धर्म परिवर्तन हो चुका था, इसलिए मुझे उम्मीद थी कि हाजी सलमान मुझ पर थोड़ी दया करेगा और मुझे बताएगा कि मेरे परिवार के साथ क्या हुआ। मैंने उससे सवाल किया, "मैं कैथरीन, नसरीन और रोजियान को देखना चाहती हूँ। मुझे सिर्फ़ यह देखना है कि वे ठीक हैं।"

उसने कहा वह कोशिश करेगा। मुझे यह सुनकर हैरानी हुई। "मुझे पता है वे कहां हैं," वह बोला, "मैं एक फ़ोन करूँगा, तो शायद तुम उन्हें कुछ देर के लिए देख सकोगी। परंतु हमें यहाँ इंतज़ार करना होगा।"

हम रसोईघर से होकर अंदर गए तो एक बड़ी उम्र की औरत निकल कर बाहर आई। वह मुर्तजा की माँ थी। "नादिया दूसरे मजहब की थी, लेकिन अब इसका मजहब बदल चुका है," मुर्तजा ने अपनी माँ को बताया। उसने हाजी सलमान को बधाई दी। "यह तुम्हारी ग़लती नहीं है कि तुम यज़ीदी धर्म में पैदा हुई," उस औरत ने मुझसे कहा। "यह तुम्हारे माता-पिता की ग़लती है। लेकिन अब तुम ख़ुश रहोगी।"

मैंने मुर्तजा की माँ को देखा। मुझे उससे हमदर्दी की उम्मीद थी। वह आख़िरकार एक महिला थी। मुझे लगा उसके सुन्नी और मेरे यज़ीदी होने से उसे फ़र्क़ नहीं पड़ेगा। क्या वह यह जानती होगी कि

हाजी सलमान ने मेरे साथ क्या किया? या यह कि मेरे मासिक-धर्म के बाद वह मेरे साथ क्या करने वाला था? अगर उसे यह नहीं भी पता तो वह इतना तो जानती ही थी कि मुझे बलपूर्वक लाया गया था और यह कि मैं अपने परिवार से अलग हो गई थी। उसे यह भी पता होगा कि कोचो के पुरुषों को मार दिया गया था। लेकिन उस औरत ने मेरे प्रति हमदर्दी नहीं दिखाई। वह मेरे धर्म-परिवर्तन को सुनकर ख़ुश थी। उसके लिए इराक में एक यज़ीदी कम हो गया था।

मुझे उस औरत से घृणा हो रही थी न केवल इसलिए कि मोसुल पर ऐसी ही महिलाओं के कारण आईएसआईएस, बल्कि पुरुषों का क़ब्ज़ा हो गया था। आईएसआईएस के शासन में औरतों का सार्वजनिक जीवन पूरी तरह मिट गया था। पुरुष यह काम इसलिए करते थे कि उन्हें पैसे, सत्ता और सेक्स की भूख थी। वे कमज़ोर थे और वे जानते थे कि उन्हें यह सब बिना बल प्रयोग किए नहीं मिलेगा। आईएसआईएस के आतंकियों को वैसे भी लोगों को तकलीफ़ देने में मज़ा आता था। आईएसआईएस के क़ानून ऐसे थे, जिनसे उन्हें बीवियों और बेटियों पर पूरा अधिकार मिलता था।

हालाँकि मुझे यह बात समझ में नहीं आई कि कोई औरत जेहादियों के साथ मिलकर लड़कियों के बंदी बनाए जाने से ख़ुश कैसे हो सकती है। मुर्तजा की माँ ऐसी ही एक औरत थी। इराक में किसी भी धर्म की औरत को हर चीज़ को पाने के लिए बहुत संघर्ष करना पड़ता था। संसद में जगह, प्रजनन के अधिकार, विश्वविद्यालयों में स्थान, यह सब उन्हें बहुत लंबी लड़ाई के बाद हासिल हुआ था। पुरुष वर्ग सत्ता पाकर संतुष्ट था, इसलिए मज़बूत स्त्रियों को संघर्ष द्वारा यह सब लेना पड़ा। यहाँ तक कि अदकी द्वारा ट्रैक्टर चलाने की ज़िद करना भी घर के पुरुषों के साथ समानता पाने और उनको चुनौती देने के बराबर था।

इसके बावजूद जब आईएसआईएस के लोग मोसुल में आए तो मुर्तजा की माँ जैसी औरतों ने उनका स्वागत किया। उन्होंने उन नीतियों का समर्थन किया, जिनसे ऐसी औरतें छिप सकतीं और मेरी जैसी लड़कियों का शोषण हो सकता था। आतंकियों ने जब शहर के

ईसाइयों और शिया लोगों को मारकर बाहर निकाला तो भी वह खड़ी तमाशा देखती रहीं। उन सब ने आईएसआईएस के शासन में इसी तरह जीना स्वीकार कर लिया था।

आईएसआईएस वाले जिस तरह हम पर हमला कर रहे थे, मैं सिंजर में युवतियों को मुसलमानों पर उस तरह हमला करते नहीं देख पाती। हमारे घर के पुरुष या स्त्री कोई भी इस बात से सहमत नहीं होता। मैंने लोगों को यह भी कहते सुना कि आईएसआईएस की महिला लड़ाकू एक तरह से अपनी हिम्मत साबित करना चाहती हैं। परंतु उनमें से कोई औरत, चाहे मुर्तजा की माँ या फिर आत्मघाती दस्ते की कोई महिला, मेरी माँ जितनी मज़बूत नहीं हो सकती है। मेरी माँ ने बहुत-सी लड़ाइयाँ लड़ीं। वह कभी किसी औरत को ग़ुलाम बनाने या बेचे जाने की अनुमति नहीं दे सकती थीं।

मुझे पता है कि महिलाएँ भी आतंकवादी होती हैं। दुनिया के इतिहास में कई बार औरतों ने आतंकी संगठनों के साथ मिलकर बड़ी भूमिकाएँ निभाई हैं। उनके काम बाहर वालों को आश्चर्यचकित कर देते हैं। लोग समझते हैं कि औरतें दुर्बल होती हैं, उन्हें लगता है कि मध्य पूर्वी इलाक़ों की औरतें हिंसा से दूर रहती हैं, लेकिन आईएसआईएस में ऐसी कई औरतें हैं, जो आदमियों की तरह इस्लाम छोड़कर अन्य धर्म को ख़ारिज करती हैं। उनको ऐसा लगता है कि आतंकियों के साथ मिल जाने से वे अपनी सुन्नी ख़िलाफ़त को क़ायम करने में सहयोग दे रही हैं। वे स्वयं को पुरुषों की तरह दमन और अमेरिकी आक्रमण से त्रस्त मानती हैं। औरतों ने आईएसआईएस की बात मान ली, क्योंकि उन्हें कहा गया कि यदि ऐसा हुआ तो उनके परिवार को पैसा मिलेगा, उनके पतियों को बेहतर नौकरियाँ मिलेंगी और बच्चों को सब अधिकार और सुविधाएँ मिलेंगी, जो उन्हें अपने देश में मिलना चाहिए। उन्हें बताया गया कि पुरुषों का समर्थन करना उनका धार्मिक दायित्व है। औरतों ने भी इसे मान लिया।

मैंने ऐसी कहानियाँ भी सुनी हैं, जहाँ आईएसआईएस की औरतों ने यज़ीदियों की मदद की। कोचो की एक लड़की को बंधक बनाने वाले की पत्नी ने एक फ़ोन दिया था। वह व्यक्ति उसके पूरे परिवार

को पश्चिम में उसके घर से सीरिया की लंबी यात्रा पर ले गया था। शुरु में वह औरत आईएसआईएस के प्रचार से प्रभावित थी, लेकिन बाद में जब उसने यज़ीदी औरतों को बंदी बनता देखा तो उसे तकलीफ़ हुई। उसने अपने घर में रहने वाली यज़ीदी लड़कियों को सुरक्षित सीरिया तक भी पहुँचाया।

परंतु ज़्यादातर कहानियाँ बुरी हैं, जिन्हें सुनकर पता लगता है कि औरतें, कई बार आदमियों से भी ज़्यादा क्रूर होती हैं। वे अपने पति की सबाया को मारती हैं, उन्हें भूखा रखती हैं। यह सब ईर्ष्या और ग़ुस्से के कारण होता है। हम उनके शिकार बन जाते हैं। कई बार वे ख़ुद को आंदोलनकारी भी समझती हैं। उन्होंने ख़ुद को समझा लिया है कि बड़े उद्देश्य के लिए हिंसा का प्रयोग किया जा सकता है। मैं यह सुन चुकी हूँ और मैं जब भी नरसंहार के लिए आईएसआईएस को सज़ा दिलवाने के बारे में सोचती हूँ, तो मुझे उनकी औरतों पर दया आ जाती है। परंतु मुझे यह समझ नहीं आता कि कोई व्यक्ति हज़ारों यज़ीदी लड़कियों को सेक्स के लिए बाज़ार में बेचे जाने और लगातार उनका बलात्कार होतेय कैसे देख लेता है? इस क्रूरता को किसी भी तरह सही नहीं ठहराया जा सकता।

मुर्तजा की माँ हाजी सलमान को प्रभावित करने के लिए उससे काफ़ी देर बात करती रही। "मुर्तजा के अलावा मेरी एक बारह साल की लड़की है," उसने कहा। "मेरा एक बेटा सीरिया में है, जो *दावला* के पक्ष में लड़ रहा है।" यह आईएसआईएस के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला अरबी शब्द है। वह उसके बारे में सोचकर मुस्कराने लगी। "वह बहुत सुंदर है। अल्लाह उसका भला करें।"

उनकी बातचीत ख़त्म होने पर मुर्तजा की माँ ने मुझे एक छोटे-से कमरे में भेज दिया। "तुम हाजी सलमान का इंतज़ार करो। कहीं जाने की ज़रुरत नहीं है। किसी चीज़ को छूना मत!" यह कहकर उसने दरवाज़ा बंद कर दिया।

मैं काउच पर बैठ गई। मैंने अपना शरीर कसकर पकड़ रखा था। क्या हाजी सलमान सचमुच मेरी बहनों को खोजने की कोशिश करेगा? क्या मैं उन्हें देख पाऊँगी? सबाया लड़कियों का आपस में

बातचीत करना सामान्य था, क्योंकि पुरुष उन्हें साथ लेकर यात्रा करते थे। इस बात की संभावना थी कि वह मुझे शांत रखने के लिए मेरी इच्छा पूरी कर देगा। यदि मुझे कैथरीन और अपने परिवार वालों के बारे में यह पता लग जाता कि वे जीवित हैं, तो मुझे फिर किसी बात की चिंता नहीं होती।

तभी दरवाज़ा खुला और मुर्तजा अंदर आया। मैंने पहली बार देखा कि वह उम्र में मुझसे एक वर्ष ही बड़ा था। उसकी दाढ़ी थी और वह किसी छोटे पद पर था। मुझे नहीं पता कि उसके पास भी कोई सबाया थी या नहीं। अगर थी तो भी मैंने उसके साथ किसी को नहीं देखा। हाजी सलमान की अनुपस्थिति में वह मेरे नज़दीक आ गया। लेकिन वह बनावटी लग रहा था। ऐसा लग रहा था किसी छोटे लड़के ने अपने पिता के जूते पहन लिए हों।

उसने दरवाज़ा बंद किया और मेरे पास बिस्तर पर आकर बैठ गया। मैंने अपने पैर उठाकर अपनी छाती से लगा लिए और माथा घुटनों पर टिका लिया। मैं उसे देखना नहीं चाहती थी। फिर वह बोलने लगा। "क्या तुम यहाँ ख़ुश हो?" उसने पूछा। "या तुम्हें यहाँ से भागकर अपने परिवार से मिलने में ज़्यादा ख़ुशी होगी?" वह मेरा मज़ाक़ उड़ा रहा था। वह जानता था कि इस प्रश्न का कोई उत्तर क्या देगा?

"मुझे नहीं पता मेरे परिवार के साथ क्या हुआ," मैंने कहा। मैं सोच रही थी कि वह वापस चला जाए।

"यदि मैं तुम्हारी भागने में मदद करूँ, तो तुम मुझे क्या दोगी?" उसने मुझसे पूछा।

"मेरे पास देने को कुछ नहीं है," मैंने ईमानदारी से उत्तर देने का प्रयास किया। हालाँकि मुझे पता था कि वह क्या कहना चाहता है। "फिर भी अगर तुम मेरी सहायता करोगे तो मैं अपने भाई से कहकर जो चाहोगे, तुम्हें दिलवा दूँगी।"

वह हँसने लगा। फिर उसने मुझसे पूछा, "क्या तुम्हें डर लग रहा है?" वह धीरे-धीरे मेरे नज़दीक आ रहा था।

"हाँ, मुझे डर लग रहा है," मैंने कहा। "मुझे बहुत डर लग रहा है।"

"मुझे देखने दो," उसने कहा। फिर वह मेरी छाती की तरफ़ हाथ बढ़ाने लगा। "मुझे देखने दो क्या डर से तुम्हारा दिल सचमुच तेज़ी से धड़क रहा है।"

मैंने उसे यह करते देखा, तो बोलना बंद कर दिया। मैं ज़ोर से चिल्लाई। मैं चाहती थी कि मेरी चीख़ से दीवारें और छत गिर जाए और हम सब मर जाएँ।

तभी दरवाज़ा खुला और मुर्तजा की माँ अंदर आ गई। उसने अपने बेटे को ग़ुस्से से देखा। "इसे अकेला छोड़ दो," वह बोली, "यह तुम्हारी नहीं है।" मुर्तजा सिर झुकाकर कमरे से बाहर निकल गया। "यह काफ़िर है!" उसकी माँ ने जाते हुए मुर्तजा से कहा। "यह हाजी सलमान की सबाया है।"

मैं सोचने लगी, अगर कमरे में केवल हम दोनों होते तो वह क्या करती। बावजूद इसके कि वह कौन थी और सबकुछ उसके सामने हो रहा था, यदि वह केवल मेरे पास बैठकर सिर्फ़ यह सुन लेती कि मेरे साथ क्या हो रहा था, तो शायद मैं उसे माफ़ कर देती। वह मेरी माँ की उम्र की थी। उसका शरीर भी मेरी माँ की तरह तगड़ा, लेकिन मुलायम था। अगर वह इतना कहती कि उसे पता है कि वे लोग मुझे ज़बरदस्ती लेकर आए थे और अगर वह मेरी माँ और बहनों के बारे में पूछती तो भी मुझे बहुत राहत मिलती। मैं कल्पना करने लगी कि वह मेरा हाथ पकड़कर बैठी है और मुझसे कह रही है कि "बेटी, चिंता मत करो। मैं यहाँ से भागने में तुम्हारी मदद करूँगी। मैं भी एक माँ हूँ। मैं तुम्हारा दुख समझती हूँ।" हफ़्तों की भूख के बाद ऐसे शब्द रोटी से कम नहीं थे। लेकिन उसने कुछ नहीं कहा। वह चुपचाप चली गई। मैं उस छोटे से कमरे में फिर अकेली बैठी थी।

कुछ देर के बाद हाजी सलमान अंदर आया। "हम कैथरीन से मिल सकते हैं," उसने मुझसे कहा। यह सुनकर मेरा दिल भर आया। मुझे कैथरीन से ज़्यादा और किसी की चिंता नहीं थी।

कैथरीन का जन्म 1998 में हुआ था। वह इलियास की सबसे बड़ी बेटी थी। वह पैदा होते ही हमारे परिवार के लिए ख़ास हो गई थी। कैथरीन का रोना-धोना सुनकर इलियास हमारा घर छोड़कर नहीं गया। वह मेरी माँ से उतना ही प्यार करती थी, जितना मैं करती थी। वह मुझसे भी बहुत प्यार करती थी। हम एक-दूसरे के कपड़े और बहुत-सी अन्य चीज़ें इस्तेमाल करते थे। हम कपड़े एक जैसे पहनते थे। हमने मेरे भाई की शादी में लाल और एक दूसरे भाई की शादी में हरी पोशाक पहनी थी।

मैं उम्र में उससे बड़ी थी, लेकिन स्कूल में उससे पीछे थी। हम एक ही कक्षा में पढ़ते थे। कैथरीन ज़्यादा समझदार थी। वह अपनी उम्र के हिसाब से ज़्यादा व्यावहारिक और मेहनती थी। उसने छठी कक्षा के बाद स्कूल छोड़कर हमारे साथ खेत पर काम करना मंजूर किया था। उसे पढ़ने से ज़्यादा घर से बाहर काम करना पसंद था। वह सबकी मदद करना चाहती थी। हालाँकि वह उम्र में छोटी थी और शांत रहती थी। कैथरीन को भेड़ का दूध निकालना और दीमल की तरह खाना पकाना भी आता था। कोई बीमार होता तो उसे दुख होता। उसे लगता कि वह ख़ुद बीमार हो गई है। हम लोग रात को सोने से पहले भविष्य की योजनाएँ बनाते थे। वह मुझसे कहती, "मैं पच्चीस साल की होने पर शादी करूँगी। मुझे बहुत से बच्चे और एक बड़ा-सा परिवार चाहिए।"

कोचो पर हमला हुआ, तो कैथरीन कमरे से बाहर नहीं निकलती थी। वह अधिकतर समय टेलीविज़न के सामने बैठ पहाड़ पर फँसे लोगों के लिए रोती रहती थी। उसने सुना कि उसकी बहन का अपहरण हो गया, तो उसने खाना-पीना छोड़ दिया। मैंने उसे समझाया कि हमें उम्मीद नहीं छोड़नी चाहिए। उसका चेहरा दुख और हताशा से पीला पड़ गया था। उसने खाना-पीना और सोना भी छोड़ दिया था। "हम बच जाएँगे!" मेरी माँ उसे समझातीं। "अपने पिता को देखो। तुम्हें उनकी तरह मज़बूत बनना चाहिए।" लेकिन कैथरीन ने एक बार उम्मीद छोड़ दी, तो हम उसे समझा नहीं पाए।

मुझे और कैथरीन को कोचो से अलग-अलग ट्रकों में ले जाया गया था। मैंने उसे सोलाग़ पहुँचने से पहले नहीं देखा। वह माँ के साथ बैठी थी। उसने आईएसआईएस के आतंकी से कहा, "मैं अपनी माँ के साथ ही जाऊँगी, क्योंकि वह चल नहीं सकती।" लेकिन वह आतंकी चिल्लाया, तो कैथरीन चुपचाप बैठ गई।

मोसुल में कैथरीन मेरे लिए सबसे ज़्यादा चिंतित थी। "तुम चुप रहना," उसने मुझसे कहा। "मुझे पता है कि अबू बटाट तुम्हें परेशान कर रहा है। उसने मेरे साथ भी ऐसा किया था।" वह जानती थी कि मेरे लिए ग़ुस्से पर क़ाबू पाना मुश्किल था। वह मुझे समझती थी और मेरी मदद करना चाहती थी। मोसुल में जब हम अलग किए जाने के इंतज़ार में एक घर में बैठे थे, तो उसने मुझे समझाया था, "नादिया! अरबी मत बोलो। तुम नहीं चाहोगी कि तुम्हें पकड़कर सीरिया ले जाया जाए।" मैंने उसे आख़िरी बार तब देखा था, जब सलवान मुझे अपने साथ ले जा रहा था।

हाजी सलमान और मैंने, मुर्तजा का घर छोड़ दिया। हम बाहर निकले तो मुर्तजा की माँ, रसोई में थी। वह किसी आदमी की कमर पर गर्म गिलास से मसाज कर रही थी, जिससे पीठ पर लाल चकत्ते हो गए थे। इससे ख़ून का प्रवाह सही हो जाता था। घर की मालकिन को धन्यवाद देना शिष्टाचार था। कुछ भी हो जाए, लेकिन बचपन की आदतें बड़े होने पर स्वभाव का हिस्सा बन जाती हैं। मैंने उसकी ओर देखा और कहा, "सलमान आ गया है। मैं जा रही हूँ। धन्यवाद!"

"अल्लाह तुम्हारी हिफाजत करें," वह बोली और फिर काम में लग गई।

मैं और हाजी सलमान फिर उसी इमारत पर चले गए, जहाँ एक रात पहले ग़ुलामों का बाज़ार लगा था। "वे ऊपर हैं," सलमान ने कहा और मुझे छोड़कर चला गया।

मैं दौड़कर ऊपर गई, तो मैंने देखा कि कैथरीन और नसरीन बैठी थीं। वे दोनों बहुत बुरी तरह थकी हुई थीं। कैथरीन एक पतले-से गद्दे पर लेटी थी। उसकी आँखें आधी खुली थीं और नसरीन उसके पास बैठी थी। मैंने दरवाज़ा खोला तो वे मुझे टकटकी लगाकर देखने

लगीं। मैं अपना नक़ाब उठाना भूल गई थी। कैथरीन ने धीरे-से पूछा, "क्या तुम कुरान पढ़ने आई हो?"

"मैं नादिया हूँ!" मैंने कहा। उन्होंने मेरा चेहरा देखा तो वे दौड़कर मेरे पास आ गईं। हम लोग बहुत ज़ोर-ज़ोर से रोए। ऐसा लग रहा था कि रोने से हमारी मौत हो जाएगी। हमारा शरीर दुख रहा था। उन्होंने बताया, "हमसे कहा गया था कि एक औरत आकर यह देखेगी कि क्या हम कुँवारी हैं। हमें लगा कि तुम वही औरत हो।"

कैथरीन की आँखें सूज रही थीं, और उसके माथे पर चोट के निशान थे। "मुझे ठीक से नज़र नहीं आ रहा," उसने मुझसे कहा। मैं उसके पास बैठ गई।

मैंने उसका हाथ थामकर कहा, "तुम बहुत कमज़ोर लग रही हो।"

"हाँ, मैं उपवास कर रही हूँ ताकि ईश्वर हमारी मदद करें," वह बोली। मुझे डर था कि भूख से उसकी हालत नहीं बिगड़ जाए, लेकिन मैंने उससे कुछ नहीं कहा। यज़ीदी, साल में दो बार औपचारिक रूप से उपवास करते हैं। हम अन्य मौक़ों पर भी ऐसा कर पाएँ, तो ईश्वर में आस्था दृढ़ होती है। तवूसी मेलेक के साथ हमारा संपर्क बेहतर बन पाता है। उपवास से हमें ताक़त मिलती है।

"तुम्हें क्या हुआ?" मैंने कैथरीन से पूछा।

"अबू अब्दुल्लाह नाम का एक आदमी आया था। उसने मुझे ख़रीदा था। वह मुझे मोसुल के किसी घर में ले गया," कैथरीन ने बताया। "मैंने उससे कहा मुझे कैन्सर है; इसलिए वह मुझे हाथ नहीं लगाए। लेकिन उसने मुझे मारा और फिर बाज़ार में बेच आया। इसलिए मेरी आँखों पर चोट लगी है।"

"मैंने भागने की कोशिश की," नसरीन ने बताया, "लेकिन उन्होंने मुझे पकड़ लिया और फिर बहुत मारा और वापस यहीं ले आए।"

"तुमने यह क्यों पहना है?" कैथरीन ने मुझसे पूछा। उन दोनों ने यज़ीदी पोशाक ही पहनी हुई थी।

"उन्होंने मेरे कपड़े छीन लिए और मुझे ज़बरदस्ती यह पहना दिया," मैंने कहा। "मेरे पास मेरा बैग भी नहीं है। मेरे पास कोई सामान नहीं है।"

"तुम्हारा बैग मेरे पास है!" कैथरीन ने कहा और मुझे बैग पकड़ा दिया। फिर उसने ऊपर के कपड़े उतारे और मुझे दे दिए। वह नई गुलाबी और भूरी पोशाक थी। आज तक हम उसे बारी बारी से पहनते रहे थे। वह बहुत सुंदर थी। "तुम इसे अबाया के नीचे पहन लो," उसने मुझसे कहा और मैंने उसके गाल पर चुंबन लिया।

तभी एक पहरेदार आया। "तुम्हारे पास पाँच मिनट हैं," उसने कहा। "हाजी सलमान तुम्हें नीचे बुला रहे हैं।"

उसके जाने के बाद कैथरीन ने अपनी पोशाक की जेब से कान की बालियाँ निकालीं और मुझे देते हुए कहा, "यह रख लो। हो सकता है, हम एक-दूसरे से फिर नहीं मिल सकें।"

"अगर मौक़ा मिले तो यहाँ से भाग जाना," वह धीरे-से बोली। फिर उसने मेरा हाथ पकड़ा और मुझे नीचे ले गई। "मैं भी भागने की कोशिश करूँगी।" हम नीचे रसोई तक हाथ पकड़कर चलते रहे। फिर हाजी सलमान मुझे ले गया।

हम हाजी सलमान के घर पहुँच गए थे। मुझे कैथरीन और नसरीन के लिए बहुत दुख हो रहा था। मैंने ईश्वर से प्रार्थना की कि उनके साथ कुछ भी हो मगर वे किसी तरह जीवित रहें। हाजी सलमान ने मुझे एक पहरेदार के साथ अंदर भेज दिया और इंतज़ार करने को कहा। "मैं जल्दी आ जाऊँगा," वह बोला। मैं फिर से प्रार्थना करने लगी।

मेरे अंदर जाने से पहले हाजी सलमान मुझे देखता रहा। फिर वह बोला, "मैं लौटकर आऊँगा, तो यह नहीं सोचूँगा कि तुम्हें माहवारी हो रही है या नहीं! मैं तुमसे वादा करता हूँ कि मैं तुमसे मिलने जरूर आऊँगा।"

उसने यह ठीक ऐसे ही कहा था। "मैं तुमसे मिलने आऊँगा।"

8

मैंने पिछले तीन सालों में ऐसी बहुत-सी औरतों की कहानियाँ सुनी हैं, जिन्हें आईएसआईएस ने अपना ग़ुलाम बना लिया था। हम सब एक ही तरह की हिंसा के शिकार थे। हमें बाज़ार में ख़रीदा या किसी नए रंगरूट या बड़े कमांडर को दे दिया जाता था। वह अपने घर में हमारे साथ बलात्कार करता, हमें अपमानित करता और मारता-पीटता था। फिर हमें दोबारा किसी को दे दिया जाता था और फिर बलात्कार और मार-पिटाई होती थी। फिर हम किसी और आतंकी के पास पहुँचा दिए जाते, फिर बलात्कार, फिर मार-पिटाई और फिर दोबारा बलात्कार और पिटाई..., यह सिलसिला तब तक चलता रहता जब तक लड़कियों को कोई लेने से मना कर देता या वह मर जाती थीं। भागने की कोशिश करने पर सज़ा मिलती थी। हाजी सलमान ने मुझे चेतावनी दी थी कि वे हमारी फ़ोटो चेक-प्वाइंट पर लगा देंगे और मोसुल के निवासियों को भी आदेश जारी किए जाते थे कि किसी भी लड़की के पकड़े जाने पर उसे नज़दीकी आईएसआईएस के केंद्र पर लौटा दिया जाए। इस काम के लिए उन्हें पाँच हज़ार डॉलर का इनाम मिलता था।

बलात्कार सबसे बुरा लगता था। उसमें हमसे हमारी मानवता छिन जाती थी। इससे हमारी फिर से यज़ीदी समाज में लौटने, शादी करने और बच्चे पैदा करने तथा ख़ुशहाल जीवन जीने के संभावनाएँ भी समाप्त हो जाती थीं। हम सोचते कि बलात्कार की अपेक्षा वे हमें मार देते तो बेहतर होता।

आईएसआईएस वाले जानते थे कि अविवाहित यज़ीदी लड़की के लिए धर्म-परिवर्तन करके इस्लाम अपनाना और फिर अपना कुँवारापन खोना बहुत दुखद था। वे हमारे इसी डर का फ़ायदा उठाते थे। उन्हें पता था, इससे हमारा समुदाय और हमारे धर्म-गुरु हमें समुदाय में दोबारा शामिल नहीं करेंगे। "तुम भाग भी जाओगी तो कोई फ़ायदा नहीं होगा," हाजी सलमान ने कहा। "तुम भाग कर घर पहुँच गई तो भी तुम्हारे पिता या तुम्हारे चाचा-ताऊ तुम्हें मार डालेंगे, क्योंकि तुम अब कुँवारी नहीं हो और तुम मुसलमान भी बन चुकी हो!"

औरतें कई बार अपनी कहानियाँ सुनाती थीं कि उन्होंने अपने हमलावरों के साथ कैसे लड़ाई की और ख़ुद से ज़्यादा ताक़तवर आदमियों को मारा। हालाँकि उनके लिए आतंकियों पर क़ाबू पाना मुश्किल था, क्योंकि वे बलात्कार करने के पक्के इरादे से आते थे। "हमने कभी उनको यह काम आसानी से नहीं करने दिया," लड़कियाँ बताती थीं। "मैं विरोध करती और उन्हें मारती थी। मैंने एक बार उसके मुँह पर थूक दिया था।" एक लड़की ने बताया कि उसने अपने गुप्तांग में बोतल डाल ली थी, ताकि उसका कौमार्य पहले ही भंग हो जाए और फिर यह काम आतंकी नहीं कर सकेगा। कुछ लड़कियों ने आत्म-दाह का प्रयास भी किया। वे गर्व से बताती कि उन्होंने हमलावर के हाथ को इतनी ज़ोर से नोचा कि उसमें से ख़ून आ गया या उसके गाल पर घाव हो गया। "मुझे तसल्ली है कि वह जो मेरे साथ करना चाहता था, वह मैंने आसानी से नहीं करने दिया!" अधिकतर लड़कियाँ यही बोलती थीं। उनका हर प्रयास, छोटा या बड़ा, आईएसआईएस के लिए संदेश होता था कि उनका लड़कियों पर अधिकार नहीं है। ऐसी भी कई औरतें थीं, जो अपनी कहानी सुनाने के लिए ज़िंदा नहीं थीं, क्योंकि उन्होंने बलात्कार से पहले आत्महत्या कर ली थी।

मैंने किसी से नहीं कहा, लेकिन यह सच है कि मैंने अपने बलात्कारी का कभी विरोध नहीं किया। मैं बस आँखें बंद करके उसके ख़त्म हो जाने की प्रार्थना करती थी। लोग मुझसे कहते हैं, "तुम बहुत तेज़ और बहादुर हो।" मैं उन लोगों से कहना चाहती हूँ कि दूसरी

लड़कियों ने अपने हमलावर से लड़ाई लड़ी, उन्हें मारा-पीटा लेकिन मैं केवल रोती थी। "मैं उनकी तरह बहादुर नहीं हूँ।" मुझे इस बात की चिंता थी कि लोग मेरे बारे में क्या सोचेंगे। नरसंहार की बात होती है, तो लोग केवल यज़ीदी लड़कियों के यौन-शोषण में रुचि लेते हैं। वे केवल कहानी सुनना चाहते हैं, जबकि मैं उन्हें केवल बलात्कार के बारे में नहीं, बल्कि हर बात बताना चाहती हूँ - मेरे भाइयों की हत्या, मेरी माँ का अचानक ग़ायब हो जाना और छोटी उम्र के लड़कों का दिमाग़ पलटने (मॉइंड वॉश) की प्रक्रिया। मैं इन सबके बारे में बात करना चाहती हूँ। मुझे डर लगता है कि लोग क्या सोचेंगे। मुझे ख़ुद इस बात को स्वीकार करने में बहुत समय लगा। लेकिन इसका यह आशय नहीं है कि मैं उन आतंकियों की हरकतों का समर्थन करती थी।

आईएसआईएस के आने से पहले मैं ख़ुद को बहादुर और ईमानदार मानती थी। मैं अपने परिवार के सामने अपनी समस्याओं और ग़लतियों को स्वीकार कर सकती थी। मैंने उन्हें बताया कि मैं ऐसी हूँ और मैं उनकी प्रतिक्रिया को स्वीकार करने के लिए भी तैयार थी। मैं अपने परिवार के साथ किसी भी स्थिति का सामना करने के लिए तैयार थी, लेकिन उनके बिना मोसुल में बंदी बनकर मुझे अकेलापन लगता था। मुझे कभी-कभी महसूस होता था कि मैं इंसान ही नहीं हूँ। मेरे अंदर कुछ था, जो मर चुका था!

हाजी सलमान का घर पहरेदारों से भरा था। मैं ऊपर चली गई। क़रीब आधे घंटे बाद एक पहरेदार आया। उसके पास कुछ कपड़े, मेकअप का सामान और बाल हटाने की क्रीम थी। "सलमान ने कहा है कि तुम नहाकर उसके आने से पहले तैयार हो जाओ," वह इतना बोलकर नीचे चला गया। उसने सामान बिस्तर पर छोड़ दिया।

मैंने नहाकर वही किया, जो मुझे कहा गया था। मैंने क्रीम लगाकर सब जगह से बाल हटाए। वह क्रीम मुझे मेरी माँ ने कई बार दी थी। मुझे उसे लगाना पसंद नहीं था। मध्यपूर्व में इस काम के

लिए शुगर वैक्स अधिक इस्तेमाल होता था। उस क्रीम में अज़ीब-सी रासायनिक गंध थी, जिससे मुझे चक्कर आने लगे। मेरा मासिक-धर्म भी ख़त्म हो चुका था।

फिर मैंने कपड़े पहन लिए। वह नीले और काले रंग की एक छोटी घुटनों से ऊपर की स्कर्ट थी। कंधों पर फँसाने के लिए दो पट्टे थे। उसी के अंदर ब्रा थी इसलिए मुझे अलग से उसे पहनने की ज़रूरत नहीं पड़ी। वह पार्टी में पहनने की पोशाक थी। मैंने ऐसे कपड़े टेलीविज़न पर देखे थे। वह कोचो में पहनने योग्य नहीं थे। उस पोशाक को केवल एक पत्नी, अपने पति के लिए पहन सकती थी।

मैंने तैयार होकर ख़ुद को बाथरूम में लगे शीशे में देखा। मुझे पता था अगर मैंने मेकअप नहीं किया तो मुझे सज़ा मिलेगी। मैं उस सामान को देखने लगी जो पहरेदार मेरे लिए छोड़ गया था। मैं और कैथरीन, मेकअप का सामान देखकर ख़ुश हो जाते थे, फिर हम अपने बेडरूम में लगे शीशे के सामने खड़े होकर शृंगार करते रहते थे। परंतु हाजी सलमान के घर पर मैं खुद को शीशे में भी नहीं देख पा रही थी। मैंने हलकी-सी गुलाबी लिपस्टिक लगाई और आँखों पर थोड़ा मेकअप किया। मैं सिर्फ़ इतना चाहती थी कि मुझे मार नहीं पड़े।

मैंने कोचो छोड़ने के बाद पहली बार ख़ुद को शीशे में देखा था। मेकअप करके मेरा रूप पूरी तरह बदल जाता था। परंतु हाजी सलमान के घर पर मुझे ख़ुद में कोई बदलाव नज़र नहीं आया। कितनी भी लिपस्टिक लगाकर मैं अपने चेहरे को बदल नहीं सकती थी। मैं अब एक ग़ुलाम थी, जिसे कभी भी किसी भी आतंकी को दिया जा सकता था। मैं बिस्तर पर बैठ गई और दरवाज़ा खुलने का इंतज़ार करने लगी।

लगभग चालीस मिनट बाद मुझे कुछ लोगों की आवाज़ आई। वे हाजी सलमान का अभिवादन कर रहे थे। फिर हाजी सलमान कमरे में अंदर आ गया। मैंने उसे देखा तो मैं सिमट कर बैठ गई। मैं नहीं चाहती थी कि वह मुझे छुए।

"सलाम वालेकुम!" हाजी सलमान ने मुझसे कहा। फिर मेरे पास बैठ गया। उसे हैरानी हुई कि मैंने उसके अनुसार कपड़े पहने थे। "मेरे

पास एक और सबाया थी, जिसे मैंने कुछ दिन बाद ही बेच दिया," वह बोला। "वह मेरा कहना नहीं मानती थी। तुमने अच्छा किया।" वह मुझसे ख़ुश था। फिर वह उठकर बाहर चला गया। उसने दरवाज़ा बंद कर दिया।

दरवाज़ा दोबारा खुला तो शाम हो चुकी थी। होशाम कमरे में आया और बोला, "हाजी सलमान चाहते हैं कि तुम मेहमानों के लिए चाय लेकर नीचे जाओ।" "कितने लोग हैं? वे लोग कौन हैं?" मैंने पूछा। मैं उन कपड़ों में कमरे से बाहर नहीं जाना चाहती थी। लेकिन उसने कोई जवाब नहीं दिया। "तुम आ जाओ," उसने कहा। "और जल्दी करो! वे लोग इंतज़ार कर रहे हैं।"

मुझे उम्मीद थी कि उस रात मेरा बलात्कार नहीं किया जाएगा। *मुझे लगा कि वह मुझे किसी और आदमी को दे देगा।* फिर मैं नीचे रसोई में चली गई।

पहरेदार ने चाय बना दी थी। वह उसे छोटे-छोटे कपों में डाल रहा था। मैं कप से भरी ट्रे लेकर बैठक में चली गई। वहाँ बहुत-से आतंकी बैठे थे। *"सलाम वालेकुम!"* मैंने भीतर घुसते ही कहा। मैंने चाय के कप, आदमियों के सामने रख दिए। वे हँस रहे थे और अरबी भाषा में बात कर रहे थे। मैंने उनकी बातों पर ध्यान नहीं दिया। मेरे हाथ काँप रहे थे। मुझे लगा कि वे मुझे कंधों से पैरों तक घूर रहे थे। उनकी बातचीत का तरीक़ा सुनकर मुझे डर लग रहा था। फिर भी मुझे विश्वास था कि ये मुझे इराक से बाहर ज़रूर ले जाएँगे।

"सीरिया के सैनिक बहुत बदमाश हैं!" एक आदमी ने कहा। फिर वे सब हँसने लगे। "वे बड़ी जल्दी हार मान लेते हैं। वे कितने डरपोक हैं!"

हाजी सलमान ने कहा, "उन्होंने अपना देश हमें कितनी आसानी से सौंप दिया! सिंजर की तरह!" वह आख़िरी टिप्पणी मेरे लिए थी। लेकिन मैंने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। मैंने चाय का कप उठाकर हाजी सलमान के सामने रख दिया।

मैं बाहर निकल गई और इंतज़ार करने लगी। लगभग बीस मिनट बाद सब उठे और चले गए। उनके जाने के बाद हाजी सलमान मेरे

पास आया। "प्रार्थना का समय हो गया है," वह बोला, "यह पहन लो ताकि हम साथ में प्रार्थना कर सकें।"

मुझे उनकी प्रार्थना नहीं आती थी, लेकिन मुझे इस्लाम की मुद्रा पता थी। मैं हाजी सलमान के पास खड़ी हो गई और उसकी तरह करने की कोशिश करने लगी। मैं चाहती थी कि वह मुझसे ख़ुश रहे और मुझे चोट नहीं पहुँचाए। उसने कमरे में लौटकर धार्मिक गाने चला दिए और फिर बाथरूम में नहाने चला गया। वह लौटकर आया और उसने संगीत बंद कर दिया। कमरे में फिर से शांति छा गई।

"कपड़े उतारो," उसने कहा। उसने एक रात पहले भी यही कहा था। फिर उसने अपने भी कपड़े उतार दिए और मेरे पास आ गया।

उसके साथ हर क्षण भयावह था। मैं दूर हटी तो उसने मुझे अपने पास खींच लिया। वह इतनी ज़ोर से आवाज़ें कर रहा था कि बाहर पहरेदार भी सुन रहे होंगे। वह शायद पूरे मोसुल को बताना चाहता था कि उसने अपनी सबाया के साथ बलात्कार कर लिया था। किसी ने हस्तक्षेप नहीं किया। वह मुझे बेरहमी से छू रहा था। मुझे दर्द होने लगा। कोई पति अपनी पत्नी के साथ ऐसा नहीं करता। हाजी सलमान का शरीर भी उसके घर की तरह विशाल था। मैं छोटी बच्ची की तरह अपनी माँ को पुकार रही थी।

9

हाजी सलमान ने मेरे साथ चार-पाँच रातें बताईं और फिर उसने मुझसे छुटकारा पा लिया। मुझे लगातार दर्द रहता था। उसे जब समय मिलता, वह मेरे साथ बलात्कार करता था। फिर रोज़ सुबह जाने से पहले मुझे निर्देश देकर जाता था, जैसे घर साफ़ करना, खाना पका लेना और यह ड्रेस पहन कर रखना। इसके अलावा, वह केवल *"सलाम वालेकुम"* कहता था। वह मुझे ऐसे निर्देश देता था जैसे मैं उसकी पत्नी हूँ। मैं इतना डरी हुई थी कि मुझे उसकी हर बात माननी पड़ती थी। कोई हमें दूर से देखता, तो यही समझता कि हम दोनों पति-पत्नी हैं। मैं उसके हर आदेश का पत्नी की तरह पालन करती थी, लेकिन उसने मुझे पत्नी कभी नहीं माना। मैं केवल उसकी सबाया थी।

याया नाम का एक पहरेदार कमरे में खाना और चाय लेकर आता था। वह शायद बाईस या तेईस साल का होगा। उसने टेबल पर सामान रखते हुए मेरी ओर कभी नहीं देखा। उन लोगों ने मुझे खाने-पीने की कमी नहीं होने दी। वह एक सबाया को मरने नहीं दे सकते थे। मैं उनके लिए क़ीमती थी। मेरी खाने की इच्छा नहीं होती थी। मैं केवल चावल और सूप लेती थी, ताकि मुझे भूख से चक्कर नहीं आए। फिर मैं घर की सफ़ाई करती। बाथरूम को रगड़ कर साफ़ करना पड़ता था, क्योंकि उसे छह पहरेदार और हाजी सलमान इस्तेमाल करता था। मुझे सीढ़ियाँ भी साफ़ करनी पड़ती थीं। वे लोग अपने कपड़े घर में बिखेर जाते थे और मैं उन्हें वाशिंग मशीन में धोती थी। फिर मैं बचा हुआ खाना फेंकती, चाय के प्याले धोती थी।

सलमान के घर में बहुत-से पहरेदार थे; इसलिए उन्हें मेरे भाग जाने की चिंता नहीं थी। मुझे भी घर में घूमने की छूट थी। मुझे केवल उनके गैराज में जाने की अनुमति नहीं थी, क्योंकि वे शायद वहाँ हथियार रखते थे।

मुझे कमरे की खिड़की से पूरे शहर की हलचल दिखाई पड़ती थी। हाजी सलमान, मोसुल के भीड़-भाड़ वाले एक इलाक़े में रहता था। वह हाईवे के निकट था, इसलिए वहाँ से गाड़ियाँ आती-जाती रहती थीं। हाजी सलमान मुझे हमेशा चेतावनी देकर रखता था। "अगर तुमने भागने की कोशिश की तो मैं सच कहता हूँ तुम बहुत पछताओगी। यहाँ बहुत बुरी सज़ा मिलती है।" इससे मेरे मन में उम्मीद जागती थी, क्योंकि उसकी बात से लगता था कि कुछ लड़कियाँ अवश्य वहाँ से भागी होंगी।

आईएसआईएस वाले यज़ीदी लड़कियों को बंधक बनाते समय कई चीज़ों का ध्यान रखते थे। फिर भी उनसे ग़लतियाँ हो जाती थीं, और लड़कियों को भागने का मौक़ा मिल जाता था। उनकी सबसे बड़ी ग़लती यह थी कि उन्होंने क़ैदी लड़कियों को भी मोसुल की अन्य औरतों जैसी पोशाक दे रखी थीं। उन्हें पहनकर हम आसानी से वहाँ की स्थानीय भीड़ में खो सकते थे। आईएसआईएस वाले अनजान औरतों से बात नहीं करते थे। इसलिए उनका हमें ढूँढ़ पाने की उम्मीद भी कम थी। मैं सड़क पर घूमती औरतों को देखती थी। वे सब एक-सी पोशाक पहनती थीं। उन्हें देखकर यह बता पाना मुश्किल था कि उनमें कौन-सी औरत बाज़ार जा रही थी और कौन यज़ीदी लड़की क़ैद से भाग रही थी।

बहुत-से आईएसआईएस केंद्र हाजी सलमान के घर की तरह भीड़भाड़ वाले इलाक़ों में थे। मुझे कभी अकेले बाहर निकलने का मौक़ा मिल जाता तो मदद मिल सकती थी। मैं रसोई की बड़ी खिड़की के ऊपर चढ़कर भागने और भीड़ में खो जाने की कल्पना करने लगी। मैंने सोचा यदि मैं टैक्सी गैराज तक पहुँच गई तो मुझे किरकुक तक जाने की जगह मिल सकती है। किरकुक, इराकी कुर्दिस्तान के भीतर प्रवेश करने का चेक-प्वाइंट था। कोई मुझसे

पूछता तो मैं सिर्फ़ इतना कहती कि मैं किरकुक की रहने वाली मुस्लिम हूँ, और अपने परिवार से मिलने जा रही हूँ। या मैं यह कह देती कि मैं सीरिया में चल रही लड़ाई से भाग कर आई हूँ। मैंने कुरान की कुछ आयतें याद कर ली थीं जो काम आ सकती थीं। यदि कोई आतंकवादी मेरी जाँच करने की कोशिश करता, तो मुझे अरबी भाषा भी बोलनी आती थी। शहादा के बारे में, मैं पहले से ही जानती थी। यहाँ तक कि मैंने आईएसआईएस के दो लोकप्रिय गाने भी याद कर लिए थे। एक, सैनिकों की जीत के समय गाया जाता था। मुझे उन गानों की आवाज़ ख़राब लगती थी, लेकिन वे दिमाग़ में गूँजते रहते थे। पहला गीत कुछ ऐसा था: "हमने बदूश और ताल अफ़ार पर क़ब्ज़ा कर लिया है। सब कुछ बढ़िया चल रहा है!" दूसरे गाने की पंक्ति थी: "ज़िंदगी, अल्लाह और ईमान के नाम कुर्बान कर दो!" मैंने निश्चय कर लिया कि चाहे जो हो जाए, मैं ख़ुद को यज़ीदी कहने की भूल नहीं करूँगी।

हालाँकि मुझे पता था कि यह असंभव सी योजना थी। सलमान का केंद्र, आतंकियों से भरा था और खिड़की व बाग की बाड़ पर चढ़कर निकलने का कोई तरीक़ा नहीं था। मुझ पर किसी की नज़र ज़रूर पड़ जाती। हाजी सलमान मुझे अबाया और नक़ाब केवल तभी पहनने देता था जब मैं उसके साथ बाहर जाती थी। एक पहरेदार हमेशा मुझ पर नज़र रखता था। घर में, मैं कोचो से साथ लाए कपड़े पहनती थी। रात को हाजी सलमान के आने का समय होता, तो ये सब कल्पनाएँ ग़ायब हो जाती थीं। मुझे पता था कि मेरे लिए भागना मुश्किल था। फिर मुझ पर एक गहरी उदासी छा जाती थी और मैं ईश्वर से मौत माँगने लगती थी।

एक दिन दोपहर में मेरे साथ बलात्कार के बाद हाजी सलमान ने रात को आने वाले कुछ मेहमानों के लिए तैयारी करने को कहा। सलमान ने कहा, "एक सबाया आ रही है। तुम शायद उसे जानती हो। वह तुमसे मिलना चाहती थी।"

मेरा दिल अचानक उम्मीद से धड़कने लगा। वह सबाया कौन होगी? मुझे किसी परिचित को देखने का बहुत मन था। लेकिन मुझे

नहीं लगता कि मैं किसी बहन को हाजी सलमान की दिए कपड़े पहनकर देखना पसंद करूँगी। सलमान के मेहमान मिलने आते तो वह मुझे नीली और काली एक छोटी-सी पोशाक पहनने को कहता था। मुझे यह सोचकर भी डर लग रहा था कि कोई यज़ीदी लड़की मुझे ऐसी पोशाक में देखेगी तो क्या सोचेगी। ख़ुशक़िस्मती से मुझे एक काली पोशाक मिल गई जो ऊपर से थोड़ी खुली थी, लेकिन वह घुटनों से नीचे थी। मैंने बाल पीछे किए और हल्की-सी लिपस्टिक लगाई। हाजी सलमान संतुष्ट हो गया, तो हम नीचे चले गए।

सलमान का दोस्त कोई और नहीं, बल्कि नफ़ाह था, जिसने पहली बार मुझे बस में चिल्लाने पर सज़ा दी थी। वह मुझे घूरने लगा। फिर उसने हाजी सलमान से कहा, "मेरी सबाया तुम्हारी सबाया से काफ़ी दिनों से मिलना चाहती थी। हमें इनके साथ बैठकर सुनना चाहिए कि ये क्या बात करती हैं, क्योंकि मुझे नादिया पर विश्वास नहीं है।"

नफ़ाह की सबिया, मेरे दोस्त की बहन लमिया थी। हम एक-दूसरे को देखते ही गले लग गए। हमें एक परिचित चेहरा देखकर बहुत राहत मिली। फिर हम चारों साथ में बैठ गए। सलमान और नफ़ाह आपस में बात कर रहे थे। उनका ध्यान जैसे ही लामिया और मेरी ओर से हटा तो हम अरबी छोड़ कुर्द भाषा में बात करने लगे।

लमिया ने लंबी पोशाक पहनी थी और उसके चेहरे पर हिजाब था। हमें पता नहीं था कि हमें बातचीत के लिए कितना समय मिलेगाय इसलिए हमने जल्दी-जल्दी एक-दूसरे को अधिक से अधिक सूचना देने की कोशिश की। "क्या इसने तुम्हें छुआ था?" लमिया ने पूछा।

"क्या इसने तुम्हें छुआ?" मैंने पलटकर पूछा तो उसने सिर हिलाकर हामी भर दी।

"इसने मेरा पहले धर्म परिवर्तन करवाया और फिर एक कचहरी में हमारी शादी हुई," वह बोली। मैंने भी उसे अपनी वही कहानी सुनाई। मैंने कहा, "तुम इसे शादी मत समझो। यह कोचो में होने वाली शादी जैसी नहीं है।"

"मैं यहाँ से भागना चाहती हूँ," उसने कहा। "लेकिन नफ़ाह से मिलने लोग आते रहते हैं। यहाँ से निकलना नामुमकिन है।"

"सलमान के साथ भी ऐसा ही है," मैंने उसे बताया। "आसपास पहरेदार रहते हैं और सलमान ने मुझसे कहा है कि अगर मैंने भागने की कोशिश की तो वह मुझे बहुत बुरी सज़ा देगा।"

"तुम्हें क्या लगता है, यह क्या कर सकता है?" उसने धीरे-से कहा। फिर वह तिरछी नज़र से दोनों आदमियों को देखने लगी। वे एक-दूसरे से बात कर रहे थे और उनका ध्यान हमारी तरफ़ नहीं था।

"मुझे नहीं पता, लेकिन वह ज़रूर कुछ बुरा करेगा," मैंने उत्तर दिया।

"हमने तुमसे कहा था कि अरबी में बात करो!" सलमान ज़ोर से चिल्लाया। उसे ग़ुस्सा आ रहा था कि वह हमारी बातचीत समझ नहीं पाया।

"वला का क्या हुआ?" मैंने अरबी में लमिया से पूछा। कोचो छोड़ने के बाद मैंने उसे दोबारा कभी नहीं देखा।

"वे उसी रात मुझे ले गए थे और उन्होंने दूसरी लड़कियों को भी इधर-उधर दे दिया," लमिया ने बताया। "मुझे नहीं पता भाई का क्या हुआ। मैंने नफ़ाह से कई बार उसके बारे में पूछा और उसे ढूँढ़ने को कहा, लेकिन उसने कुछ नहीं किया। दीमल और अदकी कहाँ हैं?"

"वे दोनों मेरी माँ के साथ सोलाग़ में ही थे," मैंने कहा। फिर हम चुप हो गए। हमें अपने घरवालों की गैर-मौजूदगी का बहुत दुख हो रहा था।

पैंतीस मिनट बाद नफ़ाह चलने के लिए उठ गया। लमिया और मैंने एक-दूसरे को अलविदा कहा। "अपना ख़याल रखना और परेशान मत होना," मैंने उससे कहा। "हम सब एक जैसी हालात में हैं।" फिर वे दोनों चले गए और मैं सलमान के साथ अकेली रह गई।

मैं और सलमान ऊपर कमरे में आ गए। "मैंने पहली बार तुम्हारे चेहरे पर एक अलग भाव देखा है," सलमान ने मुझसे कहा।

मैंने सलमान को मुड़कर देखा। मैं ग़ुस्सा छिपाना नहीं चाहती थी। "तुम मेरे चेहरे पर क्या देखना चाहते हो? तुम मुझे दिन-भर कमरे में बंद रखते हो और मुझसे वह करने को कहते हो जो मुझे पसंद नहीं है।"

"तुम्हें इसकी आदत पड़ जाएगी," वह बोला। "अब अंदर जाओ।" फिर उसने दरवाज़ा बंद किया और सुबह तक मेरे साथ ही कमरे के अंदर रहा।

हाजी सलमान मुझे बार-बार कहता था कि अगर मैंने भागने की कोशिश की तो वह मुझे सज़ा देगा। लेकिन उसने यह कभी नहीं बताया कि 'वह क्या करेगा'? वह निश्चित तौर पर मुझे मारता, लेकिन यह मेरे लिए नई बात नहीं थी। वह मुझे अक्सर मारता था। वह जब मेरे काम से ख़ुश नहीं होता तो भी मारता था। काम के लिए या घर की सफ़ाई को लेकर या बलात्कार के समय मेरे आँखें बंद करने पर भी मुझे मार पड़ती थी। मैं भागने की कोशिश करती तो शायद मुझे ज़्यादा मार खानी पड़ती, लेकिन मुझे अब उसकी भी चिंता नहीं थी। मेरे शरीर पर मार का कोई ऐसा घाव बन जाए, जिसके कारण मेरे साथ बलात्कार नहीं हो, तो मैं उस घाव को ज़ेवर की तरह सँभालकर रखना चाहूँगी।

वह कई बार बलात्कार के बाद मुझे कहता था कि भागने से कोई लाभ नहीं होगा। "तुम अब कुँवारी नहीं हो और मुसलमान बन चुकी हो। तुम्हारे घरवाले ही तुम्हें मार डालेंगे। तुम बर्बाद हो चुकी हो।" हालाँकि मेरे साथ सबकुछ ज़बरदस्ती किया गया था, लेकिन उसका कहना ग़लत नहीं था। मैंने सचमुच मान लिया था कि मेरी ज़िंदगी बर्बाद हो चुकी थी।

मैंने गंदा रहने के अनेक तरीक़े सोचे। केंद्र पर रहने वाली लड़कियाँ चेहरे पर गंदगी और राख़ मल लेती थीं, बालों में गाँठें लगा लेती थीं और कई दिनों तक नहाती नहीं थी, जिससे उनके ख़रीदारों को बदबू आती थी। लेकिन मैंने ऐसा कुछ नहीं किया। मुझे पता

था यदि मैंने यह किया तो सलमान मुझे बहुत मारेगा। यदि मैंने अपना चेहरा ख़राब कर लिया, तो क्या वह मुझे मार डालेगा? मुझे नहीं लगता कि वह ऐसा करेगा। मेरा ज़िंदा रहना उसके लिए ज़्यादा फ़ायदेमंद था। वह जानता था कि मर जाने के बाद मुझे मुक्ति मिल जाएगी। आख़िर, एक दिन मुझे इसकी जाँच करने का मौक़ा मिल गया।

एक दिन शाम को सलमान दो आदमियों को साथ लेकर आया। मैंने उन्हें पहले नहीं देखा था। उनके साथ कोई सबाया भी नहीं थी। "क्या तुमने घर साफ़ कर लिया?" उसने पूछा। मैंने हामी भरी तो वह बोला, "तुम्हें आज अकेले रहना पड़ेगा। तुम्हारा खाना रसोई में रखा है। अगर भूख लगे तो पहरेदार से कहकर अपने लिए खाना मँगवा लेना।" फिर वह मुझे इंतज़ार करने को कहकर चला गया।

उससे पहले सलमान ने मुझे सबके लिए चाय लाने को कहा। वह केवल अपने दोस्तों को अपनी नई सबाया दिखना चाहता था। मैंने उसका कहना मान लिया। मैंने उसकी पसंद की पोशाक पहनी और चाय लेकर नीचे चली गई। हमेशा की तरह वे लोग सीरिया और इराक में आईएसआईएस की जीत पर चर्चा कर रहे थे। मैं उनसे कोचो के बारे में सुनना चाहती थी, लेकिन उन्होंने इस बारे में बात नहीं की।

वह कमरा पुरुषों से भरा था, लेकिन उनमें केवल दो ही लोग बाहर के थे। बाक़ी सब पहरेदार थे, जो सलमान और उसके मेहमानों के साथ बैठे थे। इसीलिए सलमान ने मुझसे सबके चले जाने तक कमरे में ही रुकने को कहा था। यदि सब पहरेदार नीचे कमरे में थे, तो इसका मतलब यह था कि बगीचे में पहरेदारी के लिए कोई नहीं था। मेरे दरवाज़े के पास भी कोई नहीं था।

मैंने सबको चाय दे दी। फिर हाजी सलमान ने मुझे वापस जाने को कहा। मैं तुरंत ऊपर चली गई। मेरे दिमाग़ में एक योजना बन रही थी। यदि मैं अधिक देर सोचती तो मेरा इरादा बदल सकता था और मुझे शायद ऐसा मौक़ा दोबारा नहीं मिलता। मैं अपने कमरे में जाने की बजाय बैठक में चली गई। वहाँ एक अलमारी थी, जिसमें यज़ीदी

लड़कियों के कपड़े भरे थे। मुझे एक अबाया और नक़ाब चाहिए था। मुझे अबाया मिल गया और मैंने उसे जल्दी से पहन लिया। बाल और चेहरा ढँकने के लिए मुझे एक लंबा काला स्कार्फ़ भी मिल गया, जिसे मैं नक़ाब की तरह इस्तेमाल कर सकती थी। मुझे उम्मीद थी कि मुझे कोई नहीं देख पाएगा। फिर मैं खिड़की की तरफ़ चल पड़ी।

हमारा कमरा दूसरी मंज़िल पर था। उसकी ऊँचाई अधिक नहीं थी। नीचे मोसुल में आमतौर पर सजावट में इस्तेमाल होने वाली बालुई रंग की कुछ ईंटें पड़ी थीं, जिन्हें बगीचे में उतरने के लिए सीढ़ी की तरह इस्तेमाल किया जा सकता था। मैंने खिड़की से सिर बाहर निकाला। मुझे कोई नज़र नहीं आया। एक तेल का ड्रम बगीचे की दीवार के साथ रखा था, जो स्टूल का काम कर सकता था।

बगीचे के बाहर सड़क पर गाड़ियों की आवाज़ाही हो रही थी। धीरे-धीरे अंधेरा होने के साथ सड़कें ख़ाली होने लगीं। लोग घर जा रहे थे। मुझे लगा कि यदि मैं निकल गई तो शायद किसी की नज़र मुझ पर पड़ जाए। मुझे उम्मीद थी कि मुझे मदद के लिए कोई ज़रूर मिल जाएगा। मैंने अपने ज़ेवर और माँ के राशन कार्ड के अलावा बाक़ी सब सामान कमरे में छोड़ दिया।

मैंने पहले खिड़की से एक पैर बाहर निकाला, फिर दूसरा। मेरा नीचे का आधा शरीर खिड़की से बाहर और ऊपर का अंदर था। मैं, अपने पैर से नीचे पड़ी ईंट को टटोलने की कोशिश कर रही थी। मेरे हाथ कांप रहे थे। मैंने खिड़की की चौखट को पकड़ा हुआ था। फिर मैंने ख़ुद को नियंत्रित किया। मुझे लगा कि नीचे उतरने में ज़्यादा कठिनाई नहीं होगी। मैं नीचे की ईंट तलाश रही थी कि तभी मुझे बंदूक के खटके की आवाज़ सुनाई दी। मैं रुक गई और मेरा शरीर अकड़ गया। "अंदर जाओ!" मुझे एक पुरुष की आवाज़ सुनाई दी। मैंने बिना नीचे देखे ख़ुद को फिर खिड़की से अंदर खींच लिया। मेरा दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़क रहा था। मुझे नहीं पता कि मुझे किसने देखा। हाजी सलमान के सब पहरेदार कमरे में उसके साथ थे। मैं खिड़की से अंदर आ गई और फ़र्श पर बैठ गई। तभी मुझे क़दमों की

आहट सुनाई दी। मैंने ऊपर देखा तो हाजी सलमान खड़ा था। मैं तेज़ी से भागी और अपने कमरे की तरफ़ चली गई।

तभी दरवाज़ा खुला और हाजी सलमान चाबुक लेकर कमरे के अंदर आ गया। मैं, चिल्लाकर बिस्तर पर चढ़ गई और मैंने कंबल को अपने शरीर और सिर पर लपेट लिया। सलमान बिस्तर के पास खड़ा था। उसने बिना कुछ बोले मुझे चाबुक से पीटना शुरू कर दिया। वह मुझे इतना तेज़ मार रहा था कि कंबल भी काफ़ी नहीं था। "यहाँ से निकल जाओ!" हाजी सलमान जोर से चिल्लाया। मैंने उसे इस तरह चिल्लाते कभी नहीं सुना था। "कंबल से बाहर निकलो और कपड़े उतारो!"

मेरे पास कोई रास्ता नहीं था। मैंने कंबल हटा दिया। सलमान चाबुक लिए मेरे सिर पर खड़ा था। मैंने धीरे-धीरे अपने कपड़े उतार दिए। सारे कपड़े उतारने के बाद मैं चुपचाप खड़ी हो गई। मुझे नहीं पता था कि वह मेरे साथ क्या करने वाला था। मैंने रोना शुरू कर दिया। मुझे लगा वह फिर बलात्कार करेगा, लेकिन वह दरवाज़े की तरफ़ मुड़ गया। "मैंने तुम्हें कहा था अगर तुमने भागने की कोशिश की तो बहुत बुरा होगा," वह बोला। अब वह आराम से बोल रहा था। फिर वह दरवाज़ा खोलकर बाहर चला गया।

अगले ही पल मुर्तजा, याह्या और हुसैन तीनों पहरेदार अंदर आ गए। वे मेरी ओर देखने लगे। मुझे समझ में आ गया कि मुझे क्या सज़ा मिलने वाली थी। सबसे पहले मुर्तजा मेरे पास आया। मैंने उसे रोकने की कोशिश की, लेकिन वह बहुत ताकतवर था। उसने मुझे नीचे धकेल दिया और मैं कुछ नहीं कर पाई।

मुर्तजा के बाद अगले पहरेदार ने मेरे साथ बलात्कार किया। मैं चिल्लाकर अपनी माँ और भाई को पुकार रही थी। वे सब कोचो में तुरंत मेरी मदद के लिए आ जाते थे। लेकिन मैं, मोसुल में बिलकुल अकेली थी। मेरे पास उनके नाम पुकारने के अतिरिक्त कोई रास्ता नहीं था। मेरे कुछ भी कहने का उन आदमियों पर असर नहीं पड़ा। वे लगातार मुझ पर हमला करते रहे। मुझे केवल इतना याद है कि उस

रात उनमें से एक पहरेदार ने बलात्कार से पहले अपना चश्मा उतारकर मेज़ पर रख दिया था। उसे डर था कि उसका चश्मा टूट नहीं जाए!

मैं सुबह उठी तो अकेली और निर्वस्त्र थी। मुझसे हिला तक नहीं जा रहा था। उनमें से किसी एक ने शायद मुझ पर कंबल डाल दिया था। मेरा सिर घूम रहा था। मैंने कपड़े उठाने चाहे, लेकिन मेरे शरीर में बहुत दर्द था। मुझसे हल्की-सी हलचल भी बर्दाश्त नहीं हो रही थी। ऐसा लगा कि मेरी आँखों के सामने किसी ने मोटा पर्दा डाल दिया था, जिसके कारण मुझे कुछ नज़र नहीं आ रहा था।

मैं धीरे से उठी और नहाने चली गई। वे आदमी मेरे शरीर पर बहुत-सी गंदगी छोड़ गए थे। मैंने नल खोला और मैं देर तक उसके नीचे खड़ी रोती रही। मैंने अपना शरीर, बाल और दाँत आदि अच्छी तरह साफ़ किए। मैं नहाते समय ईश्वर से प्रार्थना करती रही कि वह मेरी सहायता करें और मुझे माफ़ कर दें।

मैं नहाने के बाद कमरे में सोफ़े पर बैठ गई। पर उन आदमियों की दुर्गंध आ रही थी। मुझे कोई देखने नहीं आया। हालाँकि मेरे कमरे के बाहर उनकी आवाज़ें आ रही थीं। फिर कुछ देर के बाद मुझे नींद आ गई। मुझे इस बीच कोई सपना नहीं आया। मेरी आँख खुली तो सलमान का ड्राइवर नज़दीक खड़ा मेरे कंधे पर थपकी दे रहा था। "नादिया! उठ जाओ। जल्दी उठो और कपड़े पहन लो। जाने का समय हो गया है।"

"मुझे कहाँ जाना है?" मैंने पूछा। फिर मैंने जल्दी से अपने काले बैग में सामान भरना शुरू कर दिया।

"मुझे नहीं पता। लेकिन तुम्हें यहाँ से जाना होगा," उसने कहा। "हाजी सलमान ने तुम्हें किसी और को बेच दिया है!"

10

मुझे पहली बार पकड़ा गया, तब मुझे पता लगा कि यज़ीदी लड़कियों के साथ क्या किया जाता है। मुझे लगा था केवल एक आदमी मुझे अपने पास रखेगा, लेकिन ग़ुलाम की तरह ख़रीदा जाना और फिर आपकी मानवता और इज़्ज़त कोई छीन ले, यही सब होता था। मैं कल्पना भी नहीं कर सकती थी कि मुझे बाज़ार में सामान की तरह बेचा और ख़रीदा जाएगा। इस बात की भी संभावना थी कि मुझे आटे के बोरी की तरह ट्रक में रखकर आईएसआईएस के क़ब्ज़े वाले सीरिया की सीमा पार पहुँचा दिया जाए।

मुझे तब तक समझ नहीं आया था कि कोई व्यक्ति कितना क्रूर हो सकता है। मैं हाजी सलमान जैसे आदमी से पहले नहीं मिली थी। उसने जब अपने पहरेदारों को मेरा बलात्कार करने की अनुमति दी तब मैं ख़ुद चाहती थी कि वह मुझे किसी और को बेच दे। मुझे तब यह चिंता भी नहीं थी कि मुझे कौन ख़रीदेगा या मुझे कहाँ ले जाया जाएगा। इसके बाद मेरे लिए सीरिया, जहाँ से बचकर निकलना मुश्किल था और जो मौत की सज़ा से कम नहीं था, सलमान के साथ रहने से बेहतर विकल्प था। आईएसआईएस को जब भी नरसंहार की सजा मिले तो मैं, हाजी सलमान को, सलवान की तरह, ज़िंदा पकड़े जाना देखना चाहती हूँ। मैं उससे जेल में मिलने जाऊँगीय जहाँ चारों तरफ़ इराकी फौजी तथा बंदूकधारी पहरेदार होंगे। मैं देखना चाहती हूँ कि वह उस समय कैसा नज़र आएगा और आईएसआईएस की ताक़त के बिना वह मुझसे कैसे बात करेगा। मैं चाहती हूँ कि वह मुझे

देखकर याद करे कि उसने मेरे साथ क्या किया और यह समझे कि वह फिर कभी आज़ाद नहीं हो पाएगा।

मैं सामान लेकर ड्राइवर के साथ बाहर चली गई। हाजी सलमान घर में ही था, लेकिन मैं निकली तो वह मुझे नज़र नहीं आया। मैं मुर्तजा और दूसरे पहरेदार को भी देखना नहीं चाहती थी। हाजी सलमान के घर से हम निकले तो अंधेरा होने वाला था। बाहर गर्मी थी और हल्की हवा चल रही थी। हालाँकि बाहर भी मुझे आज़ाद होने जैसा अहसास नहीं हुआ, क्योंकि मुझे पता था कि मोसुल में कोई मेरी सहायता नहीं कर सकता। यह सोचकर मुझे बहुत निराशा हो रही थी।

एक नया पहरेदार सफ़ेद गाड़ी में ड्राइवर के साथ आगे बैठा था। "क्या तुम्हें भूख लगी है?" उसने मुझसे पूछा। मैंने सिर हिलाकर मना कर दिया। फिर भी उन्होंने रास्ते में एक रेस्तरां के सामने गाड़ी रोकी। फिर ड्राइवर अंदर गया और सैंडविच पैक करवाकर ले आया। उसने एक सैंडविच और एक पानी की बोतल पीछे उछाल दी। बाहर कुछ लोग टहल रहे थे, कुछ खाना खा रहे और फ़ोन पर बात कर रहे थे। काश! मैं गाड़ी का दरवाज़ा खोलकर उनके सामने आ पाती। काश! उन्हें मेरे बारे में पता लग जाता और वे मेरी मदद के लिए आ जाते। लेकिन मुझे पता था ऐसा कुछ नहीं होगा। सैंडविच में से मीट और प्याज की गंध आ रही थी। गाड़ी चल पड़ी। मैंने आँखें बंद कर लीं। मैं उल्टी रोकना चाह रही थी।

कुछ देर में हम मोसुल के बाहर पहले चेक-प्वाइंट पर पहुँच गए। वहाँ हथियार लिए आईएसआईएस के आतंकी खड़े थे। मैंने खिड़की से बाहर झाँका। मैं देखना चाहती थी क्या वे लोग सचमुच भागी हुई सबाया के फ़ोटो चिपकाते थे जैसा हाजी सलमान ने मुझसे कहा था। लेकिन बाहर अंधेरा था इसलिए मुझे कुछ नज़र नहीं आया। "तुम्हारी पत्नी ने नक़ाब क्यों नहीं पहना?" आतंकी ने ड्राइवर से पूछा।

"यह मेरी पत्नी नहीं है," उसने बोला। "यह सबाया है।"

"मुबारक हो!" आतंकी बोला और फिर हाथ हिलाकर हमें आगे जाने का रास्ता दे दिया।

पूरी तरह अंधेरा हो चुका था और हम मोसुल से पूर्वी दिशा की ओर हाईवे पर चल पड़े थे। रास्ते में कुछ गाड़ियाँ और ट्रक पीछे छूट गए। अंधकार में इराकी मैदान अनंत नज़र आ रहा था। मैं सोचने लगी कि जो लोग भागते होंगे, वे भागकर जाते कहाँ थे? मोसुल के चेक-प्वाइंट के आगे का रास्ता कैसे तय होता होगा? अगर मैं किसी तरह भाग भी जाऊँ तो इन मैदानों से निकलने में कौन मेरी सहायता करेगा? लोग यहाँ भागकर कहाँ जाएँगे? कोई प्यासा रहकर कितनी देर जीवित रह सकता है? जिन लोगों ने कोशिश की होगी, वे सचमुच बहादुर होंगे।

"वो देखो!" ड्राइवर ने आगे इशारा करते हुए कहा। "वह क्या चीज़ है?"

"यहाँ रुकना मत!" पहरेदार ने चेतावनी दी। "यह कोई विस्फोटक हो सकता है। तुम्हें पता है ना, यह सड़क ऐसे विस्फोटकों से भरी पड़ी है।"

"मुझे नहीं लगता," ड्राइवर ने कहा। फिर वह उस बक्से से लगभग दस फ़ीट की दूरी पर रुक गया। उस बक्से पर कुछ चित्र बने थे और कुछ लिखा हुआ था। गाड़ी के अंदर से देख पाना मुश्किल था। "मुझे लगता है यह किसी ट्रक से गिरा हुआ सामान है," वह ख़ुश होकर बोला। वह ग़रीब ड्राइवर था और उसे आईएसआईएस से कुछ नहीं मिलता था; इसलिए वह उसे पाकर ख़ुश हो गया।

पहरेदार लगातार उसका विरोध करता और बोलता रहा, "इतनी अच्छी चीज़ कोई सड़क पर छोड़कर नहीं जाएगा। अगर यह इसमें विस्फोट हो गया, तो हम सब मारे जाएँगे," उसने कहा। ड्राइवर गाड़ी से उतरा और बक्से की ओर चल पड़ा। वह झुका और बिना छुए उसे देखने लगा। "यह जो कुछ भी है, लेकिन बेकार है," पहरेदार ने कहा। मैं सोचने लगी यदि ड्राइवर ने लालच में डिब्बा खोला और उसमें रखा बम फट गया, तो हम सब इस रेगिस्तान में मारे जाएँगे। मुझे अपनी बिलकुल चिंता नहीं थी। *मैं प्रार्थना कर रही थी कि उसमें सचमुच बम हो!*

एक मिनट बाद ड्राइवर उस बक्से को उठा लाया। वह बहुत ख़ुश नज़र आ रहा था। "इसमें पंखे हैं!" वह बोला। फिर उसने बक्से को सँभालकर रख लिया। "इसमें दो पंखे हैं और बैटरी से चलते हैं।"

उसने पहरेदार की मदद से बक्सा गाड़ी में रख लिया। मैं निराश होकर सीट पर बैठी रही। हम दूसरे चेक-प्वाइंट पर पहुँचे, तो मैंने ड्राइवर से पूछा, "हम कहाँ जा रहे हैं?"

"हमदानिया!" उसने कहा। हमदानिया शायद निनवेह नाम की जगह के उत्तर में स्थित एक जिला था, जिस पर आईएसआईएस ने क़ब्ज़ा कर लिया था। मेरा सौतेला भाई खालिद, वहीं पर सेना में काम करता था। उसने मुझे ज़्यादा तो नहीं बताया, लेकिन मुझे इतना पता था कि वहाँ ईसाइयों की जनसंख्या काफ़ी थी, जो अब तक उस जगह को छोड़कर चले गए होंगे या उन्हें मार दिया गया होगा। हमें रास्ते में एक जला हुआ आईएसआईएस का वाहन गिरा मिला। वह सबूत था कि उस इलाक़े को क़ब्ज़े में लेने के लिए अवश्य संघर्ष हुआ होगा।

आईएसआईएस ने कोचो में जब घेराबंदी की तो हमने उनके द्वारा ईसाई गाँव पर हुए हमलों को देखा था। हमारी तरह उन गाँव वालों ने भी अपना सब कुछ खो दिया। उनके जीवन-भर की कमाई से बनाए मकान नष्ट हो गए। इराकी ईसाइयों को भी उनके धर्म के कारण घरों से निकाला गया। इराक में रहने वाले ईसाइयों पर अक्सर हमले होते थे और यज़ीदियों की तरह उन्हें भी वहाँ रहने के लिए लड़ना पड़ता था। पिछले कुछ वर्षों में उनकी जनसंख्या काफ़ी घट गई थी, क्योंकि कई लोग घर छोड़कर ऐसे देशों में चले गए थे, जहाँ उनके रहने के लिए वातावरण बेहतर था। आईएसआईएस के आने के बाद लोगों का मानना था कि जल्द ही इराक में एक भी ईसाई बाक़ी नहीं रहेगा। वे अपने बच्चों को कुर्दिस्तान और सीरिया सुरक्षित ले गए और उन्होंने धर्म-परिवर्तन करने के बजाय जुर्माना भर दिया। यहाँ तक कि वे लोग, जिन्हें मोसुल से निकाल दिया गया था, ग़ुलाम बनने से बच गए थे। यज़ीदियों को यह मौक़ा भी नहीं मिल पाया।

हम लोग कुछ समय में हमदानिया पहुँच गए। वह शहर, बिजली के बिना अंधेरे में डूबा हुआ था। वहाँ जानवरों का मांस सड़ने की दुर्गंध आ रही थी। गलियों में सन्नाटा था और लोग घरों से जा चुके थे। वहाँ केवल आतंकी बचे थे। आईएसआईएस का मुख्यालय रोशन था, क्योंकि वहाँ एक जनरेटर चलता था।

आईएसआईएस वालों ने वादा किया था कि वे, शहरों में उन सेवाओं को स्थापित करेंगे जो उपलब्ध नहीं थीं। उनका प्रचार इन्हीं वादों पर टिका था। वह बिजली, साफ़-सफ़ाई रखने और अच्छी सड़कें बनाने का वादा करते थे, मानो जैसे उनकी एक राजनीतिक पार्टी हो। हमें कहा गया कि लोग उन पर विश्वास करते हैं। हमें भी लगा कि वे इराकी सरकार से बेहतर प्रशासन चला पाएँगे। लेकिन मुझे मोसुल में ऐसा कुछ देखने को नहीं मिला, जिससे मुझे लगता कि वहाँ के आम इंसान की ज़िंदगी पहले से बेहतर हुई होगी। पूरा शहर अंधकार में डूबा हुआ था और वहाँ मौत की दुर्गंध थी। वहाँ केवल आतंकवादी बसते थे, जिन्होंने लोगों से खोखले वादे किए थे।

हम आईएसआईएस के मुख्यालय के भीतर चले गए। मोसुल की भाँति यह स्थान भी आतंकवादियों से भरा हुआ था। मैं चुपचाप बैठ गई और अगले आदेश की प्रतीक्षा करने लगी। मुझे नींद आ रही थी। तभी एक बूढ़ा आतंकी अंदर आया। वह क़द में छोटा था और उसकी कमर झुकी हुई थी। उसके मुँह में कुछ ही दाँत थे। "ऊपर जाओ!" उसने मुझसे कहा। मैं डर गई मुझे लगा हाजी सलमान ने मुझे इस बूढ़े आदमी को बेच दिया था और वह कमरे में ले जाकर मेरे साथ बलात्कार करना चाहता था। मैं दरवाज़ा खोलकर अंदर पहुँची तो मैंने देखा कि वहाँ और भी कुछ लड़कियाँ थीं। मुझे उन्हें पहचानने में कुछ समय लगा।

जीलन, नसरीन मेरी भाभी और मेरी भतीजी भी वहाँ मौजूद थे। मुझे किसी से मिलकर जिंदगी में इतनी ख़ुशी पहले नहीं हुई। हम एक-दूसरे के गले लगकर रोने लगे। उन्होंने भी मेरी जैसी पोशाक पहनी थी और उन्हें देखकर लगता था कि वे कई सप्ताह से सोई नहीं थी। नसरीन की उम्र बहुत कम थी। मुझे नहीं पता कि वह सबाया

बनकर कैसे ज़िंदा थी। जीलन भी अपने पति से अलग हो गई थी। मुझे लगा कि मेरी तुलना में उसके लिए बलात्कार और भी मुश्किल समय रहा होगा। हमें किसी भी क्षण कहीं और ले जाया जा सकता था। हम बैठकर एक-दूसरे को अपनी-अपनी आपबीती सुनाने लगे।

"तुम यहाँ कैसे आईं?" मैंने उनसे पूछा।

"उन्होंने हमें बेच दिया," नसरीन ने बताया। "मुझे मोसुल में दो बार बेचने के बाद अब यहाँ लाया गया है।"

"कैथरीन का क्या हुआ?" नसरीन ने मुझसे पूछा।

"वह मोसुल केंद्र में है," मैंने उसको बताया।

मैंने उन्हें वह भी बताया जो मुझे वला के बारे में लमिया से पता लगा था। मैंने उन्हें अपने बारे में बताया। "मैं एक भयानक आदमी के साथ रही हूँ," मैंने कहा। "मैंने भागने की कोशिश की थी, लेकिन उसने मुझे पकड़ लिया।" हम एक-दूसरे के पास बैठे थे। "मुझे लगता है इस बूढ़े ने मुझे ख़रीद लिया है," मैंने कहा।

"नहीं," नसरीन बोली, "इसने मुझे ख़रीदा है।"

"यह बूढ़ा तुम्हारे पास आता है तो तुम कैसे बर्दाश्त करती हो?" मैंने नसरीन से पूछा।

नसरीन ने सिर हिला दिया। "मैं अपने बारे में नहीं सोचती," वह बोली। "रोजियान को एक आदमी द्वारा ले जाए जाने के बाद क्या होगा? उसके जाने के बाद हम बहुत परेशान हुए। हमने एक बार भी यह नहीं सोचा कि कोचो में क्या हुआ होगा। हम केवल यही सोचते रहे कि रोजियान, उस राक्षस के साथ क्या करेगी।"

"कोचो में क्या हुआ?" मैंने डरते हुए पूछा। "क्या तुम्हें कुछ पता है?"

"मैंने टेलीविज़न पर देखा था कि उन्होंने सभी पुरुषों को मार डाला," नसरीन ने कहा। "उन्होंने किसी को नहीं छोड़ा। समाचार में यही दिखा रहे थे।"

मैंने भी स्कूल के पिछले हिस्से में गोलियों की आवाज़ सुनी थी। मुझे उम्मीद थी कि कुछ लोग बच गए होंगे। परंतु नसरीन ने जब पुष्टि

की तो उन गोलियों की आवाज़ फिर से कानों में गूँजने लगी। हम एक-दूसरे को सांत्वना देने का प्रयास कर रहे थे।

"वे मर चुके हैं। उनके लिए रोने का कोई लाभ नहीं है," मैंने कहा। "काश! हम भी उनके साथ मारे जाते।"

सामान की तरह इधर से उधर बिकने से बेहतर मर जाना था। लगातार हो रहे बलात्कार से हमारा शरीर चिथड़ा हो गया था। हमारे परिवार में विद्यार्थी, डॉक्टर, बूढ़े और जवान सब तरह के लोग थे। कोचो में मेरे भाई और सौतेले भाई साथ रहते थे, लेकिन आईएसआईएस ने अधिकतर को मार डाला था। उनकी मौत एक क्षण में हो गई, परंतु हम लोग प्रतिदिन मरते थे। जब आप सबाया बन जाती हैं तो आपको हर पल मरना होता है। पुरुषों की तरह हमें हमारे परिजनों या घरों को कभी देखने नहीं दिया जाता। जीलन और नसरीन मेरी बात से सहमत थीं। "हमारी इच्छा थी कि जब पुरुषों को मारा जा रहा था तो हम उनके साथ होते," उन्होंने कहा।

नसरीन को जिसने ख़रीदा था, वह सड़े दाँत वाला आतंकी आया। उसने दरवाज़े से मेरी ओर इशारा किया और कहा, "चलने का समय हो गया है।" हमने उससे एक-साथ रखे जाने की गुज़ारिश की, लेकिन उसने हमें खींचकर अलग कर दिया। फिर वह मुझे घसीटता हुए सीढ़ियों से नीचे ले गया। मैं अपनी बहनों को अलविदा भी नहीं कह सकी।

हमदानिया आकर मेरी उम्मीदें टूट गईं। वह स्थान पूरी तरह आईएसआईएस के क़ब्ज़े में था। वहाँ से भागने का कोई रास्ता नहीं था। मुझे यह भी उम्मीद नहीं थी कि सड़क पर चलते हुए कोई व्यक्ति एक यज़ीदी लड़की को कष्ट में देखकर उसकी मदद करेगा। वहाँ ख़ाली घरों और लड़ाई की दुर्गंध के अलावा कुछ नहीं था।

लगभग 15 मिनट बाद हम हमदानिया के एक अन्य केंद्र पर पहुँच गए। मुझे यह सोचकर चक्कर आने लगे कि यहाँ से मुझे दूसरे मालिक के पास जाना पड़ेगा। मैं गाड़ी से उतरकर धीरे-धीरे चल रही थी। ऐसा लगा मानो मेरा शरीर सीमेंट से बना था। इस केंद्र में दो घर थे और हमारी गाड़ी वहाँ रुकी तो एक गाड़ी से एक अधेड़ आदमी

निकला। उसकी लंबी काली दाढ़ी थी और उसने आईएसआईएस की काली पतलून पहनी थी। ड्राइवर ने मुझे उसके साथ अंदर जाने को कहा। "इसका नाम अबू मुवाया है," उसने बताया। "जैसा यह कहे वैसा करना।"

वह एक मंज़िला घर था लेकिन वह बहुत साफ़ और सुंदर था। वह किसी अमीर ईसाई परिवार का घर था। वहाँ कोई और लड़की नहीं थी, लेकिन चारों तरफ़ यज़ीदियों के कपड़े बिखरे थे। कुछ भड़कीली पोशाकें भी पड़ी थीं। उस घर में मकबरे जैसा अहसास हो रहा था। फिर एक और आदमी आया। उसकी उम्र कुछ कम थी। वे रसोई में ब्रेड और दही खाने लगे और फिर उन्होंने काली चाय पी।

"मुझे यहाँ कितने दिन रहना है?" मैंने उनसे पूछा। "दूसरे केंद्र में मेरे परिवार के कुछ सदस्य हैं। क्या मैं उनके साथ रह सकती हूँ?"

उन्होंने मेरी ओर ध्यान नहीं दिया। अबू मुवाया ने बिना मेरी ओर देखे कहा, "तुम सबाया हो। तुम्हें आदेश देने का अधिकार नहीं है। तुम्हें आदेश लेना है।"

"नादिया! क्या तुमने धर्म परिवर्तन किया है?" दूसरे आदमी ने पूछा।

"हाँ," मैंने उत्तर दिया। मुझे हैरानी हुई कि उन्हें मेरा नाम कैसे पता था। वह मेरे बारे में पता नहीं और क्या जानते थे। उन्होंने मुझसे कुछ नहीं पूछा कि मैं कहाँ से आई हूँ और मेरे परिवार के साथ क्या हुआ। यह बातें उनके लिए मायने भी नहीं रखती थीं। उन्हें सिर्फ़ इस बात से मतलब था कि मैं उनके साथ थी और वह मुझे अपनी संपत्ति मान सकते थे।

"तुम नहा लो," अबू मुवाया ने कहा। मुझे नहीं पता हाजी सलमान ने मुझे कितने में बेचा। जो सबाया कुँवारी नहीं थी, उसे कम पैसों में बेचा जाता था। मुझे यह बात पता थी और मैं लोगों को परेशान करने के लिए भी बदनाम थी। बस में हुआ झगड़ा और मेरे भागने की कोशिश के बारे में सबको पता था। क्या यह मेरी उसी कोशिश की सज़ा थी?

सलमान मुझसे पीछा छुड़ाना चाहता था। इसीलिए उसने मुझे मुफ़्त में किसी को दे दिया या शायद उसने मुझे सबसे क्रूर आतंकी को सौंपा होगा। मुझे पता है कि यज़ीदी लड़कियों को मुफ़्त में एक आतंकी से दूसरे आतंकी को सौंप दिया जाता था।

"मैं आज ही सुबह नहाई थी," मैंने बताया।

"तो जाओ और कमरे में मेरा इंतज़ार करो," उसने बेडरूम की तरफ़ इशारा करते हुए कहा। मैं चुपचाप कमरे में चली गई। वह एक छोटा-सा कमरा था, जिसमें एक बिस्तर था। उस पर नीली-सफ़ेद धारियों वाला एक कंबल पड़ा था। दीवार के साथ लगी दो शेल्फ़ों में जूते भरे थे और एक शेल्फ़ में किताबें थीं। एक टेबल पर पुराना कंप्यूटर रखा था। शायद वह किसी विद्यार्थी का कमरा था। वह लड़का मेरी उम्र का रहा होगा। उसके जूते कॉलेज के लड़कों जैसे थे। मैं बिस्तर पर बैठकर इंतज़ार करने लगी। सामने एक बड़ा-सा शीशा था, लेकिन मेरा उसे देखने का मन नहीं हुआ। मुझे कमरे में रखी अलमारी की चीज़ें भी देखने की इच्छा नहीं हुई। मैंने शेल्फ़ में रखी किताबों को भी नहीं देखा। हो सकता है वह लड़का ज़िंदा हो। किसी मरे हुए इंसान का एक ज़िंदा इंसान की चीज़ों को देखना अच्छी बात नहीं है!

11

आईएसआईएस के हर सदस्य ने मेरे साथ दुर्व्यवहार किया। मेरा हर बार एक ही ढंग से बलात्कार किया जाता था। जिन आदमियों ने मेरा शोषण किया, मुझे उनकी कुछ बातें याद हैं। हाजी सलमान बहुत बुरा था, क्योंकि उसने सबसे पहले मेरे साथ बलात्कार किया। मैं आँखें बंद करती तो वह मुझे मारता था। वह सिर्फ़ बलात्कार ही नहीं करता, बल्कि मुझे अपमानित भी करता था। वह अपने पैरों की अँगुलियों पर शहद लगाता और फिर मुझे उसे चाटने को कहता था। वह कई बार मुझे मजबूर करता कि मैं उसे कपड़े पहनाऊँ। मुर्तजा का व्यवहार बच्चों जैसा था। वह मेरा बलात्कार करने आता तो ऐसे करता मानो रोने के बाद बच्चे को जश्न मनाने का मौक़ा मिल गया हो। मैं उस पहरेदार को भी नहीं भूली, जिसने बलात्कार करने से पहले अपना चश्मा उतारकर टेबल पर रखा था। उसे अपने चश्मे की ज़्यादा फ़िक्र थी।

रात को आठ बजे अबू मुवाया मेरे पास आया तो उसने मेरा जबड़ा पकड़ा और मुझे दीवार के साथ सटा दिया। "तुम इतना विरोध क्यों करती हो?" उसने पूछा। मुझे बहुत ग़ुस्सा आ रहा था। घर में यज़ीदी कपड़ों को देखकर लगता था कि पहले कई सबाया वहाँ रह चुकी थीं। शायद मेरे अलावा सबने उसका विरोध किया था। उसे यह साबित करने में मज़ा आता था कि विरोध के बावजूद उसका हम पर अधिकार था। उसका क़द छोटा था, लेकिन वह ताक़तवर था। "इसका क्या फ़ायदा?" मैंने कहा। "यह किसी एक आदमी या दो

या तीन की बात नहीं है। तुम सब एक जैसे हो। सब यही करते हो। मैं कब तक तुम्हारा विरोध करूँगी?" मेरी बात सुन कर वह हँस पड़ा।

अबू मुवाया के जाने के बाद मैं अकेली सोई। रात को मेरी नींद खुली तो बिस्तर पर मेरे पीछे कोई था। यह वही आदमी था जो अबू मुवाया के साथ ब्रेड और दही खा रहा था। मुझे उसका नाम याद नहीं है। मुझे बहुत तेज़ प्यास लगी थी। मैं पानी पीने उठी तो उसने मेरा हाथ पकड़ लिया। "मुझे प्यास लगी है," मैंने कहा। हाजी सलमान के घर हुई घटना के बाद मेरे मन से आईएसआईएस और बलात्कार दोनों का डर निकल चुका था। मुझे कुछ महसूस नहीं होता था। मैंने उस आदमी से यह नहीं पूछा कि वह मेरे कमरे में क्या कर रहा था। मैंने उसे रोकने की कोशिश भी नहीं की।

एक समय यह स्थिति थी कि मेरी ज़िंदगी में बलात्कार के अलावा और कुछ नहीं था। मुझे पता नहीं कौन मेरे कमरे में घुसने वाला अगला हमलावर होगा। कोई भी आता और कुछ भी करके चला जाता था। अगला दिन उससे भी बुरा हो सकता था। आप अपने परिवार से मिलने के बारे में सोचना छोड़ देते हैं। आपका अतीत एक पुरानी याद बनकर रह जाता है। वह एक सपना हो जाता है। आपका शरीर भी आपका नहीं रहता। बाहर की दुनिया के बारे में सोचने या उससे लड़ने या किसी से बात करने की ताक़त बाक़ी नहीं रहती। जीवन में केवल बलात्कार रह जाता है और उसके साथ आने वाली निर्जीवता स्वीकार करनी पड़ती है। बस, यही जीवन बन जाता है।

कुछ ऐसे क्षण होते हैं, जब लगता है कि हृदय फट जाएगा और सबकुछ बाहर निकल आएगा। आप परिवार और दोस्तों के साथ रहना चाहते हैं। आप इतना रोते हैं कि आँखों की रोशनी चली जाती है। आप कम-से-कम कुछ कर सकते हैं। परंतु इस तरह की गहन निराशा मौत के बराबर होती है।

अबू मुवाया का दोस्त नाराज़ हो गया था; जब मैंने उसे ख़ुद से दूर किया। मैंने अपनी आँखें खोली तो मैंने देखा कि मेरा एक पैर उसके पैर के ऊपर था। मैं बचपन से ही इस तरह सोती थी। मैं घर पर जिसके साथ भी सोती, उस पर एक पैर रख देती थी। लेकिन मैंने उस

आतंकी के साथ भी यही किया तो मुझे विश्वास नहीं हुआ। वह हँस रहा था। उसने मुझसे पूछा, "तुमने पैर क्यों हटाया?" यह सुनकर मुझे खुद से नफ़रत हो रही थी। मुझे यह चिंता थी कि वह यह नहीं समझ बैठे कि मुझे उसके साथ अच्छा महसूस हुआ। "मुझे किसी के साथ सोने की आदत नहीं है," मैंने जवाब दिया। "मैं आराम करना चाहती हूँ।" उसने फ़ोन में टाइम देखा और फिर नहाने चला गया।

अबू मुवाया ने दरी पर नाश्ता रख दिया और मुझे खाने को कहा। ये वही दोनों लोग थे, जिन्होंने मेरे साथ रात को बलात्कार किया था। अब मुझे उन्हीं के साथ बैठकर खाने को कहा जा रहा था। लेकिन मुझे तेज़ भूख लगी थी। मैं नाश्ते पर टूट पड़ी। मैंने सलमान का घर छोड़ने के बाद से कुछ नहीं खाया था। खाना अच्छा था। उसमें शहद, ब्रेड, अंडे और दही था। मैंने नाश्ता कर लिया और इस बीच दोनों आदमी बातचीत करते रहे। वे बात कर रहे थे कि उन्हें जनरेटर का डीजल कहाँ से लेना है और कौन, किस केंद्र पर जाएगा। मैंने उनकी ओर नहीं देखा। नाश्ता ख़त्म करने के बाद अबू मुवाया ने मुझसे नहाकर अबाया पहनने को कहा। "हम यहाँ से थोड़ी देर में निकल जाएँगे," वह बोला।

मैं नहाकर लौटी तो मैंने पहली बार ख़ुद को शीशे में देखा। मेरा चेहरा पीला और कमज़ोर पड़ चुका था। मेरे बाल, जो पहले कमर तक लंबे हुआ करते थे, उलझकर घुंघराले हो गए थे। मेरे पास अब ऐसा कुछ नहीं था, जिससे मुझे याद आता कि मैं पहले कितनी सुंदर थी। मैंने दराज में कैंची ढूँढ़ी ताकि बाल काट सकूँ, लेकिन वहाँ कैंची नहीं थी। कमरे में बहुत गर्मी थी। मुझे लगा मेरे सिर पर आग जल रही थी। अचानक दरवाज़ा खुला और एक आदमी अंदर आया। उसने मुझे नीली पोशाक दी और उसे पहनने को कहा। मैंने उसे अपनी एक यज़ीदी पोशाक दिखाते हुए पूछा कि क्या मैं अपनी पसंद के कपड़े पहन सकती हूँ, लेकिन उसने मना कर दिया।

वह मुझे कपड़े बदलने तक देखता रहा। फिर वह मेरे पास आया। उसने मुझे सब जगह छुआ और फिर अपनी नाक बंद करके

बोला, "तुम्हारे भीतर से बदबू आती है। क्या तुम नहाकर नहीं आई? क्या सब यज़ीदी लड़कियों से ऐसी ही दुर्गंध आती है?"

"मेरे शरीर की गंध ही ऐसी है," मैंने कहा। "मुझे तुम्हारी पसंद-नापसंद की परवाह ही नहीं है!"

घर से निकलते समय मुझे एक छोटी-सी प्लास्टिक की डिस्क नज़र आई। वह शायद मोबाइल फ़ोन का मेमोरी कार्ड था जो मेज पर अबू मुवाया के फ़ोन के पास रखा था। मैं सोचने लगी उसमें क्या हो सकता है? सबाया की तसवीरें? मेरी तसवीरें? इराक के लिए कोई योजना? मैं कोचो में लोगों के मेमोरी कार्ड खैरी के फ़ोन में डालकर देखती थी। मेमोरी कार्ड से लोगों के बारे में बहुत कुछ पता लगता है। एक पल के लिए मेरा मन हुआ कि मैं अबू मुवाया का मेमोरी कार्ड चुरा लूँ। शायद उसमें कुछ ऐसे रहस्य हों, जिनसे हेज़्नी को मुझे ढूँढ़ने में या इराकी सेना को मोसुल पर फिर से क़ब्ज़ा करने में मदद मिल जाए। शायद उसमें आईएसआईएस के अपराधों के सबूत मौजूद हों। लेकिन मैंने वह कार्ड छोड़ दिया। मैं निराश हो चुकी थी। मुझे किसी बदलाव की उम्मीद नहीं थी। मैं चुपचाप उन आदमियों के साथ बाहर चली गई।

बाहर एक एंबुलेंस के आकार की वैन खड़ी थी। ड्राइवर दरवाज़े के पास इंतज़ार कर रहा था। वह मोसुल की ओर से आया था। वह अबू मुवाया को बता रहा था कि उन शहरों में आतंकी कैसा काम कर रहे थे। "हमें दोनों जगहों पर भरपूर समर्थन मिल रहा है," उसने कहा। अबू मुवाया ने हामी भरी। फिर उसने वैन का दरवाज़ा खोला और तीन औरतें बाहर निकलीं।

मेरी तरह तीनों औरतों ने अबाया और नक़ाब पहना था। वे तीनों वैन से निकलकर एक साथ खड़ी हो गईं। उनमें से एक औरत, बाक़ी दो से अधिक लंबी थी। उन दोनों ने लंबी औरत के अबाया को इस तरह पकड़ रखा था मानो वह उसके अंदर समा जाना चाहती थीं। हमदानिया के कम्पाउंड में आने के बाद उन्होंने वैन से बाहर निकलकर दाएँ-बाएँ देखा। उनकी आँखें, नक़ाब में से बाहर झाँक रही थीं। उनमें डर था। अबू मुवाया उन्हें बहुत ध्यान से देख रहा था।

उस लंबी औरत के साथ सबसे छोटी लड़की शायद दस साल की थी। मुझे लगा कि वह औरत उन दोनों बच्चियों की माँ थी। आईएसआईएस के नियमों के अनुसार (दास) माँओं को बेचते-ख़रीदते समय बच्चों से अलग नहीं किया जाता था। माँएँ, बच्चों के साथ ही रहती थीं। बच्चों को "बड़ा होने के बाद" अलग कर दिया जाता था। फिर आईएसआईएस वाले उनके साथ अपनी इच्छा से व्यवहार करते थे।

तीनों वैन से निकलकर छोटे-से घर की ओर चल पड़ींय जहाँ मैंने रात बिताई थी। दोनों लड़कियाँ, अपनी माँ के साथ ऐसे ही चल रही थी, जैसे मुर्गी के बच्चे माँ के साथ चिपककर चलते हैं। क्या उनके साथ मेरी अदला-बदली की गई थी? मैंने नज़दीक से निकलते समय उनकी ओर देखा, लेकिन वे सामने देख रहे थे। फिर सब उस छोटे से घर में गुम हो गए और दरवाज़ा बंद हो गया। हमारे साथ जो हो रहा था, वह सब अपनी माँ या बहनों और बच्चों के साथ होते देखना बहुत भयावह होता होगा। फिर भी मुझे उनसे ईर्ष्या हो रही थी। वे क़िस्मत वाले थे, क्योंकि आईएसआईएस अक्सर अपने नियम तोड़ता था और माँओं को बच्चों से अलग-थलग कर देता था। अकेला रहना बहुत बुरा लगता है।

अबू मुवाया ने ड्राइवर को कुछ इराकी दीनार दिए। फिर हम लोग हमदानिया से बाहर निकल गए। मैंने ड्राइवर से यह नहीं पूछा कि हम कहाँ जा रहे थे। मेरे अंदर की निराशा ने मुझे पूरी तरह ढँक लिया था। वह मेरे अबाया से भी ज़्यादा भारी, अंधकारपूर्ण और धुंधली हो चुकी थी। गाड़ी के ड्राइवर ने मोसुल प्रदेश का लोकप्रिय धार्मिक संगीत चालू कर दिया। मुझे गाड़ी की आवाज़ से चक्कर आ रहे थे। "कृपया गाड़ी रोक दो," मैंने अबू मुवाया से कहा। "मुझे उल्टी आ रही है।"

गाड़ी एक हाईवे पर रुक गई। मैंने दरवाज़ा खोला और नक़ाब उठाकर उल्टी कर दी। सुबह जो खाया था, सब निकल गया। पास से गाड़ियाँ गुज़र रही थी। मुझे पेट्रोल की बदबू और धूल से फिर उल्टी आने लगी। अबू मुवाया बाहर निकला और कुछ दूरी से खड़ा

मुझे देखता रहा। उसका ध्यान इस बात पर ज़्यादा था कि मैं खेत या ट्रैफ़िक में भाग नहीं जाऊँ!

हमदानिया और मोसुल को जोड़ने वाली सड़क पर एक बड़ा-सा चेक-प्वाइंट है। इराक में आईएसआईएस के आने से पहले वहाँ इराकी सेना तैनात थी, जो अल कायदा से जुड़े आतंकियों की आवाज़ाही पर नज़र रखती थी। लेकिन अब वह चेक-प्वाइंट आईएसआईएस के नियंत्रण में था। आप कह सकते हैं कि इराक चेक-प्वाइंट से भरा देश है। मोसुल तथा हमदानिया के बीच बना यह चेक-प्वाइंट एक जगह है, जहाँ आतंकियों का काला-सफ़ेद झंडा लहराता है।

कुर्दिस्तान में बने चेक-प्वाइंट पर कुर्द सरकार के पीले, लाल और हरे झंडे लहराते हैं। वहाँ पेशमेरगा तैनात रहते हैं। इराक की शेष जगहों पर बने चेक-प्वाइंट पर काले, लाल, सफ़ेद और हरे इराकी झंडे लगे रहते हैं, जिनसे पता लगता है कि आप केंद्र सरकार द्वारा नियंत्रित सीमा में हैं। हमें ईरान से जोड़ने वाले उत्तरी इराकी पहाड़ों और सिंजर के कुछ इलाक़ों पर वाईपीजी चेक-प्वाइंट के ऊपर अपने झंडे फहराता है। ऐसे में बगदाद या अमेरिका कैसे कह सकता है कि इराक अखंड देश है? अगर आपने हमारी सड़कों पर यात्रा की है, चेक-प्वाइंट पर लंबी कतारों में इंतज़ार किया है और केवल आपकी लाइसेंस प्लेट पर लिखे शहर के नाम पर आपसे सवाल किए जाते हैं, तो आपको मानना पड़ेगा कि इराक सैकड़ों टुकड़ों में बँटा हुआ है!

सुबह के साढ़े ग्यारह बजे हम एक चेक-प्वाइंट पर रुके। "नादिया, बाहर निकलो!" अबू मुवाया ने मुझसे कहा। "अंदर चली जाओ।" मैं एक छोटी-सी इमारत में चली गई। मेरा सिर घूम रहा था और उल्टी आने से मुझे कमज़ोरी महसूस हो रही थी। उन्हें कुछ जाँच करनी थी। इस बीच मैंने इंतज़ार किया और मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि मुझे वहाँ अकेला छोड़कर वह वैन, चेक-प्वाइंट से आगे मोसुल की सड़क पर चली गई।

उस इमारत में तीन कमरे थे। एक मुख्य कमरा था, जहाँ एक आतंकी काग़ज़ लेकर बैठा था। इसके साथ दो छोटे कमरे थे। दोनों

में से एक का दरवाज़ा खुला था। मैंने देखा अंदर एक बिस्तर लगा था। दो लड़कियाँ अरबी में बात कर रही थीं। *"सलाम वालेकुम!"* आतंकी ने मुझसे कहा। मैं उन लड़कियों के पास जाने लगी। लेकिन उसने मुझे रोक दिया और कहा, "तुम्हें दूसरे कमरे में जाना है।" मेरा दिल बैठ गया। मुझे वहाँ अकेला रहना होगा।

दूसरा कमरा बिलकुल साफ़ था। ऐसा लग रहा था, जैसे उसे हाल ही में पेंट किया गया था। एक कोने में टीवी रखा था और नमाज़ के लिए नीचे चटाई रखी थी। टीवी के पास प्लेट में कुछ फल रखे थे। मैंने कूलर से पानी पिया और मैं चटाई पर बैठ गई। मेरा सिर घूम रहा था।

रास्ते में मुझे एक और आतंकी मिला। वह कम उम्र का दुबला-पतला लड़का था। "सबाया तुम्हारा नाम क्या है?" उसने पूछा।

"नादिया!" मैंने जवाब दिया। मेरे सिर में दर्द हो रहा था।

"क्या तुम्हें यह जगह पसंद है?" उसने मुझसे पूछा।

"क्यों? क्या मैं यहाँ रहने वाली हूँ?" मैंने पूछा। मेरे दिमाग़ में यह सवाल उठ खड़ा हुआ।

"तुम यहाँ ज़्यादा समय नहीं रहोगी," उसने कहा और फिर चला गया।

मुझे ज़ोर से चक्कर आ रहे थे। फिर मुझे खाँसी उठी। मुझे डर था कि अगर मुझे उल्टी आई तो फिर एक नई मुसीबत खड़ी हो जाएगी।

तभी किसी ने दरवाज़ा खटखटाया। "क्या तुम ठीक हो?" उस दुबले लड़के ने कमरे के बाहर से पूछा।

"मुझे उल्टी आ रही है," मैंने कहा। "यहीं कर दूँ?"

"नहीं! नहीं!" वह बोला। "यह मेरा कमरा है। मैं यहाँ इबादत करता हूँ।"

"मुझे बाथरूम में जाने दो," मैंने कहा। "मुझे मुँह धोना है।"

"नहीं! तुम रुक जाओ," वह बोला। उसने दरवाज़ा भी नहीं खोला। "तुम ठीक हो। थोड़ा इंतज़ार करो।"

वह कुछ देर बाद लौटा तो उसके हाथ में एक कप था, उसमें कुछ गर्म चीज़ थी। "इसे पी लो," उसने कहा। "तुम्हें इससे आराम मिलेगा।" वह औषधियों से बना हरे रंग का पानी था।

"मुझे चाय पसंद नहीं है," मैंने कहा।

"यह चाय नहीं है," वह बोला। "इससे तुम्हारा सिर-दर्द ठीक हो जाएगा।" फिर वह मेरे सामने गद्दे पर बैठ गया और मुझे उसे पीने का तरीक़ा समझाने लगा।

मैं डर गई। मुझे लगा उसी आदमी ने मुझे ख़रीदा था। मुझे डर था कि वह किसी भी क्षण अपने हाथ मेरी छाती पर रख देगा। वह मेरा दर्द भी इसीलिए ठीक करना चाहता था, ताकि फिर बलात्कार कर सके।

मेरे हाथ काँप रहे थे। मैंने कुछ घूँट पी लिए। फिर उसने वह कप मेरे हाथ से ले लिया और ज़मीन पर रख दिया।

मैं रोने लगी। "मैं आज सुबह आई हूँ। मेरा सिर दुख रहा है। मेरी तबीयत सचमुच ठीक नहीं है," मैंने कहा।

"तुम ठीक हो जाओगी," वह बोला। "तुम बिलकुल ठीक हो जाओगी।" फिर वह मेरे कपड़े उतारने लगा। कमरे में इतनी गर्मी थी कि मैंने अबाया ख़ुद ही उतार दिया था। मैंने नीचे अबू मुवाया के दोस्त द्वारा दी नीली पोशाक पहनी थी। मैंने उस लड़के को रोकने की कोशिश की तो वह ग़ुस्से में मुझे मारने लगा।

उसने कहा, "मैंने बोला ना कि तुम ठीक हो जाओगी।" इस बार यह धमकी जैसा सुनाई दे रहा था। मैंने आधे कपड़े पहने हुए थे। उसने उसी हालत में मेरे साथ बलात्कार कर दिया। वह सबकुछ तेज़ी से कर रहा था। उसका काम ख़त्म हो गया तो वह उठा अपने कपड़े ठीक करता हुआ बोला, "अभी आता हूँ। मैं देखता हूँ तुम यहाँ रुक सकती हो या नहीं।"

उसके जाने के बाद मैंने कपड़े पहन लिए। मुझे रोना आ रहा था। मैंने कप उठाया और उसमें भरा पानी पी लिया। पानी गर्म था। उसे पीकर सिरदर्द में थोड़ा आराम मिला। कुछ ही देर में वह लड़का लौट आया और ऐसे बात करने लगा मानो कुछ हुआ ही नहीं था।

मुझे यह समझ में आ गया था कि उस दुबले आतंकी या किसी और आदमी ने मुझे अभी नहीं ख़रीदा था। मैं ऐसी स्थिति में थी कि आईएसएस का कोई भी सदस्य कमरे में घुसकर मेरे साथ कुछ भी कर सकता था। उन्होंने मुझे कमरे में बंद रखा। वहाँ केवल एक गद्दा था और कुछ सड़े फल रखे थे। मुझे दरवाज़ा खुलने और किसी और आदमी के अंदर आने का इंतज़ार करना था। अब यही मेरा जीवन था!

मुझे अब भी चक्कर आ रहे थे। मैंने चलने की कोशिश की लेकिन कमरे में गोल-गोल घूमने के अलावा कोई दूसरा काम नहीं था। मैं कूलर से फलों की टोकरी और फिर गद्दे और टीवी के बीच घूमती रही। मैंने टीवी भी नहीं चलाया। मैं दीवार को छूकर उसके ताज़े पेंट को महसूस करने लगी। फिर मैंने अपनी पैंटी उतारकर देखी, लेकिन मासिक-धर्म शुरू नहीं हुआ था। मैं फिर गद्दे पर बैठ गई।

कुछ देर बाद एक और आतंकी अंदर आया। वह बहुत विशाल था और उसकी आवाज़ बहुत भारी थी। "क्या तुम बीमार हो?" उसने पूछा।

"मेरे अलावा यहाँ और कौन है?" मैंने पलटकर कहा।

"बेकार की बात मत करो!" वह बोला। "क्या तुम बीमार हो?" इस बार मैंने हामी भर दी।

वह अंदर आया और उसने दरवाज़ा बंद कर दिया। उसकी कमर में पिस्तौल लगी थी। मेरा मन हुआ कि मैं उसे छीनकर अपने सिर में गोली मार लूँ। मैं उससे कहना चाहती थी कि *मुझे मार दो।* फिर मुझे ख़याल आया कि अगर मैंने उससे बंदूक छीनी तो वह मुझे मौत से भी बुरी सज़ा देगा। मैंने कुछ नहीं किया।

नए आतंकी ने अंदर से दरवाज़ा बंद कर दिया। मैं फिर डरकर पीछे हट गई। मुझे चक्कर आने लगे और मैं ज़मीन पर गिर पड़ी। मैं बेहोश नहीं हुई थी, लेकिन बीमार थी। वह नज़दीक आया और मेरे पास बैठ गया। फिर वह बोला, "मुझे लगता है तुम डरी हुई हो।" उसकी आवाज़ में दया नहीं थी, बल्कि वह मेरा मज़ाक़ उड़ा रहा था।

"मेरी बात मानो, मैं सचमुच बीमार हूँ," मैंने कहा। मैंने यह बात उससे बार-बार कही, लेकिन उसने मुझे ज़बरदस्ती खींचकर गद्दे पर लिटा दिया।

फिर वह बोला, "क्या तुम्हें यह जगह पसंद है? तुम्हारे साथ जो बर्ताव हो रहा है, क्या यह तुम्हें अच्छा लग रहा है?"

"तुम सब मेरे साथ एक जैसा बर्ताव कर रहे हो," मैंने कहा। मेरा सिर घूम रहा था और मुझे कुछ नज़र नहीं आ रहा था। मैं चुपचाप लेटी रही। मेरी आँखें बंद थीं। मैं भूलना चाहती थी कि मैं कौन हूँ। मेरे हाथ-पैर हिलाने, बोलने और यहाँ तक कि साँस लेने की क्षमता भी ख़त्म हो रही थी।

उसने फिर मेरा मज़ाक़ उड़ाया और कहा, "तुम बीमारी की बात मत करो।" फिर उसने अपना हाथ मेरे पेट पर फेरा। "तुम इतनी दुबली क्यों हो? क्या तुम कुछ खाती नहीं?"

"मैं बहुत बीमार हूँ," मैंने जवाब दिया। मेरी आवाज़ बहुत धीमी हो गई थी। फिर उसने मेरे कपड़े ऊपर उठा दिए।

"तुम्हें शायद पता नहीं तुम मुझे कितनी अच्छी लगती हो," वह बोला। "क्या तुम्हें यह बात समझ में नहीं आई कि तुम्हें इस तरह देखना मुझे अच्छा लगता है?"

12

हर सबाया की कहानी मेरे जैसी है। आप आईएसआईएस के अत्याचारों की कल्पना नहीं कर सकतेय जब तक आपकी अपनी बहन या आपके पड़ोसी या किसी स्कूली साथी से वह सब नहीं सुनते। आप यह महसूस करें कि ऐसा नहीं है कि आप ख़ासकर क़िस्मतवाले नहीं हैं, या यह कि आपको रोने या भागने की कोशिश करने के लिए सज़ा दी जा रही है। वे सब आदमी एक जैसे थे, वे सब आतंकवादी थे, जो सोचते थे कि चोट पहुँचाना उनका अधिकार है।

औरतों ने अपने सामने अपने पतियों की हत्या होते देखी थी या सुना कि अपहरणकर्ताओं ने किस तरह सिंजर में नरसंहार किया। औरतों को घरों या होटलों में बंद करके, यहाँ तक कि जेल में भी उनके साथ बलात्कार किया जाता था। उनमें बहुत-सी छोटी लड़कियाँ भी थीं। आतंकवादी चिंता नहीं करते थे कि उन बच्चियों की उम्र कितनी थी या उनकी शारीरिक स्थिति कैसी थी। उन्होंने एक लड़की के हाथ-पैर बाँधकर उसके साथ बलात्कार किया तो एक दूसरी लड़की के साथ सोते समय दुष्कर्म किया। कुछ लड़कियों को भूखा रखा और आदेश नहीं मानने पर उन्हें प्रताड़ित किया। बहुत लड़कियों ने आतंकियों के आदेश माने, लेकिन फिर भी उन्हें यातनाएँ दी गईं।

हमारे गाँव की एक औरत को हमदानिया से मोसुल ले जाया जा रहा था। रास्ते में उसे बंदी बनाने वाले आदमी से रहा नहीं गया और उसने गाड़ी सड़क के एक ओर रोककर औरत के साथ बलात्कार किया। गाड़ी का दरवाज़ा खुला था और उसके पैर गाड़ी से बाहर लटक रहे थे। ऐसा उस महिला ने बताया था। जब वे घर पहुँचे तो

उसे अपने सफ़ेद बालों को डाई करना पड़ा, भौंहें बनाईं तथा पत्नी की तरह व्यवहार करना पड़ा।

कैथरीन को डॉक्टर इस्लाम नाम का आदमी अपने साथ ले गया था। वह आईएसआईएस का सदस्य बनने से पहले यज़ीदियों का इलाज करता था। वह हर सप्ताह एक नई लड़की ख़रीदकर लाता और पुरानी को बेच देता था। कैथरीन उसे बहुत पसंद आई तो उसने उसे अपने साथ रख लिया। डॉक्टर इस्लाम ने कैथरीन को तैयार होना और मेकअप करना सिखाया, जैसे हाजी सलमान ने मेरे साथ किया था। फिर वह उसके साथ तसवीरें खिंचवाता था। एक तसवीर में वे दोनों नदी में नाव चला रहे थे और कैथरीन का नक़ाब उड़ रहा था। वह इतना ज़ोर से मुस्करा रही थी कि उसे देखकर लगता था कि उसका चेहरा दो हिस्सों में बँट जाएगा। डॉक्टर इस्लाम ज़बरदस्ती उससे ख़ुश रहने का नाटक करवाता था। लेकिन मैं कैथरीन को जानती हूँ। मुझे पता है कि उसकी नक़ली मुस्कान के पीछे डर था। उसने छह बार भागने की कोशिश की और हर बार उन्हीं लोगों ने उसे पकड़वाया, जिनके पास वह मदद माँगने गई थी। उसे हर बार डॉक्टर इस्लाम ने बुरी सज़ा दी और बहुत यातनाएँ दीं। ऐसी अनगिनत कहानियाँ हैं।

मैं चेक-प्वाइंट पर केवल एक रात रुकी थी। अगले दिन सुबह रेडियो की आवाज़ से आतंकी उठ गया। "क्या तुम्हें पहले से बेहतर लग रहा है?" उसने पूछा। "मुझे बिलकुल नींद नहीं आई, इसलिए मुझे अच्छा नहीं लग रहा," मैंने कहा। "मुझे यहाँ नहीं रहना।"

"मैं तुम्हें बताऊँगा कि तुम्हें कैसे अच्छा लग सकता है," यह कहकर वह रेडियो पर बात करने लगा और फिर कमरे से बाहर चला गया।

उन्होंने बाहर से कमरा बंद कर दिया। मुझे गाड़ियों की आवाज़ सुनाई दे रही थी। कुछ आतंकी रेडियो पर बात कर रहे थे। मुझे लगा कि ये लोग मेरे मर जाने तक मुझे यही रखेंगे। मैं दरवाज़ा पीटती रही। मुझे बाहर जाना था। मुझे फिर से उल्टी आने लगी। इस बार मैंने फ़र्श और गद्दे पर ही उल्टी कर दी। थोड़ी देर बाद आतंकी लौट आया। उसने मुझसे हिजाब उतारने को कहा और मेरे सिर पर पानी डाल

दिया। "बाथरूम में जाओ और नहा लो," उसने कहा। अबू मुवाया की वैन मुझे मोसुल ले जाने के लिए आ गई थी।

मैंने बाथरूम में चेहरे और हाथों पर पानी डाला। मेरा शरीर बुखार से काँप रहा था। मुझसे खड़ा नहीं रहा गया। मुझे इतनी कमज़ोरी कभी महसूस नहीं हुई। उसके बाद मेरे भीतर एक बदलाव आ गया।

कोचो से निकलने के बाद से ही मैं लगातार मौत के लिए याचना कर रही थी। मैंने सलमान से कई बार कहा कि वह मुझे मार दे। मैंने ईश्वर से भी प्रार्थना की, और इस उम्मीद में कि शायद मेरी जान चली जाए मैंने खाने से भी मना किया। मैंने कई बार सोचा कि मेरे साथ बलात्कार करने वाले ही मुझे पीटकर मार डालेंगे, लेकिन मुझे मौत नहीं आई। मैं बाथरूम में खड़ी रोने लगी। मुझे कोचो छोड़ने के बाद पहली बार लगा कि मैं सचमुच मर जाऊँगी। तब मुझे महसूस हुआ कि मैं वास्तव में, मरना नहीं चाहती थी।

कुछ देर में एक आतंकी मुझे मोसुल ले जाने के लिए आ गया। उसका नाम हाजी अमेर था। मुझे लगा वह मेरा नया ख़रीदार था। मैं इतनी बीमार थी कि मैंने उससे कुछ नहीं पूछा। चेक-प्वाइंट से शहर तक का रास्ता छोटा था, लेकिन मुझे बार-बार उल्टी आ रही थी। हमें बीच-बीच में रुकना पड़ रहा था। वहाँ पहुँचने में लगभग एक घंटा लग गया। "तुम इतनी बीमार कैसे हो गई?" हाजी अमेर ने पूछा। मैं उसे यह नहीं कहना चाहती थी कि बार-बार बलात्कार के कारण ऐसा हुआ था। "मैंने कई दिनों से ठीक से खाया या पिया नहीं है," मैंने बात बदल दी। "मुझे यहाँ गर्मी लग रही है।"

मोसुल पहुँचकर वह एक दवाई की दुकान पर गया और मेरे लिए कुछ दवाइयाँ लाया। घर पहुँचने के बाद उसने मुझे दवाई दी। मैं रास्ते-भर रोती आ रही थी और वह लगातार हँसता जा रहा था। उसे लगा मैं नाटक कर रही हूँ। "तुम इतनी छोटी नहीं हो," उसने मुझसे कहा। "तुम्हें इस तरह रोना नहीं चाहिए।"

उसका छोटा सा घर एक सफ़ेद पट्टी के साथ गहरे हरे रंग से पुता हुआ था। उसे देखकर लगा कि आईएसआईएस वाले काफ़ी समय से वहाँ नहीं रहते थे। वह घर बहुत साफ़ था और मुझे वहाँ किसी यज़ीदी लड़की के कपड़े भी नज़र नहीं आए। मैं सोफ़े पर बैठ गई और बैठते ही मुझे नींद आ गई। शाम को मेरी आँख खुली तो सिरदर्द ठीक हो गया था और उल्टियाँ भी रुक चुकी थीं। ड्राइवर मेरे पास ही एक बेंच पर लेटा था। उसका फ़ोन पास रखा था। "क्या तुम्हारी तबीयत ठीक है?" उसने मुझसे पूछा।

"हाँ, पहले से बेहतर है," मैंने कहा। मैं नहीं चाहती थी कि उसे मेरे ठीक होने का पता लगे। "मुझे चक्कर आ रहे हैं और मुझे कुछ खाना चाहिए।" मैंने अबू मुवाया के साथ नाश्ते के बाद से कुछ खाया नहीं है। जो खाया था, वह उल्टी में निकल गया।

"थोड़ी देर कुरान पढ़ो और इबादत करो," वह बोला। "इससे तुम्हारा दर्द ठीक हो जाएगा।"

मैंने बैग उठाया और बाथरूम में चली गई। मुझे डर था कि वह मेरा बैग ले लेगा। मैंने अंदर से दरवाज़ा बंद कर लिया और बैग देखा। उसमें मेरे ज़ेवर सुरक्षित थे, जो मैंने सेनेटरी पैड के अंदर छिपाए थे। मुझे पता था कि कोई आदमी उन्हें खोलकर चीज़ें नहीं खोजेगा। मैंने अपनी माँ का राशन-कार्ड भी साथ रखा हुआ था। मुझे उनकी याद आ रही थी। फिर मैं बाथरूम से निकल आई। मुझे पक्का यक़ीन था कि मुझे कुछ और बताने के लिए आतंकी ज़रूर मिलेगा।

मुझे पहले लगा कि वह पहला व्यक्ति था, जिसने हमें अकेला पाकर भी बलात्कार करने की कोशिश नहीं की। मुझे लगा कि आईएसआईएस का सदस्य होने के बावजूद हाजी अमेर ने शायद मुझ पर कुछ दया की। शायद मुझे बीमार देखकर वह चुप बैठा था और उसका काम केवल मुझ पर नज़र रखना था। परंतु मैं कमरे में आई तो मैंने देखा कि वह हाजी सलमान की तरह मेरा इंतज़ार कर रहा था। हालाँकि उसने बलात्कार नहीं किया, लेकिन मुझ पर हमला ज़रूर किया। वह काम ख़त्म हो जाने के बाद चुपचाप बैठ गया और

फिर सामान्य ढंग से बातें करने लगा मानो हम एक दूसरे को जानते हों।

"तुम्हें इस घर में एक सप्ताह रहना है," वह बोला। "उसके बाद तुम सीरिया चली जाओगी।"

"मैं सीरिया नहीं जाना चाहती," मैंने कहा। "मुझे मोसुल में किसी और घर में ले चलो। लेकिन मैं सीरिया नहीं जाना चाहती।"

"तुम्हें डरने की ज़रूरत नहीं है," उसने कहा। "तुम्हारी तरह सीरिया में और कई सबाया हैं।"

"मैं जानती हूँ," मैंने कहा, "लेकिन मैं वहाँ नहीं जाना चाहती।"

हाजी अमेर मुझे देखकर बोला, "चलो, देखेंगे!"

"अगर मुझे यहाँ एक सप्ताह रहना है, तो क्या मैं रोजियान और कैथरीन से मिल सकती हूँ?" मैंने पूछा।

"वे शायद सीरिया में है," उसने कहा। "अगर तुम सीरियस चलो तो तुम उनसे मिल सकती हो।"

"मेरी मोसुल में उनसे मुलाक़ात हुई थी," मैंने कहा। "मुझे लगता है वे इसी शहर में हैं।"

"मैं तुम्हारी मदद नहीं कर सकता," उसने कहा। "मुझे सिर्फ़ इतना पता है कि तुम्हें यही इंतज़ार करना है। तुम्हें जल्दी से जल्दी कल सीरिया ले जाया जा सकता है।"

"मैंने तुमसे कहा कि मैं सीरिया नहीं जाऊँगी!" इस बार मुझे ग़ुस्सा आ गया।

हाजी अमर मुस्कराया। "तुम कहाँ जाओगी, इसका फ़ैसला कौन करता है?" उसकी आवाज़ में ग़ुस्सा नहीं था। "आराम से सोचो। तुम कल कहाँ थीं और आज कहाँ हो!"

फिर वह रसोई में चला गया और अंडे उबालने लगा। मैं भी उसके पीछे चली गई। एक प्लेट में अंडे और टमाटर रखे थे, लेकिन तेज़ भूख होने के बावजूद मेरा उन्हें खाने का मन नहीं था। सीरिया जाने के विचार से ही मुझे डर लग रहा था। मैंने कुछ नहीं खाया, लेकिन हाजी अमेर पर इसका कोई असर नहीं पड़ा।

नाश्ता ख़त्म करने के बाद उसने मुझसे पूछा, "इस अबाया के अलावा तुम्हारे पास कोई और अबाया है?"

"मेरे पास बस यही अबाया है," मैंने उत्तर दिया।

"तुम्हें सीरिया में अबाया की जरूरत पड़ेगी," वह बोला। "मैं बाहर जाकर तुम्हारे लिए अबाया ले आता हूँ।"

फिर उसने गाड़ी की चाबी उठाई और बाहर चला गया और उसने दरवाज़ा बंद कर दिया।

मैं घर में अकेली थी। वहाँ कोई नहीं था। मुझे किसी की आवाज़ भी नहीं सुनाई पड़ी। हम शहर से थोड़ा बाहर थे और सड़कों पर शांति थी। वहाँ के घर बहुत छोटे थे। मैंने रसोई की खिड़की से देखा कि बाहर कुछ लोग टहल रहे थे। वहाँ हाजी सलमान के घर की तरह चहल-पहल नहीं थी। मैं लगभग आधे घंटे तक खिड़की से बाहर देखती रही। तब मेरा ध्यान गया कि सड़कों पर आम आदमी तो क्या, आईएसआईएस के लोग भी नहीं थे।

हाजी सलमान के हाथों मिली सज़ा के बाद मुझे पहली बार फिर से भागने का ख़याल आया। चेक-प्वाइंट पर हुए अत्याचार और सीरिया जाने की बात ने मेरे अंदर फिर से भागने की इच्छा पैदा कर दी थी। मैं रसोई की खिड़की पर चढ़कर बाहर निकलने के बारे में सोचने लगी। मैं सामने के दरवाज़े पर गई तो देखा कि वह बहुत भारी लकड़ी का दरवाज़ा था। उसे देखकर मेरा दिल बैठ गया। मुझसे उसका पीला हैंडल भी नहीं खोला गया। *वह इतना बेवकूफ़ तो नहीं होगा कि उसने इसे खुला छोड़ दिया होगा,* मेरे मन में विचार आया। फिर भी मैंने उसे खींचकर देखा। वह खुल गया!

मुझे बहुत आश्चर्य हुआ। मुझे लगा कि अगले ही पल कोई मुझ पर बंदूक तान देगा, लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ। मैं सीढ़ियों से नीचे गई और बगीचे में पहुँच गई। मैंने नक़ाब नहीं पहना था; इसलिए मैंने सिर थोड़ा नीचे कर लिया और कनखियों से पहरेदारों को ताकने लगी। मुझे आसपास कोई नज़र नहीं आया। किसी ने मुझे आवाज़ भी नहीं दी - संभवतः किसी ने मेरी तरफ़ ध्यान भी नहीं दिया। बगीचे

के चारों ओर एक नीची दीवार थी, जिसे आसानी से कूदकर पार किया जा सकता था। मुझे घबराहट होने लगी।

मैं तुरंत दौड़कर घर में गई और मैंने अपना बैग और नक़ाब उठा लिया। हाजी अमेर किसी भी समय वापस लौट सकता था। मेरे पास समय कम था। मैंने चेहरे पर नक़ाब डाला, बैग को कंधे पर लटकाया। मैं जल्द से जल्द बाहर निकलना चाहती थी। कौन जानता था कि हाजी अमेर कब आएगा, और क्या होगा कि अगर उसकी बात सही हुई और वे मुझे अगले दिन सीरिया ले जाने की योजना बना रहे हों? मैंने अपना नक़ाब चेहरे पर और नीचे खिसका लिया और दरवाज़े का हैंडल फिर खोल दिया।

वह आसानी से खुल गया और मैं बाहर देखने लगी। तभी किसी ने मेरा अबाया खींचा। मैं डर गई और मैंने कहा, "मैं बीमार हूँ।" मुझे किसी आतंकवादी के होने की उम्मीद थी। "मैं केवल ताज़ी हवा लेने बाहर आई हूँ।" मुझे पता था कि कोई मेरी बात पर विश्वास नहीं करेगा और वे तुरंत समझ जाएँगे कि मैं भागने की कोशिश कर रही थी। मैंने मुड़कर देखा, लेकिन वहाँ कोई नहीं था। मेरा अबाया दरवाज़े में फँस गया था। मैं मन में मुस्कराई और मैंने उसे छुड़ा लिया और फिर बगीचे में भाग गई।

मैंने एक कनस्तर पर पैर रखे और बगीचे की दीवार के ऊपर से झाँककर देखा। बाहर सड़कें ख़ाली थीं। मेरी बाईं ओर एक मस्जिद थी, जिसमें निश्चित तौर पर आईएसआईएस के आतंकी होंगे। मेरी दाईं ओर, सड़क थी और कुछ घर थे, जहाँ लोग रहते थे। मुझे गाड़ियों की आवाज़ आ रही थी। पड़ोस की एक औरत बगीचे में पानी दे रही थी। मुझे दीवार के ऊपर से कूदने में डर लग रहा था। *यदि हाजी अमेर लौट आया तो क्या होगा? क्या मैं उसकी दी सज़ा झेल सकूँगी?*

मेरे मन में ख़याल आया कि मैं कूदकर पड़ोसी के बगीचे में चली जाऊँगी किसी घर में बिजली नहीं थी और अंधेरा होने वाला था। अबाया पहनकर अंधेरे रास्तों से गुज़र जाना आसान था और मुझे विश्वास था कि बगीचे के दरवाज़े पर ज़रूर किसी की नज़र होगीय इसलिए मैं वहाँ से निकल कर नहीं जाना चाहती थी।

आईएसआईएस के क़ब्ज़े वाले किसी भी घर से किसी औरत का अकेले बाहर निकलना सब को सतर्क कर सकता था और सबाया को वापस लौटाने पर भारी इनाम मिलता था

मुझे पता था, अगर मैंने ज़्यादा सोच-विचार किया तो समय ख़त्म हो जाएगा। मुझे तुरंत निर्णय लेना था, लेकिन मेरे पैर साथ नहीं दे रहे थे। मुझे लगा मेरा पकड़ा जाना निश्चित था और फिर मुझे सज़ा मिलनी तय थी। हाजी अमर मुझे घर में अकेला छोड़कर दरवाज़ा खुला रखकर यूँ ही नहीं चला गया होगा। क्या वह इतना मूर्ख था? हो सकता है, उसे लगा होगा कि इतने समय तक कष्ट सहने के बाद मेरा शरीर और दिमाग़ कमज़ोर हो। और यह कि मैं भागने के बारे में सोच भी नहीं सकती थी। वे शायद सोचते थे, मैं उनके जैसी बन चुकी थी। *लेकिन वे ग़लत सोचते थे।* मैंने तुरंत अपना बैग दीवार के ऊपर से फेंका और फिर मैं दीवार के ऊपर से कूद गई।

 www.The-Gyan.in

खण्ड-III

1

मैंने देखा कि उस घर से सीधी जाने वाली सड़क आगे चलकर ख़त्म हो जाती थी। वह शाम की नमाज़ का समय था; इसलिए बाईं ओर बनी मस्जिद को पार करना ख़तरनाक हो सकता था। मेरे पास केवल एक विकल्प था कि मैं दाएँ मुड़ कर चलने लग जाऊँ। मुझे नहीं पता था कि वह सड़क कहाँ जाएगी। मैंने चलना शुरू कर दिया।

मैंने आदमियों वाली चप्पल पहनी थी, जो हाजी सलमान ने मुझे पहली रात को दी थी। मैंने घर के दरवाज़े से गाड़ी तक का रास्ता पार कर लिया था और यह पहला मौक़ा था, जब मैंने इतनी दूरी तय की थी। चप्पलें मेरे लिए बड़ी थीं; इसलिए उन्हें पहनकर चलने से ज़्यादा आवाज़ हो रही थी। मेरे पैरों और चप्पलों के बीच रेत भी घुस रही थी। लेकिन मुझे यह सोचकर अच्छा लगा कि मैं चल सकती थी।

मैं सीधे नहीं चल रही थी, बल्कि रास्ते में ख ड़ी गाड़ियों के बीच से मुड़ जाती थी। कभी किसी गली में घूम जाती थी, ताकि लोग यही समझें कि मुझे पता है कि मुझे कहाँ जाना है। मेरा दिल इतना तेज़ धड़क रहा था कि मुझे डर लगा कहीं मेरे नज़दीक से गुज़रने वाला कोई आदमी उसकी धड़कन नहीं सुन ले।

कुछ घरों में जनरेटर से बिजली आ रही थी। वह अच्छा मोहल्ला था और वहाँ शायद अमीर लोग रहते थे। अंधेरा हो चुका था; इसलिए ज़्यादातर लोग घरों में थे। अंधेरा और बढ़ा तो कुछ लोग हवा लेने या पड़ोसियों से बातचीत करने बाहर निकल आए। मैंने

किसी की ओर नहीं देखा। मुझे भी यही आशा थी कि कोई मुझे नहीं देखेगा।

मुझे रात के समय डर लगता है। ग़रीब होना एक तरह से अच्छा था, क्योंकि इसी कारण गाँव में हम सब एक कमरे में सोते थे। मैं छत पर अपने परिवार के साथ सोती तो मुझे अंधेरे से डर नहीं लगता था। उस दिन मोसुल में पैदल चलते समय अंधेरा बढ़ता जा रहा था और साथ ही मेरा डर भी बढ़ रहा था। आईएसआईएस का ख़तरा अलग से सिर पर मंडरा रहा था। सड़कों पर लाइट नहीं थी और मैं कुछ घरों से आती रोशनी के सहारे आगे बढ़ रही थी। मुझे पता था कि जल्द ही बिलकुल अंधेरा हो जाएगा और लोग सोने चले जाएँगे। फिर सड़कों पर पुरुषों को छोड़कर कोई नहीं होगा। मुझे ध्यान आया कि अब तक हाजी अमेर लौट आया होगा और जब उसे पता लगेगा कि मैं भाग निकली हूँ तो वह अपने लोगों को रेडियो पर सूचना दे देगा। हाजी सलमान को भी शायद मेरे भागने की ख़बर मिल चुकी होगी। फिर वह अपनी वैन में वापस लौटेगा और गाड़ी की लाइट में मुझे आसानी से पकड़ लेगा। हाजी अमेर को भी शायद डर होगा, क्योंकि उसने दरवाज़ा खुला छोड़ दिया था, जिसके कारण मैं आसानी से बाहर निकल गई थी। मैं सोच रही थी कि इस वजह से वह तेज़ी से आएगा और कड़ी खोजबीन करेगा, दरवाज़ों पर खटखटाएगा और गलियों में लोगों से पूछताछ करेगा। मुझे पता था कि वह लोगों से पूछेगा कि उन्होंने किसी अकेली लड़की को जाते देखा है या नहीं।

अबाया पहनने से मुझे मदद मिली। लेकिन मैं अदृश्य नहीं हुई थी। मुझे ख़याल आया था कि वे लोग मुझे पकड़ लेंगे तो उनकी आवाज़ें कैसी सुनाई देंगी और वे किस तरह में मुझे घसीटकर वापस ले जाएँगे। मुझे और अंधेरा होने से पहले छिपने की कोई जगह ढूँढ़नी थी।

मैं घरों को पार करती जा रही थी। मेरा मन कई दरवाज़ों को खटखटाने का हुआ। क्या कोई परिवार मेरी सहायता के लिए बाहर आएगा? या वे मुझे हाजी सलमान के पास वापस भेज देंगे? हर दरवाज़े और लैंप-पोस्ट पर आईएसआईएस के झंडे लहरा रहे थे, जो

मुझे याद दिलाते थे कि मैं एक बहुत ख़तरनाक जगह पर थी। यहाँ तक कि बगीचों से आ रही बच्चों की हँसने की आवाज़ से भी मुझे घबराहट हो रही थी।

एक क्षण के लिए मुझे लगा कि शायद मेरे लिए लौट जाना बेहतर होगा। मैं फिर से बगीचे की दीवार फाँदकर अंदर जाने के बारे में सोचने लगी। मैंने सोचा कि मैं चुपचाप ऊपर चली जाऊँगी, जहाँ हाजी अमर मुझे छोड़कर गया था। यहाँ भागते हुए पकड़े जाने से शायद सीरिया जाना बेहतर होगा! फिर मुझे ख़याल आया कि नहीं! *ईश्वर ने मुझे यह मौक़ा दिया है और निकलने का रास्ता मिला है।* दरवाज़े पर ताला नहीं था, पड़ोस में शांति थी, कोई पहरेदार नहीं था और दीवार फाँदने के लिए एक कनस्तर भी रखा था। ये सब संकेत थे कि मैंने शायद भागकर ग़लती नहीं की। मुझे यह भी पता था कि यदि मैं पकड़ी गई तो मुझे इसके बाद फिर कभी भागने का दूसरा मौक़ा नहीं मिलेगा।

शुरू में मुझे हर आवाज़ और हरकत से डर लग रहा था। मेरे पास से एक गाड़ी गुज़री, जिसकी रोशनी सीधी मुझ पर पड़ रही थी। मैं बगीचे की दीवार के साथ सटकर खड़ी हो गई और इसी बीच वह गाड़ी गुज़र गई। फिर मैंने देखा कि दो आदमी मेरी ओर आ रहे थे। मैंने उनसे बचने के लिए सड़क पार कर ली। वे बातचीत करते हुए ऐसे निकल गए मानो उन्होंने मुझे देखा ही नहीं। एक दरवाज़ा खुलने की आवाज़ आई तो मैं तुरंत सड़क के कोने से मुड़ गई। मैं जितना संभव था उतना तेज़ चल रही थी। एक कुत्ता भागा तो मैं फिर एक कोने पर मुड़ गई। इस तरह कई डरावने पल आए, लेकिन मैं रुकी नहीं। मुझे नहीं पता था कि मैं कहाँ जा रही हूँ। मुझे लगा मैं आजीवन इसी तरह चलती रहूँगी।

कुछ और आगे जाने पर घरों का आकार छोटा होता गया। वे सब आईएसआईएस के क़ब्ज़े में रहे अमीर लोगों के घर थे, जिनके सामने बड़ी-बड़ी शानदार गाड़ियाँ खड़ी थीं और जनरेटर से टीवी और रेडियो चल रहे थे। लेकिन आगे चलकर घर छोटे हो गए, उनमें बत्तियाँ भी कम थीं और आस-पड़ोस का मोहल्ला भी पहले से अधिक शांत था।

मुझे घरों के अंदर बच्चों के रोने और लोगो की आवाज़ें आ रही थीं। हरे-भरे घास के बगीचे, सब्ज़ी उगाने के छोटे टुकड़ों में तब्दील हो गए थे। शानदार गाड़ियों की जगह सामान उठाने वाले ट्रक खड़े थे। सड़क के किनारे गंदगी थी। निश्चित रूप से यह ग़रीबों का मोहल्ला था।

मुझे ऐसी ही जगह की तलाश थी। मोसुल में कोई ग़रीब सुन्नी परिवार ही मेरी मदद कर सकता था। उनके पास यहाँ से निकलने के लिए पैसा नहीं था और उनकी इराक की राजनीति में कम रुचि थी। बहुत-से ग़रीब परिवारों ने आईएसआईएस की सदस्यता ले ली थी, लेकिन उस दिन मेरी मदद करने वाला कोई नहीं था। मैं किसी पर विश्वास नहीं कर सकती थी। मुझे अपने जैसे एक परिवार की तलाश थी।

मुझे समझ नहीं आया कि मैं किस घर का दरवाज़ा खटखटाऊँ। मैंने आईएसआईएस वालों के साथ इतना समय बिताया था। मैं वहाँ ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाती थी और मुझे पता था कि मेरा शोर लोग अवश्य सुनते होंगे। फिर भी किसी ने सहायता नहीं की। मुझे बसों और गाड़ियों में एक शहर से दूसरे शहर ले जाया गया, लेकिन किसी ने मेरी ओर ध्यान नहीं दिया। हर रोज़ आईएसआईएस के आतंकी लोगों को मार डालते थे, यज़ीदी लड़कियों के साथ बलात्कार करते थे और यज़ीदियों को मिटा देने की योजनाएँ बनाते थे, लेकिन मोसुल में हमारी सहायता करने वाला कोई नहीं था। वह मुख्य रूप से यहीं की संस्था है। बहुत-से सुन्नी मुसलमानों ने आईएसआईएस का क़ब्ज़ा हो जाने के बाद मोसुल छोड़ दिया था। लोगों को डराया जाता था। फिर भी उन घरों में सहानुभूति से भरा एक भी व्यक्ति नहीं था। मुर्तजा की माँ से भी मैंने अपेक्षा की थी कि वह मुझे बेटी की तरह देखेगी। लेकिन मुझे याद है, उसने मुझे कितनी नफ़रत से देखा था। क्या इन घरों में भी वैसे ही लोग रहते होंगे?

मेरे पास दूसरा विकल्प नहीं था। मोसुल से अकेले निकलना मेरे लिए असंभव था। मैंने किसी तरह चेक-प्वाइंट को पार भी कर लिया, जो बहुत मुश्किल था, फिर भी मैं सड़क पर पकड़ी जाऊँगी या कुर्दिस्तान पहुँचने से पहले प्यास से मर जाऊँगी। मेरे लिए अब यही

एक उम्मीद थी कि किसी घर से मुझे सहायता मिल जाए। लेकिन वह कौन-सा घर होगा?

कुछ ही देर में इतना अंधेरा हो गया कि मुझे कुछ दिखाई नहीं पड़ रहा था। मुझे पैदल चलते हुए दो घंटे से ज़्यादा हो चुके थे और मेरे पैरों में दर्द हो रहा था। लेकिन आगे की ओर बढ़ता हर कदम मुझे आईएसआईएस से दूर ले जा रहा था। यह ख़याल मुझे सुरक्षा और हिम्मत दे रहा था। लेकिन मैं अनंतकाल तक नहीं चल सकती थी। आख़िर एक मोड़ पर मुझे एक बड़ा-सा धातु से बना दरवाज़ा दिखाई पड़ा। मैंने खटखटाने के लिए हाथ उठाया, लेकिन फिर आख़िरी क्षण पर मैंने हाथ वापस खींच लिया। मैं फिर चलने लगी। मुझे नहीं पता मैंने ऐसा क्यों किया।

वहाँ से थोड़ा और आगे मैं फिर एक घर पर रुकी। यह घर पहले वाले से छोटा था। अंदर बत्ती नहीं जल रही थी। वह कोचो के मकानों के जैसा था। उस घर में कोई विशेष बात नहीं थी। मुझे नहीं पता था कि उसमें रहने वाले लोग कैसे होंगे। लेकिन मैं काफ़ी पैदल चल चुकी थी। मैंने हाथ उठाया और दो बार दरवाज़े को खटखटाया। मैं सड़क पर खड़ी थी और मुझे मदद का इंतज़ार था। क्या मुझे कोई बचाएगा?

एक क्षण बाद दरवाज़ा खुला और अंदर से लगभग पचास साल का एक आदमी बाहर निकला। "तुम कौन हो?" उसने पूछा। मैंने बिना कुछ कहे उसे पीछे धकेल दिया और घर में घुस गई। अंदर बगीचे में परिवार के कुछ लोग बैठे थे। ऊपर चाँद की रोशनी थी। वे मुझे देख हड़बड़ाकर उठ खड़े हुए, लेकिन किसी ने कुछ नहीं कहा। मैंने दरवाज़ा बंद होता सुना तब अपना नक़ाब चेहरे से उठाया।

"मैं आपसे प्रार्थना करती हूँ कृपया मेरी मदद कीजिए," मैंने उनसे कहा। वे सब चुप खड़े थे और मैं बोलती रही। "मेरा नाम नादिया है। मैं सिंजर की रहने वाली यज़ीदी लड़की हूँ। दाएश के लोग मेरे गाँव

में आए थे और मुझे सबाया बनाने के लिए मोसुल ले गए थे। मेरा परिवार भी मुझसे बिछड़ गया है।"

बुज़ुर्ग दंपत्ति के अलावा बगीचे में दो लोग और बैठे थे और लगभग ग्यारह साल का लड़का खड़ा था। एक युवती भी थी, जो एक बच्चे को सुला रही थी। वह गर्भवती थी और मुझे देखकर घबरा गई थी। उनके घर में बिजली नहीं थी। वे बाहर बगीचे में गद्दा बिछाकर बैठे थे; जहाँ कि हवा में ठंडक थी।

एक पल के लिए मेरे दिल की धड़कन रुक गई। उन आदमियों की दाढ़ी थी और सबने काले रंग की पतलूनें पहनी थीं। मुझे पहले लगा कि वे भी आईएसआईएस के सदस्य थे, क्योंकि वे उनके जैसे ही दिख रहे थे। फिर मुझे लगा कि ये लोग मुझे पकड़वा देंगे। मैं सुन्न पड़ चुकी थी और बोलना बंद कर दिया था।

उन आदमियों मैं से एक ने मेरा हाथ पकड़ लिया। वह मुझे खींचकर घर के अंदर ले गया। वहाँ बहुत गर्मी थी और अंधकार भी था। "यहाँ अंदर ज़्यादा सुरक्षित है," बूढ़े ने मुझसे कहा। "तुम्हें इस तरह की बातें बाहर नहीं करनी चाहिए।"

"तुम कहाँ की रहने वाली हो?" बूढ़ी औरत ने मुझसे पूछा। शायद वह उस आदमी की पत्नी थी। "तुम्हें क्या हुआ?" उसकी आवाज़ में ग़ुस्सा नहीं था, लेकिन वह उत्सुक थी। मेरे दिल की धड़कन धीमी होने लगी।

"मैं कोचो की रहने वाली हूँ," मैंने उन्हें बताया। "मुझे यहाँ सबाया बनाकर लाया गया था। मैं भाग निकली, क्योंकि वे मुझे सीरिया ले जाना चाहते हैं।" फिर मैंने उन्हें बताया कि मेरे साथ क्या हुआ था। मैंने बलात्कार और शोषण के बारे में भी उन्हें सबकुछ बताया। मेरा मानना था कि उन्हें जितना ज़्यादा पता लगेगा उतना ही वे मेरी सहायता करने को तैयार होंगे। उनका परिवार था; इसलिए वे शायद दया और प्रेम के महत्त्व को समझते थे। मैंने उन आतंकियों का नाम नहीं लिए जिन्होंने मुझे ख़रीदा या बेचा था। हाजी सलमान, बड़ा आदमी था। *फिर मुझे अचानक ख़याल आया यदि ये लोग सलमान को जानते होंगे तो उससे डरकर यह मुझे वापस भेज देंगे।*

"तुम्हें हमसे क्या चाहिए?" औरत ने पूछा।

मैंने कहा, "आप कल्पना कीजिए कि मेरी उम्र की आपकी एक बेटी है, जिसे उसके परिवार से अलग कर दिया गया और उसके साथ मेरी तरह बलात्कार हुआ। इस बात को ध्यान में रखते हुए सोचिए कि आप मेरे साथ क्या करेंगे।"

मेरी बात ख़त्म होते ही बूढ़ा व्यक्ति बोला, "तुम शांत हो जाओ। हम तुम्हारी मदद करने की कोशिश करेंगे।"

"ये लोग इतनी छोटी लड़कियों के साथ ही यह सब कैसे कर लेते हैं?" औरत ने धीमे स्वर में कहा।

फिर उस परिवार ने अपना परिचय दिया। वह एक सुन्नी परिवार था, जो आईएसआईएस के आने के समय मोसुल में ही रहता था, क्योंकि उनके पास जाने को और कोई जगह नहीं थी। "हम कुर्दिस्तान में किसी को नहीं जानते जो हमें चेक-प्वाइंट से आगे ले जा सके। इसके अलावा हम ग़रीब हैं। हमारे पास इस घर के अलावा कुछ नहीं है।" मुझे पता नहीं मुझे उन पर विश्वास करना चाहिए था या नहीं। बहुत-से ग़रीब सुन्नी परिवारों ने मोसुल छोड़ दिया था, जबकि कुछ लोग रुके हुए थे। उनका आईएसआईएस पर से भरोसा उठ चुका था। मैंने तय किया कि अगर उस परिवार ने मेरी सहायता की तो मतलब ये सच बोल रहे हैं।

"हम अज़ावी हैं," उन्होंने बताया। वह एक जनजाति है, जिनका यज़ीदियों के साथ पुराना और गहरा रिश्ता रहा है। इसका मतलब यह था कि वे यज़ीदी धर्म के बारे में अवश्य जानते थे। यह मेरे लिए अच्छा संकेत था।

उस बूढ़े आदमी का नाम हिशाम था। उसका शरीर भारी और उसकी लंबी सफ़ेद दाढ़ी थी। उसकी पत्नी का नाम माहा था और वह बहुत सुंदर थी। मैं उनके यहाँ पहुँची तब उसने घर के ही कपड़े पहने हुए थे, लेकिन बाद में वह अबाया पहनकर बाहर आ गई। उनके लड़कों का नाम नासिर और हुसैन था। वे दोनों दुबले-पतले थे। नासिर मुझसे सवाल पूछ रहा था कि मैं यहाँ कैसे पहुँची और मेरा परिवार कहाँ है।

पच्चीस साल का नासिर घर का सबसे बड़ा लड़का था। उसका क़द लंबा था और उसके बाल कम होने लगे थे। उसका चेहरा बड़ा और चौड़ा था। मुझे उन लड़कों को देखकर ज़्यादा चिंता हो रही थी। यदि उस परिवार का कोई सदस्य आईएसआईएस से मिला हो सकता था। वे सुन्नी लड़के थे, लेकिन उन्होंने कसम खाकर कहा कि उन्हें आतंकियों से नफ़रत है। "ये लोग जब से यहाँ आए हैं, हमारी जिंदगी नरक हो गई है," नासिर ने बताया। "हमें लगता है कि यहाँ हर समय लड़ाई चलती रहती है।"

नासिर की पत्नी सफ़ा भी बगीचे में बैठी थी। वह भी अपने पति की तरह ऊँचे क़द की थी और उसकी आँखें सुंदर थीं। वह चुपचाप मेरी ओर देखती रही। वह गोद में बैठे बच्चे को सुला रही थी। फिर उसने नासिर के छोटे भाई ख़ालिद की ओर देखा जो उम्र में काफ़ी छोटा था। उसे घर में चल रही बातचीत के बारे में ज़्यादा पता नहीं था। मेरे वहाँ रहने से सफ़ा को ज़्यादा चिंता थी। "क्या तुम्हें दूसरा अबाया चाहिए?" उसने मुझसे पूछा। मेरा अबाया बहुत गंदा हो गया था। इसलिए मैंने उसे उतार दिया। यह उसकी उदारता थी, लेकिन मुझे बाद में लगा उसने जिस तरह से वह बात कही थी वह शायद मुस्लिम घर में यज़ीदी पोशाक पहनने को लेकर चिंतित थी। "नहीं, शुक्रिया!" मैंने कहा। "मेरे पास जो है वही ठीक है। मैं और नए कपड़े नहीं पहनना चाहती।"

"तुम किस दाएश के साथ थीं?" नासिर ने आख़िर पूछ लिया।

"सलमान!" मैंने धीरे-से कहा। नासिर कुछ कहना चाहता था, लेकिन फिर चुप हो गया। उसने मुझसे मेरे परिवार के बारे में पूछा और यह कि मोसुल छोड़ने के बाद मैं कहाँ जाऊँगी। वह डरा हुआ नहीं था और सचमुच मेरी मदद करना चाहता था।

"क्या तुम्हारी मुलाक़ात अन्य यज़ीदी लड़कियों से हुई है?" मैंने उससे पूछा।

"मैंने कुछ लड़कियों को कचहरी में देखा," हिशाम ने हुसैन से कहा। उसके बेटे हुसैन ने भी यह बात बताई कि उसने कई बार मेरी जैसी लड़कियों को बसों में भरकर ले जाते हुए देखा था। फिर वह

बोला, "मोसुल में कई जगह लिखा है कि किसी सबाया को वापस लाने पर दाएश आपको पाँच हज़ार डॉलर देंगे, लेकिन हमने सुना है कि यह झूठ है।"

"यहाँ जो हो रहा है, हमें पसंद नहीं है," नासिर ने कहा। "हम बहुत पहले मोसुल छोड़ देना चाहते थे, लेकिन दाएश यहाँ पहले आ गए। हमारे पास तब पैसा नहीं था; इसलिए हम कहीं और जा नहीं पाए।"

"हमारी चार बेटियों की शादियाँ यहीं हुई हैं," माहा ने बताया। "अगर हम चले भी जाएँ तो वे सब यहीं रह जाएँगी। उनके परिवार भी यहाँ रहेंगे। मुझे पता नहीं क्यों, लेकिन बहुत-से लोग उनका समर्थन करते हैं। हम अपनी बेटियों को अकेला नहीं छोड़ सकते।"

उस परिवार ने मुझे अपने घर में आश्रय दिया था। उन्होंने मेरी कहानी बहुत ध्यान से सुनी और मेरी सहायता करने के लिए भी हामी भरी थी। लेकिन मुझे समझ नहीं आया कि मैं जिस समय बंदी थी, ये लोग तब कहाँ थे। उनके बहाने सुनकर मुझे ग़ुस्सा आ रहा था, लेकिन मैंने कुछ नहीं कहा। हुसैन, गाड़ियों में जवान लड़कियों और औरतों को हर रात बलात्कार के लिए ले जाते हुए कैसे देखता रहा? हिशाम हर रोज़ कचहरी में आतंकियों को सबाया के साथ गैर-क़ानूनी तरीक़े से विवाह के लिए बाध्य करते हुए कैसे देखता रहा होगा? ये लोग मेरी मदद करने को तैयार हुए, लेकिन तब जब मैं मदद के लिए इनके दरवाज़े पर पहुँच गई। मैं उन बहुत-सी लड़कियों में से केवल एक थी। उन्होंने कहा कि उन्हें आईएसआईएस से नफ़रत थी, लेकिन उन्होंने उन्हें रोकने के लिए कुछ नहीं किया।

शायद मैं एक सामान्य परिवार से कुछ ज़्यादा ही अपेक्षा कर रही थी। आइएसाईएस वाले इतने क्रूर थे कि वे लोगों को समलैंगिक बताकर छत से नीचे फेंक देते थे। वह जवान लड़कियों के साथ बलात्कार सिर्फ़ इसलिए करते थे कि वे किसी और धर्म का पालन करती थीं। वे आम नागरिकों को पत्थर मारकर मौत की सज़ा देते थे। यज़ीदियों की उनके धर्म ने कभी रक्षा नहीं की, बल्कि उन पर हमला किया। आईएसआईएस के क़ब्जे वाले इलाक़े में भी हिशाम

और उसका परिवार इसलिए सुरक्षित थे, क्योंकि वे पैदाइशी सुन्नी थे और उन्हें आतंकियों ने स्वीकार कर लिया था। वे लोग अपने धर्म को कवच बनाकर संतुष्ट बैठे थे। मैं उनसे घृणा नहीं करना चाहती थी, क्योंकि उन्होंने मेरे साथ अच्छा व्यवहार किया। लेकिन मेरे लिए उनसे प्रेम करना मुश्किल था।

"क्या कुर्दिस्तान में तुम्हारा कोई परिचित है, जिसे हम तुम्हारे यहाँ होने की कोई ख़बर दे सकते हैं?" हिशाम ने पूछा।

"मेरे भाई वहाँ हैं," मैंने बताया। फिर मैंने उन्हें हेज़्नी का नंबर दे दिया।

हिशाम ने नंबर मिलाया और बात करने लगा। फिर उसने फ़ोन को कान से हटाया। उसे कुछ दुविधा थी। उसने दोबारा नंबर मिलाया। दूसरी बार भी वही हुआ। मुझे लगा कि शायद मैंने ग़लत नंबर बता दिया था। "क्या उसने फ़ोन उठाया?" मैंने हिशाम से पूछा।

हिशाम ने मना कर दिया। "उधर से कोई आदमी बोल रहा है, लेकिन मैं जैसे ही उसे अपने बारे में बताता हूँ और कहता हूँ कि मैं कहाँ से बोल रहा हूँ तो वह मुझे गालियाँ देने लगता है," हिशाम बोला। "मुझे लगता है यह तुम्हारे भाई का नंबर नहीं है। यदि यह नंबर सही है तो भी शायद उसे विश्वास नहीं होगा कि तुम हमारे साथ हो।"

हिशाम ने फिर कोशिश की और इस बार उधर वाले व्यक्ति ने हिशाम को बोलने दिया। "नादिया हमारे साथ है। वह आतंकी की पकड़ से छूटकर बच निकली है। अगर तुम्हें मुझ पर यक़िन नहीं है तो मैं कुछ यज़ीदियों के बारे में बता सकता हूँ, जो तुम्हें मेरे बारे में समझा देंगे।" हिशाम ने सिंजर के एक यज़ीदी राजनेता के साथ सद्दाम की सेना में नौकरी की थी। "वह तुम्हें बताएगा कि मैं अच्छा आदमी हूँ और मैं तुम्हारी बहन को नुक़सान नहीं पहुँचाऊँगा।"

बातचीत के बाद हिशाम ने मुझे बताया कि उसकी बात हेज़्नी से ही हुई थी। "शुरू में तुम्हारे भाई को पता लगा कि किसी ने मोसुल से उसे फ़ोन किया है तो उसे बुरा लगा। मुझे लगता है कि जिन लोगों ने उसकी पत्नी को पकड़ा था, वे शायद उसे कभी-कभी फ़ोन करके याद दिलाते होंगे कि वे उसकी पत्नी के साथ क्या कर रहे थे। इसलिए वह

फ़ोन उठाते ही गालियाँ देता है और फिर फ़ोन काट देता है।" मुझे हेज़्नी और जीलन के लिए दुख हो रहा था।

रात काफ़ी हो गई थी। उस घर की औरत ने मेरे लिए का गद्दा बिछाया और मुझसे पूछा, "क्या तुम्हें भूख लगी है?" मैंने मना कर दिया। मैं खाने के बारे में सोच भी नहीं सकती थी। "मुझे प्यास लगी है," मैंने कहा। नासिर मेरे लिए पानी लेकर आया और मैंने पानी पी लिया, तो उसने मुझे समझाया कि मुझे किसी भी हालत में बाहर नहीं निकलना है। "यहाँ पूरा मोहल्ला दाएश के सदस्यों और उनके समर्थकों से भरा पड़ा है।" नासिर ने बताया, "यह जगह तुम्हारे लिए सुरक्षित नहीं है।"

"आस-पास कोई और भी सबाया रहती है या नहीं?" मैंने पूछा। "किसी के भाग जाने पर क्या आतंकवादी घरों की तलाशी लेते हैं?"

"यह ख़तरे का समय है," नासिर ने कहा। "दाएश हर जगह मौजूद हैं। पूरे शहर पर उनका क़ब्ज़ा है और हमें सावधान रहना होगा। हमारे पास एक जनरेटर है, लेकिन हम उसे रातभर नहीं चला सकते। अमेरिकी हवाई जहाजों ने यदि रोशनी देख ली तो वह हमारे घर पर बम गिरा सकते हैं।"

"अब तुम सो जाओ," हिशाम ने कहा। "सुबह हम तुम्हें यहाँ से निकालने के बारे में सोचेंगे।"

कमरे में बहुत गर्मी और घुटन थी। मुझे थोड़ी देर के लिए ही नींद आ गई। मैं आसपास के घरों और आईएसआईएस के समर्थक परिवारों के विषय में सोचने लगी। हाजी सलमान शायद अब भी गाड़ी से मुझे ढूँढ़ रहा होगा। उस आतंकी का क्या हुआ होगाय जिसकी ग़लती से मैं भाग निकली थी? क्या पाँच हज़ार डॉलर के इनाम के लालच में नासिर और उसका परिवार मुझे आतंकवादियों को सौंप देंगे? क्या ये मुझसे झूठ बोल रहे होंगे? क्या यह मेरे साथ केवल दया का नाटक कर रहे हैं? अगर यह अज़ावी जाति के लोग हैं और हिशाम के सेना में नौकरी करते वक़्त कुछ यज़ीदी दोस्त होंगे तो भी इन पर भरोसा करना मेरे लिए मूर्खतापूर्ण साबित हो सकता

था। ये सुन्नी हैं और इनकी ऐसे यज़ीदियों से दोस्ती रही है, जिन्होंने आईएसआईएस के लिए अपने मित्रों को धोखा दिया था।

मेरी बहनें और कई लड़कियाँ जो मुझसे बिछड़ गई थीं, कहीं भी हो सकती थीं। क्या मेरे भाग जाने की सजा उन्हें दी जाएगी? सोलाग़ में छूट गई औरतों और सीरिया ले जाई गई लड़कियों का क्या होगा? मैं अपनी माँ के बारे में सोचने लगी और मुझे उनका सिर अपनी गोदी में रखकर लेटना याद आ रहा था। फिर मुझे याद आया किस तरह कैथरीन को मेरी माँ से खींच कर अलग करके बस में बैठा दिया गया था। जल्द ही मुझे पता लग जाएगा कि उनके साथ क्या हुआ। मुझे जब नींद आई तो सबकुछ अंधकार में डूब चुका था। मुझे इस बीच कोई सपना नहीं आया।

2

मेरी नींद सुबह पाँच बजे खुल गई। सब सो रहे थे। मुझे सबसे पहले यह ख़याल आया कि मुझे वहाँ से निकलना है। *मैंने खुद से कहा कि यह जगह सुरक्षित नहीं है। मुझे नहीं पता यह लोग मेरे साथ क्या करेंगे। कितनी संभावना है कि ये ख़ुद को ख़तरे में डालकर मेरी सहायता करेंगे?* सुबह हो चुकी थी और सूरज की धूप सड़कों पर बिखरने लगी थी। मैं वहाँ से निकलती तो छिपने के लिए कोई छायादार जगह नहीं थी। मेरे पास जाने को कोई और स्थान भी नहीं था। मुझे बिस्तर पर लेटकर यह अहसास हुआ कि अब मेरा भाग्य इसी परिवार के हाथ में था। मैं केवल उनसे सहायता की अपेक्षा और ईश्वर से प्रार्थना कर सकती थी।

लगभग दो घंटे बाद नासिर, हिशाम से निर्देश लेकर वापस आ गया। हम हिशाम का इंतज़ार करते रहे। इस बीच माहा ने नाश्ता लगा दिया, लेकिन मुझसे कुछ खाया नहीं गया। मैंने थोड़ी कॉफ़ी पी ली। "तुम्हें मेरी बहन मीना और उसके पति बशीर के पास ले चलेंगे। वे लोग शहर से थोड़ा बाहर रहते हैं और वहाँ दाएश द्वारा तुम्हें देखने की संभावना कम है।"

"हम जानते हैं कि बशीर को दाएश पसंद नहीं है," नासिर ने कहा, "लेकिन मुझे उसके भाइयों के बारे में ठीक से मालूम नहीं है। उसने कहा है कि वे आईएसआईएस के साथ मिले हुए नहीं हैं, लेकिन हम इस बारे में कुछ नहीं जानते। इसलिए तुम्हें सावधान रहना होगा। वैसे बशीर अच्छा आदमी है।"

मैंने नक़ाब पहनकर चेहरा ढँक लिया। मुझे हिशाम और नासिर के साथ सुरक्षित महसूस होने लगा था। हम मीना और बशीर के घर चल पड़े। पड़ोस में ज़्यादा लोग नहीं थे और वह इलाका मोसुल से बाहर था। हमें किसी ने गाड़ी से निकलकर जाते नहीं देखा। मुझे ना ही किसी भी घर पर आईएसआईएस के झंडे लहराते नज़र आए और ना ही इस संगठन के चिह्नों की सजावट दिखी।

उनका घर हिशाम के घर से बड़ा और बेहतर था। वे दरवाज़े पर हमारा इंतज़ार कर रहे थे। मुझे उनका घर देखकर अपने भाइयों का घर याद आ गया जो उन्होंने अपनी जीवन-भर की बचत से बनाया था।

मीना इतनी सुंदर थी कि मैंने ऐसी औरत पहले नहीं देखी थी। उसका चेहरा गोल और आँखें मोतियों की तरह चमक रही थीं। वह बिलकुल दीमल जैसी थी। उसके और बशीर के पाँच बच्चे थे, जिनमें तीन लड़के और दो लड़कियाँ थी। मैं वहाँ पहुँची तो पूरे परिवार ने मेरा अभिवादन किया। शायद हिशाम और नासिर ने मेरे बारे में उन्हें पहले से बता दिया था। किसी ने मुझे सांत्वना देने की कोशिश नहीं की। उन्होंने मुझे अपनी ज़िम्मेदारी मान लिया था और मैं इसके लिए उनकी आभारी थी। मेरे पास उनके स्नेह के बदले देने को कुछ नहीं था। *"सलाम अलैकुम!"* मैंने कहा। "अलैकुम असलाम!" बशीर ने उत्तर दिया। "चिंता मत करो। हम तुम्हारी मदद करेंगे।"

उनकी योजना यह थी कि वह सफा या मीना, जो आसान हो, के नाम पर मेरे लिए एक नक़ली पहचान-पत्र बनवाएंगे और फिर बशीर या नासिर में से कोई एक मुझे मोसुल से किरकुक तक लेकर जाएगा। रास्ते में हमें पति-पत्नी की तरह रहना होगा। नासिर के मोसुल में कुछ दोस्त थे, जो पहचान-पत्र बनाते थे। पहले वहाँ इराकी पहचान-पत्र बनता था और उसके बाद सफ़ेद और काला आईएसआईएस का पहचान-पत्र बनने लगा। "हम तुम्हारे लिए इराकी पहचान-पत्र बनवाएँगे," उसने कहा। "वह ज़्यादा असली लगेगा और उसे लेकर कुर्दिस्तान में प्रवेश करना आसान होगा।"

बशीर ने कहा, "अगर हमने सफ़ा की जानकारी का इस्तेमाल किया तो तुम नासिर के साथ जाना और अगर हमें मीना के बारे में ब्योरा मिल गया, तो तुम मेरे साथ जाओगी।" मीना हमारे पास ही बैठी थी। वह सब सुन रही थी, लेकिन उसने कुछ नहीं कहा। उसे देखने से लगता था कि वह ख़ुश नहीं थी, लेकिन उसे कोई आपत्ति भी नहीं थी।

"क्या तुम्हें किरकुक में छोड़ना ठीक रहेगा?" बशीर ने पूछा। उसके अनुसार मोसुल के आगे कुर्दिस्तान में प्रवेश करने के लिए वही सबसे आसान रास्ता था। यदि ऐसा हुआ, तो वहाँ पहचान-पत्र बनाने वाले को मेरा जन्म-स्थान किरकुक लिखवा देंगे और मुझे उसी शहर का कोई नाम मिलेगा।

"क्या किरकुक पर आईएसआईएस का क़ब्ज़ा है?" मुझे पता नहीं था। मैं हमेशा से यही सोच कर बड़ी हुई कि किरकुक कुर्दिस्तान का ही हिस्सा है, क्योंकि प्रदेश की पार्टियाँ यही कहती थीं। मैंने आईएसआईएस के आतंकियों की बातचीत सुनकर अंदाज़ लगाया था कि सिंजर की तरह वह भी विवादित क्षेत्र था और उस पर अब केवल कुर्द और बगदाद सरकार ही नहीं, बल्कि आईएसआईएस का भी दावा था। आतंकियों ने इराक पर क़ब्ज़ा कर लिया था और मुझे यही लगा कि उन्होंने किरकुक और उसके तेल से भरे स्थानों पर भी क़ब्ज़ा कर लिया होगा। "क्या मैं अपने घरवालों से पूछ सकती हूँ? अगर वहाँ पेशमेरगा का क़ब्ज़ा है, तो मैं वही जाना चाहूँगी।"

"ठीक है!" बशीर मेरी बात से संतुष्ट था। "मैं सिंजर में हिशाम के दोस्त से बात करूँगा और हम तुम्हारी सहायता करने की कोशिश करेंगे। नासिर तुम्हारे लिए पहचान-पत्र बनवाएगा।"

बच निकलने के बाद उस दिन हेज़्नी से मेरी पहली बार बात हुई। हम दोनों ने शांति से बात की। अपने घर सुरक्षित पहुँचने से पहले बहुत काम किया जाना था। मैंने उसकी आवाज़ पहली बार सुनी तो मुझे इतनी ख़ुशी हुई कि मैं उससे ठीक से बात नहीं कर पाई।

"नादिया!" वह बोला, "तुम बिलकुल चिंता मत करो। मुझे लगता है यह परिवार अच्छा है और यह तुम्हारी मदद करेंगे।"

हेज़्नी हमेशा की तरह आश्वस्त और भावुक सुनाई दे रहा था। मेरे साथ बहुत बुरा हो चुका था, लेकिन मुझे हेज़नी के लिए ज़्यादा दुख हो रहा था। अगर मेरी क़िस्मत अच्छी हुई तो मुझे पता लगेगा कि एक यज़ीदी के लिए ज़िंदा बचना कैसा अनुभव होगा।

मैं अपने भाई को बताना चाहती थी कि मैं कैसे भागी। मुझे अपनी बहादुरी पर गर्व था। मैंने उससे कहा, "उहोंने मुझ पर कड़ी नज़र रखी, लेकिन एक दिन उस आदमी से दरवाज़ा खुला रह गया और वह मुझे अकेला छोड़कर चला गया। मैंने दरवाज़ा खोला, दीवार फाँदी और निकल गई।"

"ईश्वर की यही मर्ज़ी थी, नादिया!" वह बोला, "वह तुम्हें ज़िंदा रखना और सुरक्षित घर पहुँचाना चाहता है।"

"मुझे इस बात की चिंता है कि इस परिवार का एक लड़का दाएश के साथ मिला हुआ है," मैंने हेज़्नी से कहा। "वैसे ये लोग धार्मिक हैं।"

हेज़्नी ने कहा कि मेरे पास और कोई विकल्प नहीं था। "तुम्हें इन्हीं पर विश्वास करना होगा।" मैंने भी उसे यही उत्तर दिया, "अगर तुम्हें भी लगता है, ये अच्छे लोग हैं तो मैं इनका साथ दूँगी।"

मुझे बाद में पता लगा कि वहाँ पर तस्करों का नेटवर्क था, जो आईएसआईएस की पकड़ से यज़ीदी लड़कियों की भागने में मदद करता था। हेज़्नी अब तक दर्जनों ऐसी लड़कियों की भागने में सहायता कर चुका था। हर ऑपरेशन शोरगुल के साथ शुरू होता था। एक बार किसी पीड़ित के घरवालों के पास पर्याप्त पैसा जुट जाता तो फिर वह व्यापार के समझौते की तरह खुलना शुरू होता था। इसमें कुछ बिचौलिए भी थे। कुछ अरब के लोग, तुर्की, सीरिया और कुर्द के स्थानीय लोग भी इसमें शामिल थे। उन्हें इस योजना में अपनी भूमिका निभाने के लिए कई हज़ार डॉलर दिए जाते थे। कुछ टैक्सी ड्राइवर भी थे जो लड़कियों को गाड़ी में लेकर जाते थे। कई लोग मोसुल या तेल अफ़ार में जासूस का काम करते थे। वे परिवारों को बताते थे कि लड़कियाँ कहाँ छिपी हैं। दूसरे लोग चेक-प्वाइंट पर मदद करते या आईएसआईएस के अधिकारियों को घूस देते और

मोलभाव करते थे। आईएसआईएस के आतंकियों में मुख्य भूमिकाएँ महिलाएँ निभाती थीं। उनके लिए सबाया से बात करना आसान होता है। इस नेटवर्क में कुछ यज़ीदी पुरुष भी हैं, जो सुन्नी गाँवों में अपनी जान-पहचान का इस्तेमाल करके इस नेटवर्क को तैयार करते और इसे सुनियोजित ढंग से चलाते हैं। हर टीम अपने-अपने इलाक़े में काम करती है। कुछ लोग सीरिया में और कुछ इराक में हैं। व्यापार की तरह इनमें भी प्रतिस्पर्धा विकसित हो गई है, क्योंकि ये समझ चुके हैं कि सबाया की तस्करी, युद्ध के समय पैसा कमाने का अच्छा और आसान तरीक़ा है।

जिस समय मेरे भागने की योजना बनाई जा रही थी, उसी दौरान यह तस्करी का नेटवर्क शुरू हुआ था और हेज़्नी इसमें अपनी भूमिका निभाने का तरीक़ा खोज रहा था। मेरा भाई बहादुर और अच्छा है। अगर वह किसी की मदद कर सकता है, तो ज़रूर करता है। लेकिन उसका फ़ोन नंबर बहुत-सी लड़कियों के पास था। रिश्तेदारों ने उसका नंबर याद कर लिया था। उनकी संख्या इतनी बड़ी हो गई थी कि उसके पास लगातार फ़ोन आते रहते थे। हिशाम ने जब मेरी ओर से हेज़्नी को फ़ोन किया तो वह पहले ही कई लोगों से बात कर चुका था और यज़ीदियों को छुड़ाने के लिए केआरजी के अधिकारियों से संबंध भी स्थापित कर चुका था। उसने मोसुल और आईएसआईएस के क़ब्ज़े वाले इलाक़ों में भी पहचान बना ली थी। बहुत जल्द तस्करी उसका पूर्णकालिक किंतु निःशुल्क धंधा बन गया!

मुझे पता नहीं था कि मेरे साथ क्या होगा। मैं किरकुक जाने की तैयारी कर रही थी। हेज़्नी को मेरी चिंता थी। उसे पता नहीं था कि नासिर या बशीर में से कौन मेरे साथ आएगा। किसी कम उम्र के सुन्नी लड़के के लिए कुर्द का चेक-प्वाइंट पार करना आसान नहीं था। हेज़्नी जानता था कि अगर आईएसआईएस को पता लग गया कि मोसुल के किसी परिवार ने एक सबाया के भागने में उसकी मदद की है, तो उन्हें बहुत बुरी सज़ा दी जाएगी। "मैं नहीं चाहता कि वह पकड़ा जाए सिर्फ़ इसलिए कि वह तुम्हारी मदद कर रहा है," हेज़्नी ने मुझसे कहा। "नासिर और बशीर जब तुम्हारे साथ कुर्दिस्तान आएँगे

तो उनकी सुरक्षा भी हमारी ज़िम्मेदारी है। नादिया, तुम भी इस बात का ख़याल रखना।"

"मैं समझती हूँ," मैंने उससे कहा। "मैं ध्यान रखूँगी।" मैं जानती थी कि अगर हम आईएसआईएस के चेक-प्वाइंट पर पकड़े गए तो मेरे साथ कुछ भी हो, लेकिन मेरे साथ जाने वाला ज़रूर मार दिया जाएगा और मुझे फिर से ग़ुलाम बनाकर लौटा दिया जाएगा। चेक-प्वाइंट पर एक और ख़तरा यह था कि नासिर या बशीर को रोक लिया जाएगा।

"नादिया, अपना ध्यान रखना," हेज़्नी ने मुझसे कहा। "चिंता मत करना। कल सुबह तुम्हें पहचान-पत्र मिल जाएगा। किरकुक पहुँचकर मुझे फ़ोन करना।"

फ़ोन काटने से पहले मैंने उससे पूछा, "कैथरीन का क्या हुआ?"

"मैं नहीं जानता, नादिया!" उसने उत्तर दिया।

"सोलाग़ की क्या ख़बर है?" मैंने पूछा।

"कोचो और सोलाग़ पर भी आईएसआईएस का क़ब्ज़ा है," उसने बताया। "वहाँ सब आदमियों को मार दिया गया। सईद बच गया था। सउद मेरे पास आ गया है और वह ठीक है। हमें नहीं पता कि सोलाग़ में रुकीं औरतों का क्या हुआ। लेकिन सईद ने उन्हें छुड़ाने का निश्चय कर लिया है। मुझे उसकी बहुत चिंता है। उसे बहुत तकलीफ़ है, क्योंकि उसे गोली लगी थी। उसे रोज़ रात को गोली चलने के सपने आते थे, जिसके कारण वह सो नहीं पाता था। मुझे चिंता है कि जो हुआ है, वह उससे उबर नहीं पाएगा," हेज़्नी ने कहा।

फिर हमने एक-दूसरे को अलविदा कहा और हेज़्नी ने फ़ोन ख़ालिद को दे दिया। ख़ालिद मेरा सौतेला भाई है। उसके पास अधिक जानकारी थी। "यज़ीदी अब भाग नहीं रहे," उसने मुझसे कहा। "कुर्दिस्तान में उनका जीवन मुश्किल हो गया है। वे लोग शिविरों के खुलने का इंतज़ार कर रहे हैं।"

"कोचो के पुरुषों का क्या हुआ?" मैंने पूछा हालाँकि मुझे उनके बारे में बता दिया गया था। मैं नहीं चाहती थी कि जो मैंने सुना था वह सच हो।

"उन सबको मार दिया गया," उसने बताया। "वे सब औरतों को साथ ले गए। क्या तुम्हारी किसी से मुलाक़ात हुई?'

"मैंने नसरीन, रोजियान और कैथरीन को देखा था," मैंने ख़ालिद को बताया। "मुझे नहीं पता वे अब कहाँ हैं।"

यह समाचार मेरी अपेक्षा से भी बुरा था। मैंने जो सुना उसे बर्दाश्त करना मुश्किल था। फिर हमने फ़ोन काट दिया। मैंने फ़ोन नासिर को दे दिया। मुझे अब यह चिंता नहीं थी कि यह परिवार मेरे साथ विश्वासघात करेगा या मेरी मदद करेगा। मैंने अपने मन को शांत कर लिया। मुझे जीवन में इतनी मानसिक थकान पहले कभी नहीं हुई थी।

मैं मीना और बशीर के घर कई दिन रुकी। इस बीच मेरे भागने की योजना बनाई जा रही थी। मैं अधिकांश समय अपने परिवार के बारे में सोचती रहती थी। मुझे कभी अपने भविष्य का ख़याल भी आता था। मुझसे कोई सवाल नहीं करता तो मैं चुप रहती थी। वह एक धार्मिक परिवार था और वे दिन में पाँच बार नमाज पढ़ते थे। लेकिन उन्हें आईएसआईएस से नफ़रत थी। उन्होंने मुझसे धर्म-परिवर्तन के बारे में कभी नहीं पूछा और न मुझे अपने साथ नमाज़ पढ़ने को कहा।

मेरी तबीयत अब भी पूरी तरह ठीक नहीं थी। मेरा पेट गर्म रहता था। फिर वे मुझे नज़दीक के एक जनाना अस्पताल में ले गए। उन्होंने बड़ी मुश्किल से मुझे विश्वास दिलाया कि वह जगह सुरक्षित थी। मैंने नासिर की माँ से कहा, "मेरे पेट पर गर्म पानी की बोतल रख दीजिए। इतना ही काफ़ी होगा।" लेकिन उन्होंने डॉक्टर से राय लेने पर ज़ोर दिया। "जब तक तुमने नक़ाब पहना है और तुम हमारे साथ हो, तुम्हें कुछ नहीं होगा," उन्होंने मुझे आश्वासन दिया। मुझे इतनी तकलीफ़ हो रही थी कि मैं उनसे बहस नहीं कर पाई। मेरा सिर घूम रहा था। मुझे यह भी नहीं लगा कि वे मुझे कब कार से शहर ले गए। मैं इतनी बीमार थी कि मुझे कोशिश करने से वह बात याद नहीं आती। फिर

जल्दी ही मेरी तबीयत ठीक हो गई। मैं सुरक्षित निकलने तक घर के भीतर ही प्रतीक्षा करती रही।

मैं कभी उनके साथ खाती तो कभी अकेले। उन्होंने हमेशा मुझे सावधान रहने को कहा था। उन्होंने मुझे समझाया, "खिड़कियों से दूर रहना और फ़ोन पर किसी से बात मत करना। अगर कोई घर आए तो तुम अपने कमरे में ही रहना और आवाज़ मत करना।" मोसुल, सिंजर की तरह नहीं था। अपने गाँव में कोई हमारे घर आता तो अंदर आने से पहले दरवाज़ा नहीं खटखटाता था। सब एक-दूसरे को जानते थे और सबका स्वागत होता था। मोसुल में अतिथि को घर में घुसने तक बाहर इंतज़ार करना पड़ता था। यहाँ तक कि दोस्तों के साथ भी अजनबियों जैसा व्यवहार किया जाता था।

मुझे बाहर जाने की अनुमति नहीं थी। उनका बाथरूम, बाहर के हिस्से में था इसलिए मुझे अंदर वाले छोटे बाथरूम का इस्तेमाल करने को कहा गया था। "हमें नहीं पता अगर कोई पड़ोसी आइएसआईएस के साथ मिला हो," उन्होंने बताया। मैंने वही किया जैसा वे कहते थे। मैं नहीं चाहती थी कि कोई मुझे देख ले और मुझे आईएसआईएस के पास वापस जाना पड़े। मेरी मदद करने के लिए ही हिशाम और उसके परिवार को भी सज़ा मिलना तय था। मुझे पता था कि अगर ऐसा हुआ तो वे घर के सब बड़े लोगों को मार देंगे। मीना की दोनों छोटी बेटियों के आईएसआईएस के क़ब्ज़े में होने की कल्पना से ही मेरी तबीयत ख़राब हो जाती थी।

मैं उनकी बेटी के कमरे में सोती थी और हम बहुत कम बात करते थे। उन्हें मुझसे डर नहीं लगता था, लेकिन उन्हें मेरे बारे में जानने में रुचि भी नहीं थी। मैं भी उन्हें अपने बारे में ज़्यादा बताना नहीं चाहती थी। वे दोनों बहुत भोली थीं। दूसरे दिन मैंने सुबह देखा कि वे दोनों शीशे के सामने अपने बाल ठीक करने की कोशिश कर रही थीं। "क्या मैं तुम्हारी मदद कर दूँ?" मैंने पूछा। "मुझे बाल काटने बहुत अच्छे से आते हैं।" उन्होंने हामी भर दी तो मैं उनके लंबे बालों में कंघी करने लगी। फिर मैंने उन्हें काढ़ कर मुलायम और सीधा कर दिया। मैं

यह काम अदकी और कैथरीन के लिए रोज़ करती थी और इसलिए मुझे उन बच्चियों के लिए यह करना अच्छा लग रहा था।

उनके घर में दिनभर टीवी चलता था और बच्चे प्ले स्टेशन पर खेलते रहते थे। लड़के, वीडियो गेम में इतने मस्त रहते थे कि वे मेरी ओर बहुत कम देखते थे। उनकी उम्र कम थी मलिक के बराबर थी, जिसे आईएसआईएस वाले उठाकर ले गए थे। अगस्त, 2014 से पहले मलिक बहुत शर्मीला, लेकिन चतुर लड़का था। उसकी अपने आसपास की दुनिया में बहुत रुचि थी। वह हमसे प्यार करता था और अपनी माँ को बहुत चाहता था। मुझे नहीं पता कि वह अब कहाँ है। आईएसआईएस ने युवा लड़कों को शिक्षा देने और उनके दिमाग़ को पलटने का एक गहन कार्यक्रम शुरू किया है। लड़कों को अरबी और अंग्रेज़ी सिखाई जाती थी और उन्हें बताया जाता था कि यज़ीदी, नास्तिकों का धर्म है और उनके परिवार वाले, जो धर्म-परिवर्तन नहीं करते, उन्हें मार देना बेहतर था।

उन लड़कों को बहुत कम उम्र में अपने साथ मिला लिया जाता था। मुझे बाद में पता लगा कि उन्हें क्या कुछ सिखाया जाता था। मलिक ने एक बार शरणार्थी कैंप की तसवीरें हेज़्नी को भेजी थीं, जिनमें वह आईएसआईएस की पोशाक में हाथ में राइफ़ल लिए खड़ा था। वह कई बार हेज़्नी को फ़ोन करके अपने साथ जुड़ने के लिए कहता था।

"तुम्हारे पिता की मृत्यु हो गई है," मलिक की माँ ने अपने बेटे को बताया। "यहाँ परिवार की देखभाल करने वाला कोई नहीं है। तुम घर लौट आओ।"

"तुम आईएसआईएस के साथ मिल जाओ," मलिक ने उत्तर दिया। "यह तुम्हारी भी देखभाल करेंगे।"

तीन साल बंदी रहने के बाद हेज़्नी किसी तरह बच निकला, लेकिन मलिक ने साथ आने से मना कर दिया। "मैं यहीं रहकर लड़ना चाहता हूँ," उसने कहा। वह पूरी तरह बदल चुका था; इसलिए फिर हेज़्नी ने भी कोशिश करना छोड़ दिया। परंतु टेलीफ़ोन की घंटी

बजती तो मलिक की माँ को सदा अपने बेटे की आवाज़ का इंतज़ार रहता था। "वो जैसा भी है, मेरा बेटा है!" वह कहती थी।

मीना एक अच्छी गृहिणी और माँ थी। वह दिन में साफ़ -सफ़ाई करती और खाना पकाती थी, बच्चों के साथ खेलती थी और उनकी देखभाल करती थी। हम दोनों ज़्यादा बात नहीं करते थे। जल्द ही उसका पति या उसका भाई मेरे साथ कुर्दिस्तान की ख़तरनाक यात्रा पर जाने वाला था। उनके परिवार के लिए इतना कष्ट उठाना बड़ी बात थी।

एक दिन उसने मेरे बालों को देखकर कहा, "तुम्हारा सिर ऊपर से लाल क्यों है?" उसने पूछा।

"मैंने बहुत समय पहले मेहंदी लगाई थी," मैंने उत्तर दिया।

"तुम्हारे बाल अच्छे लग रहे हैं," उसने कहा। फिर वह बिना कुछ बोले चली गईं।

एक दिन दोपहर के भोजन के बाद मीना अपने बच्चे को चुप कराने की कोशिश कर रही थी, लेकिन वह रोता जा रहा था। सामान्य तौर पर वह मुझे घर का काम नहीं करने देती थी। उस दिन जब वह बच्चे के साथ व्यस्त थी तो मैंने बर्तन साफ़ करने की पहल की। उसने आभार व्यक्त करते हुए हामी भर दी। लेकिन बर्तन माँजने का सिंक खिड़की के सामने था, जहाँ से बाहर की सड़क नज़र आती थी। मुझे कोई भी देख सकता था। लेकिन मीना अपने बच्चे के साथ व्यस्त थी; इसलिए उसने इस बात पर ध्यान नहीं दिया। मुझे भी उसकी मदद करने का मौक़ा मिल गया। उस दिन उसने मुझसे बहुत-से सवाल पूछे।

"क्या तुम दाएश के और लोगों को जानती हो?" उसने पूछा।

"हाँ," मैंने कहा। "वे लोग मेरे दोस्तों और घरवालों को ले गए। उन्होंने सबको अलग कर दिया।" मैं भी उससे यही प्रश्न पूछना चाहती थी, लेकिन इससे वह नाराज़ हो सकती थी।

फिर उसने कहा, "मोसुल छोड़ने के बाद कहाँ जाओगी?"

"अपने भाई के पास," मैंने कहा। "वह अन्य यज़ीदियों के साथ एक शरणार्थी शिविर में मेरा इंतज़ार कर रहा है।"

"शिविर कैसा होता है?" उसने पूछा।

"मुझे नहीं पता," मैंने उत्तर दिया। "जो भी जीवित बचा है, वही जाएगा। मेरे भाई हेज़्नी ने बताया कि वहाँ का जीवन कठिन है। वहाँ कोई काम नहीं होता। वह जगह शहर से दूर है, लेकिन फिर भी सुरक्षित है।"

"यहाँ पता नहीं क्या होगा?" वह बोली। यह प्रश्न नहीं था; इसलिए मैंने कोई जवाब नहीं दिया। मैं बर्तन साफ़ करती रही और वह चुपचाप बैठी थी।

इस बीच बच्चे ने रोना बंद कर दिया और माँ की बाँहों में सो गया था। मैं फिर से अपने कमरे में ऊपर चली गई और गद्दे पर लेट गई। लेकिन मेरी आँखों में नींद नहीं थी।

3

यह तय हुआ कि मेरे साथ नासिर जाएगा। मैं इस बात से ख़ुश थी। नासिर को मुझसे बात करना अच्छा लगता था और मैं उसके साथ सहज हो गई थी। हमारे निकलने तक वह मेरे भाई जैसा था। मेरे अपने भाइयों की तरह नासिर भी मुझे छेड़ता था। हम दोनों हँसी-मज़ाक़ करते, जिसे कोई और नहीं समझ पाता था। उनके घर पर शुरु के दिनों में नासिर जब भी मुझसे हालचाल पूछता, तो मैं विचारों में खोई अवस्था में जवाब देती, "बहुत गर्मी है! बहुत ज़्यादा गर्मी है!" मुझे कुछ भी कहने से डर लगता था। लगभग एक घंटे बाद वह फिर पूछता, "कैसा लग रहा है?" मुझे ध्यान नहीं रहता था कि मैं पहले वाली बात दोहरा रही थी। वह मेरी ओर से जवाब दे देता था, "नासिर, बड़ी गर्मी लग रही है! या बहुत गर्मी है! बहुत ज़्यादा गर्मी है!" फिर हम हँसते थे।

नासिर, तीसरे दिन मेरा पहचान-पत्र लेकर आ गया। उसमें मेरा नाम सूज़न लिखा था और मेरे घर का पता किरकुक का था। उसमें बाक़ी सब जानकारी सफ़ा की थी। "तुम यह सब याद कर लो," उसने कहा। "अगर किसी ने चेक-प्वाइंट पर पूछताछ की और तुम नहीं बता पाईं तो हम पकड़े जाएँगे।"

मैंने उस पहचान-पत्र को ध्यान से दिन-रात पढ़ा और सफ़ा की जन्म-तिथि याद कर ली। वह मुझसे बड़ी थी। मैंने उसके माता-पिता का नाम, नासिर की जन्म की तारीख़ और उसके माता-पिता का नाम भी याद कर लिया। दाएश के आने से पहले इराक के लोगों के पहचान-पत्र पर व्यक्ति की अपनी निजी जानकारी के अलावा उसके

माता-पिता या पति के बारे में जानकरी भी आवश्यक समझी जाती थी।

एक कोने पर सफ़ा की फ़ोटो चिपकी थी। हमारी शक्लें मिलती नहीं थीं, लेकिन मुझे नहीं लगा कि चेक-प्वाइंट पर पहरेदार नक़ाब उठाकर देखेंगे। आईएसआईएस के सदस्यों से यह उम्मीद नहीं थी कि वे किसी सुन्नी औरत का चेहरा, वह भी उसके पति के सामने, दिखाने को कह सकते हैं। यह मुश्किल काम था। यदि आईएसआईएस का कोई व्यक्ति तुमसे पूछे कि तुमने अब तक दाएश का पहचान-पत्र क्यों नहीं बनवाया तो सिर्फ़ इतना कहना कि तुम्हें समय नहीं मिला। हिशाम ने मुझे सबकुछ समझा दिया था। मैंने सारी जानकारी इतनी अच्छी तरह याद कर ली कि वह मेरे दिमाग़ में बैठ गई थी।

हमारी योजना बहुत सरल थी। नासिर और मैं, पति-पत्नी बनकर किरकुक अपने परिवार से मिलने जा रहे थे। *सूज़न* उस शहर का लोकप्रिय नाम था। 'तुम उनसे कहना कि तुम एक सप्ताह के लिए जा रही हो और नासिर कहेगा कि वह तुम्हें छोड़ने जा रहा है और एक-दो दिन में वापस लौट आएगा। ऐसा करने से आईएसआईएस के पास जुर्माना भरने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी।

"क्या तुम्हें किरकुक के बारे में जानकारी है?" उन्होंने पूछा। "या कोई ऐसी चीज़, जिसके बारे में वे तुमसे पूछ सकते हैं?"

"मैंने वह जगह कभी नहीं देखी," मैंने कहा। "लेकिन मैं अपने भाई से पूछ सकती हूँ।"

"इसके बैग का क्या करेंगे?" नासिर ने पूछा। मेरे पास अपना बैग था, जिसमें कैथरीन, दीमल और मेरे कुछ कपड़े थे। साथ में कुछ सेनेटरी पैड थे, जिनमें मैंने अपनी माँ का राशन कार्ड और कुछ ज़ेवर छिपा रखे थे। इतना सामान देखकर ऐसा नहीं लगता था कि एक मुसलमान औरत एक सप्ताह के लिए अपने परिवार से मिलने जा रही है।

हिशाम बाहर गया और एक-एक बोतल शैंपू और कंडीशनर ले आया। वह कुछ साधारण कपड़े भी लाया। वह पोशाक मुसलमान औरतों में ज़्यादा पहनी जाती थी। मैंने सब सामान अपने बैग में रख

लिया। मुझे दुख था कि वे लोग मुझ पर बहुत पैसा ख़र्च कर रहे थे। वे मेरी तरह ही ग़रीब थे और मैं उन पर बोझ नहीं बनना चाहती थी। "मैं कुर्दिस्तान पहुँचकर आपको पैसे भेज दूँगी," मैंने उनसे कहा। तो वह बोले, "कोई बात नहीं!" लेकिन मेरे दिमाग़ से यह बात नहीं निकली। मेरे दिमाग़ में यह भी चल रहा था कि अगर इनके लिए पैसा परेशानी का कारण बना तो ये मुझे दाएश को नहीं सौंप दें।

हेज़्नी ने मुझे इस बारे में सोचने से मना किया था। "पाँच हज़ार डॉलर के इनाम वाली बात झूठ है," उसने कहा। "दाएश केवल इसलिए यह सब कहते हैं ताकि लड़कियाँ भागने की कोशिश नहीं करें। वह तुम्हारे दिमाग़ में यह भरना चाहते हैं कि तुम पशु हो और कोई भी परिवार, जो तुम्हें पकड़ेगा, तुम्हें बेच सकता है। लेकिन वे किसी को पैसा नहीं देते।"

"मोसुल छोड़ना नासिर के लिए अच्छा होगा," हेज़्नी ने मुझसे कहा।

"इसका क्या मतलब हुआ?" मैंने आश्चर्य से पूछा।

"क्या तुम नहीं जानती?" हेज़्नी ने कहा। "तुम हिशाम से पूछ लेना।"

मैंने हिशाम को यह बात कही और पूछा, "मेरा भाई यह क्यों बोल रहा था? क्या नासिर यहाँ से जाना चाहता है?"

एक पल सोचने के बाद हिशाम ने उत्तर दिया, "हमें नासिर की चिंता होती है। वह जवान है और हमें लगता है कि दाएश, इसे अपने साथ शामिल कर लेंगे।"

नासिर अमेरिकी क़ब्ज़े के दौरान शिया सरकार के राज में ग़रीबी में पला-बड़ा था। वह बड़ा हुआ तो सुन्नी लोगों को प्रताड़ित होते देख उसे ग़ुस्सा आता था। उसके जैसे कई जवान लोग आईएसआईएस में भर्ती हो गए। उसका परिवार यही सोचता था कि नासिर पुलिस में भर्ती होना चाहता था। वह मोसुल में सैनिटेशन सिस्टम को ठीक करने के काम में लगा था और सबको लगता था कि हिंसा रहित उस काम के बावजूद आगे चलकर लोग, नासिर को आतंकवादी मानना शुरू कर देंगे।

मैं इस परिवार से मिली थी तो वे उसी दौर से गुज़र रहे थे। वे किसी भी तरह मोसुल से निकलना चाहते थे। उन्हें लगा अगर किसी यज़ीदी को बचाने में उसकी मदद की जाए तो उनके लिए भी निकलना संभव होगाय क्योंकि फिर उन्हें कुर्दिस्तान में प्रवेश करने की इज़ाज़त मिल सकती थी।

हिशाम ने मुझसे नासिर को कुछ भी कहने से मना कर दिया। "तुम किसी से मत कहना कि उसने आईएसआईएस के लिए काम किया था। हालाँकि वह केवल टॉयलेट ठीक करता था, लेकिन इससे फ़र्क़ नहीं पड़ता। कुर्द या इराकी सेना उसे जेल में बंद कर देगी।"

मैंने वादा किया कि मैं यह बात किसी से नहीं कहूँगी। मैं नासिर के आईएसआईएस में शामिल होने की कल्पना भी नहीं कर सकती थी। मेरे लिए यह सोचना भी मुश्किल था कि वे धर्म के आधार पर लोगों को पकड़ते थे। क्या उसे हाजी सलमान के साथ भी काम करना पड़ेगा? वह मेरा दोस्त बन चुका था। उसका स्वभाव बहुत अच्छा था और उसे यह काम नहीं करना चाहिए। मैं उससे हाल में मिली थी और मुझे नहीं पता कि वह क्या सोचता था। क्या उसका भी यही विचार था कि इराक में सुन्नी इस्लाम समर्थकों को छोड़कर सबको देश से बाहर निकाल देना चाहिए? मैंने अपने भाइयों को यह कहते सुना था कि सुन्नी मुसलमान, वर्षों तक अमेरिकी कुर्द के दमन और आईएसआईएस के प्रभाव में अपने ही पड़ोसियों के साथ हिंसक हो गए थे। उन्हीं में से एक आदमी अब मेरी मदद कर रहा था। क्या वह केवल ख़ुद को बचाने के लिए ऐसा कर रहा था? लेकिन इस बात से क्या फ़र्क़ पड़ता है!

मैंने इन बीते सालों में नासिर और उसके परिवार के बारे में कई बार विचार किया। उन्होंने मेरी सहायता के लिए बहुत बड़ा ख़तरा उठाया था। आईएसआईएस वालो को अगर पता लगता कि उन्होंने एक सबाया को आश्रय दिया था तो वे लोग उन्हें मार सकते थे या उनकी बेटियों को पकड़ सकते थे। दाएश के लिए यह पता लगाना मुश्किल

नहीं था। वे लोग सब जगह फैले हुए थे। काश! सब लोग नासिर के परिवार की तरह अच्छे होते।

इराक और सीरिया में ऐसे हज़ारों परिवार थे, जिन्होंने किसी की मदद नहीं की या उस नरसंहार में सक्रिय भूमिका निभाई। उनमें से बहुतों ने मेरी तरह भागने वाली लड़कियों के साथ विश्वासघात भी किया होगा। कैथरीन और लमिया को छह बार उन लोगों ने पकड़कर आतंकियों के हवाले कर दिया, जिनके पास वह सहायता माँगने गई थीं। हर बार उन्हें सज़ा दी गई। सबाया का एक समूह सीरिया ले जाया गया था। टिगरिस नदी के किनारे जंगली पशुओं की तरह उनका पीछा किया गया। वहाँ के एक स्थानीय किसान ने आईएसआईएस के कमांडर को उनके भागने की ख़बर दी थी।

जहाँ एक ओर हमें लगातार यातनाएँ दी जा रही थीं और हमारे साथ बलात्कार हो रहा था, वहीं दूसरी ओर इराक और सीरिया के परिवार सामान्य जीवन जी रहे थे। वे लोग हमें बंदी बनाते और हत्याएँ होती देखते थे। पता नहीं, उन्हें कैसा महसूस होता था। साल 2016 के अंत में मोसुल के आज़ाद होने के बाद लोगों ने आईएसआईएस के समय में आई कठिनाइयों के बारे में बात करना शुरू किया। वे बताते थे कि आतंकवादी कितने निर्दयी थे। उन्हें डर था कि विमान कभी भी उनके घरों पर बम गिरा सकते थे। उनके पास भोजन नहीं था, घर की बिजली कट चुकी थी, बच्चों को आईएसआईएस के स्कूलों में जाना पड़ता था। उनके बच्चों को लड़ाना सिखाया जाता था और उन पर जुर्माना लगाया जाता था। लोगों को गोलियों से मार दिया जाता था। यह तो जीने का कोई तरीक़ा नहीं था।

मैं जिस समय मोसुल में थी, वहाँ जीवन सामान्य नहीं, बल्कि अच्छा था। जो लोग वहाँ रहते थे, उनके लिए बढ़िया था। क्या वे लोग आईएसआईएस के कामों से सहमत थे? क्या उन्हें वह विचार पसंद था? साल 2003 में अमेरिकी सैनिकों के आने के बाद हुए युद्ध की तरह क्या उन्हें सब सामान्य लगता था? आईएसआईएस के वादों के अनुसार अगर उनके जीवन में सुधार हुआ होता तो क्या वे आतंकवादियों को स्वेच्छा से लोगों को मारने देते थे?

मुझे उन परिवारों पर दया आती थी। मुझे पता है उनमें से अधिकांश लोग डरे हुए थे। शुरू में जिन्होंने आईएसआईएस का स्वागत किया था, वे बाद में उनसे नफ़रत करने लगे। मोसुल के आज़ाद होने के बाद भी उनके पास कोई विकल्प नहीं था। आतंकवादी अपनी इच्छा से जो मर्ज़ी आए करते थे। लेकिन मुझे लगता है कि उनके पास एक विकल्प था। अगर वे सब इकट्ठा हो जाते और अपने हथियारों को एक जगह जमा करके आईएसआईएस पर हमला बोल देते तो शायद बहुत-से लोग मारे जाते, लेकिन आईएसआईएस को एक कड़ा संदेश ज़रूर मिलता। इसी के साथ यज़ीदियों और बाक़ी दुनिया को भी संदेश मिलता कि घरों में रहने वाले सुन्नी मुसलमान, आतंकवाद का समर्थन नहीं करते। कुछ लोग यदि मोसुल की सड़कों पर चिल्लाते और कहते, "मैं मुसलमान हूँ और तुम जो चाहते हो, वह इस्लाम के अनुसार नहीं है! यह ग़लत है," तो शायद अमेरिकी और इराकी सेनाएँ पहले ही वहाँ मदद के लिए पहुँच जातीं। यज़ीदी लड़कियों को छुड़ाने वाला तस्करी का नेटवर्क भी फैल जाता। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। हम लोग ग़ुलामों के बाज़ार में खड़े रोते-चिल्लाते रहे, लेकिन उन्होंने कुछ नहीं किया।

नासिर के घर पहुँचने के बाद उन्होंने मुझे बताया कि वे आईएसआईएस के बीच अपनी भूमिका के विषय में सोचने लगे थे। उन्होंने बताया कि उन्हें बुरा लगता था, जब कोई सबाया ख़ुद चलकर उनके दरवाज़े पर मदद माँगने आती थी। उन्हें पता था कि उनका ज़िंदा रहना आतंकियों का समर्थन करने जैसा ही था। मुझे नहीं पता कि मोसुल पर आईएसआईएस के क़ब्ज़े के बाद अगर स्थितियाँ बेहतर हो जातीं, तो उन्हें कैसा महसूस होता। उन्होंने मुझे यही बताया कि उनका जीवन बदल चुका था। "हम कसम खाते हैं कि तुम्हारे जाने के बाद हम तुम्हारी जैसी और लड़कियों की भी मदद करेंगे," उन्होंने मुझे यही कहा था।

"ऐसी बहुत सी लड़कियाँ हैं, जिन्हें आपकी ज़रूरत है," मैंने उन्हें उत्तर दिया।

4

मैंने और नासिर ने कुछ दिन के बाद यात्रा शुरू की। मुझे उनके यहाँ रहना अच्छा लगा, लेकिन मुझे मोसुल से निकलना था। चारों तरफ़ आईएसआईएस के लोग थे। मुझे पता था कि हाजी सलमान और उसके आदमी मुझे ढूँढ़ रहे होंगे। मेरे लिए उसके जैसे आदमी के साथ एक शहर में रहना मुश्किल था। मैं मीना के घर एक दिन सुबह उठी तो बहुत-सी लाल चींटियाँ मेरे ऊपर चढ़ी हुई थीं। यह एक संकेत था। मैं पहले चेक-प्वाइंट को पार करने तक सुरक्षित नहीं थी। यह भी संभावना थी कि हम कभी वहाँ तक नहीं पहुँच पाएँगे।

मीना के घर आने के कुछ दिन बाद नासिर के माता-पिता सुबह-सुबह वहाँ पहुँच गए। "यहाँ से जाने का समय हो गया है," उन्होंने कहा। मैंने कैथरीन के कपड़े पहने और ऊपर से काला अबाया पहन लिया।

"मैं प्रार्थना करूँगी," माहा ने मुझसे कहा। उसने यह बात बहुत प्यार से कही थी; इसलिए मैं मना नहीं कर सकी। मैं प्रार्थना सुनने लगी। फिर उसने मुझे एक अँगूठी दी और कहा, "तुमने अपनी माँ की अँगूठी के बारे में बताया था। उसकी जगह, तुम इसे रख लो।"

मेरे बैग में पहले से ही काफ़ी सामान था, जो मुझे उन लोगों ने दिया था। मैं कुछ सामान कोचो से लेकर निकली थी। मैंने चलते हुए दीमल की पीली पोशाक मीना को दे दी। मैंने उसके दोनों गालों को चूमा और फिर उसे धन्यवाद दिया। "तुम इस पोशाक में बहुत सुंदर

नज़र आओगी," मैंने उसे पोशाक सौंपते हुए कहा। "यह मेरी बहन दीमल की है।"

"शुक्रिया नादिया!" उसने कहा। *"इंशा अल्लाह!* तुम कुर्दिस्तान ज़रूर पहुँच जाओगी।" मुझसे और देखा नहीं गया। परिवार के सब लोगों ने और नासिर की पत्नी ने अलविदा कहा और फिर हम चल पड़े।

घर से निकलते समय नासिर ने मुझे एक मोबाइल फ़ोन दिया। उसके पास दो फ़ोन थे। "अगर तुम्हें किसी चीज़ की ज़रूरत पड़े या तुम्हें रास्ते में कुछ पूछना हो तो मुझे मैसेज करना। गाड़ी में बात मत करना।"

"गाड़ी में लंबी यात्रा से मुझे उल्टी आती है," मैंने उसे पहले ही बता दिया। उसने रसोई से कुछ प्लास्टिक के थैले रख लिए। "उल्टी आए तो इनका इस्तेमाल करना। मैं रास्ते में रुकना नहीं चाहता।"

"चेक-प्वाइंट पर घबराना मत," उसने कहा। "शांत रहना। मैं सभी सवालों के जवाब ख़ुद दूँगा। अगर वे तुमसे कुछ पूछते हैं, तो संक्षेप में उत्तर देना और आवाज़ को धीमा रखना। अगर उन्होंने विश्वास कर लिया कि तुम मेरी पत्नी हो तो फिर वह तुमसे ज़्यादा बात नहीं करेंगे।"

मैंने हामी भरी और कहा, "मैं अपनी तरफ़ से पूरी कोशिश करूँगी।" मुझे डर लग रहा था। लेकिन नासिर शांत था। उसे देखकर नहीं लगा कि उसे किसी बात का डर था।

सुबह लगभग साढ़े आठ बजे हम मुख्य सड़क पर चल रहे थे। वहाँ से टैक्सी लेकर मोसुल से आगे जाना था, जहाँ से फिर नासिर ने एक और टैक्सी किराए पर ली थी। वह किरकुक के लिए हमारा इंतज़ार कर रही थी। नासिर और मैंने रास्ते में कोई बात नहीं की। मैं सिर झुकाकर चल रही थी, क्योंकि मैं नहीं चाहती थी कि लोग मुझे देखें। मेरी आँखों में समाया डर तुरंत किसी को भी बता सकता था कि मैं यज़ीदी हूँ।

उस दिन बहुत गर्मी थी। मीना के पड़ोसियों ने बगीचे में पानी दिया और उनके बच्चे सड़कों पर खेल रहे थे। मैं उनकी आवाज़ से

चौंक गई। लंबे समय तक घर के भीतर रहने के बाद सड़क पर मुझे डर लग रहा था। मुझे चारों ओर ख़तरा नज़र आता था। मीना के घर पर इतने दिन के इंतज़ार के बाद जो आशा बँधी थी, वह अचानक ग़ायब हो गई। मुझे लग रहा था कि आईएसआईएस वाले हमें ज़रूर पकड़ लेंगे और मुझे फिर से सबाया बनकर लौटना पड़ेगा। "सब ठीक हो जाएगा," नासिर ने धीमे-से कहा। वह टैक्सी का इंतज़ार कर रहा था। उसे मेरा डर नज़र आ रहा था। गाड़ियाँ आसपास तेज़ी से गुज़र रही थीं। मुझे इतना डर था, जब हमें टैक्सी मिली तो मेरे लिए, उसमें घुसना भी मुश्किल हो गया।

मैं कुछ भी सोचती तो मेरी कल्पना मेरे पकड़े जाने पर आकर समाप्त हो जाती थी। मैंने कल्पना में देखा कि हमारी गाड़ी रास्ते में ख़राब हो गई है और हमें आतंकियों में से भरे एक ट्रक में ले जाया जा रहा है। फिर मैंने देखा कि किसी विस्फोटक पर गाड़ी चढ़ गई और हम सड़क पर ही मारे गए। मुझे उन लड़कियों का ख़याल आ रहा था, जो मेरी दोस्त रह चुकी थीं, लेकिन अब इराक और सीरिया में पहुँच गई थीं और मेरे भाई, जिन्हें स्कूल के पीछे ले जाकर मार दिया गया था। आख़िर, मैं किसके लिए घर जा रही हूँ?

मोसुल के गैराज पर बहुत भीड़ थी। लोग इराक के विभिन्न शहरों में जाने के लिए टैक्सी ढूँढ़ रहे थे। पुरुष, ड्राइवरों से पैसों को लेकर मोलभाव कर रहे थे और उनकी पत्नियाँ चुपचाप खड़ी थीं। कुछ लड़के ठंडे पानी की बोतलें बेच रहे थे, कुछ चिप्स और टॉफ़ियाँ तो कुछ लड़के सिगरेट की दुकान पर खड़े थे। मैं सोचने लगी क्या यहाँ कोई यज़ीदी होगा। मुझे आशा थी कि वे सब लड़कियाँ यज़ीदी थीं और सारे आदमी नासिर की तरह उनकी मदद कर रहे थे। वहाँ बहुत-सी पीली टैक्सियाँ खड़ी थीं। उनकी छत पर एक छोटा-सा निशान था और वहाँ उस जगह का नाम लिखा था, जहाँ उन्हें जाना था। वे टैक्सियाँ आंशिक रुप से आईएसआईएस के नियंत्रण में थीं या उनके ड्राइवरों को डराया जाता था। मेरा देश ऐसे लोगों के क़ब्ज़े में था, जिन्होंने मुझे बंदी बनाकर मेरे साथ बलात्कार किया था।

ट्रैक्सी ड्राइवर हमें ले जाने की तैयारी कर रहा था। उसने नासिर से बातचीत शुरू कर दी। मैं थोड़ी दूरी पर एक बेंच पर बैठी नासिर की पत्नी होने का नाटक कर रही थी। मुझे उनकी बात सुनाई नहीं दे रही थीं। मेरे माथे से पसीना बहने लगा। मैंने कसकर अपने बैग को पकड़ रखा था। हमारे टैक्सी ड्राइवर की उम्र लगभग चालीस वर्ष थी। वह बलिष्ठ था, हालाँकि उसका कद ज़्यादा नहीं था। उसकी छोटी गाड़ी थी। मुझे नहीं पता आईएसआईएस के बारे में वह क्या सोचता होगा। मुझे सबसे डर लग रहा था। मैं बहादुर होने का दिखावा कर रही थी, लेकिन मुझे बार-बार यही लग रहा था कि हम पकड़े जाएँगे।

आख़िर नासिर ने मुझे कार में बैठने का इशारा किया। वह ड्राइवर के साथ आगे बैठा और मैं पीछे की सीट पर बैठ गई। मेरा बैग मेरे साथ था। ड्राइवर ने गाड़ी निकाली और रेडियो चालू कर दिया। वह कोई स्टेशन ढूँढ़ रहा था लेकिन उंसे कुछ नहीं मिला। फिर उसने ठंडी साँस ली और रेडियो बंद कर दिया।

"आज बहुत गर्मी है," उसने नासिर से कहा। "चलने से पहले थोड़ा पानी ख़रीद लेते हैं।" नासिर ने हामी भरी और अगले ही पल हम एक छोटी-सी दुकान पर पहुँच गए, जहाँ से ड्राइवर ने ठंडे पानी की बोतलें और चिप्स ख़रीदे। नासिर ने एक बोतल मुझे दे दी। उसके बाहर पानी की बूंदें टपक रही थीं, जिससे बगल की सीट गीली होने लगी। बिस्किट और चिप्स बहुत सूखे थे। मुझे खाने की इच्छा नहीं हुई।

"तुम किरकुक क्यों जा रहे हो?" ड्राइवर ने पूछा।

"वहाँ मेरी पत्नी का परिवार रहता है," नासिर ने उत्तर दिया।

ड्राइवर ने अपने शीशे में मुझे देखा। मैं बाहर देखने का नाटक करने लगी। मुझे मालूम था कि मेरी आंखों में भरा डर मेरा राज खोल सकता था।

गैराज के आसपास की सड़कें आतंकियों से भरी थीं। आईएसआईएस की गाड़ियाँ किनारे पर खड़ी थीं और अफ़सर बाहर टहल रहे थे। उनकी बेल्ट में बंदूके लटकी थीं। वहाँ लोगों से ज़्यादा पुलिस वाले थे।

"तुम किरकुक में ही रुकोगे या मोसुल वापस आओगे?" ड्राइवर ने नासिर से पूछा।

"हमने अभी सोचा नहीं है," नासिर ने कहा। उसने वही कहा जो उसके पिता ने समझाया था। "देखते हैं वहाँ पहुँचने में कितना समय लगता है। फिर देखेंगे किरकुक के क्या हाल-चाल हैं।"

यह सवाल क्यों पूछ रहा है? मेरे मन में प्रश्न उठा। मुझे ख़ुशी थी कि वह मुझसे सवाल नहीं कर रहा था।

"तुम चाहो तो मैं इंतज़ार करके तुम्हें मोसुल वापस ला सकता हूँ," ड्राइवर ने कहा। नासिर उसे देखकर मुस्करा दिया। "देखेंगे," उसने उत्तर दिया।

पहला चेक-प्वाइंट मोसुल के अंदर था। वह एक बड़ा-सा मकड़जालानुमा ढाँचा था, जिसके ऊपर धातु की छत थी। वह कभी इराकी सेना का चेक-प्वाइंट होता था, लेकिन अब उस पर आईएसआईएस का झंडा लहरा रहा था। उसके सामने आईएसआईएस के वाहन खड़े थे और उन पर भी काले-सफ़ेद झंडे लगे थे।

हम वहाँ पहुँचे तो चार आतंकी तैनात थे। वे छोटे-छोटे बूथों में बैठकर काग़ज़ी कार्यवाही को पूरा करने में लगे थे। आईएसआईएस मोसुल के अंदर और उससे बाहर जाने वाले ट्रैफ़िक पर नियंत्रण रखना चाहता था। वे आईएसआईएस के किसी विरोधी या तस्कर को शहर में दाख़िल नहीं होने देना चाहते थे। उनकी यह जानने में भी रुचि थी कि कौन शहर छोड़कर कहाँ, कितने समय के लिए और क्यों जा रहा था। अगर कोई उन्हें धोखा देता तो वे उसके परिवार को सज़ा देते थे। परंतु उनकी कोशिश धन हड़पने में ज़्यादा रहती थी।

हमसे आगे कुछ गाड़ियाँ खड़ी थीं और हमारी बारी जल्दी आ गई। मुझे बहुत डर लग रहा था। मेरी आँखों से आँसू बहने लगे। मैं जितना शांत रहने का प्रयास करती, मेरे शरीर में कंपन उतना ही ज़्यादा हो रहा था। मुझे लगा मैं निश्चित तौर पर पकड़ी जाऊँगी। *मुझे भाग जाना चाहिए,* मेरे मन में ख़याल आया। इसी बीच हमारी गाड़ी धीमी हो गई। मैंने दोनों हाथ गाड़ी के हैंडल पर रख लिए। मैं

आवश्यकता पड़ने पर बाहर कूदने के लिए भी तैयार थी। यह अच्छा विकल्प नहीं था और भागने का कोई रास्ता भी नहीं था। गाड़ी के एक तरफ़ गर्म मैदान था जिसका दूसरा छोर नज़र नहीं आता था और दूसरी ओर, वह शहर था जहाँ से भागकर मैं निकलना चाहती थी। आतंकी मोसुल की हर इंच ज़मीन पर नज़र रखते थे। उन्हें किसी सबाया को पकड़ने में परेशानी नहीं होती थी। मैंने ईश्वर से प्रार्थना की कि पकड़ी नहीं जाऊँ।

नासिर ने मुझे गाड़ी के शीशे से देखा तो वह समझ गया कि मुझे डर लग रहा था। वह एक पल के लिए मुस्कराया। उसने मुझे शांत करने की कोशिश की। लेकिन मेरा दिल तेज़ी से धड़क रहा था। फिर उसकी मुस्कराहट देखकर मेरे भीतर थोड़ी हिम्मत आई और मैंने गाड़ी से बाहर कूदने का विचार छोड़ दिया।

हम बूथ पर पहरा दे रहे एक पहरेदार के पास रुक गए। मैंने दरवाज़ा खुलता देखा। एक वर्दी वाला आतंकी बाहर निकला। वह आईएसआईएस के केंद्र पर मुझे ख़रीदने आए लोगों जैसा ही दिखता था। मैं फिर से डर से काँपने लगी। ड्राइवर ने गाड़ी का शीशा नीचे किया। आतंकी ने झुककर ड्राइवर को फिर नासिर को देखा और आख़िर में उसकी नज़र मुझ पर और मेरे बैग पर पड़ी। "सलाम आलेकुम!" उसने कहा। "कहाँ जा रहे हो?"

"हम किरकुक जा रहे हैं," नासिर ने उत्तर दिया। उसने हमारे पहचान-पत्र खिड़की में से पहरेदार को दिखाए। "मेरी पत्नी किरकुक की रहने वाली है।" नासिर की आवाज़ में ज़रा भी कंपन नहीं था।

आतंकी हमारे पहचान-पत्र ले गया। उसने पहचान पत्र बूथ में बैठे पहरेदार को दिखाए। उसकी टेबल पर कुछ काग़ज़ पड़े थे और एक रेडियो रखा था। वहाँ एक छोटा-सा पंखा भी रखा था। तभी मेरी नज़र अपनी फ़ोटो पर पड़ी। वह तीन और लड़कियों की फ़ोटो के साथ दीवार पर चिपकी हुई थी। यह वही फ़ोटो थी, जो हाजी सलमान ने मेरा धर्म-परिवर्तन करवाते समय ली थी। उसके नीचे कुछ लिखा था, जिसे मैं दूर से पढ़ नहीं पाई। मेरा अनुमान है कि उसमें मेरे बारे में सूचना होगी और यह निर्देश होगा कि यदि मैं पकड़ी जाऊँ तो

मेरे साथ क्या करना है। मैंने जल्दी से तीनों फ़ोटो पर नज़र डाली। मुझे सूरज की रोशनी के कारण दो फ़ोटो नज़र नहीं आईं और तीसरी को मैं पहचान नहीं सकी। वह बहुत कम उम्र की थी। मेरी तरह उसके चेहरे पर भी डर था। मैंने मुँह मोड़ लिया। मैं नहीं चाहती थी कि आतंकी मुझे उन फ़ोटो को देखते हुए भी देखे। इससे उन्हें मुझ पर संदेह हो सकता था।

"तुम किरकुक में किससे मिलने जा रहे हो?" उसने नासिर से पूछा। उसका मुझ पर ध्यान नहीं था।

"मेरी पत्नी का परिवार वहाँ रहता है," नासिर ने उत्तर दिया।

"कितने समय के लिए जा रहे हो?"

"मेरी पत्नी वहाँ एक सप्ताह रुकेगी, लेकिन मैं आज ही लौट आऊँगा," नासिर बोला। हमने यही तय किया था। नासिर बिलकुल डरा नहीं।

मुझे नहीं पता नासिर ने पहरेदार के पीछे लटकी मेरी फ़ोटो देखी या नहीं। उससे साफ़ पता लग रहा था कि वे लोग मुझे खोज रहे थे। नासिर लगातार पहरेदार के प्रश्नों के उत्तर दे रहा था।

इसके बाद पहरेदार घूमकर मेरी तरफ़ आया। उसने मुझे खिड़की का शीशा नीचे करने का संकेत किया। मैंने शीशा नीचे किया, तो भी मुझे डर लग रहा था। नासिर ने मुझे शांत रहने और किसी भी सवाल का उत्तर आराम से देने की सलाह दी थी। मुझे अरबी भाषा अच्छी तरह आती थी। उन्हें मेरे बोलने के तरीक़े से किरकुक नहीं, बल्कि सिंजर के होने का शक हो सकता था। इराक बहुत बड़ा देश है। लोगों की बातचीत के तरीक़े से उनके रहने की जगह का पता लगाया जा सकता है। मुझे पता नहीं था, किरकुक के लोग कैसे बात करते हैं।

आतंकी ने झुककर खिड़की से मुझे देखा। मेरे चेहरे पर नक़ाब था। मैंने अपनी आँखों को शांत रखा। मैंने उन्हें ज़्यादा झपकने का मौक़ा नहीं दिया। मुझे हर हालत में आँसुओं को भी रोकना था। मैं अबाया के नीचे पसीने से तर थी और डर से मेरा शरीर काँप रहा था। लेकिन मैं पहरेदार की नज़र में सामान्य मुस्लिम औरत थी। मैंने उसके प्रश्नों के उत्तर देना शुरू कर दिया।

उसने मुझसे बहुत छोटे सवाल पूछे। "तुम कौन हो?" यह पहला सवाल था।

"मैं नासिर की पत्नी हूँ," मैंने कहा।

"कहाँ जा रही हो?"

"किरकुक।"

"क्यों?"

"मेरा परिवार वहाँ रहता है," मैंने नीचे देखकर सहज ढंग से उत्तर दिया। मैंने विनम्रता से जवाब देने की कोशिश की। उसे मेरे उत्तर सुनकर अंदाज़ा नहीं हुआ कि मैं बोलने का अभ्यास करके आई थी।

मेरी बात सुनकर पहरेदार सीधा खड़ा हो गया और फिर चला गया।

फिर पहरेदार ने ड्राइवर से प्रश्न किया। "तुम कहाँ के रहने वाले हो?"

"मोसुल!" ड्राइवर ने जवाब दिया। उसका जवाब सुनकर लग रहा था कि वह ऐसे उत्तर लाखों बार दे चुका था।

"तुम कहाँ काम करते हो?"

"जहाँ पैसा मिल जाता है," ड्राइवर ने कहा और फिर हँसने लगा। इसके बाद बिना कुछ कहे पहरेदार ने हमारे पहचान-पत्र खिड़की से लौटा दिए और हमें आगे जाने का इशारा कर दिया।

हमारी गाड़ी एक लंबे पुल को पार करके निकल गई। किसी ने कोई बात नहीं की। धूप में टिगरिस नदी का पानी चमक रहा था। आस-पास के पेड़-पौधे लहरा रहे थे। नदी से दूर पौधों का जीवन ज़्यादा नहीं था। वे इराक की भयंकर गर्मी में जलकर मर जाते थे। केवल वही पौधे बचते थे, जिन्हें वहाँ के निवासी पानी देते थे या कभी-कभार होने वाली बारिश से उन्हें पानी मिल जाता था।

पुल पार करने के बाद ड्राइवर बोला, "क्या तुम्हें पता है हमने अभी जो पुल पार किया है वह विस्फोटकों से भरा पड़ा है? दाएश ने पूरे पुल पर बम लगा रखे हैं ताकि इराकी या अमेरिकी सेना मोसुल पर हमला नहीं कर सके। मुझे यहाँ से गाड़ी चलाना बहुत बुरा लगता है। ये बम कभी भी फट सकते हैं।"

मैंने मुड़कर देखा तो पुल और चेक-प्वाइंट बहुत पीछे छूट चुके थे। और हम अब तक ज़िंदा थे। लेकिन ग़लती कहीं भी हो सकती थी। आईएसआईएस के आतंकी ने चेक-प्वाइंट पर कई सवाल पूछे थे। उसका ध्यान अगर मेरी बोली पर गया होता तो उसे संदेह हो सकता था। मैं फिर कल्पना करने लगी कि वह मुझे गाड़ी से निकलने को कह रहा है। फिर मुझे उसकी बात माननी पड़ती। वह मुझे बूथ पर ले जाता। वे मुझसे नक़ाब उठाने को कहते और तुरंत मेरी फ़ोटो से मुझे पहचान लेते। मेरे दिमाग़ में पुल पर बिछे बम फटने का विचार भी आया था, जिसमें हम तीनों की मृत्यु हो सकती थी। मैं प्रार्थना करने लगी कि जब कभी पुल पर विस्फोट हो तो यह आईएसआईएस के आतंकियों से भरा हो।

5

हम मोसुल से आगे निकले तो हमें रास्ते में हुई लड़ाई के दृश्य देखने को मिल रहे थे। कुछ छोटी-छोटी चौकियों को इराकी सेना ने ख़ाली कर दिया था और वहाँ अब जला हुआ मलबा रह गया था। सड़क के एक किनारे एक ट्रक का मलबा पड़ा था। मैंने टीवी पर देखा था कि आतंकियों ने सेना द्वारा छोड़े गए चेक-प्वाइंट को जला दिया था। लेकिन मुझे इसका कारण समझ में नहीं आया। शायद वे लोग बिना किसी कारण चीज़ों को नष्ट कर देना चाहते थे। यहाँ तक कि सड़क के किनारे कोई पशु भी नज़र नहीं आ रहा था।

थोड़ी देर बाद हम एक और चेक-प्वाइंट पर पहुँचे। यहाँ केवल आईएसआईएस के दो आतंकी थे, जो पहले वालों से ज़्यादा बेफ़िक्र दिख रहे थे। उन्हें हमारी या हम कहाँ जा रहे थे, इस बात की भी चिंता नहीं थी। उन्होंने जल्दी से पहले वाले कुछ सवाल पूछे। मैंने बूथ पर नज़र डाली, लेकिन वहाँ कोई फ़ोटो नज़र नहीं आया। कुछ ही मिनटों में हमें आगे जाने का रास्ता दे दिया गया।

मोसुल से किरकुक जाने वाली सड़क काफ़ी लंबी और घुमावदार है। वह कहीं चौड़ी तो कहीं बहुत सँकरी हो जाती है। वहाँ दुर्घटनाएँ बहुत होती हैं। गाड़ियाँ, धीमे चलने वाले ट्रकों को पार करने के लिए तेज़ी से गुज़रती हैं और सामने से आ रही गाड़ियों की लाइट की चकाचौंध से टक्कर हो जाती है। सामान से लदे ट्रक पलट जाते हैं, जिनके कारण गाड़ियों को बहुत नुक़सान होता है। कई जगह सड़क भी ऊबड़-खाबड़ है और उस पर चलते हुए लगता है कि आप किसी पहाड़ पर चल रहे हैं।

इराकी शहर ऐसी बहुत-सी सड़कों से जुड़े हैं। उनमें से ज़्यादातर सड़कें ख़तरनाक हैं और उन पर भीड़-भाड़ रहती है। आईएसआईएस ने शहर पर क़ब्ज़ा करने से पहले सड़कों पर नियंत्रण किया। उन्होंने ट्रैफ़िक को रोक दिया, लोगों को अलग-थलग कर दिया, फिर चेक-प्वाइंट बनाए, जिससे वे किसी भागने वाले को आसानी से पकड़ सकते थे। इराक से भागने वालो के लिए हाईवे ही एकमात्र रास्ता है। खुले मैदानों और रेगिस्तान में छिपने की संभावना नहीं होती। अगर इराक के शहर और उसके नगर देश के ज़रूरी अंग हैं, तो सड़कें यहाँ की नसें हैं। आईएसआईएस ने जैसे ही इन पर क़ब्ज़ा किया, उनका यहाँ के लोगों पर पूरा नियंत्रण हो गया।

मैं गाड़ी से बाहर देखती रही। सामने सूखे और समतल रेगिस्तानी मैदान थे। यह जगह सिंजर से बिलकुल अलग थी; जहाँ बसंत में सबकुछ घास और फूलों से भर जाता था। मुझे लगा मैं विदेश में हूँ और शायद ऐसा ही था, क्योंकि हम अभी तक आईएसआईएस के कब्जे वाले इलाक़े से बाहर नहीं निकले थे। बाहर का परिदृश्य एक जैसा नहीं था। चट्टानें छोटी-बड़ी थीं और वे कहीं सिकुड़कर रेत में बदल जाती तो कहीं पहाड़-सी खड़ी हो जाती थीं। रेत में काँटेदार पौधे थे। पूरे रास्ते कहीं पेट्रोल पंप नज़र आया, तो कहीं गाँव में ईंटों से बने कच्चे घर थे। फिर मुझसे लंबे समय तक बाहर नहीं देखा गया।

मुझे चक्कर आने लगे। मैंने नासिर द्वारा मीना के घर से रवाना होने के पहले दिया प्लास्टिक का एक थैला निकाला और उसमें उल्टी कर दी। मेरा पेट लगभग ख़ाली हो गया था। मुझे कुछ भी खाने में डर लग रहा था। उल्टी के कारण टैक्सी में दुर्गंध भर गई। ड्राइवर और नासिर दोनों को असुविधा हो रही थी, तो उन्होंने खिड़कियाँ खोल दीं। "अपनी पत्नी से कहो कि अगली बार मुझे बता दे ताकि मैं गाड़ी रोक दूँ," ड्राइवर ने नासिर से कहा। "गाड़ी में बहुत बदबू हो जाती है।" नासिर ने हामी भर दी।

कुछ देर बाद मैंने गाड़ी रोकने को कहा और मैं बाहर निकल आई। बगल से गाड़ियाँ गुज़र रही थीं और तेज़ हवा चल रही थी। मेरा अबाया उड़ रहा था। मैं नहीं चाहती थी कि ड्राइवर मेरा चेहरा देखे।

उल्टी से मेरा गला जलने लगा और पेट्रोल की बदबू से मेरी परेशानी बढ़ रही थी।

नासिर मेरे पास आया और उसने पूछा, "तुम्हारी तबीयत ठीक है? हम आगे चलें या तुम यहाँ कुछ देर रुकना चाहती हो?" मैंने देखा कि वह परेशान था, क्योंकि हम सड़क किनारे खड़े थे। थोड़ी-थोड़ी देर में आईएसआईएस का कोई वाहन वहाँ से गुज़र रहा था। अबाया और नक़ाब वाली लड़की को उल्टी करते देखने से उनका ध्यान मेरी ओर जा सकता था।

"मैं ठीक हूँ," मैंने नासिर से कहा। मैं फिर से टैक्सी में बैठ गई। मुझे कमज़ोरी और पानी की कमी महसूस हो रही थी। मेरे कपड़े पसीने से लथपथ थे। मुझे याद नहीं मैंने आख़िरी बार क्या खाया था। कार में बैठकर मैंने आँखें बंद कर लीं। मैं सोना चाहती थी।

कुछ देर बाद हम एक छोटे-से शहर में पहुँच गए, जो सड़क के किनारे बसा था। वहाँ कुछ खाने-पीने और मैकेनिक की दुकानें थीं। हमें एक रेस्तरां नज़र आया जिसे देखकर लगता था कि वहाँ इराकी भोजन मिलता होगा। "क्या तुम्हें भूख लगी है?" ड्राइवर ने पूछा। नासिर ने हामी भरी। उसने भी नाश्ता नहीं किया था। मैं रुकना नहीं चाहती थी, लेकिन यह मेरे बस में नहीं था।

वह रेस्तरां बड़ा और साफ़ था। वहाँ कई परिवार बैठे थे, लेकिन आदमी और औरतों के बैठने की अलग-अलग जगह थी। इराक में यही व्यवस्था होती है। मैं पार्टीशन के एक तरफ़ बैठ गई और ड्राइवर व नासिर दूसरी तरफ़ बैठ गए। "मैंने कुछ खाया तो फिर से उल्टी हो जाएगी," मैंने नासिर से कहा। फिर भी उसने खाने पर ज़ोर दिया। "अगर तुम नहीं खाओगी, तो और बीमार हो जाओगी।" यह कहकर वह मेरे लिए दाल का सूप और ब्रेड ले आया और उसे मेरी टेबल पर रखकर दूसरी तरफ़ चला गया।

मैंने नक़ाब थोड़ा-सा उठाया, क्योंकि मैं उसे हटाए बिना खाना चाहती थी। सूप स्वादिष्ट था। प्याज और दाल से बना वह सूप वैसा ही था जैसा कि मैं कोचो में लेती थी। मैं कुछ चम्मच ही सूप पी

सकी। अभी भी काफ़ी रास्ता बाक़ी था और मुझे फिर उल्टी हो सकती थी।

पार्टीशन के कारण मुझे अकेलापन लग रहा था। मेरे सामने कुछ औरतें बैठी थी, लेकिन मुझे उनकी बात सुनाई नहीं दे रही थी। उन्होंने भी मेरे जैसे कपड़े पहने थे। वे कबाब व ब्रेड खाने के लिए सलीके से नक़ाब उठाती थीं। मैं भी धीरे-धीरे खाना खाने लगी। लंबी सफ़ेद पोशाक पहने लोग जब आए तो मैंने उन्हें देखा। वे पार्टीशन की दूसरी ओर आकर बैठे। मेरा अंदाज़ा था कि ये लोग उन औरतों के साथ होंगे। उन्होंने भी हमारी तरह चुपचाप खाना खाया। रेस्तरां में इतनी शांति थी कि मैं महिलाओं के नक़ाब उठाने व गिराने की आवाज़ें सुन पा रही थी।

हम वहाँ से निकले तो आईएसआईएस के दो आतंकी हमारी ओर आने लगे। उनका ट्रक हमारी टैक्सी के पास खड़ा था। उस पर उनका झंडा फहरा रहा था। उनमें से एक की पैर में चोट लगी थी और वह लकड़ी के सहारे चल रहा था। दूसरा, उसे सहारा देकर साथ चल रहा था। मेरे दिल की धड़कन रुकने लगी। मैंने साइड बदली, जिससे नासिर और ड्राइवर, मेरे और आतंकियों के बीच में आ गए। लेकीन हम उनके पास से गुज़रे तो उन्होंने हमारी तरफ़ आँख उठाकर भी नहीं देखा।

सड़क के दूसरी तरफ़ आईएसआईएस की एक गाड़ी खड़ी थी। उसमें दो पुलिस अधिकारी बैठे थे। क्या वह हमें पकड़ने आए थे? क्या उन्होंने अपने एक साथी को सड़क पर नासिर और मेरे लिए गश्त करने के लिए छोड़ दिया था। मुझे लग रहा था कि वे रेस्तरां से हमारे बाहर निकलने पर हमारी ओर आएंगे और फिर हमारे सिर पर बंदूकें तान देंगे? या हमसे कई सवाल करें? या नहीं करेंगे? या फिर पार्किंग में ही हमारी हत्या कर देंगे?

मुझे सबसे डर लगने लगा था। क्या रेस्तरां में बैठे पुरुष भी आईएसआईएस के सदस्य थे? उनके साथ बैठी स्त्रियाँ क्या उनकी सबाया थीं? क्या वे भी आईएसआईएस को मुर्तजा की माँ की तरह चाहते थे? मुझे सड़क पर सिगरेट बेचने वाले से लेकर गाड़ी के

मकैनिक तक हर आदमी अपना दुश्मन नज़र आ रहा था। कारों की आवाज़ें और टॉफ़ी ख़रीदते बच्चों की आवाज़ें भी मुझे बम की तरह डरा रही थीं। मैं दौड़कर गाड़ी में बैठ गई। मुझे जल्दी से किरकुक पहुँचना था। नासिर भी जल्दी से मेरे पीछे आ गया। वह भी जाने के लिए बेचैन था।

दोपहर हो गई थी। गर्मी तेज़ थी। मैंने खिड़की से बाहर देखा तो मुझे चक्कर आने लगे। मैंने आँखें बंद कर लीं। मैं केवल अपने बारे में सोच रही थी। मेरा डर कम होने का नाम नहीं ले रहा था। मुझे पता था कि अभी और कई चेक-प्वाइंट पार करने बाक़ी थे। तभी नासिर ने मुझे जो फ़ोन दिया था, उसमें कुछ आवाज़ हुई। मैंने देखा कि नासिर ने मुझे एक मैसेज भेजा था।

"तुम्हारे घरवाले मुझे मैसेज कर रहे हैं," उसमें लिखा था। "सबाह अर्बिल में हमारा इंतज़ार करेगा।"

मेरा भतीजा सबाह कुर्द की राजधानी के एक होटल में काम करता था, जहाँ कि आईएसआईएस ने कोचो के लोगों का संहार किया था। हमने उसी के यहाँ रहने की योजना बनाई थी और उसके बाद हमें जाख़ो जाना था। वहाँ हेज़्नी हमारा इंतज़ार कर रहा था, बशर्ते हम इतनी दूर पहुँच पाते।

आईएसआईएस के तीसरे चेक-प्वाइंट पर हमसे किसी ने कोई प्रश्न और यहाँ तक कि हमारा नाम भी नहीं पूछा। उन्होंने केवल हमारे पहचान-पत्र देखे और हमें आगे जाने दिया। इसका अर्थ यह था कि भागी हुई लड़कियों को पकड़ने का तंत्र ठीक से काम नहीं कर रहा था या फिर आतंकी सुस्त थे और उनके बीच तालमेल अच्छा नहीं था।

वहाँ से आगे का रास्ता हमने शांति से तय किया। हम सब थक चुके थे। नासिर ने फिर मुझे कोई मैसेज नहीं भेजा। ड्राइवर ने भी रेडियो पर स्टेशन तलाशना और पूछना बंद कर दिया था। उसने नासिर से भी कोई सवाल नहीं पूछे। वह चुपचाप गाड़ी चला रहा था।

मैं डर और बीमारी से थक चुकी थी। क्या नासिर कुर्द का चेक-प्वाइंट पार करने को लेकर घबराया हुआ था? वहाँ तैनात पेशमेरगाओं के लिए कुर्दिस्तान में प्रवेश करने वाले सुन्नी लोगों

को पहचानना बहुत आसान था। मैंने हेज़्नी से बात करके तय कर लिया था कि मैं नासिर को आईएसआईएस के इलाक़े में अकेला नहीं छोड़ूँगी, चाहे मुझे इसके लिए उसके साथ मोसुल वापस जाना पड़े। मैं उसे यह बात बताना चाहती थी, लेकिन उसने मुझे चुप रहने को कहा था। मैं मैसेज को भी आपातकाल के लिए बचाकर रखना चाहती थी; इसलिए मैंने कुछ नहीं कहा। मुझे सिर्फ़ यह उम्मीद थी कि नासिर इस बात को समझेगा कि मैं अपने दोस्त को ख़तरे में छोड़कर जाने वालां में से नहीं हूँ।

हम एक चौराहे पर पहुँच गए, जहाँ एक निशान किरकुक की ओर जाने वाले रास्ते को दिखाता था। ड्राइवर रुक गया। "मैं यहाँ से आगे नहीं जा सकता," उसने कहा। "यहाँ से चेक-प्वाइंट तक आपको पैदल जाना होगा।" उसके पास मोसुल की लाइसेंस प्लेट थी; इसलिए उसे डर था कि उससे सवाल पूछे जाएँगे या पेशमेरगा उसे रोक लेंगे।

"मैं यही इंतज़ार करूँगा," उसने नासिर से कहा। "अगर वे आपको आगे न जाने दें तो आप लौट आना। हम लोग यहाँ से मोसुल लौट जाएँगे।"

नासिर ने उसे धन्यवाद देकर पैसे दे दिए। हमने अपना सामान गाड़ी से निकाला और हम चेक-प्वाइंट की दिशा में चल पड़े। "क्या तुम थक गई हो?" नासिर ने मुझसे पूछा। मैंने हामी भरी। "मैं सचमुच बहुत थक गई हूँ," मैंने कहा। मुझे यह आशा नहीं थी कि हम पूरा रास्ता तय कर पाएँगे। मुझे हर क़दम पर कुछ बुरा होने की आशंका थी। पता नहीं, आईएसआईएस वाले हमें कब पकड़ लेंगे या पेशमेरगा, नासिर को पकड़ लेंगे। किरकुक भी एक ख़तरनाक शहर था और मुझे वहाँ भी गाड़ी में बम या विस्फोटक होने का ख़तरा सता रहा था। हमें अभी लंबी यात्रा तय करनी थी।

"चेक-प्वाइंट तक चल कर देखते हैं कि वहाँ क्या होता है," नासिर ने कहा। "तुम्हारा परिवार कहां रहता है?'

"जाख़ो!" मैंने कहा। "यह दुहोक के पास एक जगह है।"

"यह किरकुक से कितनी दूर है?" उसने पूछा। मैंने सिर हिला दिया। "मुझे नहीं पता। शायद थोड़ी दूर है।" फिर हम चुपचाप चलने लगे।

हम चेक-प्वाइंट पर पहुँचे तो वहाँ गाड़ियों की लाइन लगी थी। कुछ पैदल चल रहे लोगों से पेशमेरगा सवाल पूछ रहे थे। आईएसआईएस के साथ उनकी लड़ाई चल रही थी; इसलिए कुर्द की सरकार ने हज़ारों विस्थापित इराकियों को शरण दी थी, जिनमें सुन्नी और कुछ सुन्नी-प्रधान इलाक़ों के लोग शामिल थे। वहाँ आईएसआईएस के विरोधियों के लिए जीना मुश्किल हो गया था। उनके लिए कुर्दिस्तान में प्रवेश करना आसान नहीं था। अधिकतर सुन्नी अरब लोगों को चेक-प्वाइंट से आगे गुज़रने के लिए किसी कुर्दवासी की पहचान की ज़रूरत पड़ती थी। इस प्रक्रिया में काफ़ी समय लगता था।

किरकुक, आधिकारिक तौर पर स्वायत्तता-प्राप्त हिस्सा नहीं है। उसमें बड़ी संख्या में अरब के लोग रहते हैं। इसलिए गैर-कुर्दवासियों के लिए इन चेक-प्वाइंट को पार करना आसान होता है। सुन्नी अरब विद्यार्थी सप्ताह में एकाध बार स्कूल जाते हैं और परिवार के लोग भी बाज़ार या अपने रिश्तेदारों से मिलने जाते रहते हैं। किरकुक के लोगों की अनेक तरह की चिंताएँ हैं। वहाँ तुर्की और ईसाई, अरब और कुर्द लोगों के साथ ही रहते हैं। इसमें कुछ अच्छाई है तो कुछ ख़राबी भी है।

आईएसआईएस के इराक आने के बाद पेशमेरगा उस शहर को बचाने के लिए किरकुक आ गए। वे तेल के क्षेत्रों को आतंकवादियों से बचाना चाहते थे। इराक के पास सेना के नाम पर वही लोग थे, जो किरकुक को आतंकवादियों से बचा सकते थे लेकिन वहाँ रहने वाले कुछ लोगों ने इसकी शिकायत की। उनके अनुसार अरब के लोग वहाँ के निवासी नहीं थे। हमें पता नहीं था कि इस कारण नासिर को चेक-प्वाइंट पार करने में परेशानी होगी या नहीं, क्योंकि हम लोग इराक में आईएसआईएस की राजधानी से आए थे। इसलिए यह संभावना

थी कि उन्हें हमारे दिए स्पष्टीकरण पर संदेह हो सकता था। इस बात की संभावना थी कि वे हमें आगे नहीं जाने दें। इसके लिए मुझे यह बताना होगा कि मैं भगोड़ी यज़ीदी सबाया थी। लेकिन मैं ऐसा नहीं करना चाहती थी।

सिंजर के नरसंहार के बाद से कुर्दिस्तान में यज़ीदियों को आने की इज़ाज़त थी और वहाँ की सरकार विस्थापित लोगों की मदद कर रही थी। कुछ यज़ीदियों का कहना था कि कुर्द के निवासी चाहते हैं कि हम उन्हें माफ़ कर दें। दुनिया ने देखा कि यज़ीदी पहाड़ पर फँसे थे, लेकिन केआरजी चाहती है कि हमने जो देखा हम उसे भूल जाएँ। कुछ लोग सोचते थे कि केआरजी यज़ीदियों को कुर्दिस्तान में स्थापित करना चाहती है, लेकिन सिंजर पर फिर से क़ब्ज़ा करने में उनकी रुचि नहीं है। ऐसा करने से उनकी संख्या मज़बूत होती है और उन्हें आज़ादी मिलने की संभावनाएँ भी बढ़ जाती हैं।

कुर्द सरकार का उद्देश्य कुछ भी हो, लेकिन यज़ीदियों को सहायता की ज़रूरत थी। केआरजी शिविरों का निर्माण भी दुहोक के पास किया जा रहा था। वहाँ मेरी जैसी यज़ीदी सबाया की निःशुल्क सहायता के लिए केडीपी ने एक कार्यालय भी स्थापित किया था और धीरे-धीरे केआरजी वाले यज़ीदियों से अपने संबंधों को सुधारने की कोशिश कर रहे थे और वह लोगों में विश्वास जगाने का प्रयास कर रहे थे। उन्हें यह उम्मीद थी कि एक दिन हम स्वयं को कुर्दवासी मान लेंगे और कुर्दिस्तान का हिस्सा बन जाएँगे। परंतु मैं उन्हें क्षमा नहीं करना चाहती थी। मैं नहीं चाहती थी कि मुझे प्रवेश की अनुमति देकर उन्हें ऐसा लगे कि वे मेरी सहायता कर रहे थे। सच्चाई यह है कि आईएसआईएस ने जब सिंजर पर हमला किया तो यदि वे चाहते तो हमारे परिवारों को बचा सकते थे।

नासिर ने मुझसे कहा, "नादिया! तुम चाहो तो उन्हें जाकर बता सकती हो कि तुम यज़ीदी हो। उन्हें बता दो कि तुम कौन हो और मैं कौन हूँ। उनसे कुर्द भाषा में बात करो।" नासिर जानता था कि मैंने ऐसा किया तो वे तुरंत मुझे अंदर जाने देंगे।

लेकिन मैंने मना कर दिया। "नहीं, मैं ऐसा नहीं करूँगी।" पेशमेरगा की वर्दी देखकर मुझे ग़ुस्सा आ रहा था। "ये लोग कुर्द को छोड़कर नहीं गए तो फिर इन्होंने हमें अकेला क्यों छोड़ दिया था?"

"क्या तुम्हें पता है यह कितने थे जब इन्होंने हमें सिंजर में अकेला छोड़ा था?" मैंने नासिर से पूछा। मुझे उन यज़ीदियों का ख़याल आ रहा था, जिन्हें आईएसआईएस से डर लगता था और जिन्होंने कुर्दिस्तान में घुसने की कोशिश की थी, लेकिन उन्हें वापस भेज दिया गया था। केआरजी के चेक-प्वाइंट पर उनसे कहा गया, "चिंता मत करो। पेशमेरगा तुम्हारी मदद करेंगे। तुम्हें घर पर रहना चाहिए। इसी में तुम्हारी भलाई है।" अगर वे हमारी सहायता नहीं करना चाहते थे, तो उन्हें हमें कुर्दिस्तान में दाख़िल होने देना चाहिए था। इनके कारण हज़ारों लोग मारे गए। उनका अपहरण हो गया और वे विस्थापित हो गए।

"मैं उन्हें नहीं बताऊँगी कि मैं यज़ीदी हूँ और मैं कुर्द भाषा में बात भी नहीं करूँगी," मैंने नासिर से कहा। "इससे कुछ नहीं होगा।"

"तुम शांत हो जाओ," नासिर बोला। "तुम्हें इनकी ज़रूरत है। दिमाग़ से काम लो।"

"मैं ऐसा नहीं करूँगी!" मैंने चिल्लाकर कहा। "मैं ऐसा कुछ नहीं करूँगी, जिससे उनको यह पता लगे कि मुझे उनकी ज़रूरत है।" फिर नासिर चुप हो गया।

चेक-प्वाइंट पर सैनिक ने हमारे पहचान-पत्र देखे और फिर हमें ध्यान से देखने लगा। मैंने उनसे कुछ नहीं कहा, लेकिन नासिर ने उससे अरबी में बात की। "अपना बैग खोलो," सैनिक बोला। नासिर ने मुझसे बैग लिया और सैनिक को खोलकर दिखा दिया। उन्होंने बहुत देर तक उसे टटोला, कपड़े ऊपर-नीचे किए, शैंपू और कंडीशनर की बोतलें देखीं। मुझे तसल्ली थी कि उन्होंने सेनेटरी पैड का डब्बा नहीं खोला, जिसमें मैंने ज़ेवर सँभाल कर रखे थे।

"कहाँ जा रहे हो?" सैनिक ने पूछा।

"हम किरकुक में रहते हैं," नासिर ने कहा। "मेरी पत्नी का परिवार वहीं रहता है।"

"वहाँ तुम्हें कौन ले जा रहा है?" उन्होंने पूछा।

"हम टैक्सी से जा रहे हैं," नासिर ने कहा। "चेक-प्वाइंट पार करके हम टैक्सी कर लेंगे।"

"ठीक है," सैनिक बोला। फिर उसने इशारा करते हुए कहा, "वहाँ खड़े हो जाओ और इंतज़ार करो।"

हम लोगों की भीड़ के साथ धूप में खड़े हो गए और किरकुक में प्रवेश के लिए पेशमेरगा का इंतज़ार करने लगे। वहाँ कई परिवार खड़े थे। उनके पास बड़े-बड़े सूटकेस थे। बूढ़े लोग, सामान पर बैठ गए थे, औरतें चेहरे पर पंखे से हवा कर रही थीं। गाड़ियों पर इतने फ़र्नीचर और गद्दे लदे थे कि देखकर लगता था गाड़ी उनके बोझ से चतमारा जाएगी। एक लड़के के हाथ में फ़ुटबॉल थी और एक बूढ़ा आदमी पिंजरे में एक पीला पक्षी ले जा रहा था, मानो उनके लिए दुनिया की वही सबसे ज़रूरी चीज़ें थीं। सब लोग अलग-अलग जगहों से आए हुए थे। वे सभी अलग-अलग आयु, वर्ग और धर्म के थे, लेकिन सब एकसाथ एक जगह इंतज़ार कर रहे थे। सब डरे हुए थे और सबको एक ही चीज़ चाहिए थी; सुरक्षा! हम परिवार के साथ रहना चाहते थे और आतंकियों से बचकर भाग रहे थे। *आईएसआईएस के तहत इराकी होने का यही मतलब था,* मैंने सोचा। *हम बेघर थे। हमें शरणार्थी शिविर मिलने तक यहीं चेक-प्वाइंट पर रहना था।*

फिर एक सैनिक आया। मैंने उससे अरबी में बात की। "मैं किरकुक में रहती हूँ लेकिन फिलहाल अपने पति के साथ मोसुल से आई हूँ," मैंने नासिर की तरफ़ इशारा करके कहा। "हम अपने परिवार से मिलने जा रहे हैं।"

"तुम अपने साथ क्या ले जा रही हो?" उसने पूछा।

"एक सप्ताह के लिए कुछ कपड़े हैं," मैंने उत्तर दिया। "थोड़ा शैंपू और कुछ और निजी चीज़ें हैं।" मेरी आवाज़ धीमी हो गई और दिल तेज़ी से धड़कने लगा। "उसने हमें वापस लौटा दिया तो हमारा क्या होगा?" मैंने सोचा। नासिर का मुँह सूख रहा था। हमें एक-दूसरे की घबराहट दिखाई दे रही थी।

"क्या तुम अपने साथ हथियार ले जा रहे हो?" उन्होंने नासिर से पूछा। उसने मना कर दिया, लेकिन फिर भी उन्होंने तलाशी ली। उन्होंने नासिर के फ़ोन की जाँच की, उसके फ़ोटो और वीडियो चेक किए। उन्होंने मुझे अकेला छोड़ दिया, लेकिन मेरा फ़ोन चेक नहीं किया।

थोड़ी देर में सैनिक ने सब चीज़ें लौटा दीं, "माफ़ कीजिए, लेकिन हम आपको आगे नहीं जाने दे सकते," वह बोला। वह सैनिक क्रूर नहीं पर बहुत तेज़ था। "कुर्दिस्तान में प्रवेश के लिए किसी की पहचान होना ज़रूरी है अन्यथा हम आपकों आगे नहीं जाने दे सकते।"

"हमें सिंजर में मेरे पिता के दोस्त से बात करनी पड़ेगी," नासिर ने उस सैनिक के जाने के बाद मुझसे कहा। "वह किसी को जानते हैं और शायद वह इन्हें कहकर हमें जाने देंगे। यह उनकी बात ज़रूर सुनेंगे।"

"अच्छी बात है," मैंने कहा। "कहीं ऐसा नहीं हो कि वे इन लोगों को बता दें कि मैं यज़ीदी हूँ और तुम मेरी भागने में मदद कर रहे हो।"

नासिर ने फ़ोन मिलाया और सैनिक को पकड़ा दिया। फ़ोन पर संक्षेप में बात हुई। उसे आश्चर्य हुआ और वह थोड़ा परेशान भी था। फिर उसने नासिर को फ़ोन लौटा दिया और कहा, "तुम्हें यह बात शुरु में ही बता देनी चाहिए थी। तुम जा सकते हो।"

चेक-प्वाइंट पार करते ही मैंने नक़ाब उतार दिया। हवा चेहरे पर लगी तो मुझे कुछ राहत मिली। मैं मुस्कराई तो नासिर ने मुझसे पूछा, "तुम्हें यह पहनना पसंद नहीं है?" फिर वह भी मुझे देखकर मुस्कुरा दिया।

6

एक कुर्दवासी अधेड़ उम्र के ट्रैक्सी ड्राइवर ने हमसे पूछा कि हमें कहाँ जाना है? तो मैं और नासिर एक-दूसरे की शक्ल देखने लगे। "तुम कुर्दिस्तान में हो," उसने कहा। फिर उसने दोबारा पूछा, "तुम कौन से शहर में जाना चाहते हो? अर्बिल या सुलेमानिया?"

मैं और नासिर दोनों हँसने लगे। हम दोनों में से किसी को कुर्दिस्तान के भूगोल का पता नहीं था। "कौन-सी जगह ज़्यादा पास है?" नासिर ने पूछा।

"सुलेमानिया," ड्राइवर ने उत्तर दिया।

"तो हमें सुलेमानिया ले चलो," हमने एक साथ कहा। हम दोनों इतने थके हुए थे कि हेज़्नी के कहे अनुसार सबाह को फ़ोन करना भूल गए।

अंधेरा होने लगा रहा था। मुझे सड़क से किरकुक में घरों की रोशनी और सड़कों पर लगी स्ट्रीट-लाइट नज़र आ रही थी। मैं जब छोटी थी तो मैं कुर्दवासियों को नवरोज़ का जश्न मनाते देखती थी, जो उनका नया साल होता है। मैं टीवी पर देखती थी कि वे एकत्रित होकर मौज-मस्ती करते थे। मैं अपनी माँ से कहती कि देखो कुर्दिस्तान के लोग कितने ख़ुश हैं, जबकि हम ग़रीब गाँव में रहते हैं। तब मेरी माँ मुझे डाँटती और कहती, "नादिया, ये लोग इस जीवन के हकदार हैं। सद्दाम के शासन में इन्होंने बहुत नरसंहार देखा है।"

मैं कुर्दिस्तान में अजनबी थी। मुझे वहाँ के शहरों के नाम या लोगों के बारे में कुछ पता नहीं था। सुलेमानिया में कहीं मेरे दोस्त नहीं थे और सबाह किसी होटल में काम करता था। सउद ने दुहोक के

पास कहीं नौकरी कर ली थी। वे लोग पैसे कमाने के लिए कुर्दिस्तान में बांग्लादेशी या भारतीय मजदूरों की तरह रहते थे। उन्होंने दुहोक को अपना घर नहीं माना। मैं इराक में अजनबी थी। मेरे लिए मोसुल जाना भी संभव नहीं था। मैंने वहाँ बहुत कष्ट सहा था। मैं किसी ऐसी जगह नहीं गई थी और मैंने वहाँ के संग्रहालय या पुराने खंडहर भी नहीं देखे थे। इराक में मुझे केवल कोचो के बारे में पता था और वहा अब आईएसआईएस का क़ब्ज़ा था।

हमारा ड्राइवर कुर्दवासी था और उसे इस बात पर गर्व था। वह पूरे रास्ते हमें जगहें दिखाता गया। रास्ते में वह उर्दू-अरबी जैसी मिली-जुली भाषा में बात कर रहा था। वह नासिर से मोसुल के बारे में पूछता रहा। "क्या पूरे शहर पर दाएश का क़ब्ज़ा हो गया है?" उसने पूछा।

"हाँ," नासिर ने उत्तर दिया। "बहुत लोग वहाँ से निकलना चाहते हैं, लेकिन यह मुश्किल काम है।"

"पेशमेरगा उन्हें इराक से निकाल देंगे," ड्राइवर ने कहा। लेकिन नासिर कुछ नहीं बोला।

मुझे टैक्सी में अच्छा लग रहा था। अगले चेक-प्वाइंट पर संभावना थी कि नासिर से पूछताछ की जाएगी। यह चेक-पोस्ट असली कुर्दिस्तान को विवादित क्षेत्र से अलग करता था। हमें हिशाम के दोस्त का समर्थन प्राप्त था। यह साफ़ हो गया कि वह कोई बड़ा अधिकारी था और उसकी बात सुनी जाती थी। मुझे अब आईएसआईएस की गाड़ियाँ भी नज़र नहीं आ रही थीं। मुझे अब यह चिंता भी नहीं थी कि मेरे आस-पास आतंकवादी छिपे थे।

"तुम्हें पहाड़ों के पास इमारतें दिखाई दे रही हैं?" ड्राइवर ने खिड़की की ओर से इशारा करते हुए पूछा। हमारे दाहिने हाथ पर इराक के पूर्वी पहाड़ों की छाया में घर बन रहे थे और बड़े-बड़े बिलबोर्डों पर उस परियोजना का विज्ञापन लगा था। "ये घर पूरे बन जाएँगे तो बिलकुल अमेरिकी अपार्टमेंट की तरह नज़र आएँगे," ड्राइवर बोला। नए और सुंदर! कुर्दिस्तान में कई शानदार काम हो रहे हैं।"

"तुम्हारी पत्नी का नाम क्या है?" ड्राइवर ने पूछा। फिर उसने गाड़ी के शीशे से मेरी ओर देखा।

"सूज़न," नासिर ने उत्तर दिया। मेरा वही नाम चल रहा था।

"सूज़न अच्छा नाम है," ड्राइवर बोला। "मैं तुम्हें सु सु, बुलाऊँगा।" फिर वह मेरी ओर देखकर मुस्कराने लगा। इसके बाद वह किसी चीज़ की ओर संकेत करता तो मेरा ध्यान भी आकर्षित करता था। "सु सु, वह तालाब देखो। यह बरसात के मौसम में बहुत सुंदर नज़र आता है। सु सु, क्या तुमने वह शहर देखा, जहाँ से हम अभी निकले थे? वहाँ सबसे बढ़िया आइसक्रीम मिलती है।"

मुझे आज भी वह रास्ता याद है। मैं सोचती हूँ क्या सिंजर में कभी इतने काम होंगे, जैसे कुर्दिस्तान में हुए हैं? क्या वह गाँव नरसंहार की चोट से उबर पाएगा? मैं चाहती थी कि वहाँ विकास हो, लेकिन इस बात की संभावना मुझे नज़र नहीं आती थी। सिंजर, कुर्दिस्तान की तरह नहीं था, जहाँ की जनसंख्या में अधिकतर कुर्दवासी थे। दुश्मन यानी सद्दाम की सेना भी बाहर से आई थी। सिंजर में यज़ीदी और अरब मिलकर रहते थे। वे व्यापार के लिए एक-दूसरे पर निर्भर थे और एक-दूसरे के शहरों से होकर गुज़रते थे। हम लोगों ने दोस्त बनने की कोशिश की, लेकिन दुश्मन, सिंजर में घुस आए और उन्होंने सबको मार डाला। यदि अमेरिकी सैनिक हमारी उसी तरह मदद भी करते जैसी उन्होंने कुर्द पर सद्दाम के हमले के बाद की थी, तब भी यज़ीदी उसके बदले में ज़्यादा कुछ नहीं दे सकते थे। कैसे हम अपने पुराने जीवन में लौट सकेंगे और अरबों के बीच फिर से रह सकेंगे?

फिर ड्राइवर ने अचानक कहा, "सु सु, क्या तुम्हें पिकनिक पर जाना पसंद है?" मैंने सिर हिलाया। "अच्छी बात है। अगर तुम्हें पिकनिक पसंद है, तो तुम्हें यहाँ आना चाहिए। सुलेमानिया के बाहरी इलाक़ों के पहाड़ों की तरफ़ पिकनिक के अच्छे स्थान हैं। तुम्हें देखकर विश्वास नहीं होगा कि यह इतना सुंदर नज़र आता है!" मैंने फिर सिर हिला दिया।

ड्राइवर ने मुझे जो नाम दिया था, उसे सोचकर मैं और नासिर बाद में बहुत हँसे। "हमने तुम्हें दाएश से तो बचा लिया," नासिर बोला,

"लेकिन अगर उस ड्राइवर के साथ और समय बिताते तो वह तुम्हें वापस नहीं जाने देता।"

हम सुबह लगभग चार बजे सुलेमनिया पहुँच गए। उस समय सब कुछ बंद था। हम जैसे ही चेक-प्वाइंट के पास पहुँचे तो ड्राइवर ने कहा, "मैं इन लोगों को जानता हूँ।" उसने कुर्द भाषा में कुछ बातचीत की और उन्होंने हमें जाने दिया।

"मैं तुम्हें कहाँ ले चलूँ?" ड्राइवर ने पूछा।

"हमें गैराज के पास छोड़ दो," नासिर बोला।

"वह अभी बंद है," ड्राइवर ने कहा। वह अच्छा आदमी था और उसे हमारी फ़िक्र थी।

"कोई बात नहीं। हम उसके खुलने का इंतज़ार कर लेंगे," नासिर बोला।

ड्राइवर ने गाड़ी रोक दी। नासिर ने उसे पैसे दिए। "सु सु, शुभकामनाएँ!" वह बोला। फिर वह गाड़ी लेकर चला गया।

हम दीवार के सहारे सिर टिकाकर बैठ गए। सड़क ख़ाली थी। पूरा शहर शांत था। हम पर ऊँची इमारतों की अंधेरी छाया पड़ रही थी। सुबह बहुत अच्छी हवा चल रही थी और पहाड़ों का दृश्य भी बहुत सुंदर था। पहाड़ों ने उस शहर को गले के हार की भाँति चारों तरफ़ से घेर रखा था। मुझे बाथरूम जाना था, लेकिन नासिर से यह कहने में मुझे शर्म लग रही थी। हम वहाँ बैठे रहे। हमें बहुत थकान हो रही थी। हम दुकानें खुलने की प्रतीक्षा कर रहे थे, क्योंकि हमें तेज़ भूख भी लगी थी।

"तुम यहाँ पहले कभी नहीं आई?" नासिर ने पूछा।

"नहीं," मैंने उत्तर दिया। "लेकिन मुझे पता है कि यह सुंदर जगह है। मैंने इसे टीवी पर देखा है।" फिर मैंने नासिर को नवरोज के जश्न के बारे में बताया, लेकिन मैंने सद्दाम के बारे में जिक्र नहीं किया। "यहाँ बहुत पानी है और काफ़ी हरियाली है। यहाँ बहुत-से पार्क और

बच्चों के खेलने के लिए झूले भी हैं। ईरानी लोग यहाँ सीमा पार करके केवल टहलने आते हैं। यहाँ के पहाड़ देखकर मुझे अपने घर की याद आती है।'

"अब हम कहाँ जाएँगे?" मैंने नासिर से पूछा।

"हम टैक्सी लेकर अर्बिल जाएँगे," नासिर ने उत्तर दिया। "वहाँ तुम्हारे भतीजे से होटल में मुलाक़ात करेंगे, फिर तुम अपने भाई हेज़्नी से मिलने जाख़ो जाओगी।"

"तुम्हारे बिना?" मैंने पूछा। उसने सिर हिलाया। मुझे उसके लिए बुरा लग रहा था। "काश! तुम और तुम्हारा परिवार भी कुर्दिस्तान आ पाते। काश! तुम्हें दाएश के शासन में नहीं जीना पड़ता।"

"मुझे नहीं पता यह कैसे हो पाएगा!" नासिर ने कहा। "ऐसा शायद कभी हो जाए।" वह बहुत उदास लग रहा था।

मुझे गाड़ी में बैठने से थकान हो गई थी। मेरे पैरों में भी दर्द था। फिर हम दोनों को नींद आ गई। लेकिन हम ज़्यादा देर नहीं सो सके। दो घंटे में ही ट्रैफ़िक चलने लगा और सूरज की रोशनी तेज़ हो गई। नासिर को इस बात की ख़ुशी थी कि मुझे थोड़ी देर नींद आ गई थी। "आज सूरज की रोशनी बिना डरे तुम पर पड़ी है," नासिर ने कहा।

"हाँ, आज बिना डरे सुबह हुई है," मैंने उत्तर दिया। "यहाँ बहुत अच्छा लग रहा है।"

हम दोनों ख़ाली पेट थे। "चलो, कुछ खा लेते हैं," नासिर ने सुझाव दिया। फिर हम पास की एक दुकान में गए जहाँ से हमने अंडा-सैंडविच और सब्ज़ी ख़रीदी। उनका स्वाद ज़्यादा अच्छा नहीं था, लेकिन मुझे भूख लगी थी; इसलिए मैंने उसे खा लिया। इस बार मुझे उल्टी नहीं आई।

मैंने रेस्तरां के बाथरूम में अपना अबाया और कैथरीन के कपड़े उतार दिए। दोनों में से पसीने की ज़बरदस्त दुर्गंध आ रही थी। फिर मैंने एक पुराने गीले तौलिए से अपनी बगल और गर्दन को साफ़ किया और कपड़े बदल लिए। मैंने शीशे में नहीं देखा। मैंने काफ़ी समय से शीशा नहीं देखा था। मुझे ख़ुद को देखने से घबराहट हो रही थी। मैंने कैथरीन के कपड़े बैग में रख लिए। *मैं उसके कपड़े तब*

तक रखूँगी, जब तक वह आज़ाद नहीं होती, और फिर मैं उसे वापस दे दूँगी, मैंने सोचा। मैं अपना अबाया कूड़े में फेंक देना चाहती थी, लेकिन मैंने ऐसा नहीं किया और उसे आईएसआईएस की बदसलूकी के सबूत के तौर पर अपने पास रख लिया।

सड़कों पर लोगों की आवाज़ाही शुरू हो चुकी थी। गाड़ियों के हॉर्न सुनाई दे रहे थे और सड़क पर ट्रैफ़िक बढ़ रहा था। सामने एक ऊँची इमारत थी, जहाँ से रोशनी छनकर आ रही थी। वह शहर सचमुच सुंदर था। हमारी ओर किसी ने ध्यान नहीं दिया और मुझे अब डर भी नहीं लग रहा था।

हमने सबाह को फ़ोन किया। "मैं तुम्हें लेने सुलेमानिया आ रहा हूँ," उसने कहा। लेकिन नासिर ने उसे मना कर दिया। "तुम्हें आने की ज़रूरत नहीं है। हम तुम्हारे पास आ जाएँगे।"

शुरू में नासिर चाहता था कि मैं अकेली अर्बिल चली जाऊँ। "तुम्हें अब मेरी ज़रूरत नहीं है," उसने कहा। लेकिन मैंने ज़ोर दिया तो वह साथ चलने को तैयार हो गया। मेरा पुराना ज़िद्दीपना लौट आया था और मैं उसे अलविदा कहने को तैयार नहीं थी। "हम दोनों अर्बिल आएँगे," मैंने सबाह से कहा। "मैं तुम्हें एक आदमी से मिलवाना चाहती हूँ, जिसने भागने में मेरी मदद की है।"

सुलेमानिया का गैराज सुबह के समय व्यस्त रहता था। हम टैक्सी लेने के लिए इंतज़ार करने लगे। पहले ही चार ड्राइवर मना कर चुके थे। उन्होंने कारण नहीं बताया, लेकिन हमें शक था कि उन्होंने इसलिए मना किया, क्योंकि हम मोसुल से आए थे और नासिर अरब था। ड्राइवर हमसे पहचान-पत्र माँगते थे और उन्हें देखकर वापस कर देते थे। वे हमसे पूछते थे, "क्या तुम्हें अर्बिल जाना है?" तो हम हाँ कर देते थे।

"क्यों?" वे कारण पूछते।

"अपने परिवार से मिलने," हमने यही जवाब दिया। लेकिन फिर वे हमारे पहचान-पत्र लौटा देते और कहते, "माफ़ करना मेरी बुकिंग हो गई है। तुम किसी और से पूछ लो।"

"ये डरे हुए हैं, क्योंकि हम मोसुल से आए हैं," नासिर ने मुझे बताया।

"इनका कोई दोष नहीं है," मैंने कहा। "ये दाएश से डरे हुए हैं।"

"तुम अब भी कुर्द भाषा में बात नहीं करोगी?" नसीब ने पूछा। मैंने सिर हिलाकर मना कर दिया। "मैं उन्हें नहीं बताना चाहती थी कि मैं कौन हूँ।" हम पर अभी तक कोई बड़ी मुसीबत नहीं आई थी।

गर्मी बढ़ती गई और हम चुपचाप बैठे रहे। हमें चिंता हो रही थी कि हमें ड्राइवर नहीं मिलेगा। आख़िरकार एक ड्राइवर ने हामी भर दी। लेकिन हम उसके पहले यात्री थे; इसलिए उसने गाड़ी में और सवारियाँ बैठाने का इंतज़ार किया। "वहाँ जाकर बैठ जाओ," उसने कहा। वहाँ और भी लोग इंतज़ार कर रहे थे।

मैं लोगों की भीड़ देख रही थी। हम पर किसी का ध्यान नहीं था। मुझे अब डर भी नहीं लग रहा था, लेकिन फिर भी मुझे राहत नहीं मिली। मेरे मन में यह विचार चल रहा था कि जाख़ो पहुँचकर मेरा जीवन कैसा होगा? मेरे परिवार के ज़्यादातर लोग लापता थे या मारे जा चुके थे। मैं अपने घर नहीं जा रही थी। मैं अपने खो चुके परिजनों की ख़ाली जगह को भरने जा रही थी। मुझे अच्छा लग रहा था और साथ ही, एक अज़ीब-सा ख़ालीपन था। लेकिन फिर भी मुझे तसल्ली थी कि मुझसे बात करने के लिए नासिर मेरे साथ था।

"सब लोग डरे हुए होंगे," नासिर ने कहा। मेरे दिमाग़ में फिर से काली पोशाक पहने आतंकी के विचलित, व्यस्त लोगों के बीच बंदूक लहराने की छवि तैरने लगी।

"लेकिन हम दोनों में से वे किसे पहले पकड़ेंगे?" मैंने कहा। "उनके लिए कौन ज़्यादा ज़रूरी है? एक भागी हुई सबाया या फिर एक सुन्नी पुरुष जो मुझे बचाकर मोसुल से यहाँ लाया था?"

यह सुनकर नासिर हँस पड़ा। "यह तो पहेली है!" उसने कहा।

"मुझे इसका उत्तर पता है," मैंने कहा। "वे हम दोनों को ले जाएँगे। हम दोनों मारे जाएँगे।" फिर हम दोनों हँस पड़े।

7

तकनीकी तौर पर देखें तो कुर्दिस्तान ऐसा क्षेत्र है, जहाँ विभिन्न प्रशासनिक इकाइयाँ हैं। वहाँ केवल तीन इकाइयाँ हैं; दुहोक, अर्बिल और सुलेमानिया। लेकिन 2014 में केआरजी ने हलब्जा नाम की एक और इकाई बना दी जो अंफल का सबसे बड़ा लक्ष्य थी।

कुर्दिस्तान की आज़ादी और कुर्दवासियों की पहचान पर ज़ोर देने वाली सारी बातों के बावजूद हर प्रांत एक-दूसरे से अलग और बँटा हुआ है। वहाँ तीन मुख्य राजनीतिक पार्टियाँ हैं: बरज़ानी की केडीपी, तलबानी की पीयूके (पेटट्रियोटिक यूनियन ऑफ़ कुर्दिस्तान) और एक नई गोर्रन पार्टी जो कि तीन इस्लामी पार्टियों के मिश्रण से तैयार हुई है। इनके चलते पूरे क्षेत्र की निष्ठा में वृद्धि हुई है और केडीपी तथा पीयूके के बीच की दूरियाँ साफ़ नज़र आती हैं। 1990 के दशक में दोनों पार्टियों के समर्थक और पेशमेरगाओं के बीच गृह-युद्ध हुआ था। कुर्दवासी उसके बारे में बात करना पसंद नहीं करते, क्योंकि अगर उन्हें इराक से आज़ादी चाहिए तो उन्हें संगठित होना पड़ेगा। लेकिन वह ज़बरदस्त लड़ाई थी और उसके घाव, लंबे समय तक ताज़ा रहने वाले थे। कुछ लोगों को उम्मीद थी कि आईएसआईएस के विरुद्ध इस लड़ाई के कारण कुर्दवासियों में एकता पैदा हो जाएगी, लेकिन उस क्षेत्र में पहुँचने के बाद ऐसा महसूस होता है कि आप अलग-अलग देशों में घूम रहे हैं। दोनों पार्टियों के अपने-अपने पेशमेरगा हैं और उनकी अपनी सुरक्षा और इंटेलिजेंस एजेंसियाँ भी हैं, जिन्हें *असयाह* कहते हैं।

पीयूके और तलबानी परिवार सुलेमानिया में बसा हुआ है, जिसकी सीमा ईरान से लगती है। उसे अर्बिल की तुलना में अधिक उदार माना जाता है। अर्बिल केडीपी का हिस्सा है और पीयूके-नियंत्रित क्षेत्र, गोर्रन से अधिक प्रभावित है, जबकि केडीपी, तुर्की का सहयोगी है। कुर्द की राजनीति बहुत जटिल है। मैं जब आज़ाद होने के बाद जब मानवाधिकारों के लिए काम करने लगी तब मुझे समझ आया कि सिंजर में मिली असफलता के क्या कारण रहे होंगे।

अर्बिल के रास्ते में पड़ने वाले पहले चेक-प्वाइंट पर पेशमेरगा और पीयूके के लोग तैनात थे। हमारे पहचान-पत्र देखने के बाद उन्होंने ड्राइवर को गाड़ी रोककर एक तरफ़ लगाने को कहा।

हमारे साथ टैक्सी में एक युवक और एक औरत भी बैठे थे। वह शायद दंपति थे। वह लड़की, मुझे और नासिर को अरबी भाषा में बात करते देख चकित थी। "तुम भी कुर्द भाषा बोलती हो?" उसने पूछा। उसे फिर संतोष हो गया। मैं उनके साथ पीछे बैठी थी और नासिर आगे बैठा था। वे दोनों कुर्दिस्तान के रहने वाले थे। हमारी गाड़ी इसलिए रोकी गई थी कि मेरे और नासिर के पहचान-पत्र बाहरी इलाक़े के थे। उस लड़की को बेचैनी हो रही थी, जब सैनिक ने इंतज़ार करने को कहा। फिर वह खिड़की से बाहर देखने लगी। मेरा ध्यान उसी औरत पर था।

पेशमेरगा ने मेरी और नासिर की ओर संकेत करके कहा, "तुम दोनों हमारे साथ चलो।" उसने ड्राइवर को भी रोक लिया हमने अपना सामान टैक्सी से निकाला और उसके साथ चल पड़े। सैनिक के साथ जाते हुए मुझे फिर डर सताने लगा। मैंने नहीं सोचा था कि हमें कुर्दिस्तान में प्रवेश करने के बाद इस तरह की समस्या का सामना करना पड़ेगा। लेकिन अब यह स्पष्ट हो गया था कि मैं जब तक किरकुक की सूज़न बनकर घूमती रहूँगी, तब तक कुर्दिस्तान में घूमना आसान नहीं होगा। अगर उन्होंने हमें आईएसआईएस का समर्थक समझ लिया या उन्हें संदेह हो गया तो वे हमें आगे नहीं जाने देंगे।

कार्यालय के अंदर सैनिक हमसे सवाल पूछने लगा। "तुम कौन हो?" उसने पूछा। "अर्बिल क्यों जा रहे हो जबकि एक पहचान पत्र

मोसुल का है और दूसरा किरकुक का?" उसे नासिर पर शक हो रहा था, क्योंकि उसकी आयु भी आईएसआईएस का समर्थक बनने की थी।

हम बहुत थक चुके थे। हमें किसी तरह अर्बिल पहुँचकर सबाह से मिलना था। मुझे अचानक लगा मुझे झूठ बोलना छोड़ना होगा और असली पहचान बतानी होगी। "बहुत हो चुका!" मैंने नासिर से कहा। "मैं इन्हें सब बता दूँगी।"

उसके बाद मैंने सैनिक से कुर्द भाषा में बात की।

"मेरा नाम नादिया है," मैंने कहा। "मैं कोचो की रहने वाली हूँ। यह पहचान-पत्र झूठा है। मैंने इसे मोसुल में बनवाया था, क्योंकि मुझे दाएश ने पकड़ लिया था।" मैंने नासिर की ओर इशारा करके कहा, "इस आदमी ने मेरी मदद की है।"

सैनिक चकित रह गया। वह हम दोनों को देखता रहा और फिर बोला, "तुम्हें यह कहानी हमारे अधिकारी को बतानी होगी। मेरे साथ चलो।"

फिर उसने एक फ़ोन किया और हम दोनों को एक इमारत में ले गया, जो उनका सुरक्षा मुख्यालय था। वहाँ कुछ और अधिकारी एक कक्ष में हमारा इंतज़ार कर रहे थे। मेरे और नासिर के लिए कुर्सी रखी थी और एक वीडियो कैमरा लगा था। नासिर ने जैसे ही कैमरा देखा उसने सिर हिलाकर कहा, "नहीं!" वह अरबी में बोला, "मैं कैमरे पर कुछ नहीं बोल सकता। मैं किसी को अपनी असलियत नहीं बताना चाहता।"

मैंने अधिकारियों से कहा कि नासिर ने मुझे बचाने के लिए बड़ा ख़तरा उठाया है और इसका पूरा परिवार मोसुल में रहता है। अगर किसी को इसके बारे में पता लग गया तो इसका बहुत नुक़सान होगा या इसके परिवार को भी चोट पहुँचाई जा सकती है। आप इसे रिकॉर्ड क्यों करना चाहते हैं? इसे कौन देखेगा? मुझे ग़ुस्सा आ रहा था कि पीयूके के अधिकारी हमारे इंटरव्यू को रिकॉर्ड करने की कोशिश कर रहे थे।"

"यह केवल हमारे रिकॉर्ड के लिए है और हम नासिर के चेहरे को धुंधला कर देंगे," उन्होंने बताया। "हम कुरान की कसम खाकर कहते हैं कि इसे हमारे अधिकारियों के अलावा और कोई नहीं देख सकता।"

हमें जब भरोसा हो गया कि हमारी कहानी सुने बिना वे हमें आगे नहीं जाने देंगे तो हमें उनकी बात माननी पड़ी। "आपको भी यह भरोसा देना होगा कि नासिर की पहचान नहीं बताई जाएगी और केवल आपके अधिकारी इस वीडियो को देख सकेंगे।"

"बिलकुल! ऐसा ही होगा," उन्होंने कहा। तब हमने बोलना शुरू किया। वह इंटरव्यू कई घंटों तक चलता रहा।

एक बड़े अधिकारी ने सवाल पूछे, "क्या तुम कोचो की रहने वाली यज़ीदी हो?"

"हाँ," मैंने कहा। "मैं यज़ीदी हूँ और मैं सिंजर के कोचो गाँव की रहने वाली हूँ। हम गाँव में थे, जब पेशमेरगा हमें छोड़ कर चले गए। दाएश ने हमारे स्कूल पर लिख दिया कि यह गाँव दवलात अल-इस्लामिया का है।" मैंने उन्हें बताया कि हमें किस तरह ज़बरदस्ती स्कूल ले जाया गया। फिर वे लोग लड़कियों और औरतों को सोलाग़ से मोसुल ले गए।

"तुम्हें मोसुल में कितने समय रहना पड़ा?" उसने पूछा।

"मुझे ठीक से पता नहीं है," मैंने उत्तर दिया। हमें अंधेरे कमरों में रखा जाता था; इसलिए समय का अंदाजा नहीं पड़ता था।" वे जानते थे कि सिंजर में क्या हुआ था। उन्हें यज़ीदी पुरुषों की हत्या और लड़कियों के अपहरण की भी ख़बर थी, लेकिन वह सबकुछ मुझसे सुनना चाहते थे। उन्होंने पूछा कि मेरे साथ क्या किया गया और किस तरह नासिर ने मेरी सहायता की। नासिर ने अरबी में मुझसे इन दोनों विषयों के बारे में सावधानी से बोलने को कहा। वह बोला, "मेरे परिवार के बारे में पूछें तो यह मत बताना कि तुम हमारे घर आई थीं, तो शाम का समय था और हम बाहर बैठे थे। इनसे कहना कि तुम आधी रात में आई थीं वरना इन्हें लगेगा कि हम दाएश से मिले हुए हैं।" मैंने नासिर को भरोसा दिया कि मैं ध्यान से बात करूँगी।

अधिकारी, मेरे बलात्कार के विषय में विस्तार से सुनना चाहते थे। लेकिन मैंने उन्हें सबकुछ खुलकर बताने से मना कर दिया। मेरा परिवार मुझसे बहुत प्रेम करता था। मुझे नहीं पता कि मेरे परिवार या समाज को जब यह पता लगेगा कि मैं अब कुँवारी नहीं हूँ तो वे मेरे बारे में क्या सोचेंगे। मुझे ध्यान आया कि मेरे साथ बलात्कार करके हाजी सलमान ने मुझसे कहा था कि मैं भाग भी गई तो मेरे घरवाले मुझे मार डालेंगे। "तुम बर्बाद हो गई हो," उसने कहा था। "कोई तुमसे शादी नहीं करेगा। कोई तुमसे प्यार नहीं करेगा। तुम्हारा परिवार भी तुम्हें स्वीकार नहीं करेगा।"

नासिर को भी चिंता थी कि मेरा परिवार कैसा व्यवहार करेगा, जब उन्हें बलात्कार के बारे में पता लगेगा। "नादिया, ये लोग सबकुछ रिकॉर्ड कर रहे हैं। मुझे इन पर भरोसा नहीं है," नासिर बोला। "तुम्हें इंतज़ार करके देखना चाहिए कि तुम्हारे घरवाले तुम्हारे साथ कैसा व्यवहार करते हैं।" जिन लोगों ने मुझे पाल-पोस कर बड़ा किया था, उनके बारे में मन में संदेह रखना पीड़ा देता है। लेकिन यज़ीदी सचमुच संकीर्ण विचारधारा के होते हैं। हमारे समाज में विवाह से पहले संभोग की अनुमति नहीं है। यज़ीदी लड़कियों के साथ ऐसी घटना के बारे में कोई सोच भी नहीं सकता। इन परिस्थितियों में कोई भी समाज, चाहे वह आपसे कितना भी प्रेम करता हो, ख़ुद को सँभाल नहीं पाता।

एक अधिकारी ने हमें भोजन और पानी दिया। मैं वहाँ से जाना चाहती थी। "मुझे अपने परिवार से मिलना है," मैंने कहा। "मुझे देर हो रही है।"

"यह ज़रूरी मामला है," उन्होंने कहा। "पीयूके अधिकारी तुम्हारे बारे में सबकुछ जानना चाहेंगे। उन्हें यह भी समझना है कि तुम भागकर कैसे निकलीं।" उनकी रुचि सबसे ज़्यादा इसमें थी कि केडीपी के पेशमेरगा हमें कैसे छोड़कर चले गए थे। मैंने उन्हें सबकुछ बताया और यह भी कि आतंकवादी किस तरह ग़ुलामों को बाज़ार में बेचते थे और सबसे सुंदर लड़कियों को उठा ले जाते थे।

"तुम्हें कौन ले गया था?" एक अधिकारी ने पूछा।

"वह एक बड़े क़द का आदमी था। वही मुझे ले गया था," मुझे सलवान की याद आ रही थी। "मैं उनके केंद्र में एक दिन रही और फिर जब मैंने देखा कि कोई पहरेदार नहीं था, तो मैं वहाँ से भाग निकली।"

इसके बाद बोलने की बारी नासिर की थी।

"रात के साढ़े बारह या एक बजे का समय था, जब हमें दरवाज़े पर आवाज़ सुनाई दी," नासिर ने बताया। "हम दरवाज़े पर आवाज़ सुनकर डर गए। हमारा अंदाज़ था कि दाएश हथियार लेकर आए हैं।" फिर उसने मेरे बारे में बताया और यह कि उन्होंने किस तरह नक़ली पहचान-पत्र बनवाए और मोसुल से बाहर निकले।

पीयूके पेशमेरगा और उनके अधिकारी नासिर से बहुत ख़ुश थे। उन्होंने उसे धन्यवाद दिया और उसे 'हीरो' बना दिया। उन्होंने पूछा कि आईएसआईएस के नियंत्रण में जीवन कैसे कटता है और कहा कि हमारे पेशमेरगा आतंकियों से लड़ेंगे और उन्हें इराक से निकालकर दम लेंगे। उन्हें गर्व था कि कुर्दिस्तान, मोसुल से भागने वाले लोगों के लिए सुरक्षित स्थान था। उन्होंने हमें याद दिलाया कि पीओके की सेनाओं ने सिंजर को नहीं छोड़ा था।

"नादिया जैसी हज़ारों लड़कियाँ मोसुल में क़ैद हैं," नासिर ने उन्हें बताया। "नादिया केवल उनमें से एक है। मैं इसे लेकर यहाँ आ गया हूँ।" हमने इंटरव्यू ख़त्म किया तो दोपहर के चार बज चुके थे।

"तुम अब कहाँ जा रहे हो?" अधिकारी ने पूछा

"हमें दुहोक के पास शिविर में जाना है," मैंने उन्हें बताया। लेकिन उससे पहले मुझे अर्बिल में अपने भतीजे से मिलना है।"

"दुहोक में कौन रहता है?" अधिकारी ने पूछा। "हम उस ख़तरनाक जगह पर तुम्हें नहीं जाने देंगे।"

मैंने अपने सौतेले भाई वालिद का नंबर उनको दे दिया। वह नरसंहार के बाद पेशमेरगा के साथ जुड़ गया था। कई यज़ीदी पुरुषों ने पेशमेरगा का समर्थन शुरू कर दिया था। उसके लिए उन्हें पैसे मिलते थे। मुझे उम्मीद थी कि वे अपने साथी पर भरोसा करेंगे, लेकिन यह सुनकर पीयूके के अधिकारी का स्वर बदल गया। "क्या

वह केडीपी का पेशमेरगा है?" अधिकारी ने पूछा और फिर फ़ोन काट दिया। "अगर ऐसा है तो तुम्हें उसके साथ नहीं जाना चाहिए। तुम्हें पता होना चाहिए कि वे असुरक्षित छोड़कर चले गए थे।"

मैंने उसकी बात का जवाब नहीं दिया, हालाँकि मुझे कुर्द की राजनीति के बारे में ज़्यादा जानकारी नहीं थी। लेकिन मुझे लगा किसी का पक्ष लेना ठीक नहीं होगा। "तुम्हें इंटरव्यू में इस बारे में और बात करनी चाहिए थी," अधिकारी ने कहा। "दुनिया को पता होना चाहिए कि जब तुम मर रहे थे, तो केडीपी के पेशमेरगा तुम्हें छोड़कर भाग गए थे।"

"अगर तुम यहाँ रुक जाओ तो मैं तुम्हारी मदद कर सकता हूँ," उसने कहा। "तुम्हारे पास तो घर जाने के लिए शायद पैसे भी नहीं हैं।"

उसने बहुत ज़ोर दिया कि पीयूके के क्षेत्र में रहना हमारे लिए सुरक्षित होगा, लेकिन मैंने कहा कि मुझे जाना होगा। आख़िरकार उसे लगा वह मुझे आश्वास्त नहीं कर पाएगा। "मैं अपने परिवार के साथ रहना चाहती हूँ, केडीपी या अन्य नहीं।" मैंने कहा। "मैंने अपने घरवालों को कई सप्ताह से नहीं देखा है।"

"अच्छी बात है," उसने कहा। फिर उसने नासिर के हाथ में एक काग़ज़ का टुकड़ा दिया। "इसे अपने साथ रखना। किसी चेक-प्वाइंट पर अपना पहचान पत्र मत दिखाना, बल्कि यह काग़ज़ दिखाना तो वे तुम्हें आगे जाने देंगे।"

उन्होंने हमारे लिए एक टैक्सी बुलाई और हमें अर्बिल तक ले जाने की व्यवस्था कर दी। उन्होंने पैसे भी दिए और रुकने के लिए आभार व्यक्त किया। मैंने और नासिर ने टैक्सी में बैठते हुए कुछ नहीं कहा, लेकिन मैंने देखा कि नासिर भी राहत महसूस कर रहा था, क्योंकि हम चेक-प्वाइंट को पार करने वाले थे।

उसके बाद हमने हर चेक-प्वाइंट पर वही काग़ज़ दिखाया और हमें तुरंत आगे जाने दिया गया। मैं थोड़ी देर सोना चाहती थी। हम आगे बढ़े तो हरियाली देखने को मिली। खुले खेत और मैदान थे और उनकी अच्छी तरह देखभाल हो रही थी, क्योंकि उन्हें कोई छोड़कर

नहीं गया था। कोचो जैसे छोटे-छोटे गाँव, उनमें बने मिट्टी के कच्चे मकान, आसपास घूमते ट्रैक्टर और फिर बड़े नगर शुरू हो गए। उनमें कुछ बड़ी-बड़ी दिख रहीं इमारतें और मस्जिदें थीं। ये सिंजर में मौजूद इमारतों से कहीं ज़्यादा बड़ी थीं। मुझे टैक्सी में सुरक्षित लग रहा था। खिड़की से अंदर आती हवा भी पहले से ज़्यादा ठंडी और साफ़ थी।

कुछ ही देर में नासिर का फ़ोन बजा। "सबाह का फ़ोन है," उसने कहा। फिर उसने कुछ अपशब्द बोले। "उसने हमारा इंटरव्यू देख लिया है। उन लोगों ने हमारा इंटरव्यू सबको दिखा दिया।"

सबाह का फिर से फ़ोन आया तो नासिर ने फ़ोन मुझे दे दिया। सबाह बहुत ग़ुस्से में था। "तुमने इंटरव्यू क्यों दिया?" उसने मुझसे पूछा। "तुम्हें इंतज़ार करना चाहिए था।"

"उन्होंने कहा था कि वह इसे शेयर नहीं करेंगे," मैंने सबाह को बताया। "उन्होंने वादा किया था।" मुझे ग़ुस्सा आ रहा था और यह चिंता भी थी कि नासिर और उसके परिवार की असलियत आईएसआईएस वाले जान जाएँगे तो वे उसके घर पहुँचकर उन्हें नुक़सान पहुँचाएँगे। नासिर को आईएसआईएस के आतंकियों के बारे में बहुत जानकारी थी। उन्होंने चेहरा धुंधला करने का वादा ज़रूर निभाया था, लेकिन फिर भी नासिर को पहचान लिया गया था। मेरी कहानी, जो अत्यंत व्यक्तिगत थी और केवल मेरे कुछ विश्वासपात्र लोग जानते थे, अब समाचार पर सबको सुनाई जा रही थी। मुझे बहुत डर लग रहा था।

"नासिर के परिवार का और हमारा अब यही जीवन है," सबाह ने कहा।

मैं कार की सीट पर बैठी थी और मुझसे हिला नहीं जा रहा था। मुझे रोना आने लगा। मुझे समझ नहीं आया कि मैं क्या कहूँ। वह वीडियो नासिर के साथ भी बहुत बड़ा विश्वासघात था। मुझे पीयूके के अधिकारियों से नफ़रत हो रही थी क्योंकि उन्होंने उसे सार्वजनिक कर दिया था। वे केडीपी से ख़ुद को बेहतर साबित करना चाहते थे। "काश! मुझे मोसुल में ही मार दिया जाता! इस तरह मेरा वीडियो

सार्वजनिक नहीं होता," मैंने नासिर से कहा। पीयूके वालों ने हमारा इस्तेमाल किया था।

उस वीडियो की बुरी यादें मेरे दिमाग़ में बहुत समय तक बनी रहीं। मेरे भाई बहुत ग़ुस्सा हुए कि मैंने अपना चेहरा सबको दिखा दिया और अपने परिवार की पहचान बता दी। नासिर को भी अपनी सुरक्षा की चिंता हो रही थी। हेज़्नी ने कहा, "हम हिशाम को क्या मुँह दिखाएँगे? उसने हमारी मदद की थी और अब उसका लड़का मारा जा सकता है।" उन लोगों को बहुत ग़ुस्सा आ रहा था, क्योंकि मैंने कैमरे पर केडीपी पेशेमेरगा की निंदा की थी। यज़ीदियों के लिए शरणार्थी शिविर भी केडीपी के इलाके में लगाए गए थे। हम उन पर निर्भर थे और मैंने उनकी निंदा कर दी। मुझे बहुत जल्दी पूरी बात समझ में आ गई। मेरा व्यक्तिगत दुख किसी और के लिए राजनीतिक उपकरण बन गया। मुझे भविष्य में बहुत ध्यान रखना होगा, क्योंकि अलग लोगों के लिए बातों के अलग मतलब होते हैं। आपकी कहानी को आपके ख़िलाफ़ हथियार की तरह इस्तेमाल किया जा सकता है।

8

अबिल से बाहर पीयूके का दिया काग़ज़ नहीं चल पाया। वह चेक-प्वाइंट बड़ा था। वहाँ गाड़ियों की लंबी कतारें थीं और बीच-बीच में पक्की दीवारें थी क्योंकि वहाँ आत्मघाती दस्ते भी घूमते थे। वहाँ मसूद बरज़ानी की तसवीरें लटकी थीं। इस बार हमें आश्चर्य नहीं हुआ, जब पेशमेरगा ने हमें टैक्सी से निकलकर अपने सुपरवाइजर के ऑफ़िस में बुंलाया। वह एक छोटा-सा कमरा था, जहाँ एक लकड़ी की मेज़ पर कमांडर बैठा था। वहा कैमरा या भीड़ नहीं थी, लेकिन इससे पहले कि हम कुछ बोलते मैंने सबाह को फ़ोन किया। वह लगातार पूछ रहा था कि हमें देर क्यों लग रही है। मैंने उसे चेक-प्वाइंट का पता बताया। मुझे नहीं पता था कि इस इंटरव्यू में कितनी देर और लगने वाली थी।

उस कमांडर ने वही सवाल पूछे जो पीयूके वालों ने पूछे थे और मैंने भी वही जवाब दिए। लेकिन इस बार मैंने बलात्कार और नासिर के परिवार के बारे में कोई बात नहीं की। मैंने केडीपी के पेशमेरगा का भी जिक्र नहीं किया। मैंने जो कहा, उसने लिख लिया और बात ख़त्म करने के बाद वह मुस्कराता हुआ उठ खड़ा हुआ।

"तुमने जो किया है, उसे हम भूल नहीं सकते," उसने नासिर से कहा। फिर उसके दोनों गाल चूम लिए। "तुमने एक नेक काम किया है। इसके लिए अल्लाह तुम्हारी हिफ़ाज़त करेगा।"

नासिर के चेहरे पर कोई भाव नहीं आया। "मैंने यह काम अकेले नहीं किया। मेरे परिवार ने अपने जीवन को ख़तरे में डाला है," नासिर

बोला। "कोई भी व्यक्ति, जिसमें ज़रा भी इंसानियत बाक़ी है, ऐसा ही करता!"

उन्होंने मेरा मोसुल में बना नक़ली पहचान-पत्र ज़ब्त कर लिया, लेकिन नासिर का पहचान-पत्र उसके पास था। तभी दरवाज़ा खुला और सबाह अंदर आ गया।

मेरे परिवार के बहुत-से परिचित लोग सेना में थे। मेरे पिता की मृत्यु के बाद उनकी बहादुरी की अनेक कहानियाँ थीं। जालो भी तेल अफ़ार में अमेरिकी सेना की ओर से लड़ रहा था। सईद को शुरू से बहादुरी दिखाने का शौक था। सबाह मुझसे केवल दो साल बड़ा था और वह अर्बिल के एक होटल में काम करता था। वह आगे पढ़ने के लिए पैसा कमाना चाहता था। उसे किसान या चरवाहे से बेहतर एक अच्छी नौकरी और अच्छा जीवन चाहिए था। सिंजर तक आईएसआईएस के आने से पहले वह इस तरह लड़ा।

सिंजर में हुए नरसंहार ने सबकुछ बदल दिया। हेज़्नी ने पूरा जीवन सबियाओं को छुड़ाने और तस्करों की मदद करने के लिए समर्पित कर दिया। सईद पर हमले का बहुत बुरा असर पड़ा था। उसने सेना में भर्ती होने की कसम खाई थी। सउद शरणार्थी शिविर में नीरसता-भरे दिन बिता रहा था और बेचारा मलिक, जो नरसंहार के समय बहुत छोटा था, आतंकी बन गया। उसने अपना जीवन और अपनी माँ का प्यार भी आईएसआईएस के नाम पर कुर्बान कर दिया।

सबाह सैनिक या पुलिस अफ़सर नहीं बनना चाहता था। उसने अर्बिल में होटल का काम और स्कूल छोड़ दिया और वह लड़ाई में भाग लेने सिंजर के पहाड़ पर चला गया था। वह शुरू में शर्मीला था, लेकिन अब उसके अंदर एक अलग क़िस्म का पौरुष उभर आया था। मैंने चेक-प्वाइंट पर उसे गले लगाया और मैं रोने लगी। उसने मुझसे शांत रहने को कहा। "नादिया, यहाँ और भी अधिकारी हैं। हमें उनके सामने रोना नहीं चाहिए," वह बोला। "तुमने इतना कुछ देख लिया है और अब तुम सुरक्षित हो। इसलिए तुम्हें रोने की ज़रूरत नहीं है।" वह कुछ ही सप्ताह में वर्षों बड़ा हो गया था। शायद, हम सब बड़े हो गए थे।

मैंने ख़ुद को सँभालने की कोशिश की। "नासिर कौन है?" सबाह ने पूछा। मैंने नासिर की ओर संकेत किया; फिर दोनों ने हाथ मिलाया। "हमें अब होटल चलना चाहिए," सबाह बोला। "वहाँ कुछ और भी यज़ीदी हैं। नासिर, तुम मेरे साथ रहना। नादिया दूसरे कमरे में स्त्रियों के साथ रहेगी।"

हम चेक-प्वाइंट से थोड़ी दूरी तक पैदल गए फिर हम गाड़ी में बैठ गए। हम शहर के बीच में पहुँच गए थे। अर्बिल एक बड़े वृत्ताकार में बना हुआ शहर था। उसकी सड़कें और घर बाहर की ओर फैल गए थे। उसके केंद्र में एक किला था, जो पुरातत्ववेत्ताओं के अनुसार संसार का सबसे पुराना आवासीय क्षेत्र है। उसकी ऊँची दीवारें, दूर से नज़र आती थीं और उसके सामने शेष अर्बिल नगर बहुत नया और आधुनिक दिखता था। अर्बिल की सड़कों पर सफ़ेद गाड़ियाँ बहुत थीं और वे बहुत तेज़ चलती थीं। उन्हें रोकने के नियम नहीं थे। सड़कों पर होटलों की कतार थी। एक विशाल निर्माण-कार्य को शरणार्थी शिविर में बदल दिया गया था। केआरजी के लोग बड़ी संख्या में वहाँ आए इराकी और सीरिया के लोगों से निपटने के बारे में सोचते रहते थे।

हम एक होटल के सामने रुक गए। वह ज़्यादा बड़ा नहीं था और उसकी खिड़कियाँ गहरे रंग के पर्दों से ढँकी थीं। फ़र्श पर चमकदार टाइलें लगी थी और कुछ यज़ीदी पुरुष लॉबी में बैठे थे। उन्होंने मेरा अभिवादन किया, लेकिन मुझे नींद आ रही थी। सबाह मुझे कमरे तक ले गया। मैंने देखा वहाँ एक परिवार बैठा था, जिसमें एक बूढ़ी औरत और उसका एक बेटा था। वे उसी होटल में काम करते थे और उसकी पत्नी भी मौजूद थी। वे एक टेबल पर साथ बैठकर खाना खा रहे थे। उस औरत ने मुझे देखा तो उसने मुझे अपने साथ बैठने को कहा। "हमारे साथ बैठ जाओ," वह बोली। "तुम हमारे साथ खाना खा सकती हो।"

उस महिला की उम्र मेरी माँ के बराबर थी और उसने माँ की तरह सफ़ेद पोशाक पहनी थी; उसके सिर पर स्कार्फ़ था। मैंने बहुत समय से आईएसआईएस के डर से स्वयं को रोक रखा था। उस औरत को

देखकर अचानक सारा संकोच समाप्त हो गया। मेरे मुँह से बहुत तेज़ चीख निकली और मुझसे खड़ा नहीं रहा गया। मैं रोने लगी, क्योंकि मुझे माँ की याद आ रही थी, जिसके बारे में मुझे कुछ नहीं पता था। मुझे अपने भाइयों की भी याद आ रही थी, जिन्हें मैंने मरते देखा था। कई लोगों के परिवार बच गए थे, लेकिन उनका पूरा जीवन यादों के साथ बीतने वाला था। मुझे कैथरीन, वला और अपनी बहनों के लिए भी बहुत दुख हो रहा था। वे अब तक क़ैद में थीं। मैं रोई, क्योंकि मैंने इसे कर दिखाया था और मैंने ऐसा नहीं सोचा था कि मैं इतनी क़िस्मतवाली हूँ। मुझे यक़ीन नहीं था कि मैं क़िस्मतवाली हूँ।

उस औरत ने मुझे किसी तरह सँभाला। उसका शरीर मेरी माँ की तरह नरम था। मैंने देखा कि वह भी मेरे साथ रो रही थी। फिर उसका बेटा और बहू भी रोने लगे। "ध्यान रखो," उसने मुझसे कहा। "तुम जिनसे प्यार करती हो वे सब लौट आएँगे; इसलिए अपने ऊपर अत्याचार मत करो।"

मैं उनके साथ बैठ गई। मुझे अपना शरीर ख़ाली लग रहा था। उनके ज़ोर देने पर मैंने थोड़ा-सा सूप पिया। वह औरत अपनी उम्र से भी कहीं अधिक बूढ़ी दिख रही थी। उसके अधिकतर सफ़ेद बाल गिर चुके थे। उसके जो कुछ बाल बचे थे, उनके नीचे नाजुक गुलाबी धब्बेदार चमड़ी भूरेपन के साथ दिख रही थी। वह तेल अज़ीर से थी और उसका हालिया जीवन दुख से भरा था। "मेरे तीन बेटे थे और वे सब 2007 की बमबारी में मारे गए। उनमें से किसी का विवाह नहीं हुआ था," उसने बताया। "मैंने ख़ुद से वादा किया था कि उनकी लाशें देखने और उनको दफ़नाने के समय उनके शरीर साफ़ करने से पहले नहीं नहाऊँगी।"

मैं बहुत थक चुकी थी। "बेटी, तुम सो जाओ," उसने कहा। मैं उसके बिस्तर में लेट गई और मैंने आँखें बंद कर लीं, लेकिन मुझे नींद नहीं आई। मुझे उस औरत के तीनों बेटों और अपनी माँ का ख़याल आ रहा था। "मैंने आख़िरी बार अपनी माँ को सोलाग़ में देखा था," मैंने उस औरत से कहा। "मुझे नहीं पता मेरी माँ के साथ क्या हुआ होगा।" यह कहकर मुझे फिर से रोना आ गया। मैं पूरी रात उस

औरत के साथ लेटी रही और हम दोनों सुबकते रहे। मैंने सुबह उठकर कैथरीन की पोशाक पहनी और उस औरत के दोनों गालों को चूम लिया।

"मेरे बेटों के साथ जो हुआ, उससे बुरा किसी माँ के साथ कुछ नहीं हो सकता," उसने कहा। "काश! वे ज़िंदा होते, लेकिन मुझे ख़ुशी है कि सिंजर में हुए अत्याचार देखने से पहले ही वे मर गए!" फिर उसने स्कार्फ़ ठीक किया और कहा, "ईश्वर चाहेगा तो तुम्हारी माँ तुम्हें एक दिन ज़रूर मिल जाएगी। यह ईश्वर पर छोड़ दो। हम यज़ीदियों के पास ईश्वर के अतिरिक्त और कोई मदद नहीं है।"

होटल की लॉबी में मुझे एक परिचित लड़का दिखा तो मैं उसके पास गई। वह कोचो में मेरी एक दोस्त का भाई था। "तुम्हें पता है मेरी बहन के साथ क्या हुआ?" उसने मुझसे पूछा।

मैंने आख़िरी बार उसकी बहन को मोसुल के बाज़ार में देखा था। रोजियान और मेरे जाने तक उसे किसी ने नहीं ख़रीदा था। लेकिन उसे बाद में ज़रूर कोई ले गया होगा। मैंने उसके भाई से कहा, "तुम चिंता मत करो। उम्मीद है कि वह सुरक्षित होगी।" मैं कुर्दिस्तान के बहुत-से यज़ीदियों के लिए बुरी ख़बर लेकर आई थी।

"उसने अभी तक मुझे फ़ोन नहीं किया," वह बोला।

"वहाँ से फ़ोन करना आसान नहीं होता," मैंने उसे बताया। "वे हमें फ़ोन नहीं करने देते। मैंने भी भागने से पहले तक हेज़्नी से बात नहीं की थी।"

तभी सबाह ने मुझे बताया कि जाख़ो जाने का समय हो गया था। "नासिर दूसरे कमरे में है," वह बोला। "एक बार उससे मिल लो।"

मैं उसके कमरे तक गई और मैंने दरवाज़ा खोला। नासिर सामने ही खड़ा था। मैंने जैसे ही उसे देखा मैं रोने लगी। मुझे उसके लिए दुख हो रहा था। मैं जब उसके परिवार से मिली तो मुझे लगा जैसे मैं उनके जीवन में अजनबी की तरह आ गई थी, लेकिन भविष्य को लेकर मेरे मन में आशा जगी और फिर आख़िर में, मैं भाग निकली। मैं यहाँ

अर्बिल में अपने भतीजे तथा अन्य यज़ीदियों के पास आ गई। लेकिन नासिर को फिर वही डरावनी यात्रा करके आईएसआईएस वाले क्षेत्र में लौटना था। मुझे अब उसके लिए डर लग रहा था।

मुझे देखकर नासिर भी रोने लगा। सबाह दरवाज़े पर खड़ा हम दोनों को देख रहा था। "सबाह, मैं नादिया से दो मिनट अकेले में बात करना चाहता हूँ," नासिर ने कहा। "फिर मुझे भी जाना है।" सबाह सिर हिलाकर चला गया।

नासिर ने मुझे देखा तो उसके चेहरे पर गंभीर भाव था। "नादिया, तुम्हें सबाह के साथ जाना है और अपने परिवार से भी मिलना है। अब मेरे साथ आने की ज़रूरत नहीं है। लेकिन मैं तुमसे कुछ पूछना चाहता हूँ। क्या तुम्हें अब सुरक्षित महसूस हो रहा है? अगर तुम्हें ज़रा भी डर है कि तुम्हारे सबाया होने के कारण तुम्हारे साथ दुर्व्यवहार किया जाएगा तो मैं तुम्हारे साथ रुक सकता हूँ।"

"नहीं," मैंने उससे कहा। "तुमने देखा कि सबाह का व्यवहार मेरे साथ अच्छा है। मैं अब सुरक्षित हूँ।" हालाँकि सच यह था कि मैं पूरी तरह आश्वस्त नहीं थी। लेकिन मैं नासिर को वापस सुरक्षित भेजना चाहती थी। मुझे पीयूके वालों के बनाए वीडियो के कारण पहले ही काफ़ी दुख था। यह डर भी था कि लोग नासिर को पहचान लेंगे। मैंने उससे कहा, "दाएश यज़ीदियों के बारे में जो कहते हैं, उस पर कभी विश्वास मत करना। मुझे तुम्हारे लिए बहुत दुख हो रहा है, क्योंकि तुमने मेरी बहुत मदद की है। तुमने मेरी ज़िंदगी बचाई है।"

"यह मेरा फ़र्ज़ था," उसने कहा। "और कुछ नहीं!"

फिर हम दोनों कमरे से बाहर निकल आए। मेरे पास उसका आभार जताने के लिए शब्द नहीं थे। पिछले दो दिन हमने हर पल साथ बिताया था और सबकुछ साथ में देखा था। हमने दुख के क्षण, चिंता और परेशानियों का मिलकर सामना किया था। मैं जब भी बीमार पड़ी उसने मुझे सँभाला और हर चेक-प्वाइंट पर आगे बढ़ने में मदद की। नासिर और उसके परिवार ने मेरे लिए जो किया, मैं उसे कभी नहीं भूल सकती।

मुझे नहीं पता कि नासिर इतना अच्छा और मोसुल के दूसरे लोग इतने ख़राब क्यों थे। मुझे लगता है एक अच्छा इंसान आईएसआईएस के मुख्यालय में पला-बड़ा होने के बावजूद भी अच्छा ही रहता है। यह ठीक वैसा है कि आपका धर्म बदला जा सकता है, लेकिन फिर भी आप मन से यज़ीदी रहते हैं, क्योंकि वह आपके अंदर होता है। मैंने चलते हुए नासिर से कहा, "अपना ध्यान रखना। उन अपराधियों से जितना हो सके दूर रहना। तुम हेज़्नी का नंबर अपने पास रख लो।" फिर मैंने उसे एक पर्ची पर हेज़्नी का नंबर लिख कर दिया और टैक्सी के पैसे भी दिए। "तुम हेज़्नी को कभी भी फ़ोन कर सकते हो। तुमने मेरे लिए जो किया है, मैं उसे कभी नहीं भूलूँगी। तुमने मेरी ज़िंदगी बचाई है।"

"मैं तुम्हारी ख़ुशहाल जिंदगी की कामना करता हूँ," नासिर ने कहा। "यहाँ से आगे ईश्वर तुम्हारी रक्षा करेंगे। मेरा परिवार तुम्हारे जैसे और लोगों की मदद करने का प्रयास करेगा। अगर मोसुल में कुछ और लड़कियाँ निकलना चाहेंगी और वे संपर्क करेंगी, तो हम उनकी पूरी मदद करने की कोशिश करेंगे।"

"एक दिन शायद सब लड़कियाँ आज़ाद हो जाएँगी और दाएश को इराक से निकाल दिया जाएगा। हमारी फिर कभी मुलाक़ात होगी और हम इस बारे में और बात करेंगे," नासिर ने कहा। फिर वह हँस दिया। "सबकुछ कैसा है, नादिया?"

"गर्मी बहुत है!" मैंने कहा और मैं मुस्करा दी।

"यह मत भूलना," नासिर ने मुझे चिढ़ाते हुए कहा, "बहुत गर्मी है, नासिर। आज बहुत गर्मी है!"

फिर उसके चेहरे से अचानक मुस्कान गायब हो गई। वह बोला, "ईश्वर तुम्हारी रक्षा करें!"

"ईश्वर तुम्हारी भी रक्षा करें," मैंने उससे कहा। फिर वह मुड़कर जाने लगा। मैंने तवूसी मेलेक से नासिर और उसके परिवार के सुरक्षित रहने की इबादत की। मेरी इबादत ख़त्म होने से पहले ही नासिर जा चुका था।

9

अर्बिल से जाने के बाद मैंने नासिर और उसके परिवार के बारे में जानने की कोशिश की थी। मुझे पीयूके वाला वीडियो याद आता तो मुझे बहुत बुरा लगता था और मैं प्रार्थना करती कि उसके कारण उन्हें किसी तरह की परेशानी नहीं उठानी पड़े। नासिर, ग़रीब लड़का था; इसलिए मुझे और हेज़्नी को यह ज़्यादा चिंता थी कि बहुत जल्द वह आतंकवादियों के साथ मिल जाएगा। कई वर्षों से आईएसआईएस वाले शहर में अपनी जड़ें जमा रहे थे और इसके लिए वे सुन्नियों में व्याप्त असंतोष का ग़लत फ़ायदा उठाते थे। वे देश में फैली अस्थिरता का भी लाभ उठा रहे थे। लोग सोचते थे कि आतंकवादी भी बिलकुल बाथ पार्टी जैसे होंगे और वे उनके अधिकार लौटा देंगे। यदि आईएसआईएस को लेकर लोगों का भ्रम टूट भी गया, तो नासिर के कुर्दिस्तान से जाने के बाद, क्या हिशाम के लड़के सेना में भर्ती हो गए होंगे? क्या उनकी कट्टरवादी सोच विकसित हो गई होगी? क्या मीना के लड़के बच पाए होंगे? मुझे इस बारे में कुछ पता नहीं था।

हेज़्नी को भी उनकी चिंता थी। "उन्होंने तुम्हारी मदद की है," वह बोला। "अगर उन्हें सिर्फ़ इसलिए सज़ा मिली तो हम क्या करेंगे?" वह घर का मुखिया होने के नाते अपने दायित्व को बहुत गंभीरता से लेता था। हालाँकि उसके लिए जाख़ो या शरणार्थी शिविर में बैठकर कुछ कर पाना मुश्किल था। हेज़्नी ने हिशाम और नासिर से कई बार बात की थी और फिर एक दिन दोपहर में जब उसने फ़ोन किया तो किसी ने उसे बताया कि वह नंबर काट दिया गया था। इसके बाद

हेज़्नी किसी अन्य स्रोत से मिली सूचना पर निर्भर था। एक दिन हमें समाचार मिला कि आईएसआईएस को पता लग गया कि नासिर ने मेरी मदद की थी। उन्होंने नासिर और हिशाम को हिरासत में ले लिया लेकिन उन्होंने आतंकियों को किसी तरह समझा दिया कि यह काम नासिर ने अकेले किया था।

उनका परिवार 2017 तक मोसुल में ही था। इराकी सेनाओं ने शहर को आज़ाद कराने का काम शुरू कर दिया था। उनके बारे में सूचना मिलना और मुश्किल हो गया। हेज़्नी को किसी से पता चला कि 2017 में आईएसआईएस और इराकी सेना के बीच मोसुल और वादी हज़र को जोड़ने वाली सड़क पर नियंत्रण के लिए हुई लड़ाई में नासिर के भाई मारे गए, लेकिन हमें पता नहीं यह बात कितनी सच थी। नासिर का परिवार पूर्वी मोसुल में रहता था, जो उस साल आज़ाद हुए शहर का हिस्सा था। इसलिए वह बचकर निकल गए होंगे या लड़ाई में मारे गए होंगे। मुझे बाद में पता लगा कि इराकी सेना के हमले से बचने के लिए आईएसआईएस के लोग स्थानीय निवासियों को कवच की तरह इस्तेमाल करते थे। अमेरिकी सेना उनकी इमारतों पर बम गिराती तो वे नागरिकों को पकड़कर बंदी बना लेते थे। मोसुल से जो लोग भागे थे; उनके अनुसार वहाँ जीवन नर्क हो गया था। हम केवल उनके सुरक्षित होने की प्रार्थना कर सकते थे।

जाख़ो में हेज़्नी अपनी चाची के घर में रहता था। वहाँ जाने से पहले हम ऊहोक के एक अस्पताल में रुके, क्योंकि वहाँ सईद और ख़ालिद भर्ती थे। उन्हें भी लड़ाई में चोटें आई थीं और उनका इलाज चल रहा था। शरणार्थी शिविर की सीमा अब तक समाप्त नहीं हुई थी। इराकी नियंत्रित कुर्दिस्तान में भागकर आए यज़ीदियों को जहाँ जगह मिलती, वे उधर ही सो जाते थे। शहर की बाहरी सीमा पर कई यज़ीदी परिवार अधूरी इमारतों में ठहरे हुए थे। इमारतों की दीवारें अब तक बनकर पूरी नहीं हुई थी। मुझे उनके अंदर रहने वाले परिवारों की सुरक्षा की चिंता होती थी। कई बार छोटे-छोटे बच्चे ऊपर से गिर जाते थे। उनके पास जाने को कोई और जगह नहीं थी। राहत एजेंसियाँ भोजन लेकर पहुँचतीं तो उन पर भीड़ टूट पड़ती थी। माँएँ अपने बच्चों के लिए थोड़ा-सा दूध लेने की उम्मीद में दौड़ जाती थीं।

हेज़्नी, सउद, वालिद और मेरी चाची, अस्पताल में हमारा इंतज़ार कर रहे थे। हमने एक-दूसरे को देखा तो हम रोने लगे, गले लगे और एक-दूसरे से तरह-तरह के सवाल पूछने लगे। मैंने अपने साथ हुए बलात्कार को छोड़कर उन्हें आपबीती सुनाई। मेरी चाची रोने लगी और उन्होंने दफ़नाने वाली प्रार्थना बोलना शुरू कर दिया। वह अपना दुख व्यक्त करने के लिए ज़ोर-ज़ोर से अपनी छाती पीट रही थीं। इससे कई घंटों के लिए गला सूख जाता था और पैर और छाती सुन्न पड़ जाते हैं। मेरी चाची अपनी जगह पर ही खड़ी रहीं, लेकिन शायद पूरा दुहोक शहर उनकी चीख़ें सुन सकता था।

हेज़्नी शांति से खड़ा था। वह बचपन में बहुत भावुक था और किसी के बीमार हो जाने पर रोने लगता था। वह समय के साथ ज़िंदगी के रहस्य को लेकर बहुत भावुक हो चुका था। "मुझे नहीं पता ईश्वर ने मुझे ज़िंदा क्यों छोड़ दिया?" वह बोला। "लेकिन मैं जानता हूँ, मुझे अपना जीवन अच्छे काम में लगाना है।" मैंने उसका गहरे रंग का चेहरा और छोटी मूँछ देखीं तो मुझे रोना आ गया। हेज़्नी ने मुझे गले लगा कर कहा, "इस तरह मत रोओ, यही अब हमारी तक़दीर है।"

मैं सईद से मिलने अस्पताल पहुँची। उसके जख़्म भरे नहीं थे, लेकिन उससे ज़्यादा सईद को नरसंहार की यादें तकलीफ़ देती थीं। उसे दुख था कि सब मारे गए और वह स्वयं जीवित था। बहुत-से लोग, जिन्हें आईएसआईएस ने नहीं मारा था, अपनी जान गँवा चुके थे। यज़ीदियों की एक पूरी पीढ़ी समाप्त हो गई थी। हम दिल में अज़ीब-सा ख़ालीपन लिए घूम रहे थे, लेकिन हमारे मन में परिवार की यादें बसी थीं और हम आईएसआईएस को सज़ा दिलवाना चाहते थे। सईद अमेरिका के यज़ीदी विभाग में भर्ती हो गया था और वह लड़ने के लिए बेचैन था।

"मेरी माँ कहाँ है?" मैंने रोते हुए हेज़्नी से पूछा। "नादिया, उनके बारे में कोई नहीं जानता," उसने कहा। "हम जितना जल्दी संभव होगा, सोलाग़ को दाएश के क़ब्ज़े से मुक्त करवाएँगे और माँ को भी बचा लेंगे।"

सईद से ज़्यादा ख़ालिद को चोट लगी थी। दो गोलियाँ लगने से उसकी कोहनी टूट गई थी। उसे कृत्रिम जोड़ की ज़रूरत थी, लेकिन दुहोक के अस्पताल में यह सुविधा नहीं थी। आज भी उसका हाथ लटका रहता है। वह किसी पेड़ की मरी हुई टहनी की तरह बेकार हो चुका है।

मैं जाख़ो पहुँची तो हेज़्नी उस आधे निर्मित घर में मेरी चाची के साथ रहता था। वह सिंजर से भागकर यहाँ आ गया था। मेरे चाचा और चाची अपने बेटे और उसकी पत्नी के लिए एक छोटा-सा मकान बना रहे थे, लेकिन उनके पास पैसा नहीं था; इसलिए काम धीमा चल रहा था। उन्हें जैसे-जैसे थोड़ा पैसा मिलता तो वह निर्माण करते जाते थे। आईएसआईएस के साथ लड़ाई के कारण निर्माण-कार्य पूरी तरह रुका हुआ था। घर में केवल दो बेडरूम थे, जिनकी खिड़कियाँ खुली थीं और उनकी झिर्रियों से हवा और धूल अंदर आती थी। मैं उनके इस घर में अपनी माँ के बिना कभी नहीं आई। उस दिन माँ के साथ नहीं होने का मुझे बहुत दुख हो रहा था। ऐसा लगा मानो मेरे शरीर का कोई अंग मेरे साथ नहीं था।

मैं अपने भाई हेज़्नी और सऊद तथा सौतेले भाई वला और नवाब के साथ उस अधबने घर में रहने लगी। अस्पताल से छुट्टी मिलने के बाद सईद और ख़ालिद भी वहीं आ गए थे। हमने मिलकर उसे अच्छा घर बनाने का प्रयास किया। सहायता एजेंसी ने कुछ सामान बाँटा तो हमने खिड़कियों को ढँकने की कोशिश की। हमें भोजन के पैकेट मिलते तो हम उन्हें तरीक़े से इस्तेमाल करते थे। हमने एक कमरे को रसोई की तरह इस्तेमाल किया। हेज़्नी ने लंबी तारें लेकर बल्ब लटका दिए थे जिनसे रोशनी हो जाती थी। हमने दीवारों में बनी जगहों को भरने के लिए भी कुछ सामान खोज लिया था। हम दिनभर लड़ाई के बारे में बात करते थे, लेकिन उन बातों का कोई ज़िक्र नहीं करता था, जिससे किसी को तकलीफ़ हो।

सईद और नवाब अविवाहित थे और इसलिए उनका दुख, मेरे विवाहित भाइयों के दुख से थोड़ा कम था। हमें सऊद की पत्नी नसरीन या मेरे सौतेले भाइयों की पत्नियों के बारे में कोई जानकारी नहीं थी। मैंने उन्हें आईएसआईएस के बारे में कुछ बातें बताईं और मोसुल और हमदानिया में जो देखा था वह भी बताया। लेकिन मैंने अपने साथ हुई बुरी घटनाओं के विषय में ज़्यादा बात नहीं की। मैं अपने भाइयों को वह सब बताकर और परेशान नहीं करना चाहती थीं। मैंने भी नरसंहार के बारे में ज़्यादा नहीं पूछा, क्योंकि मैं सईद और ख़ालिद को पुरानी यादों में धकेलना नहीं चाहती थी। कोई किसी दूसरे का दुख बढ़ाना नहीं चाहता था।

हालाँकि बहुत-से लोग ज़िंदा बचे थे, लेकिन फिर भी वहाँ बहुत दुख था। मेरे भाई जो कभी बहुत ख़ुश रहते थे, ख़ाली शरीर की तरह हो गए थे। वह दिन में इसलिए जागते थे, क्योंकि हर समय सोना संभव नहीं था। मुझे सफ़ाई का ध्यान रखना पड़ता था। मैं खाना भी पकाती थी, लेकिन ऐसे कई काम थे, जो मुझे नहीं आते थे। मैं गाँव में पढ़ने जाती थी और मेरी बड़ी बहनें और भाभी ही घर का ज़्यादातर काम करती थीं; इसलिए मुझे काम के बारे में जानकारी नहीं थी। मेरे भाई मेरा बहुत ध्यान रखते थे। उन्हें पता था कि मुझे घर का काम ज़्यादा नहीं आता इसलिए वह मेरी मदद करते थे। लेकिन मुझे यह भी पता था कि काम सीखने के बाद सारा दायित्व मुझ पर आने वाला था। मेरी चाची जानती थी कि मुझे ब्रेड बनानी नहीं आती इसलिए वह हमारे लिए भी ब्रेड बनाती थी। लेकिन मुझसे अपेक्षा रहती थी कि मैं काम को जल्दी सीख लूँ। स्कूल तो केवल एक याद बनकर रह गया था।

मैं आईएसआईएस से बचकर निकल आई थी और अपने परिवार के साथ थी। यदि मैं कुछ समय जीवित रही तो भी मेरा जीवन केवल दुखों की लंबी श्रंखला बनकर रह जाएगा। मुझे आईएसएस वालों ने पकड़ा फिर मेरा जीवन बदहाली और ग़रीबी में बीता। मेरे पास रहने को अपना घर नहीं था। मैं हर चीज़ के लिए दूसरों पर निर्भर थी। मेरे पास अपनी ज़मीन, अपनी भेड़ नहीं थी, पढ़ने के लिए स्कूल नहीं था और परिवार के केवल कुछ सदस्य ही बाक़ी थे। हम सब शिविर

बनने का इंतज़ार कर रहे थे। तंबुओं में समय कट रहा था। हमें उम्मीद थी कि हमें रहने को घर मिल जाएगा। सबको कोचो के आज़ाद होने का इंतज़ार था। पता नहीं यह कभी हो पाएगा या नहीं। मुझे नहीं पता मेरी बहनें और माँ को सोलाग़ से कोई आज़ाद करा सकेगा या नहीं। मैं रोज़ रोती थी। मेरे भाई और चाची भी रोते थे। मुझे हमेशा आईएसआईएस द्वारा पकड़े जाने और फिर भाग निकलने के बारे सपने आते थे।

सहायता एजेंसियों से जो मिलता, हम उसका बहुत किफ़ायत से इस्तेमाल करते थे। सप्ताह में एक बार चावल, दाल और पास्ता की बोरियाँ आती थीं। साथ में खाना पकाने का तेल और टमाटर आदि मिलते थे। हमारे पास कोई रसोई या फ़्रिज नहीं था; इसलिए कभी-कभी भोजन ख़राब हो जाता था। कभी-कभी उसमें चूहे आ जाते थे और हमें उसे फेंकना पड़ता था। खाना फेंकना बहुत कष्टप्रद होता है। हमारे पास भोजन ख़रीदने के पैसे नहीं थे; इसलिए हमें अगले सप्ताह ट्रक के आने का इंतज़ार करना पड़ता था। फिर मौसम बदला तो मेरी चाची ने मुझे पहनने के लिए गर्म कपड़े दिए। मेरे पास अंदर पहनने के कपड़े नहीं थे और मुझे किसी से कपड़े माँगना अच्छा नहीं लगता था। मेरे पास जो था, मैंने उसी से काम चलाया।

हेज़्नी के पास बहुत फ़ोन आते थे। वह हर बार बात करते हुए बाहर चला जाता था। मैं जानने को उत्सुक रहती थी कि उसे क्या सूचना मिलती थी, लेकिन वह कम बात करता था। वह शायद हमें परेशान नहीं करना चाहता था। एक दिन उसे अदकी ने फ़ोन किया और वह बात करने बाहर चला गया। वह लौटा तो उसकी आँखें लाल थीं। वह शायद रोकर आया था। "अदकी सीरिया में है," उसने बताया। "वह अपने भतीजे के साथ है और उसे अपना बेटा कहती है। लेकिन उसे डर है कि आईएसआईएस वाले उसके बारे में पता लगा लेंगे और बच्चे को उससे अलग कर देंगे। मैं सीरिया में किसी को खोजने का प्रयास कर रहा हूँ।" वहाँ से लड़कियों को छुड़ाना इराक की तुलना में और भी मुश्किल है। इसके अलावा अदकी किसी को छोड़ना नहीं चाहती थी। सीरिया का नेटवर्क इराक के नेटवर्क से

अलग था। इस कारण हेज़्नी के लिए अदकी को छुड़ाना मुश्किल हो गया।

मैंने पहली बार अपनी पूरी कहानी चाची को सुनाई। मैंने उसमें बलात्कार का ज़िक्र भी किया। वह बहुत रोई और उसने मुझे पकड़कर रखा। किसी से कहने से मन को बहुत राहत मिलती है। मेरी यह चिंता भी ख़त्म हो गई कि यज़ीदी मुझे अस्वीकार कर देंगे या मुझे दोषी मानेंगे। हमारे कई लोगों को आईएसआईएस वालों ने मार दिया और उनका अपहरण कर लिया था। उनमें से जो जीवित बच गए किसी को नहीं पता उनके साथ क्या हुआ। उन्हें किसी तरह लौटना था और जीवन को आगे बढ़ाना था। अधिकतर भाग कर आई सबियाएँ आईएसआईएस के साथ बिताए समय के बारे में जानकारी नहीं देती थी। मैं भी शुरु में ऐसी ही थी। मुझे इसका कारण बाद में समझ में आया। यह उनका निजी दुख था और उसे किसी को न बताना उनका अधिकार था।

मेरे बाद वहाँ से भागने वालों में सबसे पहली यज़ीदी रोजियान थी। वह मेरी चाची के घर सुबह के दो बजे पहुँची। उसने आईएसआईएस का दिया अबाया पहना था। मैं कुछ पूछती, उससे पहले ही उसने पूछा, "बाक़ी लोग कहाँ हैं? उनको क्या हुआ?" हेज़्नी ने उसे सारी बात विस्तार से बताई। रोजियान ने गाँव और परिवार के साथ हुई दुर्घटनाओं के विषय में सुना तो उसे बहुत दुख हुआ। सभी पुरुष मार दिए गए थे, लेकिन हमें पता नहीं कि बूढ़ी औरतों और बाक़ी लड़कियों का क्या हुआ। ज़्यादातर लड़कियों को आईएसआईएस वाले सबाया बनाकर साथ ले गए थे। यह सुनकर रोजियान इतनी उदास हो गई कि हमें लगा वह आत्महत्या ना कर ले। हेज़्नी ने भी कोचो में हुए जातिय नरसंहार के एक महीने बाद ऐसा एक प्रयास किया था। लेकिन रोजियान ने ऐसा नहीं किया। हम उसी दिन शरणार्थी शिविर में चले गए।

10

शिविर तक जाने वाली सड़क, सँकरी और गंदी थी। मुझे कोचो की कच्ची सड़क याद आ गई। मैं सुबह शिविर पर पहुँची तो मुझे लगा कि मैं घर जा रही हूँ। किसी भी परिचित चीज़ को देखकर यह स्पष्ट हो जाता था कि मेरा पुराना जीवन मुझसे कितना दूर था। इससे मेरी उदासी और बढ़ जाती थी।

मुझे बहुत दूर से शिविर के सैकड़ों छोटे-छोटे अस्थाई घर नज़र आ रहे थे, जो उत्तरी इराक में दीवार की ईंटों की तरह फैले हुए थे। शिविर के चारों ओर काँटेदार तार थी, जो सुरक्षा के लिए लगाई गई थी। लेकिन बच्चों ने उसे हटाकर उसमें से बाहर निकलने की जगह बना ली थी और वे बाहर मैदान में खेलने चले जाते थे। शिविर के दरवाज़े पर विशाल कंटेनर रखे थे जो सहायताकर्मियों और सरकारी लोगों के लिए कार्यालय का काम करते थे। वहीं लोगों के इलाज और बच्चों के पढ़ने की व्यवस्था की गई थी।

हम वहाँ दिसंबर में आए थे, जब सर्दियों की शुरुआत हुई थी। हालाँकि चाची का जाख़ो स्थित अधबना मकान सर्दियों में ज़्यादा सुरक्षा देता था, लेकिन मुझे ऐसी जगह रहना था जिसे मैं अपना कह सकती थी। वे अस्थाई मकान छोटे थे, लेकिन फिर भी उनमें एक बेडरूम, एक बैठक थी और रसोई के लिए भी जगह थी।

वह कैंप उत्तरी इराक के मौसम के अनुकूल नहीं था। सर्दियों में मकानों के बीच में कीचड़ जमा हो जाता था और चलने में बहुत परेशानी होती थी। हमें दिन में केवल एक घंटा पानी मिलता था

और वहाँ एक हीटर था, जिसे सब मिल-जुलकर इस्तेमाल करते थे। अधिक गरमाहट नहीं होने पर बाहर की ठंडी हवा पानी बनकर दीवारों से बिस्तर पर टपकता था और हमें गीले तकियों पर सोना पड़ता था।

शिविर में लोग जीवन को आगे बढ़ाने की तैयारी में लगे थे। घरेलू कामों को करना सुखदायक होता है। दुहोक के शिविर में हमारी वही दिनचर्या थी, जैसी सिंजर में हुआ करती थी। औरतें खाना पकातीं और साफ़-सफ़ाई करती थीं। साफ़-सफ़ाई और खाने से फुर्सत पाने के बाद उन्हें अहसास होता कि यह उनका घर नहीं है और घर में पति नहीं है तो उन पर बोझ टूट पड़ता था। फिर वह रोती थीं। कोचो में बच्चे बहुत खेलते थे और उसकी तुलना में शिविर का माहौल शांत था। हमें परिवार के सदस्यों के बीच होने वाली नोक-झोंक की कमी खलती थी। हम आपस में छोटी-छोटी चीज़ों के लिए लड़ते थे, क्योंकि हमारे पास कोई काम नहीं था और स्कूल भी नहीं था। इसलिए मृत परिजनों का शोक मनाना और उन्हें याद करना ही हमारा एकमात्र काम था।

पुरुषों के लिए शिविर का जीवन ज़्यादा मुश्किल था। उनके पास कुछ भी काम नहीं था। शहर जाने के लिए उनके पास गाड़ियाँ नहीं थीं। उनकी पत्नियाँ, बहनें और माएँ बंधक थीं। उनके भाई और पिता मारे जा चुके थे। मेरे भाई के पुलिस में भर्ती होने से पहले हमारे पास पैसा नहीं था और हमें इराकी सेना और सहायता एजेंसियों से थोड़ी रक़म मिलती थी। यह रक़म नरसंहार के बाद बनाई गई यज़ीदियों की एक संस्था - 'यज़दा' द्वारा बच्चों के काम आती थी। यज़दा नाम की यह संस्था विश्वभर के यज़ीदी मिलकर चलाते थे। नरसंहार के पीड़ितों के जीवन को बेहतर बनाना ही उनका उद्देश्य बन चुका था। यह संस्था समस्त यज़ीदियों के लिए उम्मीद का एकमात्र स्रोत थी। हमारे पास कोई गाड़ी खाना लेकर आती तो हम उसके लिए दौड़ते थे। कभी-कभी ट्रक निकल जाता था। वे एक दिन शिविर की एक तरफ़ तो अगली बार दूसरी तरफ़ रुकते थी। कभी-कभी खाना ख़राब हो जाता था। हम शिकायत करते थे कि जब चावलों को पकाया जाता है, तो उनसे दुर्गंध आती है।

एक कुर्द किसान पास के मैदान में कुछ शरणार्थियों को काम दे रहा था। "अगर तुम सारा दिन काम करोगे तो हम तुम्हें रात का भोजन देंगे," उसने वादा किया। साथ में कुछ रकम़ भी मिलेगी।" मैं सूरज ढलने तक काम करने लगी। मुझे भारी-भरकम तरबूज़ उठाने पड़ते थे। वह रात का भोजन देता तो मुझे दुख होता था। हमें शिविर का बचा हुआ चावल दिया जाता था। मुझे दुख था कि वह किसान हमें अलग नज़र से देखता था। उसे लगता था कि हम ग़रीब हैं और शिविर में रहते हैं; इसलिए वह हमें कुछ भी खिला देगा और हम उसके आभारी होंगे।

"हम भी इंसान हैं, मैं उससे कहना चाहती थी। *"हमारे भी घर हैं। हमारा भी जीवन कभी अच्छा था। हम बेकार नहीं है।"* लेकिन मैं चुप रही। मुझे जो मिला, मैंने उसे खाकर काम चलाया।

खेत पर काम करने से मेरा ग़ुस्सा बढ़ने लगा। *मैं आज इस काम को ख़त्म करूँगी,* मैंने सोचा। *मैं कल इस आदमी के लिए काम करने नहीं आऊँगी।* रोज़ यही बात मेरे दिमाग़ में चलती थी। वहाँ काम करने वाले कुछ लोग आईएसआईएस के बारे में बात करते थे। आतंकियों के गाँव में आने से पहले कई शरणार्थी भाग निकले थे। फिर वे पकड़े गए लोगों से आईएसआईएस के बारे में सवाल करते रहते थे। उनके लिए यह सब एक्शन फ़िल्म के जैसा था।

एक दिन वह किसान हमारे पास आया। "तुम में से कौन दाएश के पास रहकर आया है?" उसने पूछा। सबने मेरी ओर इशारा कर दिया। मैं काम रोक कर खड़ी हो गई। मुझे लगा वह अपने दुर्व्यवहार के लिए माफ़ी माँगेगा और कहेगा कि उसे यदि पता होता कि शिविर में आईएसआईएस से छूटकर आए लोग भी शामिल हैं, तो वह उनके साथ अच्छा व्यवहार करता। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। वह हमसे पेशमेरगा की तारीफ़ सुनना चाहता था। "वे लोग दाएश को ख़त्म कर देंगे," उसने कहा। "तुम्हें पता नहीं है पेशमेरगा अपना काम कैसे करते हैं। उन्होंने पहले भी अच्छा काम किया है। उन्होंने इराक को आज़ाद कराने के लिए भारी क़ीमत भी चुकाई है।"

"क्या तुम्हें पता है, हमने क्या क़ीमत चुकाई है और हमने क्या खोया है?" मुझसे रहा नहीं गया। मैंने पलटकर कहा, "हज़ारों लोग मारे गए। उन लोगों की जान इसलिए गई, क्योंकि पेशमेरगा ने हमारी सहायता नहीं की और वे हमें छोड़कर भाग गए।" यह सुनकर किसान चुप हो गया और जाने लगा। फिर एक यज़ीदी पुरुष ने मुझसे कहा, "ऐसी बातें मत करो। अपना काम करो।" दिन ख़त्म हो गया तो मैं उसे बताने गई कि मैं किसान के लिए काम नहीं करना चाहती। वे सब मेरी ओर ग़ुस्से से देखने लगे। "उसने हम सबको काम से निकाल दिया है," वह बोला।

मुझे बहुत दुख हुआ कि मैंने किसान से जो कहा, उसके कारण सबकी नौकरी चली गई। हालाँकि बहुत जल्द यह ख़बर शिविर में फैल गई। मैं वहाँ से निकली तो मैंने इराक से बाहर अपनी कहानी सुनाई। मेरा एक दोस्त शिविर में आया तो उसने सबको बताया कि मैंने पेशमेरगा के बारे में अच्छी बातें नहीं कीं। "नादिया को पूरी दुनिया को बताना चाहिए कि उन्होंने हमारे साथ क्या किया," वह बोला। यह सुनकर एक यज़ीदी हँसने लगा और उसने कहा, "नादिया शुरू से यही कहती थी। उसी के कारण हम सबकी नौकरी चली गई।"

मेरी बहन दीमल 1 जनवरी, 2015 को सुबह चार बजे शिविर पहुँची। मैं सो रही थी। "मुझे विश्वास नहीं हो रहा कि उधर मैं अपनी जान बचाकर भाग रही हूँ और इधर तुम आराम से सो रही हो!" दीमल ने मुझे चिढ़ाते हुए कहा। मैंने उसे कसकर गले लगा लिया और बताया कि मैं चार बजे तक भी सोई नहीं थी। "तुम देर से आई हो!" मैंने सुबह तक जागने की कोशिश की, लेकिन फिर मुझे नींद आ गई। मैं उठी तो मैंने देखा कि तुम पहुँच चुकी हो। दीमल को घंटों दौड़ना पड़ा, जिसके कारण उसके पैरों से ख़ून बह रहा था। उसने सीमा पर लगी काँटे वाले तारों को पार किया था। हालाँकि उसके साथ इससे

भी ज़्यादा बुरा हो सकता था। वे यदि उसे ढूँढ़ लेते तो सीमा पर ही गोली मार देते।

दीमल के लौटने से हमें लगा हमारा एक बड़ा घाव भर गया था। फिर भी हम ज़्यादा ख़ुश नहीं थे। हम एक-दूसरे के पास बैठे रोते रहे। फिर उससे मिलने और लोग आ गए। हमें ज़्यादा किसी से बात करने का मौक़ा नहीं मिला। दीमल के घर लौटने के बाद सबसे पीड़ादायक क्षण वह था, जब उसने मुझसे पूछा, "नादिया, बाक़ी घरवाले कहाँ हैं?"

उसी महीने के अंत में अदकी भी भागकर निकल आई। हम सब उसके लिए बहुत परेशान थे। हमें उसकी कोई जानकारी नहीं थी। कुछ सप्ताह पहले एक औरत सीरिया से भागकर शिविर में आई थी। उसने हमें बताया कि वह सीरिया में अदकी के साथ थी। मैं अदकी के बारे में जानना चाहती थी। उस औरत ने हमें बताया कि आईएसआईएस वाले मानते थे कि अदकी एक माँ है; इसलिए उन्होंने जल्दी उसे हाथ नहीं लगाया। उसने अपने भतीजे मीरन को अपने साथ सुरक्षित रखा। अदकी ने मुझसे कहा था कि अगर मैं मीरन की देखभाल कर लूँ तो वह आत्महत्या कर लेगी। मैंने उसे धैर्य बँधाया और कहा, "हम एक दिन ज़रूर निकलेंगे।" लेकिन वह बहुत निराश हो चुकी थी।

हमने यह सुना तो हमें अदकी की बहुत चिंता हुई। हम उसके लिए दुखी होते थे। वह बहुत हिम्मत वाली थी। फिर एक दिन अचानक अदकी ने हेज़्नी को फ़ोन किया। मेरे भाई ने बताया कि वे लोग आफ़रीन में है, जो कुर्द नियंत्रित सीरिया का एक हिस्सा है और उस पर आईएसआईएस का नियंत्रण नहीं है। उसकी पहरेदारी भी सीरिया में कुर्द लोग करते हैं। तब मुझे ख़याल आया कि उन्होंने यज़ीदियों को पहाड़ पर बचाया था; इसीलिए वे मेरी बहन की भी सहायता करेंगे।

अदकी और मीरन रक्का से भाग निकले थे। उन्हें एक अरब चरवाहे ने अपने घर में रख लिया था। अदकी कुछ दिन उनके साथ रही और फिर वह निकलने का रास्ता खोजने लगी। उस चरवाहे की

लड़की की सगाई आफ़रीन में एक आदमी से हुई थी; इसलिए वह शादी का इंतज़ार कर रहा था। उसके पास उत्तर दिशा में जाने का एक कारण बन सकता था। बाद में हमें पता लगा कि अदकी, चरवाहे के साथ है, लेकिन उसने किसी से बात नहीं की, क्योंकि वह हमारी उम्मीदें बढ़ाना नहीं चाहता था।

आफ़रीन से पहला फ़ोन आने के दो दिन बाद अदकी, मीरन को लेकर शिविर में पहुँच गई। मैंने दीमल के साथ सुबह छह बजे तक अदकी का इंतज़ार किया। मुझे अदकी को यह बताते हुए डर लग रहा था कि हमारे घरवालों के साथ क्या हुआ था। लेकिन हमें उसे कुछ नहीं बताना पड़ा। वह ख़ुद ही समझ गई। अदकी भी हमारे साथ उस छोटी-सी दुखभरी दुनिया में रहने लगी।

यह भी एक चमत्कार ही था कि मेरी बहनें, भाग निकली थीं। आईएसआईएस के सिंजर आने के तीन वर्षों में यज़ीदी बच कर निकल गए। कुछ लोगों को स्थानीय लोगों ने बचाया। मैं भी उनमें से एक थी, जबकि कुछ परिवारों के लोग उनके साथ थे या उनके पास सरकार का दिया कुछ पैसा था, जिसकी मदद से उन्होंने आईएसआईएस के सदस्यों से लड़कियों को वापस ख़रीद लिया। एक लड़की की क़ीमत पाँच हज़ार डॉलर या उससे भी ज़्यादा थी। हेज़्नी ने हमें बताया कि "इतनी रक़म में एक नई गाड़ी" आ जाती है। यह रक़म उन लड़कियों को बचाने में सहायता कर रहे अरब और कुर्द के लोगों द्वारा संचालित ऑपरेशन के मुखिया को मिलती थी। फिर बाद में यह पैसा ड्राइवर, तस्करों, काग़ज़ात बनाने वाले कई लोगों में बाँट दिया जाता था। इतना करके एक लड़की की रिहाई संभव हो पाती थी।

हमारे भाग निकलने की हर कहानी अविश्वसनीय है। वे कोचो की एक लड़की को रक्का ले गए थे, जो सीरिया में आईएसआईएस की राजधानी है। वहाँ उसे बहुत-सी औरतों के साथ रखा गया। उसने एक दिन वहाँ इंधन से भरे एक कनस्तर में आग लगाकर कमरे को जलाने की कोशिश की। लेकिन वह पकड़ी गई। फिर उसने ज़बरदस्ती उल्टी की और जब एक आतंकी ने उसे बाहर ले जाना चाहा तो वह कुछ

और लड़कियों के साथ अंधेरे मैदानों में भाग निकली। एक किसान ने उनका रुख़ मोड़ दिया, लेकिन वह क़िस्मतवाली थी। जिस किसान ने उसे ख़रीदा था, हफ़्तों बाद उसकी पत्नी ने सीरिया से बाहर निकलने में उसकी मदद की। फिर जल्द ही पत्नी की अपेंडिसाइटिस से मौत हो गई। संभवतः उसकी जान बचाने में समर्थ कोई सर्जन इस्लामिक स्टेट में नहीं था।

जीलन को दो साल बंदी बनकर रहना पड़ा। फिर हेज़्नी एक ख़तरनाक योजना बनाकर उसे भी छुड़ाने में सफल हो गया। जीलन को जिस आतंकी ने बंदी बनाया था, उसकी पत्नी अपने पति की आदतों से नाख़ुश थी। उसने स्वयं हेज़्नी को फ़ोन करके उसकी मदद की। उसका पति आईएसआईएस का उच्च अधिकारी था। इस कारण वह आईएसआईएस-विरोधी एक संस्था का प्रमुख लक्ष्य बन गया। "इसे बचाने का एक ही तरीक़ा है," हेज़्नी ने उसकी पत्नी से कहा, "तुम्हारे पति को मारना पड़ेगा।" उस औरत ने इसके लिए भी हामी भर दी।

हेज़्नी ने उसकी पत्नी का संपर्क एक कुर्द कमांडर से करवाया, जो आईएसआईएस के आतंकियों को मारने के लिए अमेरिकियों के साथ मिलकर काम करता था। "तुम्हारा पति घर से बाहर निकले तो तुम कमांडर को ख़बर कर देना," हेज़्नी ने उसकी पत्नी से कहा। अगले ही दिन उस आतंकी की गाड़ी हवाई हमले में उड़ा दी गई। शुरू में उसकी पत्नी को विश्वास नहीं हुआ कि उसका पति मर चुका था। उसे शुरू में लगा कि उसका पति हमले में बच निकला था; इसलिए वह उसका शव देखना चाहती थी। "उसका शव भी नष्ट हो चुका है," हेज़्नी उसे बताया। "हमले में उसकी गाड़ी पिघल गई थी।"

उन औरतों को अगले आदेश की प्रतीक्षा करनी थी। उनके पास जीलन को निकालने का केवल एक रास्ता था। दो दिन के बाद पुष्टि हो पाई कि वह आतंकी सचमुच मारा गया था। फिर आईएसआईएस के लोग जीलन को उसके नए ख़रीदार को सौंपने आए थे। उन्होंने दरवाज़ा खटखटाया तो कमांडर की पत्नी बाहर आई। उसने आईएसआईएस के लोगों से झूठ कहा, "वह सबाया मेरे पति

के साथ गाड़ी में ही थी वह भी मारी गई!" यह सुनकर आतंकी संतुष्ट हो गए। वे चले गए तब जीलन और कमांडर की पत्नी को सुरक्षित कुर्दिस्तान पहुँचा दिया गया। उनके जाने के कुछ घंटे बाद उनके घर को भी उड़ा दिया गया था। हेज़्नी ने बाद में बताया, "वहाँ दाएश के जितने लोग थे, सभी मारे गए।"

सब लोग इतने भाग्यशाली नहीं थे। मुझे पता चला कि दिसंबर, 2015 में सोलाग़ में एक बड़ा क़ब्रिस्तान मिला। यह बात मेरे शरणार्थी कैंप से जाने के कुछ महीनों बाद की है। मैं दीमल के साथ जर्मनी आ गई थी। जर्मन सरकार का एक कार्यक्रम था, जिसके अंतर्गत वे लोग आईएसआईएस द्वारा बंदी बनाए गए यज़ीदियों की सहायता कर रहे थे। मैंने सुबह अपना फ़ोन देखा तो उसमें अदकी और हेज़्नी के कई मैसेज थे। वे मुझे समय-समय पर फ़ोन करके हालचाल बताते थे। अदकी ने मुझे फ़ोन पर बताया कि सईद भी सोलाग़ के पास है। "हमें जल्दी पता लग जाएगा कि वहाँ क्या हुआ।"

मुझे और दीमल को एक दिन जर्मन भाषा सीखने जाना था, लेकिन हम जा नहीं सके। हम दिनभर घर पर बैठे समाचार की प्रतीक्षा करते रहे। मैंने एक कुर्द पत्रकार से संपर्क किया जो इस लड़ाई को कवर कर रहा था। मेरा फ़ोन दिनभर बजता रहा। मैं दीमल के साथ मिलकर अपनी माँ के जिंदा होने की प्रार्थना करती रही।

दोपहर को पत्रकार का फ़ोन आया। उसकी आवाज़ धीमी थी। उसे सुनकर मुझे समझ में आ गया कि वह बुरी ख़बर देने वाला था। "हमें वहाँ एक क़ब्रिस्तान मिला है," उसने कहा। "यह जगह इंस्टिट्यूट के नज़दीक है। यहाँ लगभग अस्सी औरतों के शव होने का अंदाज़ा है।" मैं उसकी बात चुपचाप सुनती रही। फिर मैंने फ़ोन काट दिया। मुझसे और बर्दाश्त नहीं हुआ। मेरे लिए दीमल या हेज़्नी को यह बता पाना मुश्किल था कि हमारी माँ मर चुकी थी। मेरे हाथ काँप रहे थे। तभी दीमल का फ़ोन बजा। उसे हमारे परिवार की ओर से एक मैसेज आया था। हर कोई चीख़ रहा था।

मैंने सईद को फ़ोन किया। वह भी मेरी आवाज़ सुनकर रोने लगा। "मैंने इतना कुछ किया, लेकिन सब बेकार गया," वह बोला। "मैं एक

साल से लड़ रहा हूँ और हमें कुछ नहीं मिला। हमें किसी का पता नहीं लगा।" मैंने हेज़्नी से कहा कि मैं अंतिम संस्कार के लिए आना चाहती हूँ, लेकिन उसने मना कर दिया। "हमें माँ का शव नहीं मिला," उसने बताया। "सोलाग़ में सेना तैनात है। अगर यहाँ आओगी तो यह तुम्हें क़ब्रिस्तान तक नहीं जाने देंगे। तुम्हारे लिए यह जगह सुरक्षित भी नहीं है।" मैंने इस बीच सक्रिय कार्यकर्ता के रूप में काम शुरू कर दिया था। मुझे हर रोज आईएसआईएस से धमकियाँ मिलती थीं।

मेरी माँ की मौत की पुष्टि होने के बाद मुझे कैथरीन और अपनी भतीजी और सबसे प्यारी दोस्त के समाचार का इंतज़ार था। मुझे उम्मीद थी कि वे बच जाएँगे और हमारी फिर मुलाक़ात होगी। मुझे उसकी जरूरत थी, क्योंकि अब मेरी माँ मेरे साथ नहीं थी। हेज़्नी, जो अपने भाई की बेटी को अपनी बेटी की तरह प्यार करता था, महीनों तक कैथरीन को सुरक्षित निकालने का प्रयास करता रहा, लेकिन उसे सफलता नहीं मिली। कैथरीन ने भी कई बार हमदानिया और मोसुल से भागने की कोशिश की थी, लेकिन वह हर बार नाकाम हो गई। हेज़्नी के फ़ोन पर कैथरीन का एक वॉइसमेल संदेश था, जिसमें वह अपने भाई से प्रार्थना कर रही थी। "इस बार मुझे किसी तरह छुड़ा लो। मैं यहाँ नहीं रह सकती। मुझे बचा लो।" हेज़्नी उसे बार-बार सुनता था और फिर रोते हुए उसे छुड़ाने की कसम खाता था।

2015 में हमें सफलता मिल गई। हेज़्नी को कूड़ा उठाने वाले एक ठेकेदार का फ़ोन आया। वह किरकुक के बाहर किसी जगह से आया था, जो आईएसआईएस के क़ब्ज़े में थी। उसने बताया, "मैं एक डॉक्टर इस्लाम के घर से कूड़ा उठा रहा था। तभी कैथरीन नाम की एक लड़की बाहर आई। उसने मुझे तुम्हारा फ़ोन नंबर दिया और तुमसे फ़ोन करके यह बताने को कहा कि वह ज़िंदा है।" कूड़े वाले को डर था कि आईएसआईएस को अगर पता लग गया तो वे उसे ज़िंदा नहीं छोड़ेंगे। इसलिए उसने हेज़्नी से कहा कि वह उसे दोबारा फ़ोन नहीं करे। "मैं उस घर में फिर कभी नहीं जाऊँगा," उसने हेज़्नी को यह भी कह दिया।

कैथरीन को वहाँ से बाहर निकालना मुश्किल काम था। उस शहर में लगभग एक लाख सुन्नी अरब रहते हैं और डॉक्टर इस्लाम, आईएसआईएस का उच्च अधिकारी था। लेकिन हेज़्नी का शहर में संपर्क था। उसने एक ऐप की मदद से कैथरीन को ढूँढ़ निकाला। उस संपर्क-सूत्र के द्वारा कैथरीन को एक अस्पताल जाने को कहा गया। उसने कहा, "नज़दीक में एक दवाई की दुकान है। मैं वहाँ फ़ाइल हाथ में लेकर मिलूँगा। तुम मुझे देखो तो बात मत करना। अपने घर लौट जाना, जहाँ तुम्हें बंदी बनाकर रखा गया है। इससे मुझे घर का पता लग जाएगा।" कैथरीन ने उसकी बात मान ली। वह अपने घर से अस्पताल जाने के लिए निकली ही थी कि उस दवाख़ाने को हवाई हमले में उड़ा दिया गया। यह देखकर कैथरीन बहुत डर गई और वह किसी से मिले बिना ही घर वापस लौट गई।

इसके बाद हेज़्नी ने कुछ अरब लोगों के माध्यम से फिर कोशिश की। वे लोग आईएसआईएस के विरोधी थे और शहर में फँसे हुए थे। एक नज़दीक के गाँव में उनका घर था। उनसे ज़्यादा पूछताछ नहीं की जाती थी। उन्होंने कैथरीन को अपने यहाँ छिपाने के लिए हामी भर दी। उनके ज़रिए हेज़्नी को कैथरीन का समाचार मिलता रहा। तब उसने दवाख़ाने पर हुए हवाई हमले के बारे में हेज़्नी को बताया। इस तरह फिर एक नया संपर्क ढूँढ़ा गया। वह व्यक्ति अपनी पत्नी के साथ किराए पर मकान ढूँढ़ने लगा। वह जब कैथरीन के घर तक पहुँचा तो किसी और सबाया ने दरवाज़ा खोला। उसका नाम अलमस था और वह कोचो की रहने वाली नौ साल की लड़की थी। उसके पीछे मेरी भतीजी और लमिया भी खड़ी थीं। उन तीनों लड़कियों को डॉक्टर इस्लाम ने बंदी बना रखा था। "कल सुबह घर पर जब कोई नहीं हो तो तुम खिड़की से एक चादर लटकाना," उस व्यक्ति ने कैथरीन से कहा। "अगर मुझे चादर नज़र आई तो मैं समझ लूँगा कि तुम्हारे पास आना सुरक्षित है।" कैथरीन डरी हुई थी, लेकिन वह तैयार हो गई।

वह व्यक्ति जब कैथरीन के घर के पास से गुज़रा तो वहाँ एक चादर लटक रही थी। वह तुरंत गाड़ी से निकला और उसने दरवाज़ा खटखटाया। तीनों यज़ीदी लड़कियाँय कैथरीन, लमिया और

अलमास भागकर गाड़ी में बैठ गईं। तीनों को गाँव पहुँचाने के बाद उस व्यक्ति ने हेज़्नी को फ़ोन कर दिया।

तीन दिन के बाद हेज़्नी को कुछ लोग मिले, जिन्होंने दस हज़ार डॉलर के बदले तीनों लड़कियों और उनकी सहायता करने वाले अरब परिवार को सुरक्षित पहुँचाने का वादा किया। परंतु उनके पास सही काग़ज़ात नहीं थे; इसलिए उन्हें कुर्द की सीमा रात में पार करनी थी। "हम उन्हें लेकर नदी तक आ जाएँगे," तस्करों ने हेज़्नी को कहा। "वहाँ से एक और व्यक्ति इन्हें लेकर तुम तक पहुँचेगा।" रात को पहले तस्कर ने हेज़्नी को फ़ोन किया और बताया कि वह लड़कियों को लेकर निकल गया है। तब तक हमने शिविर में कैथरीन के आने की तैयारी कर ली थीं।

हेज़्नी रात-भर फ़ोन के पास बैठा इंतज़ार करता रहा। वह कैथरीन से मिलने के लिए बेचैन था, लेकिन किसी का फ़ोन नहीं आया। अगले दिन दोपहर में लगभग डेढ़ बजे एक आदमी ने हेज़्नी को फ़ोन किया और पूछा, "क्या कैथरीन लमिया और अलमास तुम्हारे लोग हैं?" हेज़्नी ने कहा, "हाँ, लेकिन वे कहाँ हैं?"

"लमिया को बहुत चोट आई है," उस आदमी ने बताया। "कुर्दिस्तान में घुसते समय उसका पैर विस्फोटक पर पड़ गया था। वह फट गया, जिससे लमिया का पूरा शरीर जल गया है। वह काफ़ी जल गई है। ईश्वर, बाक़ी दोनों लड़कियों की रूह को शांति दे। उनकी मृत्यु हो गई!" यह कहकर उसने फ़ोन रख दिया। हेज़्नी के हाथ से फ़ोन छूट गया। ऐसा लगा किसी ने उसे गोली मार दी हो।

इस घटना से पहले मैं इराक छोड़ चुकी थी। हेज़्नी से आख़िरी बार बात होने तक कैथरीन सुरक्षित थी। मुझे बहुत ख़ुशी थी कि मैं जल्द ही अपनी भतीजी से मिल सकूँगी, लेकिन उस रात मुझे एक डरावना सपना आया। मैंने देखा कि मेरा भाई सुलेमान एक जनरेटर के पास खड़ा है। वहाँ से कोचो को बिजली की सप्लाई मिलती थी। मैं सपने में अपने भाई मसूद और अपनी माँ के साथ चल रही थी। हम जैसे ही सुलेमान के पास पहुँचे, हमने देखा कि वह मर चुका है और जानवर उसके शरीर को खा रहे हैं। मैं डरकर उठ बैठी। मेरा शरीर

पसीने से तर था। मैंने सुबह हेज़्नी को फ़ोन किया और हाल-चाल पूछा तो उसने मुझे सारी बात बताई।

इस बार हेज़्नी राजी हो गया और उसने मुझे अंत्येष्टि के लिए इराक आने की अनुमति दे दी। हम सुबह चार बजे अर्बिल एयरपोर्ट पहुँचे। मैं पहले लमिया से मिलने अस्पताल गई। वह बात नहीं कर सकती थी। उसका चेहरा बुरी तरह झुलस गया था। फिर हम किरकुक में उस अरब परिवार से मिलने गए, जिसने कैथरीन और दूसरी लड़कियों को छुड़ाने में मदद की थी। हम कैथरीन का शव ले जाना चाहते थे ताकि उसका अंतिम संस्कार किया जा सके। लेकिन वह परिवार हमारी मदद नहीं कर पाया। "जब उनका पैर बम पर पड़ा तो कैथरीन और अलमास की मौक़े पर ही मृत्यु हो गई थी। हम लमिया को लेकर अस्पताल गए, लेकिन उन दोनों लड़कियों को नहीं ले जा सके। उनके शव आईएसआईएस के पास हैं।"

हेज़्नी को शांत करना मुश्किल हो गया। उसे लगा वह अपनी भतीजी के साथ न्याय नहीं कर पाया था। वह आज भी फ़ोन पर कैथरीन के वॉइस मेल मैसेज को सुनकर दुखी हो जाता है। "इस बार मुझे बचा लो," वह बोलती थी। मैं उस संदेश को सुनती हूँ तो मुझे कैथरीन का चेहरा दिखाई देता है। उसे सुनकर हेज़्नी की आँखें आँसुओं से भर उठती हैं।

फिर हम शरणार्थी शिविर पहुँचे। वह बिलकुल वैसा ही था, जब मैं वहाँ पहली बार आई थी। यह लगभग दो साल पहले की बात है। लोगों ने छोटे-छोटे मकानों को घर में तब्दील कर लिया था और उन्हें अंदर से अपने परिवार के फ़ोटो लगाकर सजा लिया था। कुछ लोगों को काम भी मिल गया था और अब वहाँ पहले से ज़्यादा गाड़ियाँ हो गई थीं।

हम और नज़दीक पहुँचे तो मैंने अदकी और अपनी बहनों और चाची को बाहर खड़े देखा। वे हाथ उठाकर आकाश की ओर देखते हुए प्रार्थना कर रही थीं। कैथरीन की माँ बहुत रोई थी। डॉक्टर को चिंता हुई कि उनकी आँखों की रोशनी नहीं चली जाए। शिविर के गेट से गुज़रते हुए हमें अंतिम-संस्कार की प्रार्थना सुनाई पड़ रही थी। मैं

अपने परिवार से मिली तो मुझे रोना आ गया और मैंने भी उनके साथ प्रार्थना की। फिर अचानक मुझे लगा कि मेरे पुराने घाव फिर से हरे हो गए थे। मुझे विश्वास नहीं हो रहा था कि मैं अब कैथरीन और अपनी माँ को कभी नहीं देख पाऊँगी। मुझे लगा जैसे मेरा परिवार पूरी तरह नष्ट हो गया था।

www.The-Gyan.in

11

यज़ीदियों का ऐसा मानना है कि तवूसी मेलेक पृथ्वी पर उत्तरी इराक में लैलिश नाम के उस सुंदर स्थान पर मनुष्य को ईश्वर से जोड़ने के लिए आए थे। हम लोग कई बार वहाँ जाते हैं और ईश्वर के साथ जुड़ने का प्रयास करते हैं। लैलिश बहुत दूर है और एक शांत जगह है। वहाँ जाने के लिए हरी-भरी घाटियों में बनी सँकरी सड़कों से होकर गुज़रना पड़ता है। रास्ते में छोटे मकबरों और धर्म स्थलों को पार करते हुए हम एक गाँव की ओर आगे बढ़ते हैं। कुछ ज़रूरी मौक़ों पर जैसे नया साल, वह सड़क यज़ीदियों से भर जाती है। वे सब उस पवित्र स्थान पर तीर्थयात्रा के लिए जाते हैं। वह स्थान साल के बाक़ी दिनों में बहुत शांत रहता है। बहुत कम लोग वहाँ पूजा के लिए आते हैं।

लैलिश को हमेशा साफ़ -सुथरा रखना पड़ता है। वहाँ आने वाले लोग जूते उतारकर नंगे पैर सड़कों पर चलते हैं और प्रतिदिन स्वयंसेवकों का समूह उस धर्म स्थल की देखभाल करता है। वे धर्म स्थल के आगन को साफ़ करते हैं, पवित्र वृक्षों की छटाई करते हैं, रास्तों को धोते हैं और दिन में कई बार दीपक जलाते हैं।

धर्म स्थल में प्रवेश करने से पहले हम दरवाज़े की चौखट को चूमते हैं। हम उस पर पैर नहीं रखते। फिर भीतर हम रंग-बिरंगी रेशमी गाँठें लगाते हैं। हर गाँठ, एक प्रार्थना का प्रतिनिधित्व करती है। कुछ महत्त्वपूर्ण धार्मिक अवसरों पर बाबा शेख भी लैलिश में आते हैं और प्रार्थना करने वाले लोगों को आशीर्वाद देते हैं। वह धर्म स्थल, शेख आदि नाम के एक व्यक्ति का मकबरा है, जिन्होंने बारहवीं शताब्दी में

यज़ीदी धर्म का प्रचार किया था। वह हमारे लिए पवित्र और पूजनीय व्यक्ति हैं। लैलिश में एक श्वेतधारा बहती है। उसके बाहर बैप्टिज़्म किया जाता है। हम शेख आदि के मकबरे के नीचे उमस-भरी गहरी और अंधेरी गुफाओं में प्रार्थना करते हैं और खुद पर उस पवित्र पानी को छिड़कते हैं।

वहाँ जाने का उपयुक्त समय यज़ीदियों के नववर्ष के समय अप्रैल का महीना है। मौसम बदलता है और बारिश से जलधारा भर जाती है। अप्रैल में वहाँ के पत्थर पैरों में ठंडक देते हैं और पानी बहुत ठंडा होता है। वह पूरी घाटी बहुत ही सुंदर दिखाई पड़ती है।

लैलिश तक पहुँचने के लिए कोचो से गाड़ी में चार घंटे का समय लगता है। वहाँ पहुँचने के लिए गाड़ी की गैस और खाने-पीने का ख़र्चा जोड़ा जाए तो वह यात्रा बहुत महँगी पड़ती है, लेकिन फिर भी मुझे वहाँ जाने का कई बार सपना आता था। हमारे घर में लैलिश की बहुत-सी तसवीरें थीं और टीवी पर उससे जुड़े कार्यक्रम भी दिखाई जाते थे। उसमें एक साथ नाचते-गाते तीर्थयात्री दिखाई पड़ते थे। कुछ जगह सूखी, लेकिन लैलिश में बहुत पानी है और वही जलधारा उस घाटी के पेड़ों और फूलों को पोषित करती है। वहाँ के धर्म स्थल पुराने पत्थर से बने हैं, जिन पर हमारी कहानियों से जुड़े प्रतीक-चिह्न अंकित हैं। सबसे ज़रूरी बात यह है कि लैलिश ही वह स्थान है, जहाँ तवूसी मेलेक ने सबसे पहले दुनिया के साथ संपर्क स्थापित किया और मनुष्य को जीवन का उद्देश्य बताकर उसे ईश्वर के साथ जोड़ा। हालाँकि हम कहीं पर भी प्रार्थना कर सकते हैं, लेकिन लैलिश के धर्म स्थलों में प्रार्थना करना सार्थक माना जाता है।

मैं सोलह साल की थी, तो मुझे बैप्टिज़्म के लिए लैलिश ले जाया गया था। उस दिन का मुझे बेसब्री से इंतज़ार था और मैंने कई हफ़्तों पहले अपनी माँ से उसके बारे में सुन लिया था। मेरी माँ ने हमें बताया कि हमें दूसरे तीर्थयात्रियों के साथ आदरपूर्वक व्यवहार करना है और यह कि उस घाटी की हर वस्तु पवित्र है। इसलिए हमें जूते नहीं पहनने और गंदगी नहीं फैलानी है। "वहाँ बिलकुल मत रोना, और किसी को अपशब्द मत कहना और दुर्व्यवहार मत करना," हमारी माँ

ने हमें समझाया था। "धर्म स्थल की चौखट पर पैर भी नहीं रखना, क्योंकि उसे हम चूमते हैं।"

हमारा शरारती भाई सईद भी माँ के निर्देशों को ध्यान से सुनता था। "यहीं आपका बपतिस्मा होता है," उन्होंने बताया। उन्होंने धरातल पर खोदे गए पत्थर के एक कुंड की ओर इशारा करते हुए कहा, "और यहीं आप अपने परिवार के लिए प्रार्थना करते हो।" उस कुंड में मुख्य सड़क से आते हुए श्वेत झरने की धारा उतर रही थी। मुझे नहीं लगता कि मेरे साथ कुछ अज़ीब बात थी, क्योंकि मुझे सोलह वर्ष तक भी बैप्टाइज़ नहीं किया गया था। लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि मैं सच्ची यज़ीदी नहीं थी। हम ग़रीब थे, इसलिए ईश्वर तीर्थयात्राओं में हुए विलंब का बुरा नहीं मानते थे। मुझे इस बात की ख़ुशी थी कि आख़िर हम उस यात्रा पर जाने वाले थे।

मुझे उस जलधारा में कुछ अन्य लड़के-लड़कियों के साथ बैप्टाइज़ किया गया था। लैलिश की देखरेख करने वाली स्त्री ने उस जलधारा में एक छोटा अलमुनियम का कटोरा डाला और मेरे सिर पर ठंडा पानी डाला। फिर मेरे चेहरे पर छींटे दिए। मैं इस बीच प्रार्थना करती रही। इसके बाद उस औरत ने एक सफ़ेद कपड़ा मेरे सिर पर लपेटा। मैंने उस पर कुछ पैसे डाले। फिर कैथरीन को भी इसी तरह बैप्टाइज़ किया गया था। "मैं इस आपको निराश नहीं करूँगी," मैंने ईश्वर से कहा। "मैं पीछे नहीं हटूँगी और हमेशा जीवन में आगे बढ़ूँगी और इसी मार्ग पर चलती रहूँगी।"

आईएसआईएस के सिंजर आने पर हमें चिंता थी कि लैलिश का क्या होगा। हमें डर था कि वे हमारे धर्म स्थल नष्ट कर देंगे, क्योंकि उन्होंने पहले भी ऐसा किया था। आईएसआईएस के डर से यज़ीदी भागकर अपने पवित्र शहर आ गए जो धर्म स्थल के सेवकों द्वारा सुरक्षित था। वहाँ बाबा शेख और बाबा चाविश की प्रार्थनाओं का भी प्रभाव था। वे यज़ीदी जो अपने घर से भागकर पवित्र घाटी में आए थे, मानसिक रूप से ख़त्म हो चुके थे। वे नरसंहार देखकर थक गए थे। उन्हें विश्वास था कि आईएसआईएस के लोग किसी भी समय धर्म स्थल में घुस जाएँगे।

एक दिन उन भागे हुए यज़ीदियों में से एक पिता, धर्म स्थल के द्वार पर अपने बेटे के साथ बैठा था। वह उन लोगों के बारे में सोचता रहता था, जो मर चुके थे और जिनकी स्त्रियों का अपहरण हो गया था। यादों का बोझ ज़्यादा था। उसने अपनी बेल्ट से बंदूक निकाली और खुद को अपने बेटे के सामने गोली मार ली। गोली की आवाज़ सुनकर यज़ीदियों ने सोचा कि आईएसआईएस ने हमला कर दिया। वे सब कुर्दिस्तान की ओर भागने लगे। केवल बाबा चाविश और कुछ नौकर रुक गए। उन्होंने मरे हुए आदमी का ख़ून साफ़ किया और फिर उसके दफ़न कर दिया। आईएसआईएस के आने के बाद वे भी मरने के लिए तैयार थे। बाबा चाविश को उस स्थान के नष्ट होने की चिंता थी, लेकिन आतंकवादी घाटी में नहीं आए और ईश्वर ने उस जगह की रक्षा की।

नरसंहार के बाद औरतें धीरे-धीरे आईएसआईएस की पकड़ से छूट रही थीं। हमें नहीं पता था कि लैलिश में हमारी अगली यात्रा कैसी होगी। हमें धर्म स्थल और वहाँ की शांति की ज़रूरत थी। लेकिन कोई नहीं जानता था कि धर्म स्थल के पादरी भाग के आई हुई सबाया के साथ कैसा व्यवहार करेंगे। हमने इस्लाम-धर्म अपना लिया था और ज़्यादातर लड़कियाँ कुँवारी नहीं रह गई थीं। इससे ज़्यादा फ़र्क़ नहीं पड़ता था, क्योंकि ये दोनों काम हमारे साथ ज़बरदस्ती किए गए थे। हम जानते थे कि इन अपराधों के लिए हमें यज़ीदी समाज से निष्कासित किया जा सकता था।

हमें अपने धर्म-गुरुओं को कमतर नहीं आँकना चाहिए था। अगस्त महीने के अंत में जब नरसंहार का सदमा ताज़ा था, लोगों ने कई बैठकें की और इस पर प्रतिक्रिया तय करने का प्रयास किया। उन्होंने एक निर्णय लिया। धर्मगुरुओं ने घोषणा कर दी कि सभी सबाया रह चुकी लड़कियों को समाज में फिर से पहले वाला स्थान दिया जाएगा और उनके साथ जो दुर्व्यवहार हुआ था, उसके आधार पर उनके साथ भेदभाव नहीं होगा। हमें मुसलमान भी नहीं माना जाएगा, क्योंकि वह धर्म भी हम पर ज़बरदस्ती थोपा गया था। हमारे साथ बलात्कार हुआ था; इसलिए हम पीड़ित थे, लेकिन हमारी गिनती पथभ्रष्ट लोगों में नहीं की जाएगी। बाबा शेख ने सब लड़कियों

से मुलाक़ात की और उन्हें आश्वासन दिया कि हम यज़ीदी ही रहेंगे। फिर सितंबर महीने में हमारे धर्मगुरुओं ने एक आदेश जारी करके सभी यज़ीदियों को सूचित किया कि हमारे साथ जो हुआ, उसमें हमारा कोई दोष नहीं था और जो सच्चे यज़ीदी हैं, उन्हें हमारा अपने समुदाय में खुली बाँहों से दोबारा स्वागत करना चाहिए। उस अवसर पर मुझे अपने समाज से जितना स्नेह मिला, वैसा मैंने पहले कभी महसूस नहीं किया।

बाबा शेख ने जो किया और कहा, बावजूद उसके हमारे लिए खुद को सामान्य समझना आसान नहीं था। हम अंदर से टूट चुके थे। औरतों ने खुद को साफ़ और पवित्र करने का बहुत प्रयास किया। कई लड़कियों ने तो सर्जरी द्वारा फिर से "कौमार्य बहाल" करवाने की भी कोशिश की। उन्हें उम्मीद थी कि इससे बुरी यादें मिट जाएँगी और उनके चरित्र पर लगा दाग़ भी साफ़ हो जाएगा। शिविर में कुछ डॉक्टरों ने इलाज के दौरान यह सेवा देने का प्रस्ताव किया था। उनके अनुसार यह एक सामान्य उपचार है। डॉक्टरों ने बताया कि इस काम में केवल बीस मिनट लगते हैं।

मैं भी इसके लिए उत्सुक थी; इसलिए लड़कियों के साथ डॉक्टर के क्लीनिक पर चली गई। "अगर तुम्हें कौमार्य वापस चाहिए तो इसका तरीक़ा आसान है," डॉक्टर ने बताया। कुछ लड़कियाँ इसके लिए तैयार हो गई थीं, लेकिन मैंने बाद में मना कर दिया। कोई इतना आसान तरीक़ा, हाजी सलमान द्वारा किए बलात्कार जैसी बुरी याद को कैसे मिटाया सकता है? वह उस क्षण को कैसे धुंधला कर सकता है, जब हाजी सलमान ने अपने पहरेदारों से कहकर मेरा बलात्कार करवाया? उन हमलों से मुझे जो नुक़सान हुआ था, वह केवल शारीरिक नहीं था। इसे कोई सर्जरी ठीक नहीं कर सकती। हालाँकि मुझे पता है कि कुछ लड़कियों ने ऐसा क्यों किया? उन्हें अपने भावी जीवन में शांति चाहिए थी। उन्हें लगा कि एक सर्जरी से उनका भविष्य सामान्य हो सकता था और वे विवाह करके ख़ुशहाल जीवन जी सकती थीं। मुझे उनके लिए ख़ुशी है।

परंतु मेरे लिए अपने विषय में यह कल्पना करना मुश्किल था। कोचो में मेरी दुनिया बहुत छोटी और प्रेम से भरी थी। मुझे केवल अपने परिवार की चिंता थी। मुझे हमेशा यही लगता था कि हमारी स्थिति धीरे-धीरे बेहतर हो जाएगी। किंतु अब स्थिति बदल चुकी थी। यदि लड़कियाँ उस सदमे से उबर जाती तो भी उनसे शादी करने के लिए यज़ीदी लड़के गाँव में बचे ही नहीं थे! सिंजर में बड़े-बड़े क़ब्रिस्तान बन चुके थे। हमारा समाज पूरी तरह बर्बाद हो गया था। यज़ीदी लड़कियों ने अपने बचपन में जैसे जीवन की कल्पना की थी, हमारा वर्तमान उससे बिलकुल अलग हो गया था। हमें अब ख़ुशी की तलाश नहीं थी। हमें बस ज़िंदा रहना था। यदि यह हो पाया, तो हम कुछ सार्थक करना चाहते थे।

शरणार्थी शिविर में कुछ महीने रहकर मैंने अनेक कार्यकर्ताओं से भेंट की। उनमें से एक ने मेरा अबाया माँगा था। "मैं नरसंहार के सबूत इकट्ठे कर रही हूँ," उसने मुझसे कहा। "मैं एक दिन संग्रहालय खोलूँगी।" एक अन्य कार्यकर्ता ने मेरी कहानी सुनने के बाद मुझसे पूछा कि क्या मैं इंग्लैंड जाकर अधिकारियों को अपने साथ हुए दुर्व्यवहार के विषय में बता सकती हूँ। मैंने हामी भर दी। मुझे नहीं पता था कि वह एक यात्रा मेरा पूरा जीवन बदल देगी।

शिविर के आख़िरी कुछ महीने जर्मनी जाने की तैयारी में बीत गए। मैं और दीमल दोनों जा रहे थे। लेकिन अदकी ने हमारे साथ जाने से मना कर दिया। "मैं इराक नहीं छोड़ूँगी," उसने कहा। वह बहुत ज़िद्दी थी। मुझे इस बात के लिए उससे ईर्ष्या होती थी। जर्मनी में सुरक्षा, स्कूल की व्यवस्था और एक नया जीवन हमारा इंतज़ार कर रहा था। लेकिन मेरा घर हमेशा से इराक था।

वहाँ जाने से पहले हमें काग़ज़ात तैयार करने थे और मुझे पासपोर्ट बनवाने बगदाद भी जाना था। यह पहला मौक़ा था, जब मैं इराक की राजधानी जाने वाली थी। यह मेरी पहली हवाई-यात्रा थी। मैं वहाँ बारह दिन रुकी। प्रतिदिन मुझे एक अलग कार्यालय में जाना पड़ता था। वे लोग मेरी अँगुलियों के निशान और फ़ोटो लेते थे। कभी-कभी कुछ अज़ीब बीमारियों के विरुद्ध वैक्सीन भी लगवानी

पड़ी। वह लंबी प्रक्रिया थी और फिर एक दिन सितंबर में हमें कहा गया कि हमारा जाने का समय हो चुका है।

वे हमें अपने साथ अर्बिल ले गए। उन्होंने हमें कपड़े खरीदने के लिए पैसे दिए। मैंने और दीमल ने शिविर में सबको अलविदा कहा। हम अदकी से अलग से मिले थे। मैं बहुत साल हेज़्नी के बारे में यह सोचती थी कि वह जर्मनी जाकर बहुत पैसा कमाएगा और फिर जीलन के घरवाले उसे शादी के लिए मना नहीं कर सकेंगे। लेकिन उसे तो वापस भेज दिया गया था और दूसरी तरफ़ मेरे टिकट का पैसा सरकार दे रही थी। मैंने इतना मुश्किल काम कभी नहीं किया था।

जर्मनी जाने से पहले हम लोग एक बार लैलिश गए थे। वहाँ दर्जनों भूतपूर्व सबाया लड़कियाँ रास्ते में खड़ी प्रार्थना कर रही थीं। मैंने और दीमल ने शेख आदि के धर्म स्थल की चौखट को चूमा और वहाँ रंगीन रेशमी कपड़ों की गाँठ लगाई। हर गाँठ के साथ हमने एक प्रार्थना की। वह सबकी सुरक्षित वापसी और जीवित रहने की प्रार्थना थी। हम चाहते थे, सब ख़ुश रहें। मैंने अपनी माँ की आत्मा की शांति, कोचो की आज़ादी और आईएसआईएस को सज़ा दिलवाने के लिए प्रार्थना की थी। हमने जलधारा का ठंडा पानी चेहरे पर डाला और तवूसी मेलेक से प्रार्थना की।

उस दिन लैलिश में बहुत शांति थी। हम वहाँ पहुँचे तो बाबा चाविश सबसे मिलने बाहर आए। उनका क़द ऊँचा है और वह दुबले-पतले हैं। उनकी लंबी दाढ़ी है और आँखों में बहुत दया और प्रेम है। वह पैर मोड़कर बैठ गए। उनके सफ़ेद वस्त्र हवा में लहरा रहे थे और पाइप में भरे तंबाकू का धुँआ चारों ओर फैल रहा था।

हमने घुटने टेके और फिर उन्होंने हमारा माथा चूमा। उन्होंने हमसे कुछ सवाल पूछे। "तुम्हें क्या हुआ?" वह हमारे बारे में जानना चाहते थे। हमने फिर उन्हें बताया कि हमें आईएसआईएस ने पकड़ लिया था, लेकिन हम वहाँ से छूट गए और अब हम जर्मनी जा रहे हैं। "यह अच्छी बात है," उन्होंने मधुर किंतु उदास स्वर में कहा। मुझे इराक में इतने सारे यज़ीदी लोगों को छोड़कर जाना बुरा लगा रहा था। बाबा

चाविश की आँखों के सामने उनके समाज की संख्या घटती जा रही थी, लेकिन वह जानते थे कि हमारे लिए आगे बढ़ना ज़रूरी था।

उन्होंने हमसे कुछ और प्रश्न पूछे। "तुम कहाँ से आई हो? तुम आईएसआईएस के पास कितने दिन रही? शिविर कैसा है?" फिर अंत में उनका पाइप लगभग ख़ाली हो गया। सूरज ढलने को था। उन्होंने अंत में हमसे पूछा, "तुमने किसे खोया है?"

फिर वह नीचे बैठ गए और उन्होंने हर स्त्री की कहानी सुनी। सबने अपनी बातें खुलकर बताईं और उन सबके नाम बताए जो मर गए या लापता हो गए थे। बाबा के सवालों के जवाब घंटों तक चलते रहे। हवा ठंडी हो रही थी और धर्म स्थल की दीवारों के पत्थरों पर अंधकार छाने लगा था। यज़ीदी लोगों के नाम चारो तरफ़ गूँज रहे थे। उनकी आवाज़ आकाश छू रही थी। ईश्वर उन्हें सुन सकता था। मेरी बारी आई तो मैंने कहा, "जालो, पीसे, मसूद, खैरी और इलियास मेरे भाई थे। मलिक और हेनी मेरे भतीजे थे। मोना, जीलन और स्मेहर मेरे भाइयों की पत्नियाँ थीं। कैथरीन और नसरीन मेरी भतीजी थीं। हाजी, मेरा सौतेला भाई था। उनमें से कई लोग पकड़े गए और फिर छूट गए थे। मेरे पिता हमें बचाने के लिए अब जीवित नहीं हैं। और मेरी माँ शमी जहाँ भी हैं। उनके बारे में मुझे अब पता नहीं।"

उपसंहार

आईएसआईएस के कोचो पर हमला करने के एक साल और तीन महीने बाद मैं, नवंबर, 2015 में जर्मनी से स्विट्ज़रलैंड चली गई। मुझे वहाँ अल्पसंख्यकों के मुद्दों पर संयुक्त राष्ट्र की एक बैठक में भाषण देना था। यह पहला मौक़ा था, जब मैं इतने लोगों के सामने अपनी कहानी सुनाने जा रही थी। मैं एक रात पहले नसरीन के साथ जागती रही। हमारे साथ वह कार्यकर्ता भी थी, जिसने उस यात्रा को आयोजित किया था। हम सोचते रहे कि हमें क्या बोलना है। मैं लोगों को सबकुछ बताना चाहती थी - आईएसआईएस से बचकर भागते हुए प्यास से मरते बच्चे, पहाड़ों पर फँसे हुए परिवार, बंधक बनी हज़ारों औरतें और उनके बच्चे और नरसंहार के वे क्रूर दृश्य, जो मेरे भाइयों ने देखे थे। मैं उन सैकड़ों दुखी और पीड़ित यज़ीदियों में से एक थी। मेरा समाज बिखर गया था। हम शरणार्थियों की तरह इराक के भीतर और बाहर बसे हुए थे। कोचो पर अब भी आईएसआईएस का क़ब्ज़ा था। यज़ीदियों के साथ जो हो रहा था, उसके बारे में दुनिया को अभी बहुत कुछ जानना बाक़ी था।

हमारी यात्रा का पहला भाग, जर्मनी के घने जंगलों से ट्रेन में बीता। मैंने ट्रेन की खिड़की से देखा कि पेड़ पीछे छूट रहे थे। मुझे जंगल से डर लग रहा था। यहाँ के जंगल सिंजर के मैदानों और घाटियों से बिलकुल अलग हैं। फिर भी वह दृश्य बहुत सुंदर था और मुझे अपना नया घर पसंद आने लगा था। जर्मनी के लोगों ने हमारा

स्वागत किया। मैंने सुना था कि वहाँ के सामान्य नागरिक भी सीरिया और इराक से भागकर आए लोगों का ट्रेन और हवाई जहाज में स्वागत करते थे। हमें ख़ुशी थी कि हम जर्मन समाज का हिस्सा बन पाएँगे। दूसरे देशों में यज़ीदियों का जीवन मुश्किल था। कई शरणार्थी ऐसी जगहों पर चले गए थे, जहाँ उन्हें पसंद नहीं किया जाता था। उन्होंने बहुत कष्ट सहन किया था। किंतु इससे लोगों को फ़र्क़ नहीं पड़ता। कुछ यज़ीदी इराक में फँसे थे और वहाँ से निकलने का मौक़ा ढूँढ़ रहे थे। इंतज़ार की पीड़ा बहुत अलग होती है। कुछ देशों ने शरणार्थियों को पूरी तरह बाहर रखने का फ़ैसला किया था और यह सुनकर मुझे बहुत ग़ुस्सा आता था। निर्दोष लोगों को सुरक्षित स्थान उपलब्ध करने से रोकने का कोई कारण मुझे समझ नहीं आया। मैं यह सब बातें उस दिन संयुक्त राष्ट्र के अपने अभिभाषण में कहना चाहती थी।

मैं उन्हें कहना चाहती थी कि बहुत कुछ करना बाक़ी है। हमें इराक में धार्मिक अल्पसंख्यकों के लिए एक सुरक्षित क्षेत्र बनाने की ज़रूरत है, हमें आईएसआईएस के बड़े नेताओं से लेकर आम नागरिकों तक को सज़ा देना ज़रूरी था। उन्होंने नरसंहार किया और मानवता के ख़िलाफ़ बहुत-से अपराध किए थे। सिंजर को आज़ाद कराने की ज़रूरत थी। कई लड़कियाँ और औरतें जो आईएसआईएस के बंधन से छूटकर निकल गई थीं, उन्हें फिर से समाज के साथ जोड़ने की ज़रूरत थी। उनके साथ जो शोषण हुआ, उसे आईएसआईएस के अपराधों की सूची में शामिल किया जाना ज़रूरी था। मैं चाहती थी कि यज़ीदी धर्म इराक से लेकर संयुक्त राष्ट्र के सभी स्कूलों में पढ़ाया जाए, ताकि लोगों को अपने प्राचीन धर्म के संरक्षण का महत्त्व समझ में आए। यज़ीदी और दूसरे धार्मिक अल्पसंख्यकों के कारण ही इराक, महान देश बन पाया था।

मुझे बोलने के लिए केवल तीन मिनट का समय दिया गया था। इसलिए नसरीन ने मुझे सलाह दी कि मुझे अपने भाषण को सरल रखना चाहिए। "तुम सिर्फ़ अपनी कहानी सुनाना," वह बोली। यह डरावना ख़याल था। मुझे पता था कि अगर मुझे अपनी कहानी से प्रभाव छोड़ना है, तो मुझे अपनी कहानी सच्चाई के साथ बतानी होगी। मुझे सब श्रोताओं को हाजी सलमान के बारे में और उसने

मुझे जो यातनाएँ दीं, जिस तरह से मुझे प्रताड़ित किया, वह सब बताना था। मुझे मोसुल के चेक-प्वाइंट पर उस भयावह रात और अपने शोषण के बारे में भी कहना था। अपनी बात को पूरी सच्चाई से बोलना मेरे लिए सबसे मुश्किल निर्णय था, लेकिन उस समय वही सबसे ज़रूरी बात थी।

मैं भाषण देते हुए काँप रही थी। मैंने शांत रहने का बहुत प्रयास किया। मैंने बताया किस तरह कोचो पर क़ब्ज़ा हुआ और कैसे वे लोग मेरी जैसी लड़कियों को सबाया बनाकर ले गए। मैंने बताया किस तरह मेरे साथ बलात्कार हुआ, कैसे मुझे बार-बार मारा गया और फिर आख़िरकार मैं किस तरह भागने में सफल हुई। मैंने उन्हें अपने भाइयों के बारे में बताया, जिन्हें मार दिया गया था। वे सबकुछ चुपचाप सुनते रहे। बाद में एक तुर्क औरत मेरे पास आई और रोने लगी। "मेरा एक भाई मारा गया था," उसने मुझे बताया। "इसी से हमारा परिवार सदमे में है। मेरे लिए यह कल्पना करना भी मुश्किल है कि तुम्हें अपने छह भाई खोकर कैसा लगा होगा!"

"यह बहुत मुश्किल है," मैंने कहा। "लेकिन ऐसे परिवार भी हैं, जिन्होंने हम से भी ज़्यादा नुक़सान उठाया है।"

मैं जर्मनी लौटकर आई तो मैंने नसरीन से कहा, "मेरी जब ज़रूरत पड़ेगी, मैं आ जाऊँगी और मुझसे जो बन पड़ेगा मैं ज़रूर करूँगी।" मुझे बिलकुल अनुमान नहीं था कि मुझे जल्द ही यज़ीदी कार्यकर्ताओं द्वारा चलाई जा रही संस्था यज़दा के साथ जुड़ने का मौक़ा मिलेगा और मेरे जीवन की नई शुरुआत हो जाएगी। मुझे अब समझ में आया है कि मेरा जन्म अपने ही विरुद्ध हुए अपराधों के बीच हुआ था।

शुरू में हमें लगा कि इराक-युद्ध के दौरान लोगों के जीवन की तुलना में हमारे जीवन का कुछ महत्त्व नहीं था। मैं और दीमल, अपनी दो और बहनों के साथ दो बेडरूम के घर में रहने लगे। हमने उसे अपने परिवार के मृतक या बिछड़ गए लोगों की फ़ोटो से सजाया था। मैं रात को अपनी माँ और कैथरीन की फ़ोटो के नीचे सोती थी। हम मृतकों के

नाम वाले हार पहनते थे। प्रतिदिन उन्हें याद करके रोना आता था। हम तवूसी मेलेक से सबकी सुरक्षित वापसी की कामना करते थे। मुझे हर रात कोचो का सपना आता और रोज़ सुबह उठकर वह कोचो याद आता था, जिसे मैं जानती थी। वहाँ अब ऐसी कोई जगह मौजूद नहीं थी। मन अज़ीब ख़ालीपन से भरा हुआ था। मैंने कार्यकर्ता के रुप में यात्रा के दौरान अनेक सुंदर देश देखे, लेकिन मुझे इराक से ज़्यादा कोई जगह पसंद नहीं आई।

हम लोग जर्मनी की कक्षाओं और अस्पतालों में जाते थे। हमने वहाँ उपचार भी करवाया, लेकिन सब व्यर्थ हो गया। हम अपना खाना ख़ुद बनाते और घर के काम भी ख़ुद करते थे। परंतु गाँव या स्कूल का सामाजिक जीवन अलग होता है। वहाँ भेड़ों का दूध निकालने या खेतों पर काम करने में काफ़ी समय निकल जाता था; इसलिए यहाँ हमारे पास बहुत ख़ाली वक़्त बचता था। मैं जब पहले जर्मनी गई थी, तो मैं हेज़्नी से वापस लौटने की प्रार्थना करती थी, लेकिन उसने मुझे जर्मनी में रुकने को कहा। उसने यह भी कहा कि यहाँ मेरा जीवन बेहतर हो जाएगा, लेकिन मुझे उसकी बात पर विश्वास नहीं था।

कुछ समय बाद मेरी मुलाक़ात मुराद स्माइल से हुई। यज़ीदियों का एक समूह था, जिसमें हाजी पीर, अहमद ख़ुदीदा, आबिद शमदीन और हैदर इलियास जैसे लोग थे। हैदर इलियास, एक अनुवादक था, जो अमेरिकी सेना के लिए काम करता था और मेरे भाई जालो से, उसकी मौत होने से ठीक पहले तक फ़ोन पर बात भी करता था। इनके साथ मिलकर मुराद ने यज़दा संस्था की स्थापना की थी और वह यज़ीदियों के हक़ के लिए संघर्ष कर रहा था। मेरी पहली बार मुराद से मुलाक़ात हुई तो मुझे अपने बारे में अंदाज़ा नहीं था कि यह मेरे नए जीवन की शुरुआत हो रही थी। मैं सिर्फ़ मदद करना चाहती थी, लेकिन मुझे तरीक़ा नहीं पता था। मुराद ने जब मुझे यज़दा संस्था और उसकी कार्यशैली की जानकारी दी कि वे किस तरह लोगों की निःशुल्क सहायता करते थे और आईएसआईएस द्वारा बंधक बनाई औरतों और लड़कियों की मदद करते थे, तो मुझे अपना भविष्य और स्पष्ट नज़र आने लगा।

यज़ीदियों को जैसे ही सिंजर में आईएसआईएस के आने की ख़बर मिली, उन्होंने सब काम छोड़कर इराक में हमारी मदद करना शुरु कर दिया था। मुराद नरसंहार के समय हॉस्टल में जियोफ़िजिक्स की पढ़ाई कर रहा था। बाक़ी लोग पढ़ाते थे या सामाजिक कार्यकर्ता थे। उन सबने अपने काम छोड़कर हमारी मदद शुरु कर दी। मुराद ने बताया किस तरह उसने लगातार दो सप्ताह वाशिंगटन के एक होटल के कमरे में रहकर अपने साथियों के साथ इराक में फँसे यज़ीदियों से फ़ोन पर बात की और उन्हें सुरक्षित स्थानों पर पहुँचाने का काम किया। इसमें कभी सफलता मिलती थी, तो कभी वे असफल हो जाते थे। उन्होंने कोचो को बचाने का भी प्रयास किया था। उन्होंने ऐसे सभी लोगों से बात की जो अर्बिल और बगदाद में उनकी मदद कर सकते थे। उन्होंने बहुत-से लोगों को अमेरिकी सेना के साथ मिलकर काम करने का सुझाव भी दिया (उस क़ब्ज़े के दौरान मुराद और हादी अनुवादक थे) और वे हर सड़क पर आईएसआईएस की गतिविधि की ख़बर रखते थे। लेकिन वे हमें बचाने में कामयाब नहीं हुएय इसलिए लोगों की सहायता करने और उन्हें इंसाफ़ दिलाने का दुख साफ़ नज़र आता था। हैदर की पीठ में हमेशा दर्द रहता था और मुराद के चेहरे पर थकान नज़र आती थी। फिर भी मैं उनके जैसा बनना चाहती थी। मुराद से मिलने के बाद मुझमें बदलाव आया। आज मैं जो हूँ, उसी के कारण बन पाई हूँ। हालाँकि जो लोग बिछुड़ गए, उनका दुख कभी कम नहीं हो सकता फिर भी जर्मनी में हमारे काम का प्रभाव दिखाई देने लगा था।

मैं आईएसआईएस के क़ब्ज़े में बिलकुल असहाय थी। मेरी माँ को मुझसे अलग किया गया। मुझ में शक्ति होती तो मैं ज़रूर उसे बचा लेती। अगर मैं आतंकवादियों के हाथों अपनी ख़रीद-फ़रोख़्त या बलात्कार को रोक सकती तो ज़रूर रोक लेती। मुझे अपने भाग निकलने का विचार आता है। घर का खुला दरवाज़ा, शांति से भरा आँगन, नासिर और उसका परिवार। मैं आज भी काँप उठती हूँ, जब मुझे ख़याल आता है कि ज़रा-सी चूक हो जाती तो क्या होता! आज मुझे लगता है कि ईश्वर ने मेरी भागने में सहायता की तो उसके पीछे यही कारण था कि मैं यज़दा के कार्यकर्ताओं से मिल पाई।

आईएसआईएस वालों ने कभी यह सोचा भी नहीं होगा कि यज़ीदी लड़कियाँ उनकी पकड़ से भाग सकती हैं या वे अपने साथ हुए अत्याचार के विरुद्ध पूरी दुनिया में आवाज़ भी उठा सकती हैं। मैं जब भी किसी को अपनी कहानी सुनाती हूँ, तो मुझे लगता है कि मैंने आतंकियों से उनकी ताक़त छीन ली।

मैंने जेनेवा की पहली यात्रा के बाद हज़ारों लोगों को अपनी कहानी सुनाई। उनमें नेता, राजदूत, फ़िल्मवाले, पत्रकार और बहुत-से आम लोग थे, जिन्हें इराक पर आईएसआईएस के क़ब्ज़े के बारे में जानने में रुचि थी। मैंने कई बार सुन्नी नेताओं से भी आग्रह किया कि उन्हें आईएसआईएस की सार्वजनिक रूप से निंदा करनी चाहिए। उनके पास हिंसा रोकने की ताक़त भी मौजूद है। मैंने बहुतसी औरतों और पुरुषों के साथ मिलकर लोगों की मदद करने का काम किया है और मैंने पूरी दुनिया को यह संदेश दिया है कि यज़ीदियों के साथ हुआ नरसंहार, बहुत बड़ा अन्याय था और यह कि आईएसआईएस को सज़ा ज़रूर मिलनी चाहिए।

अन्य यज़ीदियों ने भी इस अभियान में सहयोग दिया है। उन्होंने हमारे कष्ट कम करने और बचे हुए समुदाय को सुरक्षित रखने की कोशिश की है। इन कहानियों को सुनना मुश्क़िल था, लेकिन इससे अंतर ज़रूर पड़ा है। बीते कुछ वर्षों में कैनेडा ने यज़ीदी शरणार्थियों को प्रवेश देने का निश्चय किया है। संयुक्त राष्ट्र ने औपचारिक रूप से माना है कि आईएसआईएस ने नरसंहार का अपराध किया था। सरकार इस बात पर भी विचार कर रही है कि इराक में धार्मिक अल्पसंख्यकों के लिए सुरक्षित जगह की स्थापना करना आवश्यक है। हमारे साथ बहुत-से वकील भी हमारी सहायता के लिए तैयार हो गए हैं। यज़ीदियों को न्याय ज़रूर मिलेगा और हर यज़ीदी इस संघर्ष का हिस्सा है।

इराक में अदकी, हेज़्नी, सउद और सईद मिलकर अपने-अपने ढंग से इस लड़ाई को आगे बढ़ा रहे हैं। कई लोग शरणार्थी शिविर में ही रुके हैं। अदकी ने हमारे साथ जर्मनी आने से मना कर दिया था। मैं जब भी उनसे बात करती हूँ, तो मुझे उनकी बहुत याद आती

है। शिविर में यज़ीदियों के लिए हर दिन नया संघर्ष होता है और वे अपने समुदाय की मदद के लिए हर संभव प्रयास कर रहे हैं। उन्होंने आईएसआईएस के विरोध में कुर्द और बगदाद में प्रदर्शन भी किए हैं। यदि किसी बड़े क़ब्रिस्तान का पता लगता है या कोई और लड़की भागते हुए मारी जाती है, तो शिविर के शरणार्थियों को सबसे पहले समाचार मिल जाता है और वही उसकी अंत्येष्टि का प्रबंध करते हैं। शिविर के लगभग हर घर में लोग हैं, जो अपने प्रियजनों का इंतज़ार करते हैं और ईश्वर से प्रार्थना करते हैं।

प्रत्येक यज़ीदी शरणार्थी, मानसिक एवं शारीरिक दुख झेल रहा है और समाज को संगठित रखने का प्रयास कर रहा है। अब से कुछ वर्ष पहले तक रहे किसान, विद्यार्थी, व्यापारी और घरों में काम करने वाली औरतें अचानक धार्मिक विद्वान बन गए हैं और यज़ीदी धर्म का प्रचार कर रहे हैं। वे छोटे-छोटे घरों में लोगों को पढ़ाते हैं और उन्हें अपने धर्म की शिक्षा देते हैं। हम अपनी संस्कृति और धर्म को ज़िंदा रखना चाहते हैं। साथ ही, हम आईएसआईएस को उनके अपराधों की सज़ा दिलवाने के लिए कृतसंकल्पित हैं। समाज के रूप में हमने अपने संघर्ष को जिस दिशा में आगे बढ़ाया है, मुझे उस पर गर्व है। मुझे यज़ीदी होने पर गर्व है!

हालाँकि मैं जर्मनी में बहुत सुरक्षित हूँ, लेकिन मुझे अपने साथ के लोगों से, जो इराक में हैं, ईर्ष्या होती है। मेरे भाई-बहन अपने घर के नज़दीक रहते हैं। उन्हें इराकी भोजन मिलता है और मुझे उन सबकी बहुत याद आती है। शहर जाने पर वे दुकानदारों और ड्राइवरों से कुर्द भाषा में बात कर सकते हैं। पेशमेरगा उन्हें जब भी सोलाग़ जाने की अनुमति दे देंगे तो वे मेरी माँ की क़ब्र पर जा सकेंगे। हम एक-दूसरे से फ़ोन पर बात करते हैं और मैसेज भी करते हैं। हेज़्नी मुझे बताता है कि वह लड़कियों को बचाने के काम में लगा हुआ है। अदकी से मुझे शिविर का हाल-चाल मिलता रहता है। वहाँ की ज़्यादातर कहानियाँ दुखद हैं और मुझे उदास कर देती हैं। मैं और मेरी बहन कभी-कभी किसी बात पर ख़ूब हँसते हैं, लेकिन मेरा मन इराक के लिए दुखी रहता है।

मई, 2017 में मुझे शिविर से समाचार मिला कि कोचो आईएसआईएस के क़ब्ज़े से आज़ाद हो गया था। सईद हश्द अल-शाबी की यज़ीदी इकाई का हिस्सा था, जो इराकी सेना के साथ कोचो में गए थे। मुझे ख़ुशी थी कि शहीद का सैनिक होने का सपना पूरा हो गया। हालाँकि कोचो अब भी सुरक्षित नहीं है, क्योंकि कुछ आईएसआईएस के वहाँ आतंकी छिपे हुए थे। वे लड़ रहे थे और उन्होंने कई जगह विस्फोटक बिछा दिए थे, फिर भी मैं कोचो जाना चाहती थी। आख़िर, हेज़्नी ने हामी भर दी, तो मैं हवाईजहाज से अर्बिल पहुँच गई और फिर शिविर आ गई।

मुझे नहीं पता था कि कोचो जाकर मुझे कैसा लगेगा। यहाँ से हम सब अलग हुए थे और वहीं मेरे भाइयों को मारा गया था। मेरे साथ दीमल और मुराद भी थे (मुराद और यज़दा के अन्य लोग मेरे लिए परिवार की तरह थे।) बाद में हमने एक ग्रुप बनाया और लड़ाई से बचते हुए लंबा रास्ता लेकर पहुँच गए। गाँव ख़ाली पड़ा था, स्कूल की खिड़कियाँ टूटी हुई थीं, अंदर किसी का शव पड़ा था। मेरा घर लूट लिया गया था। उसकी छत की लकड़ी तक ग़ायब थी। जो बचा उसे जला दिया गया था। दुल्हनों की तसवीरों वाला एल्बम राख़ हो चुका था। यह देखकर हम सब बहुत देर तक रोते रहे। सब नष्ट हो चुका था, फिर भी मैं अपने घर के दरवाज़े पर पहुँची तो मुझे लगा कि यह मेरा वही पुराना घर है। सबने मुझसे लौटने को कहा, लेकिन मैं वहाँ कुछ और देर रुकना चाहती थी। मैंने कसम खाई कि दिसंबर के महीने में जब यज़ीदी उपवास रखते हैं और तवूसी मेलेक और ईश्वर के नज़दीक जाने की कोशिश करते हैं, तो मैं कोचो ज़रूर आऊँगी।

जेनेवा में दिए भाषण के एक वर्ष के भीतर और कोचो से लौटने के लगभग एक वर्ष बाद, मैं यज़दा के कुछ सदस्यों के साथ न्यू यॉर्क गई थी। मेरे साथ आबिद, मुराद, अहमद, हैदर और माहेर ग़ानेम भी थे। संयुक्त राष्ट्र ने मुझे डिग्निटी ऑफ़ सरवाइवर्स ऑफ़ ह्यूमन ट्रैफ़िकिंग का गुडविल एंबेसडर मनोनीत किया। मुझे एक बार फिर लोगों के

सामने अपनी बात रखने का मौक़ा मिला। अपनी कहानी सुनाना आसान नहीं होता, क्योंकि वह हर बार पहले की तरह दिमाग़ में ताज़ा हो जाती है। मैं जब भी चेक-प्वाइंट पर हुए बलात्कार या हाजी सलमान द्वारा मेरी पीठ पर चाबुक मारने या फिर मोसुल के अंधकार-भरे आकाश के नीचे सहायता ढूँढ़ने के पलों को याद करती हूँ, तो मैं फिर उसी डर और दहशत के माहौल में पहुँच जाती हूँ। मेरे साथ अन्य यज़ीदी भी उन यादों में गुम हो जाते हैं। यहाँ तक यज़दा के सदस्य, जो मेरी यह कहानी अनगिनत बार सुन चुके हैं, भी उसे सुनकर रो पड़ते हैं।

मुझे भाषण देने की आदत हो गई है और अब सुनने वाले लोगों की संख्या से डर नहीं लगता। ईमानदारी और सच्चाई से सुनाई गई कहानी मेरा सबसे बड़ा हथियार है, जिसे मैंने आतंकवाद के ख़िलाफ़ इस्तेमाल किया है। मैं इसे आगे भी इसी तरह इस्तेमाल करती रहूँगी, जब तक आतंकियों को सज़ा नहीं मिल जाती। अभी बहुत कुछ करना बाक़ी है। विश्व के सभी बड़े नेताओं, ख़ासतौर से मुसलमान धर्मगुरुओं को, एकजुट होकर हमारे साथ खड़ा होना होगा और शोषितों को बचाने के लिए आवाज़ उठानी होगी।

मैंने छोटा-सा भाषण दिया था। मैं अपनी कहानी सुनाने के बाद भी कुछ देर बोलती रही। मैंने कहा मुझे भाषण देने की आदत नहीं है और यह कि हर यज़ीदी, आईएसआईएस को नरसंहार की सज़ा दिलवाना चाहता है और वे चाहें तो दुनिया-भर के दुखी लोगों की सहायता कर सकते हैं। मैंने यह भी कहा कि मैं अपने बलात्कारियों की आँखों में आँखें डालकर उन्हें देखना चाहती हूँ और अपने सामने उन्हें सज़ा दिलवाना चाहती हूँ। मैंने कहा, सबसे ज़रूरी बात यह है कि ऐसी कहानी सुनाने वाली मैं आख़िरी लड़की होना चाहती हूँ।

अनुवादक के बारे में

आशुतोष गर्ग का जन्म 1973 में दिल्ली में हुआ। इन्होंने एम.ए. (हिंदी), स्नातकोत्तर डिप्लोमा (अनुवाद, पत्रकारिता) तथा एम.बी.ए. किया है। लेखन-प्रतिभा अपने पिता डॉ. लक्ष्मी नारायण गर्ग से विरासत में मिली। स्कूल के दिनों में काव्य-लेखन से लेखन का सफ़ र आरंभ किया और अब तक इनकी कई पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। आशुतोष अंग्रेज़ी व हिंदी दोनों भाषाओं पर समान रूप से अधिकार रखते हैं तथा अनुवाद के क्षेत्र में एक परिचित नाम हैं। इन्होंने लेखन व संपादन के क्षेत्र में भी सराहनीय कार्य किया है। *इंद्र, अस्वत्थामा, शिक्षार्थी हिंदी प्रयोग कोश, द्विभाषी प्रशासनिक शब्द-प्रयोग कोश, एक सौ एक रोचक पहेलियाँ* तथा *मैं अल्बर्ट आइंस्टाइन बोल रहा हूँ* इनकी मौलिक पुस्तकें हैं। इसके अतिरिक्त *दशराजन्, श्री कृष्णा लीला, श्री राम लीला, सीतायण, लंका की राजकुमारी, द्रोपदी की महाभारत* तथा *गुप्त भारत की खोज* इनके प्रमुख अनुवाद हैं। इनकी कुछ अन्य पुस्तकें प्रकाशनाधीन हैं। समाचार-पत्र व पत्रिकाओं में नियमित रूप से लिखते हैं। आजकल, रेल मंत्रालय में उप निदेशक के पद पर कार्यरत हैं।